हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर-सीरीजका ३७ वाँ ग्रन्थ ।

छाया-दर्शन ।

(पारलौकिक तत्त्वज्ञान ।)

The Philosophy of Apparitions.

रायबहादुर श्रीयुत कालीप्रसन्न विद्यासागर,
सी. आई. ई. के बंगला-ग्रन्थका
हिन्दी अनुवाद ।

अनुवादकर्ता—
श्रीयुक्त पं० शिवसहाय चतुर्वेदी ।

प्रकाशक—
हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय,
हीराबाग—बम्बई ।

पौष १९७५ वि० ।

प्रथमावृत्ति ।] [मूल्य १)

जनवरी १९१९ ।

सजिल्दका मूल्य १॥=)

सम्पादक और प्रकाशक—
नाथूराम प्रेमी, प्रोप्रायटर,
हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय,
हीराबाग-बम्बई ।



मुद्रक,
चिंतामणि सखाराम देवळे,
मुंबईवैभव प्रेस, सर्व्हंट्स् ऑफ इंडिया
सोसायटीज् होम, सेंडहर्स्ट रोड,
गिरगांव-बम्बई ।

सूची-पत्र।

अष्टम अध्याय—

नवम अध्याय—

दशम अध्याय—

ग्यारहवाँ अध्याय—

भूमिका।

[मूल लेखकके ' निवेदन ' का संक्षिप्त अनुवाद ।]

अबसे लगभग २० वर्ष पहले—जब कि मैं वैष्णव-साहित्यके छोटे बड़े अनेक ग्रन्थोंके अध्ययनमें दत्त-चित्त रहता था—मेरे मनमें प्रायः सर्वदा ही यह प्रश्न उठा करता था कि मनुष्य मरनेके बाद कहाँ जाता है ? देह त्यागनेके पीछे भी क्या इसका अस्तित्व रहता है ? उस समय मैंने अपने ' निभृत-चिन्ता ' नामक ग्रन्थके एक निबन्धमें इस प्रश्नको उठाया भी था; परन्तु मुझे इसका उत्तर देनेका साहस नहीं हुआ था । उस निबन्धका एक वाक्य था—" पृथिवीका एक दृश्य सूतिका-गृह और एक दृश्य श्मशान है । " किन्तु श्मशान या समाधि-मन्दिरके उस पार भी मानव-जीवनका कोई अवस्थान्तर होता है या नहीं, उस समय इस बातको अच्छी तरह विचारनेका अवसर नहीं मिला था । क्योंकि उस समय मेरा हृदय और मन आगस्ट कोम्टके प्रत्यक्षवादकी हजारों बातोंसे लबालब भरा हुआ था । कोम्टका सिद्धान्त है कि ऐहिक अमरता ही अमरता है । उसके सिवाय, मनुष्यकी और किसी प्रकारकी अमरता या अविनश्वर-जीवन-प्राप्ति मानना निरी कल्पना है ।

किन्तु वैष्णव-साहित्यमें उक्त प्रश्नकी मीमांसा दूसरे ही प्रकारसे की गई है । उसमें मरनेके बाद मनुष्यके बार बार जन्म धारण करनेकी और किये हुए पुण्य-पापोंके अनुसार सुख-दुःख पानेकी बातें निःसन्देह और परीक्षासिद्ध सिद्धान्तोंकी तरह लिखी हुई हैं । उन्हें पढ़ कर हृदयमें एक प्रकारका आतङ्क और आन्दोलन उपस्थित हो जाता था । यद्यपि मैं उस समय कोम्टको बहुत बड़ी श्रद्धासे देखता था, तो भी भगवत्कृपासे ईश्वरभ्रष्ट नहीं हुआ था । ईश्वरमें मुझे सदासे ही अचल भक्ति और अटल विश्वास था । मैं मन-ही-मन कहता था—" प्रभो, मेरी रक्षा करो, मेरे हृदय पर थोड़ासा प्रकाश डालो और उसे शान्ति-दान करो ।" फिर भी

वैष्णव-साहित्यकी बातें हृदय पर यथेष्ट अधिकार नहीं कर पाती थीं। उनके विषयमें तरह तरहके सन्देह खड़े हो जाते थे। सन्देहनिवृत्तिका जब और कोई उपाय न सूझ पड़ा, तब मैंने इंग्लैण्ड और अमेरिकाके वैज्ञानिक पण्डितोंको अपने हृदयकी शंकाओंका उल्लेख करके कई पत्र लिखे। उनके उत्तरमें मैं यह देख कर चकित हुआ कि मेरे पास इस विषयके राशि राशि ग्रन्थ आरहे हैं। उनमेंसे (William Rounseville Algor) अल्जर नामक सर्वशास्त्रविशारद सुपण्डितके (The Destiny of the Soul) 'मनुष्यात्माकी चरम गति' नामके विशाल ग्रन्थको पढ़ कर मैंने बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त किया। आत्मामें कुछ प्रकाश भी पाया। परन्तु फिर भी परिपूर्ण सन्तोष नहीं हुआ।

इसके बाद मैंने इंग्लैण्ड, अमेरिका और आस्ट्रेलियाके सुप्रसिद्ध अध्यात्म-वादियों (Spiritualists) के पास पत्र भेजे। उनमेंसे बहुतोंने बड़ी प्रसन्नता-से मेरे पत्रोंका उत्तर दिया और बहुतोंने बड़ी बड़ी ग्रन्थ-सूचियाँ भेजकर उन ग्रन्थोंके पढ़ जानेका अनुरोध किया। तब मैंने अध्यात्मतत्त्वके उक्त ग्रन्थोंका संग्रह करना और प्रत्येक ग्रन्थको अतिशय एकाग्रतासे पढ़ना शुरू किया। उन्हें पढ़कर मैं चकित और स्तंभित हो रहा। जिन बातोंको कभी स्वप्नमें भी नहीं सोचा था, वे भी सच जान पड़ने लगीं। आँखोंके सामनेसे सन्देहका परदा उठने लगा। मैं भगवानको बारबार धन्यवाद देने लगा। उस समय समझा कि जगदीश्वर सचमुच ही अपार करुणा-सागर है। यह भी अभ्रान्त सत्यके समान समझने लगा कि मनुष्यका आत्मा अविनश्वर, अनन्तकालस्थायी और ईश्वरकी कृपासे अनन्त प्रेम, अनन्त ज्ञान और अनन्त उन्नतिका अधिकारी है। जब मेरे हृदयमें यह विश्वास जम गया कि परलोकगत आत्माओंने मनुष्योंको दर्शन देकर परमार्थतत्त्व और पारलौकिक जीवनसम्बन्धी उपदेश दिये हैं, तब मेरे मनका अन्धकार सदाके लिए अन्तर्हित हो गया। इस विषयमें अब मुझे कोई सन्देह नहीं रहा। मेरा हृदय प्रशान्त, प्रफुल्ल, निःसंशय और निर्भय हो गया। अध्यात्मवादियोंने जिसप्रकार उपदेश दिया है, तदनुसार मैंने परीक्षायें भी कीं और उनमें ईश्वरकी कृपासे मुझे यथेष्ट सफलता भी हुई। अपने अनेक स्वर्गगत मित्रों और स्वजनोंके उपदेशको प्रत्यक्ष प्रमाणोंसहित पाकर मैंने एक अचिन्तनीय आनन्दका अनुभव किया।

अध्यात्मतत्त्वके अध्ययन और अनुसन्धानमें मुझे जिन जिन महाशयोंने

सहायता दी है, उनमेंसे तीन सज्जनोंके नाम विशेष उल्लेखयोग्य हैं—१ अमेरिकाके असाधारण पण्डित बारेट (Barret), २ आस्ट्रेलियाके मेलबर्न नामक नगरसे प्रकाशित होनेवाले 'प्रकाश-दूत' (Herbinger of light) नामक मासिकपत्रके सम्पादक विलियम टेरी (William Terry) और ३ इंग्लैण्डके मि० एण्ड्रू ग्लेण्डिनिंग (Andrew glendinning) । पिछले सज्जन एक ऋषि-तापस-तुल्य व्यक्ति हैं । इस समय उनकी अवस्था ८४ वर्षकी है, उनकी जन्मभूमि स्काटलैण्ड है । ग्लासगो नगरमें उनकी बहुत बड़ी जमीन्दारी है। किन्तु वे लन्दनके उत्तरपश्चिमभागके डेलस्टन नामक स्थानमें रहते हैं। उन्होंने अपने अनेक स्वर्गगत स्वजन-बान्धवोंके दर्शन किये हैं और अब भी उनके घर महीनेमें दो तीन बार तत्त्व विवेशन (Seance) हुआ करते हैं, जिनमें मिडियमोंकी सहायतासे वे अपनी स्वर्गगत पत्नी और पुत्र-कन्याओंकी छायामूर्तियोंके दर्शन करके और उनके साथ कथोपकथन करके अमृतशीतल शान्ति प्राप्त किया करते हैं। 'रिव्यू आफ रिव्यू' नामक सुप्रसिद्ध पत्रके सम्पादक मि० स्टेड आदि बड़े बड़े विद्वान् और आदरणीय सज्जनोंने ग्लेण्डिनिंगके घर जाकर उनकी सहधार्मिणी आदिकी चर्मचक्षुओंसे दिखनेवाली क्षणस्थायी मूर्तियोंको देखा है। ग्लेण्डिनिंग साहबका लिखा हुआ Life Beyond the Veil अर्थात् 'आवरणका पर-पार-वर्ति जीवन' नामक ग्रन्थ इस समय दुष्प्राप्य है। लन्दनके किसी भी बुकसेलरके यहाँ जब यह ग्रन्थ नहीं मिला, तब मैंने स्वयं लेखक महाशयको ही एक पत्र लिखा । उत्तरमें उन्होंने बड़ी प्रसन्नतासे उक्त ग्रन्थ भेज दिया और बहुत ही प्रीतिपूर्ण पत्र लिखा। यह १५ वर्ष पहलेकी बात है। तबसे अब तक प्रायः प्रत्येक सप्ताहमें मैं ग्लेण्डिनिंग साहबके प्रेमपरिपूर्णपत्रोंसे सम्मानित हुआ हूँ और उनके अनुग्रहसे सैकड़ों परलोकगत आत्माओंके फोटो पाकरके तो बहुत ही अधिक उपकृत हुआ हूँ। वास्तवमें मनुष्य एक सुपण्डित और साधुहृदय ज्येष्ठ सहोदरसे जिस प्रकारके स्नेहकी और सहायताकी आशा कर सकता है, उक्त वृद्ध महापुरुषके पाससे मैंने वही स्नेह और वही साहाय्य पाया है। इस लेखको समाप्त करनेके समय, मुझे अभी अभी ग्लेण्डिनिंग साहबका एक पत्र ता० १३ जनवरी सन् १९१० का लिखा हुआ मिला है। उसमें लिखा है कि "आज मेरे मकानमें तत्त्वाधिवेशन हुआ । हम सब लोगोंने

देखा कि मेरी स्वर्गगत पत्नीने जडपरमाणुरचित स्पर्शयोग्य प्रत्यक्ष मूर्तिसे उपस्थित होकर पासमें रक्खी हुई एक टेबिलके गुलदस्तेमेंसे कुछ फूल हाथ पसारकर उठाये और उनमेंसे पाँच फूलोंसे मुझे अलंकृत करके अन्यान्य पुरुषों तथा स्त्रियोंको एक एक दो दो फूल उपहार स्वरूप दिये।" पत्रमें एक इससे भी अधिक आश्चर्यजनक घटनाका उल्लेख है। मिसेस ग्लेण्डिनिंगके अतिरिक्त और भी जो आत्मिक वहाँ उपस्थित हुए थे, उन्होंने सब लोगोंकी आँखों और कानोंके सामने, वहाँ रक्खे हुए आर्गन बाजेको बजाया और सब लोगोंने उसके सुरमें सुर मिलाकर गाना गया। ग्लेण्डिनिंग साहबके घरके इस प्रकारके सैकड़ों अधिवेशनोंके वृतान्त मेरे पास मौजूद हैं और उनमेंसे बहुतसे वृतान्त वहाँके गण्य मान्य पत्रोंमें अनेक लोगोंकी साक्षियोंके सहित प्रकाशित भी हो चुके हैं। इंग्लैण्ड, अमेरिका और आस्ट्रेलियाके और भी अनेक बड़े बड़े घरोंमें इस प्रकारके अधिवेशन होते हैं और उनमें अनेक लोग अपने परलोकवासी प्राणप्रिय व्यक्तियोंको आँखोंसे देखकर कृतार्थ होते हैं।

इस ग्रन्थका प्रत्येक अध्याय दो अंशोंमें बँटा हुआ है। प्रथम अंशका नाम प्रस्तावना और दूसरेका आत्मिक कहानी है। प्रस्तावनायें अध्यात्मतत्त्वसम्बन्धी विविध बातों पर प्रकाश डालनेके लिए लिखी गई हैं और कहानियाँ भिन्न भिन्न ग्रन्थोंसे संग्रह की गई हैं। कोई कहानी किसी एक ग्रन्थका अनुवाद नहीं है। जो जो प्रामाणिक कहानियाँ दो ग्रन्थोंमें तथा इससे भी अधिक ग्रन्थोंमें मिली हैं, वे ही बारबार पढ़कर और आलोचन करके अपनी भाषामें लिखी गई हैं।

अन्तमें जगदीश्वरके पादपद्मोंमें प्रार्थना है कि छाया-दर्शनका वास्तविक तत्त्व भारतवर्षके प्रत्येक घरमें प्रचलित हो और जो लोग इस तत्त्वको नहीं मानते हैं, उनके हृदयमें सत्यानुसंधान करनेकी प्रवृत्ति उत्पन्न हो। मेरा दृढ विश्वास है कि जो सत्य और तत्त्वके सच्चे जिज्ञासु हैं उनके हृदयमें यह तत्त्व अवश्य ही स्थान पायगा।

माघ सं० १९६६ वि०।

— श्रीकालीप्रसन्न घोष।

परलोक-तत्त्वका आधुनिक इतिहास।



सुन्दरी, सामने रक्खे हुए दर्पणमें अपनी प्रीति-प्रफुल्ल पवित्र मूर्तिको देखकर बहुत ही प्रसन्न होती है, और मुखसे न कहने पर भी मुसकुराती हुई मन-ही-मन कहती है कि अहा! कितनी सुन्दर मूर्ति है! किन्तु वह नहीं जानती कि दर्पणमें जो मूर्ति प्रतिबिम्बित हो रही है, उसके मस्तकके मुलायम केशोंसे लेकर पैरोंके नखों तकके सारे अवयवोंमें, ठीक उसी प्रकारकी, एक सूक्ष्मतर पदार्थसे बनी हुई सुन्दर-मूर्ति मेरी जड़देहके भीतर भी विराजमान है। वह मानों यह सोचने-समझनेका अवकाश ही नहीं पाती। सुन्दरीके गोदका बच्चा भी दर्पणमें माताके मुखके समीप अपनी आनन्दमयी मूर्तिको देखकर आनंद, औत्सुक्य और कुछ विस्मयसे क्षणभरके लिए चकित-सा हो रहता है और बारबार माताके मुखकी ओर जिज्ञासु नेत्रोंसे देखता है। किन्तु उसकी इस छोटीसी देहके भीतर भी एक छोटीसी सूक्ष्म देह, सारे अंग-प्रत्यंगोंमें फैली हुई बाह्यदेहके साथ-ही-साथ धीरे धीरे बढ़ती है, और धीरे धीरे विकसित होती है, यह बात सैकड़ोंबार समझाने पर भी वह नहीं समझ पाता है। सुन्दरी जैसे अपने इस नयन-मनोहर सुन्दर शरीरको ही 'मैं' या 'मेरा' कहकर मानती है, शिशु भी उसी प्रकार अपने पुष्प-सदृश कोमल शरीरको भी 'मैं' या 'मेरा' समझता है। उसका ज्ञान जैसे जैसे बढ़ता जाता है, वैसे वैसे वह अपने सुललित अस्पष्ट शब्दों द्वारा माताके कर्णपुटोंमें सुधाकी वर्षा करता हुआ उँगलीके इशारेसे बतलाने लगता है— 'यह मेरा हाथ है,' 'यह मेरा पाँव है' 'यह मेरी आँख है' 'यह मेरी नाक है' इत्यादि।

किन्तु इसमें उक्त सुन्दरी तथा बच्चेका क्या अपराध है। संसारके करोड़ों मनुष्य जन्म भर जड़ वस्तु और जड़ जगतको ही एक मात्र सार-वस्तु समझते तथा विश्वास करते हैं और इसी विश्वासके दास बनकर जीवनके समस्त कार्य करते हैं। ऊपर यह जो असंख्य तारागणों और चन्द्रमासे सुशोभित आकाश-मण्डल दिखाई देता है, उसके पीछे भी कुछ है? संसारिक लोगोंका विश्वास है कि उसके परे और कुछ नहीं है—केवल शून्य—शून्यके पश्चात् शून्य—महा-शून्य—और अनन्तविस्तारित अनन्त शून्य है। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, उन लोगोंकी यही समझ है—यही धारणा है कि यह जड़देह ही देह, और यह जड़जगत ही जगत है।

किन्तु पृथिवीका यह बड़ा भारी सौभाग्य है कि भारतीय आर्य्य-ऋषिगण समाज-प्रतिष्ठाके प्रारंभिक समयसे ही प्रकृत तत्त्वके समीप पहुँच गये थे। वे समझ गये थे कि मनुष्यकी जड़देहके भीतर एक सूक्ष्मदेह * है और यह जड़-देह भीतरी सूक्ष्मदेहका बाह्य-आवरण मात्र है। इसी तरह चन्द्र-तारा-खचित आकाश तथा गिरि-नदी-ग्रामशोभित पृथ्वी, अर्थात् यह निखिल-विश्वव्यापि जड़जगत् सूक्ष्मतर अध्यात्म-जगतका बाह्य आच्छादन है।

उल्लिखित आर्य-ऋषियोंके ही रचे हुए कोषके प्रथम श्लोकका प्रथम शब्द स्वर्ग ‡ है, और दूसरे श्लोकका प्रथम शब्द स्वर्गके अधिवासी अमर अर्थात् देवता है— जिनका एक नाम सुमनस ÷ भी है। इसके अतिरिक्त जगज्जीवन जगदीश्वरका नाम

---

* इसका अँगरेजी नाम Spirit body और प्राचीन संस्कृत नाम सूक्ष्मशरीर या सूक्ष्मदेह है। यहाँ सूक्ष्मका अर्थ 'छोटा' नहीं है। बाहरका स्थूलशरीर लम्बाई चौड़ाई और भिन्न भिन्न अवयवोंके विस्तारमें जैसा है, सूक्ष्मशरीर भी लम्बाई चौड़ाई और सब अवयवोंमें ठीक वैसा ही है। दोनोंमें भेद केवल उपादान-पदार्थोंकी स्थूलता अथवा सूक्ष्मताका है। वायु जगद्व्यापी और महान्‌शक्तिसम्पन्न होने पर भी, पृथ्वीकी जलराशिसे सूक्ष्मतर है और बिजली वायुसे भी अधिकतर सूक्ष्म है। विद्युन्मय शरीर साधारणतः मनुष्यके नेत्रोंसे नहीं दिखाई देता, किन्तु उसकी शक्ति अत्यंत भयंकर होती है। वैज्ञानिकोंने अनुमान किया है कि, परलोकगामी आत्माओंका शरीर विद्युत् अथवा विद्युत्से भी अधिक सूक्ष्मतर और अधिकतर सारवान् शक्तिसम्पन्न पदार्थद्वारा निर्मित है। देह त्यागनेके पूर्व यह शरीर मनुष्यकी देहमें सिरसे लेकर पैरों तक व्याप्त रहता है। इसके निकल जाने पर ही स्थूल पृथ्वीपरसे मनुष्यकी मृत्यु हो जाती है।

‡ जैसे अमरकोषमें (स्वर्गवर्गमें)—

स्वरव्ययं स्वर्ग-नाक-त्रिदिव-त्रिदशालयाः।
सुरलोको द्योदिवौ द्वे स्त्रियां क्लीबे त्रिविष्टपम्॥

अमरकोष ऋषिप्रणीत न होने पर भी, ऋषितुल्य महापुरुषकी रचना है और वह ऋषि-तापसों द्वारा प्रवर्तित शिक्षाका ही फल है।

÷ अमरा निर्जरा देवास्त्रिदशा विबुधाः सुराः।
सुपर्वाणः सुमनसस्त्रिदिवेशा दिवौकसः॥

पाठक देखेंगे कि स्वर्गवासी देव-देवियोंका प्रथम नाम अमर है—The immortal अर्थात् अनन्तकाल तक उन्हें मृत्यु नहीं सताती। उनका एक नाम सुमनस् भी है, अर्थात् उनका मन पवित्र, सुन्दर और सब प्रकारके सुख-प्रीतिकर सद्भावोंसे परिपूर्ण है। यह तत्त्व ही अध्यात्मवादका मूल तत्त्व है। भारतवर्षमें न जाने कितने प्राचीन समयसे यह तत्त्व थोड़ेसे अक्षरोंमें सूत्रवत् लिखा हुआ है!

अनन्तव्यापी परमात्मा और जीवका नाम जीवात्मा है। जीव इस पार्थिव जीवनकी समाप्तिके समय जड़देहको त्यागकर जिस पारलौकिक जगतमें प्रवेश करता है अथवा आश्रय पाता है, उसका नाम अध्यात्म-जगत है।

प्राचीन आर्य्य-ऋषि जिस जातिके पूर्व-पुरुष थे, वही जाति इस समय पृथ्वी-पर हिन्दू जातिके नामसे प्रसिद्ध है। हिन्दू शब्दकी व्युत्पत्ति कुछ भी क्यों न हो, परन्तु यह निश्चय है कि वर्तमान समयके अधःपतित हिन्दू ही उन तपोधन ऋषि-गणोंके वंशधर हैं। इसी लिए, वंशपरम्परासे चले आये हुए और अभ्यासमें पड़े हुए संस्कारोंके कारण हिन्दुओंके धर्म-कर्म, योग-तप आदि सभी कार्य आज भी अध्यात्म-जगतकी ओर लक्ष्य रखकर और अध्यात्म-जगतके चरमलभ्य सुख-शांतिकी ओर दृष्टि रखकर होते हैं। यही कारण है कि हिन्दू जाति आध्यात्मिक ज्ञानमें सारे संसारसे आगे बढ़ी हुई है, और मालूम होता है कि इसी लिए वह जड़विज्ञानमें समस्त जगतसे पीछे है।

हिन्दुओंके पश्चात् बौद्धोंने भी केवल अध्यात्मतत्त्वको लेकर धर्म्मकी सृष्टि की थी और श्याम, सिंहल, ब्रह्मा, जापान और चीन आदि देशोंमें उक्त तत्त्वका प्रचार करके एक नई साम्प्रदायिक जाति गठित करनेका उद्योग किया था।

एशियाके पश्चिमी भाग पेलेस्टाइन राज्यमें यहूदी लोगोंमें भी इसी तत्त्वका प्रसार हुआ था और यहूदी जातिके समस्त धर्म-प्रतिष्ठाताओंने इसी तत्त्व पर निर्भर रहकर परमार्थका उपदेश दिया था। यहूदी लोगोंके अंतिम गुरु, ईसा मसीह, जीवके आध्यात्मिक-जीवन और परलोकके अस्तित्वविषयक महासत्यमें इतने निमग्न थे कि वे इहलोक या जडजगतके सुख-दुःखोंको कोई वस्तु ही नहीं समझते थे। उनके उपदेशानुसार मनुष्यकी बाह्य देह क्षणभंगुर, अकिंचित्कर और असार वस्तु है। इस देहके भीतर रहनेवाला आत्मा ही अनन्तकालजीवी जीवात्मा और सार-पदार्थ है। जो लोग दो चार दिनके शारीरिक सुखके लिए आत्माकी चिरदिनस्थायिनी शान्तिको विनष्ट करते हैं, ईसाके मतसे उनके समान पापिष्ठ और मूर्ख दूसरा नहीं है। अतएव तत्त्वदर्शी ईसाके कथनानुसार पारलौकिक अध्यात्म-जीवन ही मनुष्यका अनन्तकाल-स्थायी प्रकृत जीवन है। जो लोग ऐहिक जीवनके क्षणस्थायी भोग-सुख अथवा स्वार्थ-सम्मानकी लाल-

सासे चिरस्थायी पारलौकिक जीवनके सुख-शांतिके मार्गमें काँटे बोते हैं, संसारमें उनके समान अभागा और कौन हो सकता है।

यद्यपि यूरोप और अमेरिकाके असंख्य शिक्षित और अशिक्षित, धनी और कंगाल, कर्मशील और अकर्मण्य, सभी श्रेणीके पुरुष अपनेको उक्त ईसा मसीहके सेवक तथा उपासक समझते हैं और एक प्रकारके धर्माभिमानके साथ आत्म-परिचय देनेके लिए सदैव प्रस्तुत रहते हैं, तो भी वे, आध्यात्मिक जगतके साथ पार्थिव जगतका जो घनिष्ठ सम्बन्ध है, तत्सम्बधी सभी बातोंको वास्तवमें बहुत समयसे भूले हुए हैं। यद्यपि उन लोगोंके मुँहसे परलोक और परकालकी बातें सुनी जाती हैं, और वे उनमें थोड़ा बहुत विश्वास भी रखते हैं, किन्तु थोड़े ही समय पहले, जब किसी स्त्री या पुरुषके जीवनमें किसी प्रकारकी आध्यात्मिक क्रियाका एक साधाण लक्षण भी प्रकाशित होता था, तो वे उस व्यक्तिको—चाहे वह शिशु हो या वृद्ध, पुरुष हो या स्त्री—उसी समय डाइन, डाकिनी अथवा विच (Witch) § कहकर पकड़ लेते और एक विचित्र पद्धतिके द्वारा न्याय करके उसे जीतेजी अग्निमें जला देते थे!

यूरोप और अमेरिकाके उस समयके कोशोंमें डाकिनी शब्दके अनेक अर्थ हैं। यदि किसी दरिद्रकी झोपड़ीमें कोई अपूर्व सुन्दरी* कन्या उत्पन्न हो जाती, तो अनेक स्थलोंमें वह कन्या भी नवयौवनके प्रारंभिक कालमें डाकिनी समझी जाती, और उसके विषयमें शीघ्र ही चारों ओर कोलाहल मच जाता था। कभी कभी ऐसी अभागिनियाँ जलती हुई चितामें डालकर भस्म कर दी जाती थीं।+उस समयके

§ One, who practises the black art or magic; One regarded as possessing supernatural or magical power by Compact with an evil spirit, especially, with the devil;—a Sorcerer or Sorceress;—now applied chiefly or only to women, but formerly used as men as well. —*Webster.*

* " A charming or bewitching person. "

+ पाठक, प्रसिद्ध उपन्यासलेखक सर वाल्टर स्काटके Ivanho ' आइवानहो ' नामक ग्रन्थमें रेबेकाके न्याय-विचारका और दण्ड-व्यवस्थाका वर्णन पढ़ लेंगे, तो फिर उन्हें इस विषयमें अधिक समझानेकी आवश्यकता न रहेगी। वाल्टर स्काटका Demonology नामक ग्रन्थ भी पाठकोंको पढ़ लेना चाहिए।

लोगोंको विश्वास था कि उनके शरीरमें किसी भूतपिशाचादि अपदेवताका प्रवेश हुए बिना वे ऐसी सुन्दरी नहीं हो सकतीं और लोग उनकी ओर इतने आकृष्ट नहीं हो सकते। इन परलोकद्वेषियोंके निकट जैसे सौन्दर्य्य अपराध समझा जाता था, उसी प्रकार उच्च श्रेणीका मानसिक बल भी अपराध था। जब किसी सुन्दरीके शरीरमें किसी देवता या अपदेवताका आविर्भाव हो जाता और उस देवताके आविर्भावसे दिव्यदृष्टि लाभ करके वह भविष्यकी भली बुरी बातें बतलाती, किसी अलौकिक शक्तिके द्वारा लोगोंको रोगमुक्त करनेमें समर्थ होती, अथवा इसके विरुद्ध किसी भूत-पिशाचादि अपदेवताके आविर्भावसे आविष्ट होकर नाना प्रकारके उपद्रवोंद्वारा पड़ोसियोंको तंग करती, तो वह दोनों दशाओंमें—देवाविष्ट अथवा भूताविष्ट अवस्थाओंमें—एक समान पापिष्ठा गिनी जाती और उस समयकी प्रचलित पद्धतिके अनुसार कैद होकर जलती हुई अग्निमें अपने नवयौवन और सुन्दर स्वरूपकी आहुति देनेके लिए लाचार की जाती थी। ऐसी देवाविष्ट या भूताविष्ट स्त्रीको, हमारी स्नेहमयी पुण्यभूमि भारत-माताकी अत्यंत मूर्खसे मूर्ख संतान भी देवभक्तिकी स्वाभाविक स्फूर्तिसे अपना माथा झुकाती और पुष्प-चंदनसे पूजती है। सैकड़ों ही लोग उसके दर्शनोंके लिए आते और अपने भविष्यजीवनकी शुभाशुभ बातें जाननेका यत्न करते हैं। किन्तु यूरोप और अमेरिकाके सुसभ्य मनुष्य दो शताब्दी पहले ऐसी किसी बालिका, युवती या वृद्धाको देखकर घबड़ा जाते और अंतमें उसे नरहत्याकारिणीसे भी अधिक अपराधिनी समझकर उसके प्राणनाशद्वारा अपनी आसुरिक प्रकृतिका परिचय देते थे।

यद्यपि वहाँ विशेषतः कोमलस्वभावा अबलायें ही 'विच' कहकर मारी जाती थीं,—कारण इस समय अध्यात्म विज्ञानके पंडितोंने निश्चय किया है कि अबलाओंका शरीर ही दैवी शक्तिके आवेशके लिए अधिकतर योग्य है—किन्तु बीच बीचमें पुरुष भी 'विच' नामसे परिचित होकर पड़ोसियोंके पैरोंद्वारा कुचले जाने और राखमें मिलाये जानेसे न बचते थे। जैसा कि एक पुराने लेखमें लिखा है—

"इस नगरमें एक मनुष्य था, उसका नाम था साइमन; वह एक 'विच' था।"*

* "There was a man in that city, whose name was Simon, a witch."—*Wyclif* (Acts VIII. 9)

और भी लिखा है,—

" तुम्हारे स्वामी जो इस जगह निवास करते हैं, वे शिल्पनैपुण्यमें असाधारण हैं; लोग कहते हैं कि वे भी एक विच हैं। " *

तेरहवीं शताब्दीमें विच अथवा डाइनोंके नाश करनेकी प्रथा सारे ही यूरोपमें प्रचलित थी, और पन्द्रहवीं शताब्दीके अंतिम भागमें तो उसने ऐसी उग्र मूर्ति धारण की थी कि उसके स्मरणमात्रसे मनुष्योंका हृदय काँप उठता है और मुँहसे सहसा ' हे करुणासागर ' ' हे जगदीश्वर ' आदि शब्द निकल पड़ते हैं। रोमके पोप ही उस समय यूरोपके शासनकर्त्ता और ईसाई-जगतके धर्मगुरु थे। सन् १४८४ ई० में आठवें इनोसेण्ट नामके निष्ठुर-हृदय पोपने एक आज्ञापत्र निकालकर सर्वत्र ही घोषित कर दिया था कि डाइन अथवा डाकिनीको ज्यों ही पाओ, त्यों ही पकड़ लो और जला दो। इसके बाद छठे अलकजेंडरने पोपके आसनपर बैठकर पूर्वोक्त आज्ञापत्रके समर्थनमें एक और नई आज्ञा प्रचारित कर दी और सन् १५२१ में दसवें लियो और सन् १५२२ में छठे एड्रियानने पूर्वोक्त आज्ञापत्रोंका पालन अधिक दृढ़ताके साथ करनेका आदेश जारी कर दिया। +

---

* " Thy master that lodges here is a rare man of Art, they say he is a witch. "—*Beau & Fl.*

+ In the Sachsenspiegel (which see) of the thirteenth century, the sorcerer and the witch are ordered to be burned; but it was not until the Fifteenth century that the procedings against witchcraft assumed their most hideous form. In 1484 Innocent VIII issued a bull directing the inquisitors to be vigilant in Searching out and punishing those guilty of this crime; and the from of proceeding in the trial of the offence was regularly laid down in the mallens Maleficarum (Hammer of witches). which was issued soon after by the Roman see. The bull of Innocent was enforced by the Successive bulls of Alexander VI (1494), Leo X (1521), and Adrian VI (1522). Of the extent of the horrors, which followed during two centuries and a half, history gives us her record. We are told that 500 witches were burned at Geneva in three months, about the year

इन सब आज्ञापत्रों और घोषणाओंके प्रचारका क्या फल हुआ? उस फलका वर्णन करते हुए यूरोपीय इतिहास आज भी लज्जासे अपना माथा झुका लेता है। उस फलका वृत्तान्त इतिहासकी छाती पर लहूके अक्षरोंसे लिखा हुआ है और जब तक संसारमें मानव-समाजके इतिहासके पठन-पाठनकी प्रथा प्रचलित रहेगी, तब तक वह दुःखकहानी पाठकोंके नेत्रोंमेंसे आँसुओंको आकर्षित करके, उक्त धर्मभ्रान्त देवद्रोहियोंके कलंकको सदा ही घोषित करती रहेगी।

अभी उपरिलिखित अत्याचारोंकी निवृत्ति होने नहीं पाई थी कि करुणामय जगदीश्वरकी अपार महिमासे, ऊर्द्धधामनिवासी लोकहितैषी देवात्माओंने, पृथ्वीके साथ पारलौकिक जगतका सम्बन्ध स्थापित करनेकी अभिलाषासे—जिससे संसारके निम्नश्रेणीके मूर्ख और दुःखी लोग भी परलोकको प्रत्यक्ष सत्यके समान समझकर जीवनके सबेमार्ग पर चलनेमें समर्थ हों—दलबद्ध होकर काम करनेका निश्चय कर लिया। देवताओंके इस प्रकार दलबद्ध होकर काम करनेकी बात पाठकोंको बहुत ही अद्भुत और विश्वासके अयोग्य जान पड़ेगी। क्योंकि, कहाँ वह अदृश्य पर-

1515; and that 1000 were executed in one year in the diocese of como; in Wurzburg, from 1627 to 1629, 157 persons were burned for witchcarft; and it has been calculated that not less than 100,000 victims must have suffered in Germany alone from the date of Innocent's bull to the final extinction of the prosecutions. * * * In England the state of thing was no better; and even the Reformation, which exploded so many other errors, seems to have had no influence upon this. * * * The Judicial proceedings against witches reached their climax in the time of the long parliament, during the sitting of which 3000 persons are said to have been executed after conviction for the supposed crime besides whom many supsected witches perished by the hands of the mob. * * * * In 1716 a Mrs. Hickes and her daughter, nine years of age, were hanged for selling their souls to the devil and raising a storm by pulling off stockings and making a lather of soap. The number of those put to death in England has been estimated at about 30,000."

लोक और परलोककी देवशक्ति-सम्पन्न, अदृश्य और नित्यकर्मशील उन्नत आत्मायें, और कहीं बिजलीके तारों और धूम्रयानोंसे ढँके हुए जड़-विज्ञानमें भूला हुआ यह नरलोक। संसारके व्यापार-धंधोंमें उलझे हुए भोगसुखासक्त मनुष्योंके लिए इस बातकी कल्पना करना भी कठिन है कि परलोकनिवासी शिल्प-निपुण, सद्ज्ञानसमुज्ज्वल सदाशय महापुरुष अवसर पाते ही पृथ्वीपर आते हैं और उनकी भलाईके लिए एक अथवा अनेक आत्मिकोंको साथ लेकर नाना प्रकारके सत्कार्योंमें प्रवृत्त होते हैं। किन्तु हमको विश्वास है कि पाठक इस ग्रंथके कुछ भागको पढ़कर ही समझ जायँगे कि परलोक और नरलोक-का बहुत कुछ सम्बन्ध है और परलोकके साधुहृदय अधिवासी नरलोक-वासियोंके परम मित्र हैं। जो लोग परलोक जाकर देवत्व प्राप्त करते हैं, वे संसारकी मंगलसाधनाके लिए सदैव तत्पर रहते हैं। पूर्वोक्त देवात्माओंके अपने व्रतमें व्रती होने पर—काममें लग जाने पर—उस समय अमेरिका, यूरोप और अन्यान्य सुसभ्य देशोंके शिक्षितों और अशिक्षितोंमें जो एक बड़ा भारी आन्दोलन उठ खड़ा हुआ था, पारलौकिक सत्यके सम्बन्धमें चारों ओर जो एक जबकोलाहल मच गया था और जिसने कुछ समयके लिए जनसमाजको उन्मत्तसा बना दिया था, यहाँपर हम संक्षेपमें उसीका अश्रुतपूर्व ऐतिहासिक वृत्तान्त लिखते हैं।

सन् १८४८ की बात है। बात अधिक पुरानी न होने पर भी, अत्यंत विस्मय-जनक और सत्यप्रिय व्यक्ति मात्रके जानने योग्य है। अमेरिकाके न्यूयार्क नामक नगरके समीप एक छोटासा गाँव है, जिसका नाम है हाइडस् विल। डाक्टर हाइड नामके एक सुशिक्षित और सभ्य पुरुषने इस ग्रामको बसाया था, इसी कारण इसका नाम 'हाइडस् विल' पड़ गया है। डाक्टर हाइडका स्वर्गवास सन् १८४८ के पहले हो चुका था। पिताके मरनेके पश्चात् पुत्रने अपने रहनेके घरको जान डी फाक्स नामके एक भले किसानको किरायेसे दे दिया। फाक्स पहले रचेस्टर नगरमें रहते थे। खेतीसे आजीविका करनेके उद्देशसे वे ११ दिसम्बर सन् १८४७ को हाइडस् विलमें आकर डाक्टर हाइडके मकानमें रहने लगे। हमारे देशमें किसान कहनेसे केवल अशिक्षितोंका ही बोध होता है; किन्तु यूरोप और अमेरिकामें हजारों सुशिक्षित और सभ्य पुरुष खेती करते हैं। वहाँ

किसान या कृषक शब्द छोटा नहीं समझा जाता। जान फाक्स कृषिजीवी होने पर भी वहाँके प्रतिष्ठित लोगोंमें आदर पाते थे और उनकी स्त्री, कन्या और पुत्र कृषिकार्यमें सहायता देने पर भी सुसभ्य और प्रतिष्ठित गिने जाते थे। जान फाक्सका ज्येष्ठ पुत्र हाइडस् विल्के समीप ही किसी ग्राममें, उनसे अलग रहकर स्वतंत्र रूपसे खेती करता था। जानफाक्स अपनी स्त्री और दो छोटी कन्याओं सहित हाइडस् विलमें रहते थे।

जान फाक्सके सात संतानें हुई थीं। इनमेंसे सबसे छोटी संतान जन्मते ही मर गई थी। हम जिस समयका वृत्तान्त लिख रहे हैं उस समय उनकी छह संतानें जीवित थीं। फाक्सकी बड़ी लड़की लीयाका विवाह हो गया था और वह अपने पतिके यहाँ रहती थी। मझली मार्गरेटा और सबसे छोटी कैथी* माता-पिताके साथ रहती थी। फाक्सकी स्त्रीका नाम मार्गरेट और मझली लड़कीका नाम मार्गरेटा था। पाठकोंको यह नाम-भेद न भूल जाना चाहिए।

हाइडस् विलमें डा० हाइडके घरमें आकर रहनेके थोड़े ही दिनोंके उपरान्त जान फाक्सको इस घरसे विरक्ति हो गई; केवल विरक्ति ही नहीं साथ-ही-साथ उनके मनमें एक प्रकारके भयका भी संचार हो गया। वे प्राय: दिनभर खेतपर रहा करते थे। उनकी स्त्री और दोनों कन्यायें ही घर रहा करती थीं। अतएव सबसे पहले मार्गरेट और उसकी दोनों लड़कियाँ इस घरसे विरक्त हुई। किन्तु यदि लोग सुनेंगे तो हँसी करेंगे, इस भयसे उन्होंने अपने मनका भाव मनहीमें छिपा रक्खा।

रहनेका मकान लकड़ीका होने पर भी दोमँजिला था। उसके ऊपरी मंजिलमें सामान रखनेकी और नीचेमें रहनेकी व्यवस्था थी। नीचे एक सोनेका कमरा, एक रसोईघर, और उसके समीप ही एक सेलर अर्थात् तलघरा था। मार्गरेट जब जब घरके किसी कमरेमें प्रवेश करती, तब तब उसे छत पर, जमीन पर और बगलकी दीवालों पर टक टक् धप् धप् शब्द सुनाई देता था। कभी उसे ऐसा मालूम पड़ता था कि कोई घरकी छत पर या नीचे तलघरेमें धप् धप् शब्द करता हुआ टहल रहा है और कभी उसे ऐसा जान पड़ता था कि कोई मनुष्य उसके कानोंके समीप ही दीर्घ श्वास छोड़ रहा है।

---

* इसे माता-पिता कैथी, और अन्य लोग केट (kate) कहा करते थे।

लड़कियाँ इस घरमें अकेली नहीं रहना चाहती थीं—उन्हें बहुत डर लगता था। लड़कियोंको इतना भयभीत देखकर मार्गरेटने एक दिन अपने स्वामीसे सारा हाल कह दिया। परन्तु स्वामीने चूहों या छछूँदरोंके उपद्रवका प्रसंग उठाकर उसकी सारी बातोंको हँसीमें उड़ा दिया। यद्यपि उनको भी उक्त शब्द सुनाई देता था और वे भी मन-ही-मन भयभीत रहा करते थे, किन्तु शब्दमात्र सुनकर घर छोड़ देना उन्हें पसंद न था। वे रचेस्टरसे बहुत कुछ खर्च करके, खेतीमें अधिक लाभ उठानेकी आशासे, हाइडस् विलके इस मकानमें हाल ही आकर रहे थे; तब इस घरको छोड़कर कैसे जायँ? और मकान भी तो सहज ही नहीं मिल जाते। अतः उन्होंने इसी मकानमें रहनेका निश्चय कर लिया था। किन्तु फाक्सके मनका यह निश्चय अधिक समय तक दृढ़ नहीं रह सका।

हम पहले कह चुके हैं कि जान फाक्स अपने परिवारको लेकर सन् १८४७ के दिसम्बरके मध्यमें हाइड्स विलमें आये थे। दिसम्बर महीनेके शेष दिन इसी शब्दश्रुति और इसके कारणोंपर तर्क-वितर्क तथा वादानुवाद करनेमें बीत गये। जनवरीसे ये शब्द धीरे धीरे और भी अधिक भयंकर और अशान्तिजनक होने लगे। दिनमें प्रायः कभी कोई शब्द न होता था, किन्तु रात्रि होते ही, छत पर, दीवालों पर और तलघरेमें तरह तरहके भीतिजनक शब्द होने लगते थे। ऐसा मालूम पड़ता था मानों कोई मनुष्य खूब जोर जोरसे पैर पटकता हुआ घूम रहा है। वह मानों तलघरेकी ओरसे आता है और फिर सारे कमरोंमें धप् धप् करता हुआ टहलता है।

जनवरी और फरवरीके पश्चात् मार्चमें यह आधिभौतिक अत्याचार और भी अधिक त्रासजनक हो उठा। संध्याके पश्चात् कोई कुर्सीपर बैठा है, कुर्सी सहसा काँप उठी; कोई पलंगपर लेटा है, कुर्सीके समान पलँग भी थर थर काँपने लगा; घरमें प्रायः सभी जगह भूकम्पकी प्रथम तरंगके समान कंपका प्रत्यक्ष अनुभव होने लगा।

यों तो इस उपद्रव या अत्याचारसे घरके सभी आदमी थोड़े बहुत पीड़ित थे; किन्तु कैथीपर इसका सबसे अधिक जोर था। उस समय कैथीकी उमर ९ वर्ष-की और मार्गरेटाकी १२ वर्षकी थी। कैथी जहाँ जहाँ जाती थी, उपद्रव भी मानों समझ-बूझकर उसके साथ-ही-साथ जाता था। उपद्रव कभी कभी अपने वर्फतुल्य

ठंडे हाथोंसे कैथीके शरीरका स्पर्श करता था और कैथी चिल्लाती हुई अपने प्राण लेकर भागती थी। एक दिन कैथी और मार्गरेटा, दोनों एक शय्यापर सो रही थीं। सहसा एक मोटे ताजे विलायती कुत्तेके समान कोई जीव उन दोनोंके पैरोंसे छू गया। दोनों चिल्ला उठीं। माता, जल्दीसे हाथमें दीपक लेकर दौड़ी। वहाँ आकर क्या देखती है कि दोनों बहनें एक दूसरीसे लिपटी हुई थर थर काँप रही हैं, किन्तु उस जगह भयकी कोई वस्तु नहीं है। और एक दिन कैथी कम्बल ओढ़े सो रही थी, इतनेमें कोई उसके उस कम्बल और शय्यापर बिछी हुई चादरको धीरे धीरे खींचने लगा।

इसके पश्चात् उपद्रवने अन्य रूप धारण किया। घरकी टेबिल, कुर्सी आदि वस्तुओंकी खींचखाँच शुरू हुई। कुर्सी एक जगहसे उछलकर दूसरी जगह जा गिरी, टेबिल सहसा उलटकर गिर पड़ी और एक दूसरी वस्तु सचेतनकी नाईं आप-ही-आप खट्खट् करती हुई चली और दूसरे स्थानपर पहुँचकर ठहर गई। इसमें रातको न मि० फाक्स सो पाते थे और न उनकी पत्नी। सन्ध्याके बाद घड़ीभरके लिए भी उन्हें चैन नहीं मिलती थी। ऐसे अश्रुतपूर्व उपद्रवोंके होते हुए नींद आ भी कैसे सकती है?

३१ मार्चकी रात्रिको मि० फाक्स और उनकी पत्नीने सोनेका दृढ़ संकल्प कर लिया। आज वे कुछ समय पहलेहीसे भोजनादिसे निवृत्त होगये और उन्होंने अपने अपने सोनेकी जगह बदल डाली। मि० फाक्स एक जुदा कमरेमें सोये और उनकी गृहिणी तथा दोनों कन्यायें एक दूसरे कमरेमें अलग अलग शय्याओंपर सोईं। गृहिणीने अपनी शय्यापर पहुँचते ही दोनों लड़कियोंसे कहा—"देखो, तुम किसी बातसे डरना नहीं। अपना घर खेतके बीचमें है। चारों ओरसे जोरकी हवा आती है। उसी हवासे बीच-बीचमें सारा मकान काँप उठता है और खिड़कियों या दरवाजोंके किवाड़ खट् खट् कर उठते हैं। तुम इसका वास्तविक कारण न समझकर डरके मारे घबड़ा जाया करती हो।" मि० फाक्सने भी अपने आन्तरिक भयको छिपाकर इसी प्रकारका उपदेश दिया। किन्तु इस उपदेशके द्वारा लड़कियोंको जरा भी साहस नहीं बँधा। उन्होंने यद्यपि मुँहसे कुछ भी न कहा, परन्तु मन-ही-मन समझ लिया कि माता-पिता जो कुछ कहते हैं वह उनके हृदयकी बात नहीं है।

इसके पश्चात् सब अपनी अपनी शय्या पर लेट रहे। गत कई रातें उनको जागते जागते बीती थीं, इसीकारण आज यह जल्दी सो जानेका अयोजन किया गया था। किन्तु दुर्भाग्यवशतः आज वे एक क्षण भरके लिए भी—सोनेकी तो बात ही दूर है—लेटकर विश्राम भी नहीं कर सके। किन्तु यह बात पाठकोंके स्मरण रखने योग्य है कि यद्यपि फाक्स-परिवारको उस रातको इसप्रकार जागरण करना पड़ा और आगेकी भी कई रातें और दिन तरह तरहके अतिमानुषिक अत्याचारोंमें उन्हें बिताने पड़े; किन्तु इस रात्रिको ही, उनकी अनिद्रा और अशान्तिके बदले, इहलोक और परलोकके बीच तार-समाचारके समान समाचार भेजनेकी जगद्धितकारी पद्धति संसारमें सबसे पहले प्रतिष्ठित हुई। आधिभौतिक अत्याचार × इसके पहले भी इंग्लैण्ड, आयर्लैंड, फ्रांस और अमेरिका आदि देशोंमें, अनेक जगह, अनेक घरोंमें अनेक लोगोंके द्वारा देखे और सुने गये थे; किन्तु अत्याचार करनेवाली लोकान्तरित आत्माओंके साथ संकेतद्वारा बातचीत भी की जा सकती है, यह सबसे पहले इसी रात्रिको विदित हुआ और इसके फलसे धर्म-जगतके इतिहासमें एक अपूर्व परिवर्त्तन हो गया। अध्यात्म-जगतके इतिहासमें यह दिन, अर्थात् ३१ मार्च सन् १८४८ शुक्रवार, सोनेके अक्षरोंमें अंकित होकर चिरस्मरणीय हो गया। इस रात्रिकी घटना अध्यात्मविज्ञानके सैकड़ों ग्रन्थोंमें लिखी गई और सैकड़ों हजारों तत्त्वजिज्ञासुओंके हृदयमें उसने पारलौकिक विश्वासकी नींव जमा दी।

सोनेके कुछ ही समयके पश्चात् कैथी और मार्गरेटा दोनों किसीके शीतल हाथका स्पर्श या ऐसा ही और कुछ अनुभव करके एकदम चिल्ला उठीं और माताकी ओर देखकर भीत स्वरसे बोलीं—"माँ, यह देखो, वह फिर यहाँ आगया!" माता उन्हें धमकाने लगी, किन्तु मानों उसी धमकीके उत्तरमें वह नितान्त रहस्यमय टक्-टक् और धप् धप् शब्द दूने जोरके साथ होने लगा। मि॰ फाक्स दूसरे कमरेमें थे। कोलाहल सुनकर शीघ्र ही दौड़े आये और प्रति दिनके समान वायु आदिका बहाना बनाकर उनको समझानेकी चेष्टा करने लगे।

× इस संबंधमें हम Robert Dale owen प्रणीत "Footfalls on the boundary of another world" नामक पुस्तक पढ़नेकी सम्मति देते हैं। इस पुस्तकमें सन् १८४८ ई॰ से बहुत समय पहलेकी विविध आधिभौतिक उपद्रवोंकी अनेक कहानियाँ लिखी हुई हैं।

दोनों कन्याओंमेंसे कैथी छोटी होने पर भी बहुत खिलाड़ी और अतिशय तीव्रबुद्धि थी। उसने धीरेसे अपने हाथकी चुटकी बजाकर उस शब्द करनेवालेको लक्ष्य करके कहा—"अरे ओ वृद्ध विश्लिष्टपद जन्तु, * मैं जैसा शब्द करती हूँ, वैसा ही शब्द तू तो कर।" इसके उत्तरमें तत्काल ही वैसा ही चुटकी-का शब्द हुआ। तब कैथीने माताकी दृष्टि बचा कर अँगूठे और अनामिकाके संयोग-से कई बार और भी एक प्रकारका शब्द किया। प्रत्युत्तरमें इस बार भी ठीक उसी प्रकारका उतना ही मृदु शब्द हुआ। तब कैथीने अपने स्वभाव-सुलभ हर्षसे उत्फुल्ल होकर माताको पुकारकर कहा—"माँ-माँ, यहाँ आकर देख, वह हमें देखता है, हमारी बातें समझता है और समझ-बूझकर उत्तर भी देता है।"

यह सुनकर माता बहुत ही विस्मित हुई। वह कैथीके पास आकर शब्दकारीसे बोली —"अच्छा तुम दस बार शब्द तो करो।" तत्काल ही दस बार शब्द हुआ। "तुम बतला सकते हो कि मेरी बड़ी लड़कीकी इस समय कितनी उमर है?" इसबार बारह बार शब्द हुआ। फिर पूछा—"कैथीकी उमर कितनी है?" नौ बार शब्द हुआ। अब मार्गरेट स्तंभित भावसे गालपर हाथ रखकर सोचने लगी—"यह क्या बात है! आँखोंसे तो कोई दिखता नहीं, फिर यह प्रश्नोंका उत्तर कौन देता है?"

अब मार्गरेटका भय कुछ कम हो गया। उसके हृदयमें कुछ साहस आ गया। क्योंकि जो अपने मनकी बातें समझता है उसे मनुष्य अपने ही समान एक व्यक्ति समझता है और उससे स्वभावतः ही कम डरता है। मार्गरेटने इसी कारण इस बार साहस करके पूछा—"अच्छा तुम बतलाओ, मेरे कितने बाल-बच्चे हैं?" प्रत्युत्तरमें सात शब्द हुए। अब उसने मन-ही-मन सोचा—यह हो चाहे जो, किन्तु इससे भी भूल-चूक हो सकती है। परलोकगत आत्मिक भी निर्भ्रान्त नहीं जान पड़ते। इसी प्रकारकी अनेक बातें सोचकर उसने फिर पूछा—"एक बार अच्छी तरह विचार करके कहो कि क्या मेरे सात ही बाल-बच्चे हैं?" अदृश्य-मूर्तिने सात आघातोंके द्वारा उत्तर दिया—सात। मार्गरेटका हृदय विचलित होने लगा। उसने पूछा—"हमारे क्या ये सातों ही बच्चे जीवित हैं?" इस बार कोई उत्तर नहीं मिला। तब बदलकर प्रश्न किया गया—"हमारे सात बाल-बच्चोंमें इस समय कितने जीवित हैं?" उत्तर मिला—छह। "कितने मर चुके हैं?" उत्तर मिला—एक।

---

* मूलमें है:—"Here, O old splitfoot, &c."

मार्गरेटका एक बच्चा अकालहीमें मर गया था। आज बहुत दिनोंके उपरान्त उसे उसकी याद आगई। उसस्मृतिके सहसा जागरित हो उठनेसे माताके प्राणोंपर एक भारी चोट सी लगी। उसके नेत्रोंमें आँसू भर आये। कुछ क्षणके उपरान्त उसने आँसू पोंछकर पूछा–"क्या तुम मनुष्य हो?" कोई उत्तर नहीं मिला। प्रश्न परिवर्तित करके पूछा–"क्या तुम लोकान्तरित आत्मा हो?" प्रत्युत्तरमें जोर जोरसे तीन बार शब्द हुआ। अब उसने विनयपूर्वक पूछा–"मैं अपने पड़ौसियोंको बुला लाऊँ, तो क्या तुम उनसे भी इसी प्रकार शब्द द्वारा बातचीत करोगे?" इस बार अदृश्य मूर्तिने मानों अत्यंत प्रेमके साथ तीन बार जोरसे शब्द करके अपनी सम्मति प्रकट की। तब जान फाक्स उसी रात्रि-समयमें ही पड़ौसियोंको बुलानेके लिए दौड़ गये।

पड़ौसियोंमेंसे सबसे पहले मिसेस रेड फील्ड आईं। वे विधवा थीं या सधवा, इसका किसी ग्रन्थमें उल्लेख नहीं है। यह समाचार सुनकर वे बेहद हँसी। जो मर गया है वह जीवितके समान संकेत द्वारा बातें कर सकता है, इस पर वे जरा भी विश्वास नहीं कर सकती थीं। हँसते हँसते अधीर होकर आखिर वे मि० फाक्सके घर आईं और मिसेस फाक्सके समान ही अपनी मृत कन्याका सम्वाद पाकर आँसुओंकी धारा बहाने लगीं। वे मन ही-मन कहने लगीं–"हे जगदीश, क्या तुम शोकातुर दुःखिनियोंको एक साथ शिक्षा और सान्त्वना देनेके लिए ही स्वर्गलोकसे इस अभिनव और अद्भुत पद्धतिके द्वारा तार-समाचारके सदृश सम्वाद भेजने लगे हो?"

मिसेस रेड फील्ड जिस समय अपने घर लौटीं उस समय सारा सोता हुआ गाँव जाग उठा था। दलके दल मनुष्य मि० फाक्सके घरकी ओर आ रहे थे। किसीके मनमें कौतुक, किसीके मनमें भय, दो चार शिक्षितोंके मनमें पारलौकिक तत्त्वसम्बन्धी गंभीर प्रश्न और दो चार वैज्ञानिक कहलानेवाले पुरुषोंके मनमें क्रोधका संचार हो रहा था। क्रोधका कारण यह था कि जो बात हमारे विज्ञान-ग्रन्थोंमें नहीं लिखी, वह क्या सत्य हो सकती है? वे जिस जड़जगतको ही एकमात्र वस्तु जानते हैं; उस जड़जगतके ऊपर या भीतर और भी एक सूक्ष्मतर जगत् या उसमें रहनेवाले सूक्ष्म शरीरी जीव हैं, भला यह बात क्या उनकी कल्पनामें ठहर सकती है? अस्तु। उन लोगोंके मनके भाव चाहे जो हों, किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि उस ३१ मार्चकी रात्रिको लगभग ७०–८० स्त्री-पुरुष मि० फाक्सके

घरमें एकत्रित होकर उस अदृश्य शब्दकारीसे प्रश्न करने लगे और संकेतोंके द्वारा अपने अपने प्रश्नोंका यथार्थ उत्तर पाकर आश्चर्य-सागरमें डूबने-उतराने लगे।

जिस समय सब लोग प्रश्नोत्तरोंमें लगे हुए थे, अवसर पाकर मिसेस फाक्स अपने सबसे निकटवर्त्ती पड़ोसी रेड फील्डके घर जाकर विश्राम करने लगीं, और दोनों कन्याओंको उन्होंने एक अन्य भद्रमहिलाके घर भेज दिया। इसी समय डाक्टर ड्यूस्लर (Dr. Dusler) नामक एक विद्वान् पड़ोसीके प्रश्नोत्तरोंसे शब्दकारीकी अत्यंत भयावह और दुःखजनक मृत्यु-कहानी प्रकट हो गई। अर्थात् पूर्वोक्त प्रश्नोत्तर-पद्धतिके द्वारा मालूम हुआ कि—

शब्दकारी एक दुःख-दग्ध आत्मा है। वह पेड्लर (Pedler) अर्थात् फेरी-वाला था। वह गाँव गाँव घूम कर बड़े आदमियोंमें नाना प्रकारके वस्त्र और भले घरोंकी स्त्रियोंमें नाना प्रकारके आभूषण बेचकर खूब द्रव्य कमाता था।

चार पाँच वर्ष हुए, वह एक दिन मंगलवारको दोपहरके कुछ पहले इसी घरमें आकर उपस्थित हुआ। उस समय इस घरमें जान सी. बेल (John C. Bell) नामक एक बलिष्ठ लुहार अपनी स्त्री और एक लुकिशिया पालवर नामक पन्द्रह सोलह वर्षकी लड़कीके साथ रहता था। लड़की एक दुःखी किन्तु अच्छे खान्दान की थी। वह इस घरमें रहकर समीपवर्त्ती कन्या-पाठशालामें साधारण लिखना-पढ़ना सीखा करती थी और मि० बेल तथा उनकी पत्नीकी परिचर्य्या करके भोजन-वस्त्र पाया करती थी।

फेरीवाला जिस दिन इस घरमें आया, उस दिन उसके पास ३०० डालर या एक हजार रुपयेके लगभग रकम थी। यह रकम उसने मि० बेलके पास रख दी, उनका आतिथ्य ग्रहण किया और फिर उसने अपने पासकी समस्त वस्तुयें एक एक करके उन्हें दिखलाईं—उनमें बहुमूल्य वस्तुयें भी कई थीं।

फेरीवालेके भोजनादि कर लेनेके पश्चात् मि० बेल अपनी स्त्रीके साथ एक एकान्त घरमें लगभग एक घंटे तक न जाने क्या कानाफूसी करते रहे। इसके बाद उन्होंने बाहर आकर बालिकासे कहा—‘आज अब कोई काम नहीं है।’ बालिका चली गई। कुछ समयके उपरान्त बेलकी स्त्री भी किसी कामके बहाने अपने किसी मित्रके घर चली गई और जाते समय पतिसे कह गई—“शायद आज मैं वापिस न आ सकूँगी।” इसतरह घरके तीन आदमियोंमेंसे उस दिन अकेला बेल ही घर रह गया।

संध्या होने पर मि० बेल और फेरीवालेने एक साथ बैठकर भोजन किया। कुछ समय तक दोनों एक जगह बैठे बैठे बातचीत करते रहे। अंतमें दोनों जनें दो भिन्न भिन्न कमरोंमें जाकर सो रहे। घरके आसपास खेत थे। सबसे समीपी पड़ौसी-का घर भी वहाँसे इतनी दूर था कि सैकड़ों आवाजें लगाने पर भी वहाँ तक खबर नहीं पहुँच सकती थी। रात्रि गंभीर थी—संभवतः बारह बजे होंगे। बाहर सन्-सन् करके हवा चल रही थी। इसी समय फेरीवालेने अपने गलेपर किसी तेज हथियारके चलनेका अनुभव करके चिल्लानेकी चेष्टा की, किन्तु वह चिल्ला नहीं सका। उसी क्षण उसे मालूम हुआ कि इस पृथ्वी और पार्थिव देहसे सदैवके लिए मेरा संबंध टूट गया। उसके पास जो कुछ रुपये-पैसे थे, उन्हींके लोभमें पड़कर निष्ठुर बेलने यह भयंकर दुष्कृत्य कर डाला।

डाक्टर ड्यूस्लरने अपने आश्चर्यजनक बुद्धि-कौशलसे एक अँगरेजी वर्णमाला संकलित की और वर्णमालाका एक एक अक्षर उच्चारण करके तीन शब्दोंमें 'हाँ' और एक शब्दमें 'न' इस व्यवस्थासे शब्दकारीके मनकी और भी कई बातें जान लीं। शब्दकारीने बतलाया कि पृथ्वीपर मेरा नाम चार्ल्स बी. रज्मा था। हत्या होनेके दिनसे वह उसी मकानमें रहता है। उसकी मृतदेह तलघरेके नीचे टुकड़े टुकड़े होकर गड़ी है। वह उसी देहके आकर्षणसे कभी तलघरेके ऊपर, कभी छतपर और कभी चारों ओर टहलता हुआ अपने अतीत जीवनके भ्रम और प्रमादवश हुए अनेक दुष्कृत्योंके लिए अनुताप और परमात्मासे प्रार्थना करता हुआ कालयापन किया करता है। पहले हत्या करनेवाले पर उसका भयंकर क्रोध था, परंतु अब उसके हृदयका वह क्रोध मिट गया है। अब क्रोधके बदले उसके हृदयमें दयाका संचार हो गया है। कारण कि अब वह अच्छी तरह जानने लगा है कि इस देहको छोड़नेके बाद हत्यारेको अत्यंत दुःसह कष्ट सहन करना होगा। उस कष्टकी कल्पना करनेसे उसके हृदयमें स्वभावतः दया और क्षमाका उद्रेक हो आता है।

कुछ समयके पश्चात् और भी दो एक देशप्रसिद्ध परिचित व्यक्तियोंकी आत्मायें रज्माकी साथिन बन गईं। तब ड्यूस्लर और अन्यान्य विद्वानोंके पूछने पर यह भी विदित हुआ कि रज्मा अपनी इच्छासे नहीं किन्तु; महात्मा फ्रेंकलिन आदि अनेक मुक्त और सत्कार्यपरायण आत्मिकोंके शासनसे

वह इस घरमें नाना प्रकारके उपद्रव किया करता था । जिस प्रकार निद्रित मनुष्यको जगानेके लिए उसके कुटुम्बी जन नाना प्रकारके शब्द करते हैं—उपद्रव करते हैं, उसी प्रकार मोहनिद्रामें सोये हुए मनुष्य-जगतको जागरित करनेके लिए देवगण रज्माके समान निम्नश्रेणिस्थ आत्मिकोंको शब्दादि द्वारा उपद्रव करनेका आदेश देते हैं । उक्त शाब्दिक उपद्रवका जो सुफल हुआ उसका प्रत्यक्ष प्रमाण, इतने प्रतिष्ठित स्त्री-पुरुषोंका एक घरमें एकत्रित होना और उनके मनमें पारलौकिक तत्त्व जाननेकी व्याकुलता बढ़ना है । जिन लोगोंने अपनी सुशिक्षा, चित्तकी शुद्धता, शुद्धज्ञान और साधु-जीवनके स्वाभाविक परिणामसे सूक्ष्माति-सूक्ष्म देह धारण करके अध्यात्म-जगतके उर्द्ध्वधाममें स्थान पाया है, वे पृथ्वीके स्थूलशरीर जीवों और स्थूलप्रकृति जड़ पदार्थों पर कार्य करनेका—उनको साव-धान करने आदिका—सुभीता नहीं पा सकते हैं । इसीकारण वे लोग निम्नश्रेणिस्थ आत्मिकोंकी सहायता लेते हैं और ऐसे निम्नश्रेणिस्थ आत्मिक भी इसप्रकार सहायता करते करते उन्नतिके मार्गपर पहुँच जाते हैं ।

प्रश्नोत्तरसे यह भी मालूम हुआ कि समस्त मनुष्योंके शरीरमें—अल्प या अधिक परिमाणमें—एक ऐसी अद्भुत शक्ति है कि जिसके सहारे अथवा आकर्षणसे सूक्ष्म-शरीरी आत्मिक जड़जगतपर काम करनेमें समर्थ होते हैं । रज्माने इसके पहले इस घरके पूर्व अधिवासियोंको भी शब्दद्वारा अपने अस्तित्वका परिचय दिया था । एक दिन बेलकी स्त्री उसकी छायामूर्तिको देखकर बहुत ही डर गई थी और इसी भयके कारण उसने इस घरका रहना छोड़ दिया था । किन्तु फाक्सकी स्त्री मार्गरेटमें और उसकी दोनों बालिकाओंमें—विशेषकर छोटी बालिका कैथीमें—उक्त प्रकारकी आकर्षणी शक्ति (Magnetism) अधिक थी । इसीलिए, रज्मा उनकी उस आकर्षणी शक्तिकी सहायतासे नानाप्रकारके शब्द कर सका था और उन्हें जगा सका था । रज्मा कभी कभी अति अल्प जड़परमाणुओंके द्वारा अपने सूक्ष्म शरीरको ढँककर कैथीके शरीर पर हाथ फिराता था और उसकी बड़ी बहनके शरीरका भी स्पर्श करता था ।

इस वार्तालापकी समाप्तिके समय रज्मा और उसके तत्कालीन सहायक आत्मिकोंने कहा कि, फ्रेंकलिन आदि देवात्माओंके समयकी अनुकूलता देखकर पृथ्वीके साथ परलोकका घनिष्ठतर सम्बन्ध स्थापित करनेके लिए दत्तचित्त होकर

कार्य करना प्रारंभ कर दिया है। इस समय हाइड्स विल नामक गृहमें जो पारलौकिक तत्त्व प्रकट हुआ है, थोड़े ही समयमें वह अमेरिकाके बड़े बड़े ग्रामों और नगरोंमें और भी श्रेष्ठ पद्धतिसे और विस्तृतरूपसे प्रकाशित होगा। कैथी जैसी अच्छी मिडियम (Medium) अथवा माध्यमिक है, वैसी ही बल्कि उससे भी अधिक शक्तिसम्पन्न मिडियमें अमेरिकाके अनेक घरोंमें मौजूद हैं। वे सब देवात्माओंके प्रयत्नसे और भी अच्छी मिडियमें बनकर सैकड़ों-हजारों व्यक्तियोंके मनमें जागृति और विस्मय उत्पन्न करेंगी और तब यूरोप तथा अमेरिकाके अनेक स्थानोंमें परलोक और परलोकगत आत्माओंके अस्तित्व-सम्बन्धी महासत्यका थोड़े ही दिनोंमें यथेष्ठ प्रचार हो जायगा।

पाठकोंको स्मरण है कि ३१ मार्च शुक्रवारकी रात्रिको हाइड्स्-विल-गृहमें ७०-८० आदमियोंका जमाव हुआ था, और उनमेंसे अनेक लोग सारी रात उसी गृहमें रहे थे। उसके दूसरे ही दिनसे अर्थात् पहली अप्रेलसे वहाँ लोगोंकी अपार भीड़ होने लगी। निकटवर्त्ती ग्रामों और नगरोंसे सहस्रों मनुष्य, तीर्थयात्रियोंके समान दलबद्ध होकर हाइडस् विलकी ओर आने लगे। कोई घोड़ों पर, कोई ताँगोंपर और कोई गाड़ियों पर सवार होकर, तथा कोई कोई पैदल ही मि० फाक्सके घरकी ओर जाते हुए दिखाई देते थे। अनेक लोग कहते थे कि यह विचित्र व्यापार मि० फाक्सकी स्त्री और उनकी दोनों कन्याओंकी चतुराईके सिवा और कुछ नहीं है। इसका सत्यसे कोई सम्बन्ध नहीं है। जो लोग कुछ समझदार थे वे इस विषयकी कठोर परीक्षा करनेको उद्यत हुए। इसके लिए कमेटियों पर कमेटियाँ बैठने लगीं। कमेटियोंके सभ्योंमें कोई बैरिस्टर, कोई जज, कोई वैज्ञानिक और कोई होशियार कारीगर थे। उन्होंने परीक्षाकी कठोरतामें कुछ भी कसर नहीं रक्खी। जादूगरोंकी चालाकियाँ पकड़नेके लिए जो जो उपाय निकले हैं, उन सबका अवलम्बन किया गया—एक भी उपाय ऐसा न रहा जो उस समय वहाँ पर न आजमाया गया हो। किन्तु डाक्टर ड्यूस्लरने सबसे पहले अँगरेजी वर्णमालाकी सहायतासे शब्दकारी—सूक्ष्मशरीरी—से जो कुछ जाना था, कमेटियोंके सभ्योंने भी आखिर वही ठहराया—वही निश्चित किया। वे लोग इस बातको प्रत्यक्ष सत्यके समान जानकर चुपचाप अपने अपने घर चले गये कि मनुष्य-चक्षुओंकी दृष्टिमें न आनेवाले ऊर्द्धस्थित आकाशमें, एक परलोक नामका

सुविस्तृत स्थान है, जो सूक्ष्मपदार्थरचित और एक तह पर दूसरी तह और उस पर तीसरी तह, इस तरह, क्रमसे गठित है। इसी स्थानमें अथवा पारलौकिक जगतमें लोकान्तरित व्यक्ति सूक्ष्मदेह प्राप्त होने पर अपने अपने कर्म-फलोंके अनुसार सुख अथवा दुःखमें जीवन व्यतीत करते हैं। * जो लोग सदाचारी सज्जन थे वे इस गवेषणासे प्रसन्न हुए और जो धन, मान और ज्ञान-विज्ञानमें समाजके शीर्षस्थानीय होने पर भी वास्तवमें दुष्कर्मा और दुश्चरित्र थे, वे अपने अपने दुराचरणों और दुष्कर्मोंका परिणाम सोचकर अत्यन्त चिन्तित हुए—उनके चित्तों पर बड़ी कड़ी चोट लगी। किन्तु सत्य सबके लिए सत्य है। सत्यको कौन ढँक सकता है? सत्यकी गति रोकनेमें कौन समर्थ है?

देखते देखते २० वर्ष बीत गये। इन बीस वर्षोंके भीतर अमेरिकाके विशाल संयुक्तराज्यमें यह अध्यात्मवाद सब जगह अभ्रान्त विज्ञानके समान सत्य माना जाने लगा है ×। बोस्टन, न्यूयार्क आदि समस्त प्रसिद्ध नगरोंमें अध्यात्मतत्त्वकी विजय-पताका उड़ रही है और अनेक प्रदेशों और नगरोंमें सभायें प्रतिष्ठित हो गई हैं। जिन लोगोंने प्रचार-व्रत ग्रहण किया है उनके प्रयत्नसे दुःखी, दरिद्री और अशिक्षितोंमें भी अध्यात्मतत्त्वका प्राणोंको शीतल करनेवाला संदेश पहुँचा है। अनेक जड़वादी नास्तिक भी अपनी आँखोंसे छायामूर्तियोंके दर्शन करके, कानोंसे उनकी बातें सुनकर, और अन्यान्य कई साधनोंसे उनका साक्षात्कार करके, भक्तिभाव-

---

* अनुसंधानप्रिय पाठक निम्नलिखित ग्रन्थोंको संग्रह करके पढ़ेंगे तो इस घटनाके विषयमें विशेष समझ सकेंगे;—

1. Report of the Mysterious noise's at Hydesvill.
2, Modern spiritualism; its facts and fanaticisms, by E. W. capron, Boston, 1855.
3. The missing link in modern spiritualism, by A. leah Under hill.
4. Foot–falls on the Boundary of Ano there world by the Hon'ble Robert Dale owen.

× पाठक इस प्रसंगपर एमा हार्डिंग नामकी जगत्प्रसिद्ध लेखिकाके Modern American spiritualism— a Twenty years' Record of the Communion between Earth and world of spirits नामक सुप्रसिद्ध और बृहत् ग्रन्थको पढ़कर बहुत ही विस्मित और उपकृत होंगे।

पूर्वक दोनों हाथ जोड़कर परमेश्वरको प्रणाम करने लगे हैं। किसी भी धर्म पर जिन लोगोंको आस्था नहीं थी और जो धर्म-कर्मके नामसे हाथ धो बैठे थे, उन लोगोंने भी भक्तिके उच्छ्वाससे आँखोंमें आँसू भरकर उपासनाकी आवश्यकता स्वीकार की है। कहनेका तात्पर्य यह है कि अध्यात्म-तत्त्वके प्रथम प्रचारके समय अमेरिकाके जो असंख्य धर्मयाजक और निरीश्वरवादी इस वैज्ञानिक तत्त्वके घोर विद्वेषी थे, उनकी विद्वेषजनित परिहास-प्रवृत्तिने आज इस प्रत्यक्ष सत्यके सामने अपना माथा झुका दिया है। सुप्रीम कोर्टके प्रधान जज जार्ज एडमण्ड, वैज्ञानिकाग्रगण्य प्रोफेसर रावर्ट हेयर और जेम्स मेप्स एल. एल. डी. आदि प्रतिष्ठित व्यक्तियोंने वैज्ञानिक पद्धतिके अनुसार अंतिम परीक्षा करके जब अपने मनमें यह दृढ़ विश्वास कर लिया कि, मनुष्य मृत्युके पश्चात् बाष्पमें नहीं मिल जाता, किन्तु हाथ, पाँव, आँख, कान, नाक, हृदय, मस्तक आदि सब अवयवोंमें ठीक मनुष्यके समान आकृति और प्रकृतियुक्त सूक्ष्मशरीर धारण करके सूक्ष्मजगतमें निवास करता है और उस जगतके नियमानुसार इस पार्थिव जगतमें आवागमन करके अनेक कार्य करनेकी क्षमता रखता है; तब अन्यान्य सहस्रों मनुष्योंने भी उक्त महापुरुषोंकी बात स्वीकार कर ली।

थोड़े ही दिनोंके पश्चात् अमेरिकाकी यह तरंग, प्रबल पूरके रूपमें आकर सारे यूरोपमें फैल गई। जब डिडिहोम आदि इतिहास-प्रसिद्ध और असाधारणशक्ति-सम्पन्न मिडियमें इंग्लैण्ड आई, तब सर विलियम क्रूक्स तथा डाक्टर वालेस आदि शिल्पविज्ञान-शिरोमणि पंडितोंमेंसे किसीने पाँच वर्ष तक, किसीने पन्द्रह वर्ष तक और किसी किसीने इससे भी अधिक काल तक इस तत्त्वकी परीक्षायें कीं और अन्तमें संसारके समक्ष अपना निःसंशय मत प्रकट कर दिया। इस तरह इंग्लैंड, स्काटलैंड और आयर्लैंड, इन तीनों देशोंके प्रख्यात प्रख्यात पंडित अध्यात्मतत्त्वके विश्वासी बन गये। इसके बाद फ्रांस, जर्मनी, रूस और इटली आदि देशोंके वैज्ञानिकोंमेंसे केमिल फ्लामारियन, ज़ल्नर और डाक्टर फ्रीजी आदि* विद्वान् भी इस महासत्यकी साक्षी देनेके लिए जनताके सामने उपस्थित हुए।

* इनमेंसे प्रत्येकने बड़े बड़े ग्रन्थोंकी रचना करके अपना अपना विश्वास प्रकट किया है और इस नवीन प्रकाशको प्राप्त करनेकी सम्मति दी है। ये सब ग्रन्थ भी पढ़ने योग्य हैं।

उक्त सभी विद्वानोंने एकवाक्यसे प्रचार किया कि परलोक प्रत्यक्ष सत्य है और जो लोग इस पार्थिव जगतको छोड़कर जाते हैं वे ही वहाँके सूक्ष्मशरीरी निवासी होते हैं । उनमेंसे कोई देवता, कोई अपदेवता और कोई कोई इन दोनोंके मध्यवर्त्ती अनुताप-दग्ध और मोक्षाभिलाषी आत्मिक होते हैं ।

जिस प्रकार विद्युत विधाताकी प्राचीन सृष्टि और जगतकी चिरप्राचीन वस्तु है, परलोक भी उसी प्रकार विधाताकी प्राचीन सृष्टि और जगतकी चिरप्राचीन वस्तु है । किन्तु मनुष्यका विद्युतके विविध तत्त्वोंके साथ वैज्ञानिक परिचय जैसा अल्पकालीन है, उसी प्रकार पारलौकिक तत्त्वका वैज्ञानिक इतिहास भी अल्पकालीन है । जिस समय पृथ्वीकी सृष्टि हुई उसी समय विद्युतकी सृष्टि हुई, इसी प्रकार जिस समय इस पार्थिव जगतकी सृष्टि हुई उसी समयसे पारलौकिक जगत भी विद्यमान है । संसारकी जो असभ्य जातियाँ विद्युत्तत्त्वको नहीं जानतीं, वे भी जिस तरह विद्युतके स्पर्शसे अपनी रक्षा करनेके लिए अनेक उपाय करती हैं, उसी प्रकार जो असभ्य जातियाँ पारलौकिक तत्त्वके प्रकृत मर्मको नहीं जानतीं, वे भी प्राणोंकी किसी अज्ञात उत्तेजनासे पारलौकिक सत्य पर विश्वास करनेके लिए बाध्य होकर परलोकगत माता-पिता और बन्धुजनोंकी पूजा करती हैं । यह कहनेकी आवश्यकता नहीं है कि जो जाति जितनी सुसभ्य और समुन्नत होती है, पारलौकिक तत्त्व पर उसका उतना ही अधिक विश्वास होता है और धर्मजीवनके साथ उसका उतना ही अधिक सम्पर्क होता है ।

इस संक्षिप्त इतिहासके प्रारंभ हीमें कहा गया है कि भारतवर्षके प्राचीन हिन्दू अति प्राचीन कालसे इस तत्त्वपर प्रगाढ़ विश्वास रखते थे । जो लोग हिन्दुओंसे तनिक भी परिचित हैं वे जानते हैं कि हिन्दुओंके वेद, उपनिषद् और पुराण इसी तत्त्वकी कथाओंसे परिपूर्ण हैं । हिन्दूलोग स्वर्गगत पितरोंकी पूजा किये बिना अपने छोटे छोटे बच्चोंके मुँहमें ग्रास भी नहीं देते और पितरोंको अग्रभाग दिये बिना कभी किसी नवीन अन्न या वस्तुको ग्रहण नहीं करते । उनके श्राद्ध और पार्वणादि कार्य वस्तुतः पितृपुरुषोंकी पूजाके निमित्त ही होते हैं । हिन्दुओंके धर्म-ग्रन्थोंमें पारलौकिक जगतके एक पवित्र धामका नाम पितृलोक है और जो लोग भक्तिपूर्वक परलोकगत माता-पिताकी पूजा करते हैं वे पितृव्रत कहलाते हैं । श्रीमद्भगवद्गीतामें लिखा है—" पितॄन् यान्ति पितृव्रताः " ।

हिन्दुओंके धर्म-ग्रन्थोंके अतिरिक्त बाइबल, कुरान और जेन्दावस्ता आदि ग्रन्थोंमें भी परलोक और परलोकवासियोंकी विस्तृत चर्चा है। कारण कि, जिस धर्ममें परलोक नहीं, वह धर्म ही कैसा? जिस धर्ममें परलोक नहीं, उस निरीश्वर और निरालम्ब धर्मका माहात्म्य ही क्या? परलोक-तत्त्वका जगद्व्यापी प्रचार ३१ मार्च सन् १८४८ से हुआ। उस दिनसे आज पर्यंत जिस विराट् अध्यात्म साहित्यकी सृष्टि हुई है उसमें लगभग एक सहस्र वैज्ञानिकोंकी और बीस सहस्र प्रसिद्ध प्रसिद्ध विद्वानों तथा पंडितोंकी किसी न किसी प्रकारके प्रत्यक्षदर्शनकी साक्षियाँ लिखी गई हैं। इस विराट् साहित्यके एक अंशका नाम Philosophy of Apparitions अर्थात् छाया-दर्शन है। इस साहित्यमें अनेक छाया-मूर्तियोंके दर्शन देनेका, उनके सुख-दुःख प्रकट करनेका और पारलौकिक जीवनसम्बन्धी बातोंके प्रकाशित करनेका उल्लेख है।

जिन घटनाओंके सम्बन्धमें अनेक ग्रन्थोंकी और अनेक ईश्वरपरायण सज्जनोंकी साक्षियाँ हैं, हमने केवल उन्हींमेंसे थोड़ी सी घटनाओंको विशेष सावधानीके साथ संग्रह करके इस ग्रन्थकी रचना की है। इस ग्रन्थके पढ़नेसे यदि भारतवर्षका एक भी नास्तिक ईश्वरकी अपार करुणा और पारलौकिक जगतकी सत्यताकी ओर आकर्षित हुआ, तो हम समझेंगे कि हमारा परिश्रम सफल हुआ।

पारलौकिक तत्त्व, इस समय शिक्षित जगतमें अध्यात्म-विज्ञान, अध्यात्म-दर्शन या अध्यात्म-धर्मके नामसे परिचित है। इंग्लैंडके विलियम स्टेण्टन आदि लोकमान्य पंडित, और सूक्ष्मानुसंधान-निपुण अनेक मिडियमें सम्मुखस्थ देवात्माओंको प्रत्यक्ष करके उनके प्रसादसे जो धर्मसम्बन्धी उपदेश उपलब्ध कर सकी हैं उनका सारतत्त्व ही अध्यात्म-धर्म है। अध्यात्म-धर्मकी बातें सुनने, समझनेमें बहुत ही सुगम और संक्षिप्त होने पर भी, अनुष्ठानमें कठिन हैं। इस स्थल पर हम इस सारतत्त्वकी समस्त बातें सूत्ररूपसे लिखकर इस निबंधको समाप्त करते हैं।

१ इस जगतके कारण और कर्ता जगज्जीवन जगदीश्वर हैं। वे एक, अद्वितीय सनातन और अनन्त हैं। वे अनन्त ज्ञान, अनन्त शक्ति, सर्वाश्रय, सर्वव्यापी और परमात्मा हैं*। वे प्रेम-करुणाके अपार और अतल समुद्र हैं।

---

* अध्यात्म-धर्मकी ये बातें ठीक उपनिषदोंकी सी लगती हैं। जैसा, श्वेताश्वतरीय उपनिषदमें लिखा है,—

" एको देवः सर्वभूतेषु गूढः, सर्वव्यापि, सर्वभूतोन्तरात्मा,
कर्म्माध्यक्षः, सर्वभूताधिवासः, साक्षी चेताः केवलो निर्गुणश्च। "

२ जीव कीटानुकीटसे क्रम-क्रमसे उन्नत होकर इस जड़जगतमें मनुष्यरूपसे उत्पन्न होता है। जड़देह त्यागनेके पश्चात् वह इन चर्मचक्षुओंसे न दिखाई देनेवाले अध्यात्म-जगतमें सूक्ष्म शरीर धारण करता है और वहाँ क्रमविकाशके नियमानुसार अनंत कालतक उन्नति करता रहता है। यह उन्नति सर्वजन-लभ्य और सीमारहित है। जो आज अत्यंत निष्ठुर, पापिष्ठ, परपीड़क, विश्वासघातक तथा परस्वापहारक हैं, वे अध्यात्मजगतमें बहुत समय तक अनुतापकी अग्निमें जलकर उच्चश्रेणीका देवत्व लाभ करेंगे और देवभोग्य सुख-सम्पत्तिके अधिकारी होकर जगदीश्वरको धन्यवाद देंगे।

३ मनुष्य इस लोकमें मनके अत्यन्त गुप्त प्रदेशमें भला या बुरा, पवित्र अथवा अपवित्र जो कोई भाव पोषण करते हैं, मुखसे सत्य अथवा असत्य, कठोर किंवा मधुर जो शब्द उच्चारण करते हैं, और जीवनके प्रति मुहूर्तमें जिन कर्मोंका अनुष्ठान करते हैं, उन सबकी आकृति अध्यात्म-जगतमें निरन्तर ही अङ्कित होती रहती है। जब वे परलोक जाते हैं तब अपने कर्मपटको देखकर उसके अनुसार सुखसे शीतल अथवा दुःखसे दग्ध हुआ करते हैं। किन्तु पतितपावन, अधमतारण परमात्माकी कृपासे वह दुःख अनन्तस्थायी नहीं होता। मनुष्य जब दुःखरूपी अग्निमें तपकर शुद्ध हो जाता है, तब वह धीरे धीरे नवजीवन प्राप्तकरके उच्चतर धाममें स्थान पाता है। इससे जाना जाता है कि चरित्रकी निर्मलता ही मुक्तिका सोपान है। जो लोग बुद्धि-विपाकसे नास्तिक होकर भी सरलचित्त, शुद्ध, सत्यपरायण, सच्चरित्र और सर्वजन-हितैषी हैं, वे दुश्चरित्र और दुराचारी आस्तिकोंकी अपेक्षा वहाँ अधिकार आदरणीय होते हैं।

४ सांसारिक धन-सम्पत्ति और विषय-वैभव केवल भोगकी वस्तुयें नहीं हैं। लोगोंके उपकारमें लगनेमें ही इन सबकी सार्थकता है। जो लोग इस बातको भूलकर अपने धन-वैभवका और प्रतिभाका दुरुपयोग करते हैं, और अपनी शक्तिके अनुसार दीनदुखियोंका उपकार न करके स्वार्थपरताके गहरे गढ़ेमें डूबे रहते हैं, वे संसारमें सम्राटके सिंहासनपर विराजमान रहने पर भी, परलोकमें जाकर कल्पनातीत दुःख और दुर्गतिको प्राप्त होते हैं।

५ परलोक, सूक्ष्मतर परमाणुओंसे रचित, सुविस्तृत पृथ्वीके समान, और उसके अधिवासी सूक्ष्मतर परमाणुओंसे गठित सर्वांगसम्पन्न मनुष्यके समान हैं। वहाँ

ग्राम नगर, उद्यान उपवन, नदी पर्वत आदि सर्व प्रकारके दृश्य हैं। वहाँ मनुष्य अपने कर्मफलके अनुसार सुन्दर अथवा कुत्सित, शीतल अथवा सन्तापयुक्त, सुगंध अथवा दुर्गंधयुक्त शरीर पाकर अपने योग्य स्थान और संसर्गको प्राप्त होते हैं। किन्तु मनुष्य कितना ही पतित और दुर्दशाग्रस्त क्यों न हो जाय, वहाँ जाकर अनुताप और क्षमा-प्रार्थना द्वारा क्रमक्रमसे सद्गति अवश्य प्राप्त कर लेता है।

६ ईश्वरमें अंतःकरणपूर्वक भक्ति, मनुष्यमात्रसे प्रेम, पिता माता और गुरुजनोंकी सेवा, उपकारी जनोंके प्रति कृतज्ञता, कर्त्तव्य-पालन, चित्त और चरित्रकी शुद्धि-साधना, सब प्रयत्नोंसे सत्यकी रक्षा और अपने स्वभावप्रेरित सत्कार्योंका सम्पादन--यही जीवके नित्य-धर्म हैं।

७ मनुष्यमात्रको ईश्वरमें तद्गतचित्त, भक्ति-प्रीति-कृतज्ञतायुक्त, विनम्र, न्याय-परायण, महत्, स्नेह-करुणालु, कोमल, साधु, सत्यनिष्ठ, परहितपरायण और सच्चरित्र होना चाहिए। अन्यथा देवात्मा उसके प्रति आकृष्ट नहीं होते।

८ जो लोग संसारमें लोभ, लालसा अथवा किसी निकृष्ट प्रवृत्तिकी उत्तेजनासे दूसरोंका अनिष्ट, अपमान अथवा धर्मनाश करते हैं, वे परलोकमें जाकर देवात्माओंके शासनसे उन अपमानित अथवा क्षतिग्रस्त व्यक्तियोंके निकट अत्यंत कातरता और दीनमुद्रासे क्षमाप्रार्थना करने पर बाध्य होते हैं। जब तक वे क्षमा-प्रार्थना नहीं करते, तब तक उनके पापोंका प्रायश्चित्त नहीं होता और न वे उन्नति लाभ करके उच्चपद पा सकते हैं। इस विषयमें देवताओंका न्याय बहुत कठोर है।

९ जो लोग मृत्युके पश्चात् अपने कर्मफलके अपरिहार्य्य परिणामसे प्रेत, पिशाच या अन्य किसी अपदेवताकी अत्यंत सन्तापजनक देह पाकर, साधु पुरुषोंसे दूर अंधकारमें रहते या पृथ्वीके किसी घृणाजनक अपवित्र स्थानमें छिपे रहकर मनुष्योंके अपकार करनेका सुयोग खोजते रहते हैं, वे भी समय पर अतिभयंकर शासनके अधीन होकर सत्पथपर चलनेके लिए बाध्य होते हैं। उनकी भी अंतमें मुक्ति और कल्पनातीत उन्नति होती है। किन्तु मुक्ति या उन्नति प्राप्त करनेके पहले वे, अग्निमें जलते हुए स्वर्णके समान, पापाग्निमें, दीर्घकालतक अत्यंत शोचनीय अवस्थामें जलते रहते हैं।

छाया-दर्शन ।



अवतरणिका ।



श्रीरामचन्द्रकी अलौकिक शक्तिको देखकर रावणने दुःख और विस्मयके साथ कहा था—" इन नर-वानरोंकी लीला समझमें नहीं आती है । ये कैसे प्रबल वैरी हैं कि मरकर भी नहीं मरते ! "

रावण रोमरोमसे हिन्दू-विद्वेषी था,—प्राचीन हिन्दू अर्थात् आर्य्यजातिके ऋषि-तपस्वियोंके आचरणोंसे और धर्म तथा नीति आदि समस्त बातोंसे उसे घोर विद्वेष था । इसी कारण वह हिन्दुओंके परम आराध्य, दयाधर्मके अवतार, सरलप्रकृति श्रीरामचन्द्रकी कर्म्मनीतिका प्रकृत मर्म नहीं समझ सका । रामचन्द्र मरकर भी क्यों नहीं मरते, इसका सुगंभीर सूक्ष्म तत्त्व उसकी पापकलुषित स्थूल-बुद्धिमें नहीं समाया । वर्तमान समयमें भी जो लोग हिन्दूधर्मके सारभूत परम सत्य और सर्वजन-हितैषिणी हिन्दू सभ्यताके हृदयसे विद्वेषी हैं वे भी अनेक विषयोंमें रावणकी सी अवस्थाको प्राप्त हैं । वे यह कहकर बहुत कालसे विलाप और परिताप करते

आ रहे हैं कि हिन्दुओंका यह सैकड़ों शाखा-प्रशाखाओंमें फैला हुआ धर्म और हिन्दुओंकी यह शीतल-शांत सभ्यता मरकर भी क्यों नहीं मरती ? वे नहीं जानते कि जगद्गुरु हिन्दू, पृथ्वीकी तुच्छ पार्थिव सुख-सम्पत्तिके विषयमें कुछ उदासीन रहने पर भी मानव समाजमें आध्यात्मिक सम्पत्तिमें सबसे बढ़े चढ़े हैं। हिन्दू धर्म और हिन्दू सभ्यता— दोनों अचल पर्वतकी नींव पर अत्यंत दृढ़भावसे प्रतिष्ठित हैं। अतएव हिन्दू धर्म और हिन्दू सभ्यता किसी कालमें विनष्ट नहीं हो सकती— उसका विनाश होना असंभव है।

हिन्दूजाति, जातीय जीवनके प्रथम उन्मेषसे लेकर अब तक पर-लोकगत माता-पिताकी स्वर्गशांति-कामनासे यथाविधि श्राद्ध-तर्पणादि कार्य किया करती है। जब मैं छोटी उमरका बालक था, तब अँगरेजी पढ़े-लिखे बहुसंख्यक युवकों तथा बूढ़ोंके मुँहसे श्राद्ध-तर्पण आदिके विषयमें नानाप्रकारके मजाक सुना करता था और उनका उत्तर न दे सकनेके कारण मन-ही-मन अत्यंत दुखी हुआ करता था। जो अँगरेजीके दो चार अक्षर पढ़ लेता वही घृणाके साथ नाक-भौंह सिकोड़कर श्राद्धतर्पण आदिके नाम पर गालियोंकी वर्षा करने लगता था। वे लोग यह कहकर विद्वेष तथा विरक्ति प्रकट किया करते थे कि मृतपुरुष क्या तुम्हारे इस मंत्रकी मिनमिनाटको सुननेके लिए स्वर्गसे लौट आते हैं ? मैं उस समय अशिक्षित बालक था। बड़े बड़े विद्वानोंके मुँहसे ऐसी ऐसी बातें सुनकर मैं मरा जाता था; मैं मन-ही-मन सोचा करता था—हाय! क्या हिन्दूजातिके सभी सत्कर्म पाप और अधर्म हैं ? क्या हिन्दू नाम किसी दिन इस पृथ्वीपरसे लुप्त हो जायगा ?

यह अबसे कोई ५० वर्षसे पहलेकी बात है। उस समयके मनुष्योंमेंसे इस समय जो कर्मक्षेत्रमें उपस्थित हैं वे सब इन बातोंकी साक्षी दे सकते हैं। हिन्दूसभ्यताके ऊपर जिस समय अँगरेजी पढ़े-लिखे लोगोंकी इस

प्रकार अश्रद्धा हो रही थी, उसी समय विलायतसे समाचार आया कि यूरोपके प्रत्यक्षवादी प्रसिद्ध वैज्ञानिक विद्वान् आगस्ट कॉम्टीने अपनी स्वर्गगत प्रणयिनीके हेतु श्राद्ध-सदृश एक अनुष्ठान किया है। इस समाचारको सुनते ही अनेक शिक्षित युवक श्राद्ध-तर्पण आदिका तत्त्व खोजनेके लिए व्यग्र हो उठे—अनेक लोगोंने तो सच्ची श्रद्धाके साथ अपने माता पिताका श्राद्ध करना प्रारंभ भी कर दिया! देशके लिए यह सौभाग्यकी बात है कि इस समय भारतवर्षके प्रायः सभी शिक्षित और अशिक्षित पुरुष सुपवित्र श्राद्ध-तर्पणादिके अनुरागी हैं।

हिन्दूधर्मके जिन सब तत्त्वोंके साथ श्राद्ध-तर्पणका गहरा संबंध है, उनमेंसे दो एक बातोंका हम इस जगह वर्णन करते हैं।

मनुष्य सांसारिक सुख-लालसा और पाशवी प्रवृत्तिकी दुर्निवार पिपासासे कितना ही आत्मविस्मृत क्यों न रहे, किन्तु मृत्युचिन्ता उसके मनके एक भागको सदैव दबाये रहती है। कारण, जो थे वे चले गये—यही संसारका सम्वाद है। जो इस समय हैं वे भविष्यमें चले जावेंगे—यही संसारकी आलोच्य कथा है। सम्राट् अपनी सेनासे सुरक्षित सोनेके सिंहासन पर, स्वर्णमंडित चँदोवेके नीचे चन्द्रमाके समान रूप और वैभवकी छटा फैलाये हुए विराजमान थे, वे उस सिंहासनको छोड़कर चले गये। एक रूप-गुणहीन, भोजन-वस्त्रसे दुखी भिखारी जो पेड़के नीचे या चौराहेमें बैठकर कातर स्वरसे धनगर्वित श्रीमानोंके आगे भिक्षाके लिए हाथ फैलाता था, वह भी हमेशाके लिए इस संसारको छोड़कर चला गया। बच्चा, अपनी माताकी गोदमें आनंदके साथ खेला करता था, वह भी मातापिताके कर्म्मदोषसे अकालहीमें चल बसा। युवक, अपनी नवयौवना सुन्दरी पत्नीके साथ एकांतभवनमें प्रणयकी चर्चा किया करता था; हाय, वह भी अपने ज्ञात अथवा अज्ञात कर्मोंके फलसे अकालहीमें कालकवलित हो गया। बस, ये बातें ही संसा-

रकी बातें और यह सम्वाद ही जगतका सम्वाद है। कोई संसारको छोड़ गया, कोई संसारको छोड़कर जा रहा है और कोई जानेकी अवस्थाको पहुँच गया है। जो संसारमें अभी आये हैं वे भी मृत्यु मार्ग पर आरूढ़ हैं।

अब मुख्य प्रश्न यह है कि मनुष्य मरने पर इस संसारको छोड़कर कहाँ जाते हैं? उनका देहपिञ्जर तो सबके सामने यहीं अग्निमें जला दिया या जलस्थलमयी जड़प्रकृतिके गर्भमें छिपा दिया जाता है। किन्तु हम पूछते हैं कि अग्निमें जले या प्रकृतिके गर्भमें छिपे हुए मृत शरीरके सिवा और भी कोई वस्तु अवशिष्ट रहती है? यदि रहती है, तो क्या वह अवशिष्ट वस्तु क्या फिर कभी हमारे दृष्टिपथमें आ सकती है?

हमारे हिन्दूशास्त्रोंने हजारों वर्ष पहले—जिस समय यूरोप, अमेरिका, आफ्रिका, आस्ट्रेलिया प्रभृति राज्य हिंस्र जानवरोंके समान वनचर मनुष्योंकी निवासभूमि थे—मेघोंके सदृश गंभीर स्वरसे इन सब प्रश्नोंके उत्तरमें समस्त सभ्यजगतसे कहा था—"जीवात्माका कभी विनाश नहीं होता—वह अविनाशी पदार्थ है। अस्त्र उसे काट नहीं सकते, अग्नि उसे जला नहीं सकती, जल उसे भिगो नहीं सकता और वायु उसे सुखा नहीं सकती।" देखिए भगवद्गीताका दूसरा अध्याय—

"नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥ २३॥"

गीता फिर उपदेश देती है—"जिस प्रकार फटे पुराने कपड़े फेंककर मनुष्य नये कपड़े पहिन लेता है, उसी प्रकार मनुष्यदेहका देही अर्थात् जीवात्मा शरीर छोड़नेके पश्चात् (सूक्ष्मतर) नवीन देह धारण करके अनन्त जीवनके कार्य्यमें अग्रसर होता है।"

"वासांसि जीर्णानि यथा विहाय,
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।

तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥ २२ ॥"
—अध्याय २ ।

वाल्मीकि, व्यास और वसिष्ठादि महामुनियोंने इसी महासत्यका भिन्न भिन्न प्रकारसे उपदेश दिया है । वाल्मीकिके हृदयाराध्य रामचन्द्रने जानकीकी अग्निपरीक्षाके समय सूक्ष्मशरीरी दशरथके दर्शन पाकर उनको प्रणाम किया था और उनसे बातचीत की थी । कृष्ण द्वैपायन व्यासवर्णित महाभारतमें लिखा है कि, कुरुक्षेत्रमें युद्ध समाप्त होनेके पश्चात् अनेक कुरुवीरोंने गंगाके किनारे अपनी अपनी शोकाकुलित सहधर्मिणियोंके समक्ष स्पर्शयोग्य मूर्तिसे प्रकट होकर उनके हृदयमें विस्मय और शांतिकी सृष्टि की थी । इस देशके अनेक लोग इन कथाओंको नितान्त अस्वाभाविक और अश्रद्धेय समझकर उपेक्षाकी दृष्टिसे देखा करते हैं । कारण इन कथाओंका प्रमाण जड़विज्ञानमें तो मिलता नहीं, रहा आध्यात्मिक विज्ञान, सो उसमें तत्सम्बन्धी सहस्रों प्रमाण उपस्थित रहने पर भी वे उनके लिए अप्रामाणिक ही हैं ! किन्तु सौभाग्यवशात: आज यूरोप और अमेरिकाके वैज्ञानिक पंडित भी सैकड़ों तत्त्व संकलित करके भारतीय आर्य्यऋषियोंके योग तथा ज्ञानद्वारा प्राप्त किये हुए आध्यात्मिक सत्यकी सत्यताको प्रमाणित कर रहे हैं । ऋषिगण परलोकगत मातापितासे संभाषण करते समय कहते थे—

" आकाशस्थ निरालम्ब वायुभूत निराश्रय ।
इदं नीरं इदं क्षीरं स्नात्वा पीत्वा सुखीभव ।"

उक्त श्लोकका भावार्थ यह है कि, इस समय तुमने आकाशिक देह धारण की है, अब इस पृथ्वीकी किसी वस्तुका तुम्हें अवलम्ब नहीं है । जैसे वायु नेत्रोंसे दिखाई नहीं देता, उसी प्रकार आज तुम भी हमारी

दृष्टिसे अदृश्य हो। तुम्हारे लिए हम यह जल और दुग्धपूर्ण अंजलि उत्सर्ग करते हैं, इससे तुम्हें परितृप्ति हो। यद्यपि विज्ञानपटु यूरोपीय पंडित एवं अमेरिकाके विद्वान् स्वर्गगत मातापिताके हेतु जल और दुग्धकी अंजलि प्रदान नहीं करते, तथापि वे भी भक्तिपूर्ण हृदयसे उनका ध्यान करके कहते हैं–"हे पिता, हे माता, इस समय तुम आकाशिक देहमें विराजमान हो; आज मैं तुम्हें अपने नेत्रोंसे नहीं देख सकता, किन्तु तुम मुझे देखते हो और मेरे जीवनके सत्कार्योंको देखकर तुम जैसे पुलकित होते हो, उसी प्रकार तुम मेरे दुष्कर्म्मोंको देखकर दुःखसे विषण्ण और लज्जासे म्रियमाण हो जाते हो। मैं कातर मनसे तुम्हारे निकट प्रार्थना करता हूँ कि तुम मुझे सत्पथ पर चलनेके लिए शक्ति प्रदान करो। मैं भी ईश्वरके निकट प्रार्थना करता हूँ कि, तुम उसकी कृपासे उच्चसे उच्चतर स्थानको प्राप्त करो।"

इस जगह जिस आकाशिक देहकी चर्चा की गई है, उसका विज्ञान-सम्मत नूतन नाम Etherial body, अर्थात् ईथर नामक सूक्ष्म पदार्थ-द्वारा रचित सूक्ष्मशरीर है। जो लोग इस पृथ्वीको त्यागकर चले गये हैं और जगत्की भाषामें जिन्हें परलोकवासी कहते हैं, वे परलोकमें सूक्ष्म शरीरसे विद्यमान रहकर जीवनके कर्मफल भोगते और जीवनीशक्तिके उच्चतर विकाशनियमके अनुसार उन्नति-लाभ करते हैं। वे वाल्मीकि-वर्णित दशरथ और व्यासवर्णित दुर्योधनप्रभृतिके सदृश अवस्था-विशेषमें किसी आध्यात्मिक नियमका अनुसरण करके प्रयोजन अथवा प्रवृत्तिके अनुरोधसे अपने स्त्री, पुत्र, मित्र आदि अथवा किसी सम्बन्ध-शून्य-व्यक्तिको, दर्शन दे सकते हैं या नहीं, इसका निर्णय पाठकगण इस ग्रन्थमें क्रम क्रमसे दी हुई अनेक प्रामाणिक कहानियों अथवा वृत्तान्तोंकी आलोचना करके स्वतः करेंगे। पूर्वसंचित संस्कार किसीको तार नहीं सकते, तरनेका एक मात्र उपाय एक सत्यकी गवेषणा करना

ही है। अतएव, पारलौकिक जीवनके महान् सत्यको उपेक्षाके भावसे उड़ा देना बुद्धिमानोंका काम नहीं है।

आधुनिक सुसभ्य जगत्के यशस्वी पंडित, सभ्यताके इतिहासके रच-यिता स्वनामधन्य बाकले (Buckle) साहबने अपने एक ग्रन्थमें लिखा है कि, मनुष्य पार्थिव देह छोड़नेके पश्चात् नवीन देह धारण करके जीवनके गन्तव्य पथमें क्रमविकाशके नियमानुसार धीरे धीरे अग्रसर होता है या नहीं, इस महान् सत्यसे सम्बन्ध रखनेवाले प्रश्नके साथ पृथ्वीके और किसी प्रश्नकी तुलना नहीं हो सकती। मनुष्यजीवनकी सब बातें एक ओर हैं और यह प्रश्न एक ओर है। जो मनुष्य इस प्रश्नकी मीमांसा न करके सांसारिक सुखदुःखके आवर्त्तचक्रमें घूमा करता है उसका जीवन व्यर्थ है। पाठक आगे चलकर देखेंगे कि छाया-दर्शनकी प्रत्येक कहानी महामति बाकलेके उल्लिखित महाप्रश्नके प्रत्युत्तर-स्वरूप है।

प्रथम अध्याय ।

आत्मिक-कहानी ।*

१ प्रतिज्ञा-पालन ।

क्या परलोकगत प्राणी, अपनी जीवितावस्थामें की हुई प्रतिज्ञाओंके पालन करनेमें समर्थ हैं? प्रतिज्ञापालनकी अनेक कहानियाँ अध्यात्मतत्त्वके कागज-पत्रोंमें पाई जाती हैं। अनेक परलोकवासी प्राणियोंने प्रतिज्ञा-पालनद्वारा अपने अपने अस्तित्वका परिचय दिया है। मैंने अनेक प्रख्यात पुरुषोंके लिखे हुए प्रसिद्ध ग्रन्थोंमें इस सम्बन्धकी जो अनेक कहानियाँ पढ़ी हैं, उनमेंसे मैं लार्ड ब्रुहमकी मित्र-दर्शनसम्बन्धी एक कहानी पाठकोंको भेंट करता हूँ। क्योंकि लार्ड ब्रुहमका नाम शिक्षित-समुदायमें सर्वत्र परिचित है।

---

*प्रत्येक मनुष्य अनेक मनोवृत्तियुक्त एक आत्मा है। मनुष्य-शरीर उसी आत्माका बाह्य आवरण है। आत्मा ही देखती, आत्मा ही सुनती और आत्मा ही व्यक्ति-विशेषसे प्रेम या द्वेष करती है। आत्मा ही धर्मानुष्ठान, महत्त्व और माधुर्य्यकी उपासना करके महात्मा बन जाती है और आत्मा ही कुत्सित जीवन यापन करके पिशाचादि नामसे वर्णित की जाती है।

इस देशके अनेक लोग परलोकगत आत्माको 'प्रेतात्मा' कहकर पुकारते हैं, किन्तु उनका ऐसा कहना सर्वथा असंगत और अपराधजनक है। क्योंकि, महाभारतमें और पुराण ग्रन्थोंमें अधःपतित आत्मायें ही प्रेतात्मा नामसे वर्णित की गई हैं। अमरकोषमें प्रेत शब्दका अर्थ नरकगामी प्राणी है। पद्मपुराणमें प्रेतकी आकृति इस प्रकार वर्णित की गई है—

लार्ड ब्रुहम उन्नीसवीं शताब्दीके मध्यभागमें इंग्लैंडके प्रख्यात पुरुषोंमें अग्रगण्य समझे जाते थे। यद्यपि उनका जन्म धनी घरानेमें नहीं हुआ था, तथापि अनेक धनवान् पुरुष उन्हें अपना अभिभावक समझ कर सम्मान करते थे ।वे अपनी अगाध विद्या, अति तीक्ष्ण बुद्धि, उच्च श्रेणीके साहित्यिक सम्मान, चरित्रबल और पदमर्यादाके कारण असंख्य लोगोंके भक्ति-भाजन बन गये थे ।

इस देशके जो लोग लार्ड ब्रुहमके व्यक्तिगत गौरवसे अपरिचित हैं, वे भी प्रकारान्तरसे उनका नाम लिया करते हैं । लार्ड ग्लडस्टन एक प्रकारके बेगको व्यवहारमें लाते थे, इस कारण उसका नाम ग्लडस्टनबेग पड़ गया था । इसी प्रकार लार्ड ब्रुहम् जिस गाड़ीको व्यवहारमें लाते थे उस प्रकारकी गाड़ियोंको लोग 'ब्रुहम' या 'ब्रुम' नामसे पुकारते

" विकरालमुखं दीनं पिशङ्गनयनं भृशम् ।
उर्द्ध्वमूर्द्धजकृष्णाङ्गं यमदूतमिवापरम् ॥
चलज्जिह्वञ्च लम्बोष्ठं दीर्घजङ्घशिराकुलम् ।
दीर्घाङ्घ्रिं शुष्कतुण्डञ्च गर्ताक्षं शुष्कपञ्जरम् ॥"

अर्थात् प्रेतका मुँह बड़ा और भयानक, शरीर कृश और दीन तथा नेत्र घुसे हुए, और पीले रंगके होते हैं । माथेके बाल ऊपरकी ओर खड़े हुए, शरीरका रंग काला, जीभ लम्बी लपलपाती हुई और जंघायें बड़ी तथा नसोंसे भरी हुई होती हैं । उसका समस्त शरीर शुष्क अस्थिपंजर मात्र और देखनेमें दूसरे यम-दूतके समान प्रतीत होता है ।

पद्म और अग्निपुराणमें प्रेतोंके गणभेदका वर्णन है । वे अपने अपने कर्मफला-नुसार भिन्न भिन्न नामोंसे पुकारे जाते हैं, किन्तु सभी प्रकारके प्रेत अत्यंत पापिष्ठ और अस्पर्श्य कहे गये हैं । उनके खाने-पीनेकी वस्तुयें मनुष्योंके कहने-सुननेके अयोग्य हैं । इन्हीं सब कारणोंसे भारतीय भाषाओंमें 'प्रेत' कहनेसे अत्यंत नीच गाली समझी जाती है । इसी कारण हम परलोकगत प्राणियोंको लिंगभेदसे 'आत्मिक' या 'आत्मिका' नामसे पुकारना उचित समझते हैं ।

हैं। अतएव जो लोग लार्ड ब्रुहमके नामसे अपरिचित हैं वे भी ' ब्रुहम ' या ' ब्रुम ' नामकी गाड़ियोंसे भली भाँति परिचित होंगे।

हम पहले कह चुके हैं कि लार्ड ब्रुहम अपनी अगाध विद्या और तीक्ष्ण बुद्धिके कारण देशके सब श्रेणीके पुरुषोंके निकट गण्य-मान्य हो गये थे। उनकी विद्या-बुद्धि हमारे देशके पंडितोंकी विद्या-बुद्धिके समान अंधकारमें न पड़ी रहकर कर्मजगत्‌के साथ निरन्तर सम्बन्ध रखती थी। वे एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक, तर्कविशारद, दार्शनिक और कार्य-दक्ष बैरिस्टरके रूपमें सर्वत्र आदर पाते थे। उनकी निर्भीक सत्यवादिताके कारण अनेक लोग उनके भक्त बन गये थे। वे आदिसे अंततक पूर्ण अनुसंधान किये विना किसी बात पर सहसा विश्वास नहीं करते थे, और जिस बात पर उन्हें दृढ विश्वास हो जाता था उसे वे संसारके सामने उपस्थित करनेमें कभी कुंठित नहीं होते थे। ऐसे प्रतिष्ठित पुरुषने अपनी जिस प्रत्यक्ष घटनाका वृत्तान्त अपने हाथसे अपने आत्मचरितमें लिख रक्खा है, उसे कौन विश्वासकी दृष्टिसे न देखेगा?

लार्ड ब्रुहम लिखते हैं--" मेरे जीवनमें एक अत्यंत आश्चर्य्यजनक घटना घटित हुई। वह घटना इतनी विस्मयदायक है कि मुझे सत्यके सम्बन्धमें साक्षी देनेके लिए उसका आदिसे अंततक कुल विवरण लिखनेके लिए बाध्य होना पड़ा।

" एडिनबरा स्कूलकी पढ़ाई समाप्त करके मैं अपने बाल्यसखा जार्जके साथ विश्वविद्यालयके अध्ययनमें प्रवृत्त हुआ। उस जगह धर्मशिक्षा देनेके लिए कोई विशेष प्रबंध नहीं था। किन्तु हम दोनों प्रायः नित्य ही शहर घूमनेके समय नानाप्रकारके गंभीर तत्त्वोंकी चर्चा, आलोचना और तर्क-वितर्क किया करते थे। अन्यान्य विषयोंके साथ साथ मानव-आत्माके अविनश्वरत्व और परलोकके अस्तित्वके विषयमें भी हमारी अनेक बातें हुआ करती थीं।

मनुष्यकी आत्मा, पार्थिव देह छोड़नेके पश्चात् अर्थात् सूक्ष्मदेह धारण करने पर पृथ्वीके मनुष्योंके साथ साथ निरंतर घूमा करती है या नहीं, इत्यादि बातें लेकर हम लोग आलोचना या विचार नहीं किया करते थे, किन्तु हमारे वादानुवाद और आलोचनाका मुख्य विषय यही रहता था कि उल्लिखित सूक्ष्मदेही आत्मा जीवित मनुष्योंको दिखाई दे सकती है या नहीं। इसी विषयको लेकर हम दोनों खूब ऊहांपोह और वादानुवाद किया करते थे। एक दिन वादानुवाद यहाँतक जा पहुँचा कि हम दोनोंने शरीरके रक्तसे * एक शपथपत्र लिखकर प्रतिज्ञा कर डाली कि—'यदि मरने पर आत्माका अस्तित्व रहता हो, और वह आत्मा जीवित मनुष्योंको दर्शन देनेमें समर्थ हो, तो हम दोनोंमेंसे जिसकी पहले मृत्यु हो, वह दूसरेको दर्शन देकर उसके पारलौकिक जीवन-सम्बन्धी संदेहको दूर कर देगा।'

"कालेजकी पढ़ाई समाप्त होने पर हम दोनों मित्र दो भिन्न भिन्न देशोंमें रहने लगे। जार्ज सिविल सार्विसमें नियुक्त होकर भारतवर्षको चला गया और मैं देशहीमें बना रहा। भारतवर्ष जानेके पश्चात् जार्जने कुछ समय तक तो मुझसे पत्र-व्यवहार जारी रक्खा, किन्तु अधिक वर्षें बीत जाने पर मैं उसे बिलकुल भूल गया। एडिनबरामें जार्जके कुटुम्बके तथा परिवारके आदमियोंसे मेरा कुछ परिचय तथा सम्पर्क नहीं था, इस कारण मुझे उनके द्वारा भी उसकी कुछ खबर

* यूरोपके अनेक ग्रन्थोंके देखनेसे विदित होता है कि वहाँके कई स्त्री-पुरुषोंने अनेक गुरुतर विषयोंमें शरीर अथवा हृदयके रक्तसे प्रतिज्ञायें लिखी हैं। यह तो नहीं मालूम कि भारतवर्षके भक्त हिन्दुओंने ऐसी प्रतिज्ञायें लिखी हैं या नहीं, किन्तु किसी किसीने बिल्वपत्रपर रक्तसे दुर्गा या कालीका नाम लिखकर अपने तद्गत भावका परिचय अवश्य दिया है।

नहीं मिलती थी। अधिक समय बीत जाने पर बचपनकी मित्रताका स्मृति-चिह्न मानों मेरे हृदयसे बिलकुल धो गया, यहाँ तक कि अपने बाल्यसखाके अस्तित्वकी बात भी मेरे मनसे एक प्रकारसे लुप्त हो गई।

"इस प्रकार स्मृति-लुप्त होनेके कुछ दिनोंके पश्चात् मैं स्वीडन भ्रमणके लिए बाहर निकला। शीतकाल था। स्वीडनमें शीत असहनीय पड़ता है। मैं उसी शीतमें नाना स्थानोंमें घूमकर और बर्फके शीतसे कुछ अस्वस्थ सा होकर घर लौट आया। उस समय गरम जलसे नहाना मेरे लिए जैसा स्वास्थ्यकर था वैसा ही प्रीतिदायक भी था। एक दिन मैं स्नानागारके किवाड़ बंद करके गरम जलके टबमें बैठा था और पानीकी उष्णतासे कुछ कुछ स्फूर्ति और आनंदका अनुभव कर रहा था। सामने थोड़ी दूर, एक कुर्सी पर मेरे पहिरनेके सूखे कपड़े रक्खे थे। मैं स्नान करके उठनेका उद्योग कर रहा था कि इतनेमें मेरी दृष्टि सामनेकी कुर्सी पर जा पड़ी। मैंने स्पष्ट रीतिसे देखा कि मेरा भारत-प्रवासी बाल्यसखा जार्ज कुर्सी पर बैठा हुआ मेरी ओर स्थिर, गंभीर और शांतदृष्टिसे देख रहा है।

"इसके पश्चात् मैं कब और किस तरह स्नानके स्थानसे उठ आया, इसकी मुझे कुछ खबर नहीं, किन्तु जब मैं सचेत हुआ तब मैंने देखा कि मैं टबके बाहर पड़ा हुआ हूँ। अब मुझे उस विचित्र छायामूर्त्ति या मेरे बाल्यसखाकी प्रतिच्छायाका कोई भी चिह्न उस जगह दिखाई नहीं दिया। मेरे हृदयमें एक भारी आघात पहुँचा, किन्तु मैं इस विषयमें किसीसे एक शब्द भी कहनेका साहस नहीं कर सका। इस दृश्यका प्रभाव मेरे हृदयपटल पर इस तरह अंकित हो गया कि, मैं उसे किसी प्रकार नहीं भुला सका और इस घटनाकी कथाको मैंने अपनी १९ दिसम्बरकी दैनिक नोटबुकमें लिख रक्खा।

"मैं चिरकालसे तर्क-प्रिय हूँ; समय विशेष पर कुतर्कसे काम लेनेमें भी कुंठित नहीं होता। तर्कप्रियताकी धुनमें मैंने सोचा—हो न हो, मैं

किसी अज्ञात कारणसे स्नानागारमें निद्रित हो गया होऊँगा और उसी अवस्थामें मैंने जार्जको देखा होगा। किन्तु आज दिनके समय स्नानागारमें बैठकर सहसा स्वप्न देखनेका क्या कारण है ? बहुत वर्षोंसे जार्जके साथ मेरा पत्रव्यवहार भी नहीं है, उसकी स्मृतिको जागरित करनेवाली कोई घटना भी नहीं हुई; मेरे स्वीडनभ्रमणके समयमें जार्ज, उसके कर्म-स्थान भारतवर्ष अथवा उसके परिवारसे सम्बन्ध रखनेवाली कोई बात भी नहीं उठी, फिर यह विचित्र स्वप्न कैसे आया ? इस प्रकार सोचते सोचते मुझे युवावस्थाके प्रारंभकालकी उस प्रतिज्ञाका सहसा स्मरण हो आया। मुझे विश्वास हो गया कि अवश्य ही जार्जकी मृत्यु होगई और उसने पारलौकिक जीवनका प्रमाण प्रदर्शित करनेके लिए मुझे दर्शन देकर अपनी प्रतिज्ञा पालन की है। इस धारणाको मैं किसी प्रकार भी अपने अंतःकरणसे हटा नहीं सका। घटनाकी तारीख थी १९ दिसम्बर सन् १७९९ ई०।"

लार्ड ब्रुहमने बहुत वर्षोंके पश्चात् अर्थात् सन् १८६२ के अक्टूबर महीनेमें अपनी पुरानी दैनिक नोटबुकमें उल्लिखित कहानीके अंतमें निम्नलिखित तीन चार पंक्तियाँ और जोड़ दीं—"इस कहानीको समाप्त करनेके पहले मैं यह कहना आवश्यक समझता हूँ कि उक्त अद्भुत घटनाके कुछ ही दिन पश्चात् मुझे भारतवर्षसे जार्जकी मृत्युका समाचार मिला। पत्रमें लिखा था—जार्जकी मृत्यु १९ दिसम्बरको हुई।"

इस कहानीके सम्बन्धमें पाठकोंके मनमें दो एक प्रश्न उठ सकते हैं। वे लार्ड ब्रुहमके मनमें भी उठे थे और उन्होंने उनकी खूब मीमांसा की थी। उन्होंने सोचा था कि जिसके अस्तित्वको भी मैं विस्मृत हो गया था, जिसके सम्बन्धकी कोई बात मैंने ६ महीने पहलेसे नहीं सोची थी, उस दिन स्नानागारमें दिन दहाड़े उसीको मैंने अपनी दोनों आँखोंसे प्रत्यक्ष देखा ! यह कैसी बात है ? यह कैसे संभव हुई ? यदि कोई कहे

कि उपरिलिखित अद्भुत-दर्शन जाग्रत अवस्थाका स्वप्न अथवा दृष्टिका भ्रम है तो उसकी मृत्यु और घटनाकी तारीखकी एकता क्यों कर हुई ? पाठक, तनिक विचार करके देखेंगे तो उन्हें विदित हो जायगा कि स्नानागरमें लार्ड ब्रुहमको जो छायामूर्त्ति दिखाई दी थी, वह उनके मित्र जार्जकी प्रत्यक्षमूर्त्ति थी । जार्ज, पार्थिव परमाणुओंसे गठित प्रत्यक्ष मूर्त्ति धारण करके ब्रुहमके पास अधिक समय तक नहीं बैठ सका । जैसे मनुष्य अधिक समय तक पानीमें डूबा नहीं रह सकता, उसी प्रकार परलोकगत आत्मा भी पार्थिव परमाणुओंसे गठित, मनुष्यदेह धारण करके अधिक समय तक नहीं ठहर सकती । जार्ज, जितने समय तक बैठ सका, अपनी पुरानी प्रतिज्ञा स्मरण करके ब्रुहमके पास बैठा रहा । उसकी मूर्ति स्पर्शयोग्य वास्तविक मूर्त्ति थी, इसका प्रमाण जीवित लोगोंके समान उसका कुर्सी पर बैठना है । किन्तु वह अपनी इच्छानुरूप न तो अधिक समय तक बैठ सका और न बातचीत ही कर सका, इसका क्या कारण है ? पारलौकिक विज्ञानकी ये सब बातें क्रमक्रमसे पाठकोंके सामने उपस्थित की जायँगी । वे इस विषयमें आगे चलकर अधिक समझ सकेंगे । इस कहानीका कोई अंश अतिरंजित नहीं है । कारण लार्ड ब्रुहम जैसे चरित्रवान् और तत्त्वप्रिय वैज्ञानिक, प्रकृत तत्त्वके साथ उपन्यास मिलाकर सत्यशोधी पाठकोंकी आँखोंमें धूल नहीं झोंक सकते ।*

---

* रेवेरण्ड फ्रेडरिक जार्ज ली, एक प्रसिद्ध विद्वान् पादरी थे । पहले वे छाया-दर्शन तत्त्व पर जरा भी विश्वास नहीं करते थे, किन्तु पीछे अनेक अनुसंधान करने और गवेषणाद्वारा अनेक प्रत्यक्ष प्रमाण मिलने पर वे उसके परम विश्वासी बन गये थे। उन्होंने छायादर्शनसम्बन्धी अनेक कहानियाँ संगृहीत करके Glimpses of the supernatural नामका एक ग्रंथ लिखा । लार्ड ब्रुहमकी उक्त कहानी इस ग्रन्थमें और Phantasms of the Living नामके एक और भी प्रामाणिक ग्रंथमें लिखी गई है ।

२ प्रतीकार-प्रार्थना ।

पूर्व और उत्तरमें प्रशान्त महासागर, तथा पश्चिम और दक्षिणमें भारतमहासागरसे घिरा हुआ आस्ट्रेलिया महाद्वीप है। यह महाद्वीप अँगरेजोंका बड़ा भारी उपनिवेश है। इसके दक्षिण-पूर्वमें एक न्यू साऊथ वेल्स नामका प्रान्त है। इस प्रान्तके पूर्वमें प्रशान्त महासागरके तट पर सिडनी या पोर्टजैकसन नामक बंदर है। इस समय सिडनी या पोर्टजैकसन न्यू साऊथ वेल्सका एक प्रधान स्थान गिना जाता है। हम जिस समयका वर्णन लिख रहे हैं उस समय यह स्थान कैदियोंका उपनिवेश था। सिडनी या पोर्टजैकसनके समीप 'बोटानी-बे' नामका एक स्थान है और उसके किनारे पर इसी नामक एक छोटासा बंदर है। कैदी पहले इसी जगह भेजे जाते थे। बोटानी-बेमें नाना जातिके सुन्दर फूल प्रचुरताके साथ उत्पन्न होते हैं। इसी कारण इसका नाम बोटानी-बे अर्थात् मनोहर फूलोंका उद्यान पड़ा है। पीछेसे पोर्टजैकसनमें अधिक सुभीता दिखाई देनेके कारण बंदीगृह बोटानी-बेसे पोर्ट जैकसनको बदल दिया गया।

उस समय आस्ट्रेलियामें एक पक्षीका मारना और फंदा लगाकर एक साधारण जंगली खरगोशका पकड़ना भी जेलखाने योग्य अपराध समझा जाता था। ऐसे ऐसे साधारण अपराधोंपरसे दंडित होकर कैदी पोर्ट जैकसन भेजे जाते थे। जेलखानेका क्लेश भी कभी कभी इतना कठोर और असहनीय हो उठता था कि कैदी उससे रक्षा पानेके लिए परस्पर सलाह करके एक दूसरेकी हत्या कर डालते थे। इस प्रकार बहुसंख्यक कैदी निर्दिष्ट समयके भीतर ही जेलखानेके दुर्वह जीवनका अंत कर डालनेके लिए प्रयत्न किया करते थे। किन्तु अब आस्ट्रेलियाकी वह अवस्था बिल्कुल बदल गई है।

पोर्ट जैकसन जिस समय ऊपर कहे अनुसार कैदियोंका निवासस्थान था, उस समय वहाँ एक फिशार नामका आदमी निवास करता था। वह एक अच्छा जमींदार और व्यवसायी था। हमारी यह कहानी इसी फिशारसे सम्बन्ध रखती है।

कैदियोंके कष्टोंका वृत्तान्त हम पहले ही लिख चुके हैं। किन्तु उनमेंसे जो कैदी अपने उत्तम व्यवहारके कारण प्रशंसा पाता था, उसको गवर्नमेंट समीपवर्ती गृहस्थोंके घर कामकाज करके जीवन व्यतीत करनेकी अनुमति दे देती थी। ऐसे कैदियोंको बहुधा लोग 'गर्वनमेंट-मेन' या 'सरकारी-आदमी' कहा करते थे। फिशारने सरकारसे प्रार्थना करके जेम्स नामक एक सरकारी-आदमीको अपने घर नौकर रख लिया। जेम्स कामकाज करनेमें जैसा चतुर था, वैसा ही वह अपने स्वामीको खुश रखनेमें भी था। वह थोड़े ही दिनोंके भीतर फिशारका अत्यंत प्रिय और विश्वसनीय बन गया। उसका सारा कामकाज उसीके जिम्मे रहने लगा। जेम्स अपने स्वामीके खेतोंमें उत्पन्न हुई वस्तुओं और गाय भेड़ आदि पशुओंको प्रतिदिन समीपवर्ती बाजारमें ले जाया करता था। जेम्सको अल्प समयमें ही अपने स्वामीका अत्यंत प्रियपात्र तथा विश्वासभाजन बना हुआ देखकर अड़ौस-पड़ौसके लोग उसे ईर्षाकी दृष्टिसे देखने लगे।

फिशारने बाजारका आना जाना बिल्कुल छोड़ दिया, उसका सारा कामकाज केवल जेम्सहीके जिम्मे रहने लगा। जेम्स ही बाजार जाता, बेंचता-खर्चता और उसके सब कामोंकी व्यवस्था किया करता था। जब लोग पूछते-"जेम्स, तुम्हारे स्वामी कहाँ हैं?" तब वह कह दिया करता था-"वे इंग्लैंड जानेकी तैयारीमें लगे हैं।" कुछ दिनोंके पश्चात् जेम्सने अपने स्वामीका इंग्लैंड जाना प्रसिद्ध कर दिया। जब कोई पूछता तो वह कह दिया करता था कि वे सिडनीसे जहाज लेकर लंदनको चले गये हैं।

फिशारका जान्सन नामका एक अत्यंत निकटवर्ती पड़ौसी था। वह भी जमींदार था। फिशारकी और उसकी गाढ़ी मित्रता थी। जान्सनने भी जेम्सके मुँहसे फिशारके लंदन चले जानेका समाचार सुना। फिशार, जान्सनसे पूछे बिना कभी कोई काम नहीं करता था। इस बार मुझसे कुछ कहे सुने बिना ही वह इतनी लम्बी यात्राके लिए चला गया, यह जानकर उसके आश्चर्य्यका ठिकाना न रहा। फिशारके ऐसे व्यवहारसे मन-ही-मन उसे बहुत बुरा लगा और वह अपने मित्रके प्रति कुछ नाराजसा हो गया। उसने अपनी पत्नीसे भी कई बार कहा—"मुझे स्वप्नमें भी ऐसी आशा नहीं थी कि फिशार मेरे साथ ऐसा व्यवहार करेगा।"

बहुत दिन व्यतीत हो गये, किन्तु फिशारका कोई समाचार नहीं मिला। जान्सन बहुत सोचा करता था, परंतु उसके मनमें किसी तरह यह विश्वास नहीं जमता था कि वह मुझसे पूछे या सलाह लिये बिना आस्ट्रेलिया छोड़कर कहीं दूरकी यात्राको चला जायगा। अंतको जान्सनके मनमें यह विश्वास हो गया कि फिशार आस्ट्रेलिया छोड़कर कहीं विदेशको नहीं गया है, किन्तु किसी विशेष कामके कारण यहीं कहीं अज्ञात दशामें छिपकर रहता है।

जान्सन बाजारको जाया करता था। फिशारके खेतमेंसे भी बाजार जानेका एक मार्ग था, परतुं इस मार्गसे बहुत कम लोग आया जाया करते थे। किन्तु जान्सनको यही मार्ग पसंद था और वह इसी मार्गसे सदैव आया जाया करता था। एक दिन जान्सन बाजार करके इसी मार्गसे घरको लौट रहा था। सूर्य अस्त हो चुका था, किन्तु संध्याके अरुण रागको (ललाईको) भेदकर भी अंधकार उस समय पृथ्वीका अंग-स्पर्श करनेका साहस नहीं कर सका था। जान्सन फिशारके खेतमेंसे आ रहा था। सामने एक दरवाजा था। इसी दरवाजेको पार करके उसे जाना

था। अचानक उसने देखा कि दरवाजेके समीप उसका परम मित्र फिशार खड़ा है। किन्तु उसके मुँह पर वह प्रसन्नता नहीं है। मुख विषादसे मलिन हो रहा है, आँखों पर किसी गंभीर भावकी छाया पड़ी हुई है और मुखसे दुःसह यंत्रणाका भाव झलक रहा है।

जान्सन, पहले फिशारको देखकर विस्मित नहीं हुआ, क्योंकि पहलेसे ही उसकी धारणा थी कि वह विदेशको नहीं गया—देशहीमें है; किन्तु किस उद्देशकी सिद्धिके लिए वह इस प्रकार अज्ञातभावसे रहता है, यह उसकी समझमें नहीं आया था। जो हो, आज अकस्मात् उसे इस प्रकार खड़ा देखकर उसने सोचा कि अब सब रहस्य खुल जायगा, मैं हठकरके उससे सब बातें पूँछ लूँगा। इस प्रकार मन-ही-मन अनेक विचार करता हुआ वह शीघ्रताके साथ उसकी ओर बढ़ने लगा; किन्तु हाय, आँखोंके सामने देखकर भी वह उसे न पा सका। जान्सन ज्योंही उसके समीप पहुँचा त्योंही फिशारका प्रत्यक्ष दिखाई देनेवाला शरीर शीघ्र ही वायुरूपमें परिणत हो गया! जान्सनके आश्चर्य्यका ठिकाना न रहा। वह जड़वत् खड़ा होकर रह गया। उसके पैरोंके नीचेकी धरती घूमने लगी, आँखोंमें अँधेरा छा गया। कुछ समयके पश्चात् सचेत होकर उसने चारों ओर देखा, किन्तु उस मूर्तिका कहीं कोई चिह्न भी दिखाई नहीं दिया। वह सोचने लगा कि क्या अभी मैं स्वप्न देख रहा था? या यह किसी भूत-पिशाचकी लीला थी?

जान्सन घर आगया, किन्तु उसका अस्थिर चित्त स्थिर नहीं हुआ। वह दिन भरका थका हुआ था, तथापि शांतिपूर्वक बैठने या भोजन करनेमें समर्थ नहीं हुआ। पतिकी ऐसी आकुलताको देखकर पत्नीने चिन्तित होकर पूछा—"आज तुम ऐसे व्याकुल क्यों हो रहे हो?" जान्सनने उत्तर दिया—"मृत मनुष्यकी छाया-मूर्ति देखकर मेरे मनमें एक प्रकारकी विकलता बढ़ गई है। मैं उन्मत्त-सा

हो गया हूँ ।" इसके पश्चात् उसने रास्तेकी वह सारी घटना कह सुनाई। पत्नी, पतिकी ऐसी दशा देखकर कुछ चिन्तित हुई, किन्तु शीघ्र ही अपने मनका भाव छिपाकर कहने लगी—"नहीं, यह केवल तुम्हारी दृष्टिका भ्रम है। सारे दिन अधिक परिश्रम करनेके कारण एक तो तुम बहुत थक गये थे, इस पर निर्जन मार्गमें बहुत समय तक फिशारकी बातें सोचते आनेसे निर्बलताके कारण तुम्हारी आँखोंके सामने उसकी सूरत दिखाई दे गई होगी। यह केवल दृष्टिका भ्रम है। कुछ समय आरामके साथ सो रहो, मन स्वस्थ हो जायगा।" जान्सन पत्नीकी बात मानकर सो रहा।

इस प्रसंगमें फिर कोई बातचीत नहीं हुई। धीरे धीरे फिर बाजारका दिन आ गया। जान्सन बाजारको गया और संध्यासमय फिर उसी मार्गसे लौटा। उस समय सूर्य अस्त नहीं हुआ था। उसकी दिव्य किरणें इस समय भी पृथिवीको बिलकुल छोड़कर, आकाशस्थ मेघोंके अंगमें रंग भर कर ही तृप्तिलाभ नहीं कर रही थीं, किन्तु ऊँचे वृक्षोंकी शिखाओंको भी सुनहरी मुकुट पहिना रही थीं, और खुले हुए मैदानमें अपनी क्षीण प्रभासे सकल पदार्थोंकी लम्बी छाया फैलाकर खेल कर रही थीं। जान्सन फिशारके खेतमें उपस्थित हुआ। यहाँसे वह दरवाजा थोड़ी ही दूरी पर था। सहसा उसके मनमें प्रश्न उठा कि आज क्या वह दरवाजा जन-शून्य है? नहीं, आज फिर वही दृश्य उपस्थित है। उस दिनके समान आज भी दरवाजे पर वही मूर्ति खड़ी हुई है! जान्सनने दोनों हाथोंसे अपने नेत्रोंको मलकर देखा कि कहीं आँखोंका भ्रम तो नहीं है। नहीं, नहीं वह देखो, फिशार मेरी ही ओर देख रहा है, वही सदैव जैसे वस्त्र पहिने है। संध्याकालीन सूर्यालोकमें उसके शरीरकी लम्बी छाया धरती पर पड़ रही है। फिशारने जान्सनकी ओर देखकर कुछ कहना चाहा, किन्तु वह कह न सका। जान्सनके प्राण काँप उठे। आँखोंके सामने अँधेरा छा गया।

वह कुछ समयके लिए ज्ञानशून्य हो गया। कुछ क्षणके उपरान्त जब वह सचेत हुआ तब उसने देखा कि वहाँ कोई नहीं है। जान्सनके मनमें फिशारके अस्तित्वके विषयमें भारी संदेह उत्पन्न हो गया।

दूसरे दिन सबेरे जान्सन अपने एक मित्रसे मिलने गया। उसने मित्रको आदिसे अंत तक इस घटनाकी समस्त बातें कह सुनाईं। जान्सनका यह मित्र एक सरकारी कर्मचारी था। वह सुशिक्षित और अनेक बातोंमें बहुत चतुर था। जान्सनने जेम्सके पास जाकर इस घटनाके सम्बन्धमें बातचीत करनी चाही; परन्तु उसके मित्रने उसे ऐसा करनेसे रोक दिया। उसने कहा-"कल दोपहरके समय तुम फिर उस दरवाजेके पास जाना, मैं भी एक सुचतुर गुप्तचरको लेकर उसी समय वहाँ पहुँचूँगा। फिर हम सब लोग मिलकर इस रहस्यके सम्बन्धमें जाँच-पड़ताल करेंगे।"

दूसरे दिन यही हुआ। सब घटना देख सुनकर गुप्तचरने निश्चय किया कि इस दरवाजेके समीपवर्त्ती पोखरमें किसी मनुष्यकी मृत देह मिलनेकी संभावना की जाती है। इसके पश्चात् उसी दिन उस पोखरसे एक मृतदेह निकाली गई। वह अर्धगलित अवस्थामें थी, तथापि उसे देखते ही जान्सन चिल्ला उठा कि यह फिशारकी ही लाश है। किसी व्यक्तिने अत्यंत निष्ठुरताके साथ उसकी हत्या करके उसे पोखरमें डाल दिया है। पुलिसने हत्याके संदेहमें जेम्सको गिरफ्तार कर लिया।

यथासमय जेम्सका विचार हुआ। फिशारके लन्दन-गमनके सम्बन्धमें जो झूठी बातें प्रसिद्ध की गई थीं उनके सिवा जेम्सके विरुद्ध और कोई प्रमाण नहीं मिला। न्यायालयमें जेम्सने अपराध अस्वीकार किया। किन्तु जान्सनने अदालतके सामने जो अद्भुत कहानी सुनाई उससे न्यायाधीशके मनमें एक प्रकारका संदेह उत्पन्न हो गया। अतएव उसने वास्तविक रहस्यको खोलनेके लिए चतुराईसे काम

लेनेका निश्चय किया। अपराधी दोषी है या निर्दोष, इसका विचार करनेके लिए जूरीके पंच एक निर्जन कमरेमें चले गये। न्यायाधीशने जेम्सको अदालतसे बाहर ले जानेकी आज्ञा दी। फिर कुछ समयके उपरान्त एक चपरासीके द्वारा जेम्ससे कहला भेजा कि—"ज्यूरीने तुमको दोषी ठहरा कर फाँसीकी आज्ञा दे दी है।" यह सुन जेम्सने एक लम्बी श्वास लेकर कहा—"अब छिपानेसे क्या लाभ! हाँ, मैंने ही अपने स्वामी फिशारकी हत्या की थी। एक दिन वह अपने एक खेतके दरवाजेके पास खड़ा था। उसी समय मैंने सांघातिक चोट पहुँचाकर उसकी हत्याकी थी और उसकी मृतदेह वहीं पासके एक पोखरमें डाल दी थी। जिस दिनसे मैंने यह भयंकर कृत्य किया है उस दिनसे मेरे मनमें न जाने कैसे एक दारुण दुःखका अनुभव हो रहा था। आज मेरा वह दुःख कुछ कम हो गया।"

इस स्वीकारोक्तिके आधार पर जेम्सको फाँसी दे दी गई। छाया-दर्शनकी यह कहानी न्यायालयके कागज-पत्रोंमें स्पष्ट रीतिसे लिखी हुई है।

फिशारकी छायामूर्त्ति देखनेके पश्चात् जान्सन अवश्य ही अपने प्रिय मित्र फिशारके सम्बन्धमें नाना प्रकारकी बातें सोचा करता होगा; इस कारण दृष्टिभ्रमसे उसे अकस्मात् फिशारकी छायामूर्त्तिके दर्शन होना कोई विचित्र बात नहीं है। किन्तु एक ही स्थानमें, उसी मूर्तिके बारबार दर्शन होना और उसी दर्शनके फलसे गुप्तचरद्वारा एक विस्मयदायक हत्याके मामलेका पता लगना, ये दोनों बातें भी क्या दृष्टिभ्रम या झूठी विभीषिकायें कही जा सकती हैं? वास्तवमें इस कहानीकी सत्यताके सम्बन्धमें किसी प्रकारका संदेह या प्रतिवाद नहीं किया गया है। आस्ट्रेलियानिवासियोंको यही दृढ़ विश्वास हो गया था कि अभागे फिशारने अपने मित्र जान्सनको जो बारबार दर्शन

दिये थे उसका मूल कारण उसके अंतरकी ज्वाला और उसके प्रतीकारकी प्रार्थना करना ही था। न्यायालयमें विचार होनेके पश्चात् फिर कहीं किसीने फिशारकी छायामूर्ति नहीं देखी। *

एमा हार्डिंग ब्रिटेन (Emma Hardinge Britten), इंग्लैंडकी एक सुप्रसिद्ध विदुषी थीं। वे जैसी सत्यानुरागिणी थीं वैसी ही प्रगाढ़ पण्डिता भी थीं। डारविनके विज्ञान-सखी सुप्रसिद्ध डाक्टर वालेस, उन्हें एक देवशक्ति-सम्पन्ना स्त्री समझते थे। 'टाइम्स आफ लन्दन' ने इनकी वाग्मिताकी प्रशंसा करते हुए कहा था कि इनके समान वक्ता पुरुषोंमें भी बहुत कम हैं। एमा हार्डिंगका कई वर्ष पहले स्वर्गवास हो चुका है। इन्हीं एमा हार्डिंग द्वारा सम्पादित और मेंचेस्टर नगरसे, प्रकाशित होनेवाले 'The two worlds' अर्थात् 'दो जगत्' नामक प्रसिद्ध अध्यात्मिक पत्रसे यह कहानी संकलित की गई है। लार्ड ब्रुहमकी कहानीके समान, यह कहानी भी अनेक प्रसिद्ध ग्रन्थोंमें उद्धृत हुई है।

द्वितीय अध्याय।

प्रस्तावना।

छायादर्शनकी दो कहानियाँ पाठकोंको भेंट की जा चुकीं; दोनों ही विस्मयजनक और अत्यंत प्रामाणिक हैं। पूर्वलिखित दो कहानियोंमेंसे एक, इंग्लैण्डके सुप्रसिद्ध पंडित लार्ड ब्रुहमके आत्मचरितपरसे लिखी गई है। यह छायामूर्ति उन्होंने स्वयं, स्वस्थ मन और ज्ञानावस्थामें दिनके प्रखर प्रकाशमें देखी थी। उक्त छायामूर्तिको देखते ही वे कुछ कालके लिए संज्ञाशून्य हो गये थे। कुछ क्षणके उपरान्त स्वस्थ होने पर उन्होंने इस घटनाको अपनी दैनिक जीवनीमें लिपिबद्ध किया था। उनके परलोकगमनके पश्चात् उनकी विधवा स्त्री लेडी ब्रुहमने भी इंग्लैण्डके गण्य—मान्य और प्रतिष्ठित सज्जनोंके समक्ष इस घटनाकी सत्यताके सम्बन्धमें गवाही दी थी। लेडी ब्रुहमने तो स्वतः कुछ नहीं देखा, फिर ऐसी दशामें उनकी गवाहीका क्या मूल्य? मूल्य यही कि वे लार्ड ब्रुहमकी जीवन-सङ्गिनी सुशिक्षिता रमणी थीं। ब्रुहमके जीवनकी इस विस्मयजनक घटनाको लेकर समय समय पर उनके साथ बातचीत तथा आलोचना हुआ करती थी और वे उन सब बातों पर हृदयसे विश्वास रखती थीं।

दूसरी कहानी, आस्ट्रेलियानिवासी फिशार नामक एक शान्त, शिष्ट और भद्रपुरुषके जीवनसे संबंध रखती है। कठिन परीक्षा और प्रमाणके पश्चात् उसकी सत्यता न्यायालयकी मिसलमें लिखी गई थी। सुचतुर न्यायाधीशने जान्सनके मुँहसे विचित्र विवरणको सुनकर जिस युक्ति-

बलसे सत्यका उद्धार और अपराधीके दंडकी व्यवस्था की थी, उसका वृत्तान्त हमारे पाठकोंको स्मरण होगा।

किन्तु छायादर्शनकी जो कहानी इस अध्यायमें लिखी जाती है, वह पहले कही हुई दोनों कहानियोंकी अपेक्षा अधिक रोमांचकारिणी और आश्चर्यजनक है। यह कहानी एक बार जिसके हृदयमें बैठ जायगी, मनुष्यजीवनकी सुखदुःखमिश्रित सहस्रों गुरुतर बातें, चिरकालतक उसके चिन्ताका विषय बन जायँगी।

घटना इंग्लैण्डकी है। पार्लीमेण्टकी लार्ड और कामन्स सभाके कतिपय प्रतिष्ठित सभ्योंसे इस घटनाका सम्बन्ध है। घटनाके पश्चात् इस कहानीके सम्बन्धमें पार्लीमेण्टके अनेक सभ्योंमें नाना प्रकारकी आलोचनायें हुई थीं। पार्लीमेण्टके एक सभ्य महाशय इस घटनासे ऐसे विकल और विक्षिप्तसे गये हो थे कि कुछ दिनों तक न उन्हें खाना-पीना अच्छा लगता था और न उठना-बैठना। इंग्लैंडके प्रधान प्रधान वैज्ञानिक, दार्शनिक और प्रतिष्ठित पुरुषोंने इस घटनाके सम्बन्धमें अपनी अपनी सम्मतियाँ प्रकट की थीं। सामयिक पत्रोंमें नाना प्रकारसे उसका विवरण प्रकाशित हुआ था। इन सब विवरणोंमें छोटी छोटी बातोंमें थोड़ा बहुत भेद रहने पर भी मूल-कथामें कोई भेद नहीं है।

आत्मिक-कहानी।

यौवनका उन्माद और जीवनका अवसान।

इंग्लैण्डमें लिटेलटनवंशीय लार्ड प्रसिद्ध और पुराने जमींदार हैं। इंग्लैण्ड और आयर्लैंडमें उनकी विस्तृत जमींदारी है। लिटेलटनवंशीय जिन लार्ड महोदयसे हमारी इस कहानीका सम्बन्ध है उनका नाम टामस् है। सर्वसाधारणके निकट वे लार्ड टामस् लिटेलटनके नामसे परिचित हैं। उनके पिताका नाम लार्ड जार्ज लिटेलटन था। जार्ज लिटेलटनकी

मृत्युके पश्चात् टामस् लिटेलटन लार्ड उपाधि और विशाल भू-सम्पत्तिके अधिकारी हुए। देश तथा विदेशके धनिकोंमें इनका आसन बहुत ऊँचा गिना जाता था।

इंग्लैण्ड और आयर्लैण्डके अनेक स्थानोंमें लार्ड लिटेलटनके अनेक महल थे। इस जगह उन सब महलोंकी नामावली लिखनेकी आवश्यकता नहीं है, किन्तु जिन महलोंसे वर्णित घटनाका सम्बन्ध है, इस जगह उनका थोड़ासा परिचय देना असङ्गत न होगा।

इंग्लैण्डकी राजधानी लंदन नगरके दक्षिण-पूर्वकी ओर १५ मीलकी दूरी पर एप्सम नामक एक छोटा सा नगर है। इस नगरमें लिटेलटनका एक महल था। उसका नाम था पिट् पेलेस। इसके सिवाय बार्कली-स्कायरके हिलस्ट्रीटका विलासभवन भी लार्ड लिटेलटनका था। वे इन दोनों भवनोंमें ही अपना अधिकांश समय व्यतीत किया करते थे। कभी कभी मन बहलानेके लिए वे आयर्लैंडके ग्राम्यभवनमें भी जाकर रहते थे।

लार्ड टामस् लिटेलटन तेजस्वी वक्ता न होनेपर भी लार्ड सभाके सुपरिचित सभ्य थे। वे लार्ड सभामें जैसे सरस-भाषी प्रसिद्ध थे, उसी प्रकार आमोद-प्रमोदकी मजलिसोंमें भी हँसीमजाक करनेमें चतुर गिने जाते थे। इसके सिवा वे विशाल धन-सम्पत्ति और जमींदारीके स्वामी होनेके कारण अनेक मक्खियों-सदृश-स्वभाववाले मित्रोंसे सदैव घिरे रहते थे। उनका विलासभवन सुख-समृद्धिकी विविध वस्तुओंसे सदैव परिपूर्ण रहा करता था। किन्तु इस आमोदमय जीवनके भीतर, एक ओर लालसाके दुर्दमनीय प्रवाह और दूसरी ओर नैराश्यके भयंकर अंधकारके सिवा और कुछ दिखाई नहीं देता था। टामस् लिटेलटनने शादी नहीं की थी। इस संसारमें अनेक व्यक्ति आजीवन अविवाहित रहकर अपने चरित्रगौरवसे पूजनीय हो गये हैं, किन्तु लिटेलटन

इस पूज्यपदके अधिकारी नहीं हुए। इंग्लैण्ड और आयर्लैण्डकी अनेक अभागिनी युवतियोंको उन्होंने पतित कर डाला। आयर्लैंड-निवासिनी एमफ्लेट नाम्नी एक दुःखिनी विधवाके तीन कन्यायें थीं। ये तीनों अभागिनी भय अथवा लोभके वश लार्ड टामस् लिटेलटनकी चिरसङ्गिनी होकर अपनी वृद्ध माताके प्राणोंको जलाया करती थीं। तीन बहिनोंमेंसे एक आयर्लैंडमें रहती और दो लिटेलटनके साथ साथ इंग्लैंडके जुदा जुदा भवनोंमें पिंजरबद्ध मैनाओंके सदृश घूमा करती थीं; और उनकी शोकातुर वृद्धा माता, एकके बाद एक, इस तरह अपनी तीनों लड़कियोंको नरककी भेटमें देकर आयर्लैण्डकी एक शून्य कुटीरमें पड़ी पड़ी दिनरात 'हाय! हाय!' किया करती थी। धनमदसे मत्त या पद-गौरवसे आत्मविस्मृत हुए पुरुषोंके निकट रमणी एक क्षणिक आमोदकी वस्तुके सिवा और कुछ नहीं। किन्तु रमणियोंको भी इहलोक और परलोक है और रमणियोंको केवल एक उद्यानका कुसुम समझकर अपनी रसिकतासे ढँकी हुई आसुरी निष्ठुरताके आनन्दमें जीवन बितानेवाले लोगोंके लिए भी इहलोक और परलोक है। आमोदप्रिय लिटलटन परलोकके अस्तित्वको नहीं मानते थे। केवल एक लिटेलटन ही क्यों, संसारके प्रायः सभी धनमत्त विलासी पुरुष परलोकके नामको सुनकर नाकभौंहें सिकोड़ते हैं।

टामस् लिटेलटन अपनी जमींदारी देखने या अन्य कामोंके लिए आयर्लैंड जाया करते थे। एक बार वे आयर्लैंड जाकर शीघ्र लौट आये। उनका शरीर सबल, स्फूर्तिदायक, एवं हृदय सब प्रकारके विलाससुखोंमें अनुरक्त रहने पर भी, वे कुछ दिनोंसे एक कष्टदायक रोगसे पीड़ित रहा करते थे। इस रोगका दुःख असह्य होने पर भी क्षणस्थायी था। बीच बीचमें सहसा श्वास रुद्ध हो जाती थी, और कुछ समय तक असह्य यंत्रणा देकर आप-ही-आप निवृत्त हो जाती थी। इस कारण उनका

मन कुछ उदासीन अवश्य रहता था, किन्तु इस पीड़ा या उदासीनताके कारण उनके दैनिक कार्य्यों तथा अभ्यस्त आमोद-प्रमोदोंमें किसी प्रकारकी बाधा नहीं पहुँचती थी।

लार्ड लिटेलटन लंदनके बार्कली स्कायरके हिलस्ट्रीटवाले भवनमें रहते थे। उनकी सुख-सङ्गिनी दोनों कुमारियाँ भी साथ थीं। किन्तु उनकी दुःखिनी माता सुदूर आयर्लैंडकी एक शून्य कुटीरमें दुःसह शोक, दुःख, लज्जा और अपमानके कारण मरणोन्मुख हो रही थी। पहले उसको विश्वास था कि लार्ड लिटेलटन मेरी किसी एक कन्याको यूरोपीय-प्रथाके अनुसार पत्नीरूपसे ग्रहण करेंगे और शेष दो कन्याओंके लिए भी अच्छे वर खोज देंगे। किन्तु उसका यह विश्वास अब दुराशाके रूपमें परिणत हो गया। वृद्धाका भग्न हृदय और भी भग्न हो गया। वृद्धा अनेक रोगोंसे पीड़ित थी, किन्तु उसकी खोज-खबर लेनेवाला कोई नहीं था। एक दिन आधी रातके समय वह अपनी प्राणोंसे प्रिय तीनों लड़कियोंको पुकारते पुकारते थक गई, किन्तु कहींसे किसीने भी उत्तर नहीं दिया। उसकी आँखोंसे आँसुओंकी धारा बह रही थी। कुछ समय तक वह इस दारुण यंत्रणाको सहकर चिरदिनके लिए सो गई, फिर नहीं जागी। गरीबोंकी झोपड़ियोंमें गरीब लोग मन-ही-मन रोते, मन-ही-मन छटपटाते और अंतमें चुपचाप मृत्युमुखमें चले जाते हैं। वृद्धा जनशून्य कुटीरमें, हृदयकी दारुण दाहसे दग्ध होकर मृत्युमुखमें चली गई—किसीने भी उस बेचारीकी खबर न ली।

वृद्धाने जिस दिन, जिस समय आयर्लैंडकी निर्जन कुटीरमें देह-त्याग किया, ठीक उसी दिन, उसी समय, उसके समस्त दुःखोंके मूल कारण लार्ड लिटेलटन लंदनके हिलस्ट्रीटवाले प्रासादमें गहरी निद्रामें सो रहे थे। प्रतिदिनके सदृश आज भी उस भवनका नैशभोजन हास्य-परिहासकी हिलोरोंमें सुखपूर्वक सम्पन्न हो चुका था। नौकर चाकर भी

स्वामीके शयनगृहका प्रकाश बुझाकर अपने अपने स्थानको चले गये थे। लिटेलटन कोमल शय्या पर सुखकी नींद सो रहे थे। सहसा किसी शब्दको सुनकर उनकी निद्रा भंग हो गई। उन्हें ऐसा मालूम पड़ने लगा, मानों कोई पक्षी काचकी खिड़कीके निकट अपने पंखे फटफटा रहा है। जिस ओरसे शब्द आ रहा था उसी ओर फिरकर देखा तो मालूम हुआ कि पक्षी नहीं, एक स्त्री-मूर्ति खड़ी है और वह श्वेत कपड़े पहिने है। फासफरसके सदृश किसी वस्तुके उजेलेसे सारा गृह प्रकाशित हो उठा। लिटेलटनने खूब आँखें फाड़कर देखा तो मालूम हुआ कि वह और कोई नहीं, उन विलाससङ्गिनी कुमारियोंकी दुःखिनी माता है। वह स्त्री क्रोधभरी दृष्टिसे इन्हींकी ओर देख रही थी। लिटेलटनने दूसरी ओर मुँह फेरना चाहा, किन्तु वे ऐसा करनेमें असमर्थ हुए। उनके दोनों नेत्र उस स्त्रीमूर्तिके जलते हुए दो अंगारोंके सदृश भयंकर नेत्रोंसे मानों किसी अज्ञात सूत्रद्वारा बँधसे गये। लिटेलटनका हृदय धक् धक् करने लगा, कंठ सूख गया और शरीर विवश हो चला। इतनेमें उस स्त्रीमूर्त्तिने शुष्क और गंभीर स्वरसे कहा–"रे पापिष्ठ, तेरा जीवन पूर्ण हो चुका, तू मरनेके लिए तैयार हो जा।" लार्ड लिटेलटनने मानों स्वप्नके आवेशमें भयविह्वल होकर उत्तर दिया–"क्या ?–मृत्यु ? नहीं–नहीं, इतनी जल्दी नहीं; आगेके दो महीनोंमें भी ऐसी आशङ्काका कोई कारण नहीं जान पड़ता।" स्त्रीने कहा–"दो महीने नहीं, तीन दिनके भीतर ही।" उस कमरेमें एक बड़ी घड़ी लटक रही थी। धनी लोगोंके घरोंमें ऐसी ही बड़ी घड़ियाँ होती हैं। उस समय घड़ीमें ठीक बारह बजे थे। स्त्री-मूर्त्तिने दहिने हाथकी एक अँगुलीको घड़ीकी ओर दिखाकर मंद्र स्वरसे कहा–"देखो, घड़ीमें बारह बजे हैं। खूब अच्छी तरह देख लो। आजसे तीसरे दिन रात्रिके समय जब घड़ीका काँटा फिर इसी स्थान पर आयगा तब मैं आकर तुम्हें ले जाऊँगी।" बात पूरी होते ही घरका उजेला

लुप्त हो गया । गृह और गृह-स्वामीको पहलेकी अपेक्षा अधिक अंधकारमें डुबा कर वह स्त्री-मूर्ति अदृश्य हो गई । यह क्या देखा ? यह स्वप्न है या वास्तविक घटना ?—या विकृत, विह्वलचित्तकी विभीषिकामय अमूलक कल्पना ? लिटेलटनकी समझमें कुछ नहीं आया । वे बहुत ही भयभीत हो रहे थे । उन्होंने तुरंत ही नौकरको पुकारा । नौकर पासहीके एक कमरेमें सो रहा था । वह उजेला लेकर मालिकके शयनगृहमें आया । उसने आकर देखा कि उनके सारे शरीरसे पसीना छूट रहा है और वे अत्यंत अधीर हो रहे हैं ।

सबेरा हो गया । लिटेलटन बाहर आये । किन्तु उनके मनमें आज वह प्रमोदकी चंचलता और प्रसन्नता नहीं है । अविराम रसिकताके स्रोतमें बहते बहते आज मानों वे सहसा रुक गये । उल्लासकी तरंगें भी आज विलीन हो गईं । उन्होंने अपने सब मित्रोंके समक्ष रात्रिकी सारी घटना कह सुनाई । उनके सहचर और मित्रगण, सभी एक स्वरसे उक्त घटनाको झूठा स्वप्न कहकर बातोंमें उड़ा देनेकी चेष्टा करने लगे । किन्तु वे ऐसा करनेमें समर्थ नहीं हुए । लिटेलटनका मन बहुत अस्थिर हो रहा था । यद्यपि वे फिर आमोद-प्रमोदमें सम्मिलित हुए, तथापि उनके मनको किसी प्रकारकी शान्ति नहीं मिली । कल गुरुवारको स्वप्न देखा था । आज शुक्रवार है । आगामी दिन अर्थात् शनिवारकी रात्रिकी १२ बजेकी याद, उस आमोद-प्रमोदके मध्यमें भी उनके हृदयको कँपा देती थी । वे बीच बीचमें सहसा चौंक उठते थे ।

हम पहले ही कह चुके हैं कि लार्ड लिटेलटन परलोकके अस्तित्वको स्वीकार नहीं करते थे । किन्तु आज वे इस भयसे बीच बीचमें व्याकुल हो उठते थे कि यदि सचमुच ही परलोक कोई वस्तु है तो मेरी क्या गति होगी ? उन्होंने अपने शारीरिक बलसे हृदयकी इस धुकधुकीको मिटानेकी चेष्टा की, किन्तु उनका कुछ बल नहीं चला । उस दिन वे पार्लीमेंटको

गये और जाते समय अपने शरीरकी ओर देखकर बोले—मैं तो बहुत स्वस्थ और सबल हूँ, मेरी मृत्युका इतने समीप होना कदापि संभव नहीं। शनिवारकी रात्रिको १२ बजेके पश्चात् मेरे इस कथनकी सत्यता भली भाँति सिद्ध हो जायगी।

आज शनिवार है। लार्ड लिटेलटन हिलस्ट्रीटवाले मकानसे पिट-पेलेसमें आ गये हैं। आज लिटेलटनके समस्त स्वजन और हितैषी इकट्ठे होकर उनके पास बैठे हैं। केवल उनके प्रियसुहृद्, कामन्स सभाके मेम्बर माइल्स पीटर एण्ड्रूज किसी आवश्यक और अपरिहार्य्य कार्यके कारण डार्टफोर्ट चले गये हैं। कहा जाता है कि लार्ड लिटेलटन रविवारके सवेरे डार्टफोर्ड जाकर अपने प्रिय मित्र एन्ड्रूजसे मिलनेवाले थे। पिट-पेलेससे डार्टफोर्ड ३० मीलकी दूरी पर था।

पिट-पेलेसमें आते ही लार्ड लिटेलटन श्वास रुक जानेके कारण कुछ समय तक दुखी रहे। यथासमय रात्रिभोजनका प्रबंध हुआ। लिटेलटनने मित्रोंके साथ भोजन किया। भोजनोपरान्त नाना प्रकारकी बातोंमें समय कटने लगा। आसपास उनके सब मित्रगण बैठे हुए थे। लिटेलटनको किसी प्रकार चैन नहीं थी, वे बारबार घड़ी खोलकर देखते थे कि अब कितने बजे हैं। मित्रोंने पहलेहीसे सलाह करके पिट-पेलेसकी समस्त घड़ियोंमें एक घंटा समय बढ़ा दिया था। अतः जब सच्ची घड़ीमें १०॥ हुए तब लिटेलटनकी घड़ीमें ११॥ बज गये। घड़ीकी ओर देखकर उनका मुख मलिन पड़ गया। वे आध घंटेतक घड़ीकी ओर टकटकी लगाये हुए चुपचाप बैठे रहे। जब घड़ीका काँटा १२ के निशानको लाँघ गया तब वे शीघ्र ही बालकोंके समान हाथोंकी तालियाँ पीटकर प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहने लगे—"अब मैं बच गया, आप लोग मेरी कुशलताके उपलक्ष्यमें मद्यपान कीजिए। मिथ्यावादिनी बुढ़ियाका भयप्रदर्शन झूठा सिद्ध हुआ। मैं भी कैसा अज्ञान हूँ कि

स्वप्नकी एक झूठी घटना पर विश्वास करके मैंने ये दो तीन दिन कैसे संकटमें बिताये।" उनकी घड़ीका काँटा जब १२॥ पर पहुँच गया तब वे विश्राम करनेके लिए अपने शयनगृहमें चले गये।

इस समय भी सच्ची घड़ीमें बारह नहीं बजे थे। मित्रोंने उस समयके टल जानेके पश्चात् जानेका निश्चय किया था। यहाँ शयनगृहमें शय्या प्रस्तुत होते होते उनकी घड़ीमें एक और सच्ची घड़ीमें बारह बजनेका समय आ गया। लिटेलटन नौकरको एक चमचा लानेकी आज्ञा देकर बिछौने पर लेट गये। जब नौकर चमचा लेकर लौटा तो उसने स्वामीको स्वस्थ नहीं पाया। देखा कि वे मूर्च्छित होकर शय्याके नीचे पड़े हैं। सामने शंकासूचक घंटा (Alarm bell) था। उसने तत्काल ही उसकी कलको घुमा दिया। टन् टन् टन् करके घंटा बज उठा। मित्रगण झट उठकर सोनेके कमरेकी ओर दौड़े। जाकर देखा कि लार्ड लिटेलटनका शरीर प्राणहीन होकर नौकरकी गोदमें पड़ा है।

लार्ड टामस् लिटेलटनने जिस समय शरीर छोड़ा, उस समय उनके परम प्रिय मित्र एन्ड्रूज डार्टफोर्डमें अपनी शय्या पर तन्द्राग्रस्त हो रहे थे। किसी चिन्ताके कारण उन्हें रातभर अच्छी नींद नहीं आई थी। घरमें मंद प्रकाश हो रहा था। रात्रिके बारह बजे सहसा किसीने उनकी मशहरी खींची। वे चौंक पड़े। उठकर देखा—सामने रात्रिकी पोशाकमें लार्ड लिटेलटन खड़े हैं! केवल देखा ही नहीं, किन्तु स्पष्ट रीतिसे उनकी बातें भी सुनीं। लिटेलटनने कहा—"मेरी आयु पूर्ण हो गई और रात्रिका स्वप्न सत्य निकला, केवल यही समाचार देनेके लिए मैं यहाँ आया हूँ।"

पहले किये हुए निश्चयके विरुद्ध अर्थात् रविवारका सबेरा होनेके पहले ही और सो भी ऐसे असमय पर उपस्थित होनेसे लार्ड एन्ड्रूज उनसे कुछ नाराज हो गये। लिटेलटन और एन्ड्रूज एक दूसरेके प्राणबन्धु

अथवा जिगरी दोस्त थे। लिटेलटन, एन्ड्रूजके साथ पहले भी कई बार इसी प्रकार कौतुक कर चुके थे। एन्ड्रूजने निश्चय किया कि लिटेलटनने स्वप्नमें दिखाई देनेवाली घटनाके सम्बन्धमें कौतुक किया है। एन्ड्रूज स्वप्नविशेषकी सत्यता और छायादर्शनतत्त्वके घोर विरोधी थे। उन्होंने कहा—" तुम ऐसे असमयमें आये हो, कहो अब मैं तुम्हें कहाँ बिठलाऊँ और कहाँ सोनेको जगह दूँ ? " ऐसा कहकर उन्होंने कुछ कृत्रिम क्रोध दिखानेके उद्देश्यसे सामने पड़ी हुई छोटीसी पुस्तकको लिटेलटनकी ओर फेंका। लिटेलटनकी मूर्त्ति पासके एक कमरेमें चली गई। एन्ड्रूज शय्या छोड़ कर उठे। उन्होंने उस कमरेमें जाकर देखा, पर कहीं किसीका पता न चला। समस्त मकान खोज डाला, परन्तु कोई भी न दिखलाई दिया। नौकरोंको पुकारा, उन्होंने भी भीतर बाहर सब जगह देखा, पर लिटेलटनके भीतर आने और फिर भीतरसे बाहर जानेका कोई चिह्न नहीं मिला। भीतरसे सब किवाड़ बंद थे। एन्ड्रूजको बड़ा विस्मय हुआ। अंतमें उन्होंने कहा–जैसा आदमी, वैसी सजा; जैसे असमयमें दिल्लगी करनेके लिए आये, वैसे अब किसी अस्तबल या होटलकी दहलानमें जाकर सोओ। "

सबेरा हुआ। लार्ड लिटेलटन नहीं आये। दो पहरतक राह देखनेके पश्चात् लार्ड एन्ड्रूजको तारद्वारा समाचार मिला कि–" गत शनिवारकी रात्रिको १२ बजे लार्ड लिटेलटनका देहान्त हो गया। " यह समाचार पढ़ते ही एन्ड्रूज मूर्छित होकर गिर पड़े और इस घटनाके पश्चात् तीन वर्षतक वे पूर्णरूपसे स्वस्थ नहीं हो सके।

यह कहानी एन्ड्रूजने कामन्स सभाके सहयोगी सभ्य मि० प्लूमर एडवर्डको सुनाई। इस घटनाको लेकर इंग्लैंडमें जिस समय सर्वत्र आलोचना हो रही थी, उस समय पिट-पेलेसके उन सब मनुष्योंने–जो लार्ड लिटेलटनकी मृत्युके समय वहाँ उपस्थित थे—इस घटनाकी सत्यताके विष-

यमें साक्षियाँ दी थीं। इन साक्षियोंमेंसे लिटेलटनके प्रिय सेवक विलियम-स्टर्कीका नाम सबसे पहले उल्लेखयोग्य है। कारण कि लिटेलटन मृत्युके समय इसीकी गोदमें पड़े थे। इसके पश्चात् आयर्लैंडकी दुःखिनी विधवा एमफ्लेटकी दोनों कन्याओंकी साक्षी—जो उनकी मृत्युके समय उसी भवनमें उपस्थित थीं-उल्लेखयोग्य है। लिटेलटन कहाँ चले गये-इसे कोई नहीं जानता, किन्तु उनके आमोद-विह्वल जीवनकी यह अवसान-कहानी—यह आतंकजनक कथा—अध्यात्मतत्त्वके इतिहासमें सदाके लिए अंकित हो गई। यह कहानी मनुष्यको गंभीर स्वरसे उपदेश देती है कि "इहलोकके पश्चात् परलोक है, अन्यायके पश्चात् न्याय है; अतएव परलोककी बात एकदम भूल जाना बुद्धिमानी नहीं है।"

इस संसारमें इस समय भी अनेक लिटेलटन हैं, जो पदाधिकारके गौरव या धन-ऐश्वर्य्यके नशेमें उन्मत्त होकर निर्बलोंकी छातीपरसे अपने ऐश्वर्य्यकी गाड़ी चलाया करते हैं। यह काम वे कुछ कुछ अपने स्वभाव-दोषसे और कुछ कुछ घोर अज्ञानताके कारण करते हैं। यदि वे यह जाननेमें समर्थ हों कि मृत्युसे ही जीवके सुखदुःखका अंत नहीं हो जाता, किन्तु जिस क्षण, जिस मुहूर्तमें पृथ्वी पर मनुष्यका शरीरान्त होता है, उसी क्षण, उसी मुहूर्त्तमें वह, इन चर्मचक्षुओंसे न दिखाई देनेवाले सूक्ष्म शरीरको धारण करके एक दूसरे जगतमें प्रवेश करता है और वहाँ फिर उसके सुख-दुःखोंका प्रारंभ होता है, तो वे अवश्य ही लालसाओंके प्रबल पूरमें अपनी जीवन-नौकाको छोड़ कर परिणाम-चिन्तासे उदासीन न रहें। करुणासागर जगदीश्वरने मनुष्यको वास्तविक मनुष्यत्व प्राप्त करनेके मार्गमें प्रेरित करनेकी इच्छासे प्रायः सभी विषयोंमें पूर्ण स्वाधीनता देकर उत्पन्न किया है। पशु-पक्षियोंको जो स्वाधीनता नहीं है मनुष्योंको वह प्राप्त है। मनुष्य इस स्वाधीनताके सद्व्यवहारद्वारा मृत्युके पश्चात् देवत्व

प्राप्त करके देवलोकका अधिकारी होता है और इसी स्वाधीनताका असद्व्यवहार करके अपने कर्मदोषसे कर्मफलके परिमाणानुसार अल्प अथवा अधिक कालके लिए नरकगामी होता है। ईश्वर उसके इस स्वाधीनताके मार्गमें कभी किसी प्रकारकी बाधा नहीं पहुँचाता। वह केवल उसके समस्त जीवनमें एक दिन एक बार किसी अदृश्य देशान्तरमें जानेकी आज्ञा देता है। एक दिन और एक बार इस आज्ञाका प्रतिपालन सबको करना पड़ता है। मनुष्य बोनापार्ट, अर्जुन या राणा प्रतापके सदृश वीर, बायरन, कालिदास, या तुलसीदासके समान कवि, मैराबोके समान वाग्मी अथवा लार्ड लिटेलटनके समान विपुल वैभव-सम्पन्न विलासी, चाहे जो भी क्यों न हो किन्तु उसे एक न एक दिन उस ईश्वरीय आज्ञाको अवश्य ही शिरोधार्य करना पड़ता है—वह आदेश सबके लिए अनुल्लंघनीय है।

जो लोग लार्ड लिटेलटनकी इस कहानीको मनोयोगपूर्वक पढ़ेंगे उनके मनमें कुछ प्रश्नोंका उदय अवश्य होगा। इस स्थल पर हम उन सब प्रश्नोंकी संभावना करके उसका संक्षेपसे उत्तर देनेका प्रयत्न करते हैं।

पहला प्रश्न—लार्ड लिटेलटनने आयर्लैण्डकी जिस दुःखिनी विधवाकी तीन युवती कन्याओंका अपहरण करके अपनी विलासवासनाकी जलती हुई अग्निमें उनकी आहुति दी थी, वह विधवा मरते ही—उसी क्षण इंग्लैण्डमें लार्ड लिटेलटनके भवनमें कैसे जा पहुँची? उसने लिटेलटनकी मृत्युका समय कैसे निश्चित किया और वह उसी निश्चयके अनुसार तीसरे दिन किस शक्तिके सहारे एक क्षण भरके भीतर उनके प्राण हरण करनेमें समर्थ हुई?

उत्तर—(१) सूक्ष्मशरीरी आत्मिक या आत्मिका बिजलीसे भी अधिक शीघ्र गतिसे एक स्थानसे दूसरे स्थानको जा सकती है। ऐसी अवस्थामें

आयर्लैण्ड कुछ दूर नहीं है। (२) अध्यात्मलोकनिवासियोंको मनुष्यके भविष्यजीवनके संबंधमें बहुत कुछ ज्ञान रहता है। आयर्लैण्डकी वह वृद्धा अपनी शक्तिसे ज्ञान प्राप्त न कर सकने पर भी अन्य किसी उच्च आत्मिक-की सहायतासे ज्ञान प्राप्त कर सकती है, अथवा ज्ञान प्राप्त न होने पर भी, जैसे मनुष्य इस पृथ्वी पर प्रतिहिंसाकी उत्तेजनासे दूसरेके प्राण ले डालता है, उसी प्रकार अति प्रबल प्रतिहिंसाकी उत्तेजनासे, अपनी नवीन आध्यात्मिक शक्तिके द्वारा ही उसने प्राण ले लिये हों।

दूसरा प्रश्न—लार्ड लिटेलटनने शरीर छोड़ते ही अपने प्रिय मित्र एण्ड्रूजको ऐसी गंभीर रात्रिके समय दर्शन क्यों दिये ?

उत्तर—कुछ अपने मनके झुकाव और कुछ दूसरोंके शासनसे ऐसा होना संभवित है। जो देवात्मा लार्ड लिटेलटनको ले जानेके लिए आये थे उन्होंने उनके मनकी अभिलाषा पूर्ण करनेके हेतु अपने मित्रको अंतिम दर्शन देनेके लिए अनुमति दे दी होगी। ऐसे अंतिम-दर्शन अनेक लोगोंने दिये हैं और अध्यात्म तत्त्वके ग्रन्थोंमें उनका सप्रमाण विवरण लिखा हुआ है।

तृतीय अध्याय।



प्रस्तावना।

यह ग्रह-नक्षत्र-चन्द्र आदिसे सुशोभित समस्त जगत्, ज्ञानियोंमेंसे किसीकी दृष्टिमें एक अनन्त विस्तारवाला रूपसागर और किसीकी दृष्टिमें एक अगाध और अतुलनीय प्रेमसागर है। जो इस रूपसागर या प्रेमसागरमें अणु अणुमें व्याप रहा है, जो जगज्जीवन जगदीश्वरके नामसे जीवोंके प्राणोंमें प्रतिष्ठित है, जो जीवोंकी आंतरिक भक्ति और प्रेममय आराधनाको निरंतर ग्रहण किया करता है, उसका विशेष लक्षण क्या है? भक्त ज्ञानियोंने कहा है कि जिस प्रकार वह रूपसागरका अनादि और अनन्त स्रोतस्वरूप ब्रह्म है, उसी प्रकार वह प्रेमसागरका अनादि और अनन्त स्रोतस्वरूप प्रेमनिधान जगदीश्वर भी है।

इस लघु-लेखमें जगदीश्वरके रूपके विषयमें कुछ न लिखा जायगा। क्योंकि उसका विश्वव्यापीरूप एक रूपसे बर्फसे ढँकी हुई हिमालयकी चोटियों पर, दूसरे रूपसे उछलते हुए समुद्रकी तरंगोंमें, तीसरे रूपसे बच्चोंकी मधुर हँसीमें, चौथे रूपसे रमणियोंके सलज्ज नयनोंमें और इसी प्रकार असंख्य रूपोंसे खिले हुए फूलों, हिलती हुई लताओं और हरे भरे वृक्षों आदिमें दिखाई देता है। धरती, आकाश, समुद्र आदि जिस ओर दृष्टि डालो उसी ओर परमेश्वरके रूपकी झलक दिखाई देती है। परमेश्वरके इस विश्वव्यापी रूपका वर्णन करना हम जैसे अल्पज्ञ लेखकोंकी शक्तिसे सर्वथा बाहर है। किन्तु यहाँ हम उसके अनंत धाराओंसे निरंतर प्रवाहित होनेवाले प्रेमके सम्बन्धमें दो एक बातें लिखते हैं। क्योंकि हृदयमें उस प्रेमका एकाध बिन्दु धारण किये विना हमारा जीवन

धारण करना वृथा है; उसके विना जीवनमें किसी प्रकार सुख-शान्ति नहीं मिल सकती।

पुण्यमयी भारतभूमिके प्राचीन ऋषिगण सचमुच ही जगदीश्वरके प्रेमका अनुभव करते थे और आनन्दके मारे आत्मविस्मृत हो जाते थे। जब उनके हृदयमें प्रेमकी लहरें नहीं समाती थीं--जब उनके हृदयमें प्रेम उमड़ पड़ता था तब वे आनंदविह्वल होकर गद्‌गद्‌स्वरसे कह उठते थे—

"रसो वै सः--रसो वै सः--रसो वै सः।" अर्थात् वह रसस्वरूप है--वह रसस्वरूप है--वह स्वादुमधुर, प्राणोंको शीतल करनेवाला, पूर्ण आनंदमय और रसस्वरूप है। वे कभी कभी ऐसे ही भावावेशके समय यह भी कहते थे:--

"प्रेयःपुत्रात्, प्रेयो वित्तात्, प्रेयोऽन्यस्मात् सर्व्वस्मात्।" अर्थात् वह पुत्रसे प्रिय, धनसे प्रिय और संसारकी अन्य सब वस्तुओंसे प्रिय है।

प्रेममय ईसामसीहके प्रिय शिष्य जान कहते हैं,—

"God is Love, and he that Lives in Love lives in God."

अर्थात् ईश्वर ही प्रेम है--वह प्रेममय नहीं, किन्तु स्वतः ही प्रेम-स्वरूप है और उसीका एक नाम प्रेम है। अतः जो मनुष्य सार्वजनीन प्रेमसे सदैव परिपूर्ण रहते हैं वे मानों परमेश्वरके स्वरूपहीमें अवस्थित रहते हैं।

ईश्वरके इस प्रेमसे--मनुष्यकी तो बात ही क्या--पशु-पक्षी और वृक्ष लतादि भी वंचित नहीं हैं। क्यों कि यही प्रेम ही सब पदार्थोंका प्राण है और प्रत्येक पदार्थ अपनी मात्राके अनुसार इस प्रेमरूपी धनसे धनी है। वैज्ञानिकोंने परीक्षाके द्वारा सिद्ध किया है कि यदि सोनेके दो टुकड़े कुछ अंतर पर एक संदूकमें रख दिये जायँ तो कुछ दिनोंके

पश्चात् दिखाई देगा कि वे एक दूसरेसे खिंचकर मिलगये हैं। सजीव पत्थर तिल तिल भर प्रतिदिन ही बढ़ता रहता है, और इस तरह धीरे धीरे बढ़ते हुए दूसरे पत्थरोंसे मिलता जाता है। लता वृक्षों आदिके विषयमें तो कुछ कहनेकी आवश्यकता ही नहीं है। क्योंकि कालिदास प्रभृति प्रेमोन्मत्त कवियोंने उनके प्रेमका वर्णन बड़ी उत्तमताके साथ सैकड़ों प्रकारसे किया है। मृगी जब अपने हृदयमें छुपे हुए प्रेमके उल्लाससे निस्तब्ध होकर समीपवर्त्ती मृगके मनोहरसींगसे अपनी बायीं आँखको खुजाती है तब वह कैसे प्रेमका अनुभव करती है? इसी प्रकार जब कपोती कपोतके समीप बैठकर उसके कण्ठसे कण्ठ मिलाकर विचित्र गुञ्जन करती है या बारबार उसकी चोंच पर चोंच रखकर अपनी प्रेमाकुलताका परिचय देती है तब उसे देखकर कौन मुग्ध नहीं होता? किन्तु यही प्रेम जब मनुष्यहृदयमें पवित्रताके अंतिम सौन्दर्य तक विकसित होकर युवक युवतियोंको इस पृथ्वी पर ही स्वर्गसुखका आस्वादन कराता है, तब उसे देखकर प्रीतिमान मनुष्य ईश्वरका स्मरण किये विना नहीं रह सकता। यह प्रेम ऐसा सुन्दर, ऐसा मधुर और ऐसा रसपूर्ण है कि इसकी प्रकट मूर्त्ति नीरस, निष्ठुर और पाषाणहृदय पर भी प्रतिबिम्बित हुए बिना नहीं रहती। यह प्रेम पहले पृथ्वी पर विकसित होता है और फिर पारलौकिक जीवनमें उसका पूर्ण विकाश होता है। आज हम एक ऐसा ही अपूर्व प्रेमपट दिखलावेंगे, जिससे पाठकोंको विदित होगा कि सच्चा प्रेम केवल इहलोकके लिए ही नहीं किन्तु परलोकके लिए भी होता है।

आत्मिक-कहानी ।

प्रेम-यज्ञमें प्राण-आहुति ।

जेन और एनी दो सहोदर बहनें थीं । दोनों ही पढ़ी-लिखीं और सच्चरित्रा थीं । वे बचपनसे सुखकी गोदमें पली थीं । उनके पिता एक उच्चश्रेणीके प्रतिष्ठित पुरुष थे; किंतु इस समय वे जीवित नहीं थे । लन्दनके पश्चिमकी ओर एक ग्राममें दोनों बहनें एक निर्जन घरमें निवास करती थीं । जेन बड़ी और एनी छोटी थी । दोनोंकी उमरमें केवल तीन चार वर्षका अंतर था । घरमें और कोई न था । इस कारण जेठी बहन जेन ही एनीकी अभिभाविका थी । दोनों बहनोंमें बड़ा स्नेह था । दोनों एक आत्मा और एक प्राण थीं ।

जेन और एनी दोनों ही युवती और दोनों ही जगन्मोहिनी सुन्दरी थीं । तथापि रूपकी तुलनामें जेनकी अपेक्षा एनीका अधिक आदर था । एनी यौवनवती होने पर भी व्यवहारमें एक कच्ची उमरकी बालिकाके समान थी । वह न तो कभी किसीकी ओर आँख उठाकर देखती और न कभी किसीसे मुँह लगकर बातचीत करती थी । वह जैसी नम्र और विनीत थी वैसी ही मधुर-प्रकृति भी थी । वह मानों साक्षात् लज्जा-वती लता थी—वह सदैव अपने आपमें छिपनेकी चेष्टा किया करती थी । सभी कहा करते थे कि एनीके समान लजीली लड़की गाँवमें दूसरी नहीं है । उसके मधुर स्वभाव और बड़े बड़े चमकदार नेत्रोंकी सलज्ज दृष्टिसे, उसके कमनीय मुखमंडल पर एक ऐसे अनुपम माधुर्यकी छटा विराजती थी कि उसे देखते ही अपरिचितके हृदयमें भी उसके प्रति प्रगाढ़ प्रीति और स्नेहका संचार हो उठता था ।

एनीकी एक और सम्पत्ति, संगीत-प्रतिभा थी । वह पियानो बजानेमें अपने पड़ौसियोंमें सर्वश्रेष्ठ और अतुलनीय थी । उसके सुकोमल कर—

–स्पर्शसे निर्जीव पियानोमेंसे मनुष्यकंठकी सजीव-मधुरता उन्मत्त-तरंगोंसे प्रवाहित होने लगती थी। इसके अतिरिक्त उसकी आकृति-प्रकृति जैसी मधुर थी, उसका कंठ-स्वर उससे भी अधिक मधुर था। एनी जब पियानोके सुरमें सुर मिलाकर, अपने स्वप्नावेश-सुख-स्मित अर्धमुद्रित नेत्रोंको नचाकर कलकंठसे गाना गाती थी, तब गृहपालित पशु-पक्षी भी मंत्र-मुग्धकी नाईं उस सुमधुर स्वरकी ओर आकृष्ट हो जाते थे।

दोनों बहनें अविवाहित थीं। जेठी बहन मन-ही-मन किसी युवकसे प्रेम रखती है या नहीं, इसे कोई नहीं जानता था, किन्तु एनीके कुसुमित हृदयके किसी एकान्त कोनेमें एक सुन्दर और प्रीतिविह्वल युवककी मोहिनीमूर्ति देवमूर्तिके समान प्रतिष्ठित हो चुकी थी। एनी अपने उस हृदयदेवताके निर्मल प्रणय-अनुरागमें अपने तन-मनको समर्पित करके, एक प्रकारसे उसीके सहारे जीती थी।

एनीके हृदयाराध्य युवकका नाम चार्ल्स था। वह कुछ दिनोंसे सेना-विभागमें भरती हो गया था। उसने अपने स्वभावसिद्ध असाधारण साहस और शौर्यसे शीघ्र ही सैनिकोंमें अच्छा नाम पा लिया था। चार्ल्स पार्सिवल नवयुवक होने पर भी शान्तप्रकृति था। वह अपनी वंश-मर्यादा, विद्याबुद्धि, सच्चरित्रता, सुस्वरूप तथा वीरोचित व्यवहारसे सबका प्रीति-पात्र बन गया था।

पहले ही कह चुके हैं कि एनी अधिक बात चीत नहीं करती थी। वह अपने हृदयकी बातको और अपने प्रेमके इतिहासको अपनी बराबरीकी बालिकाओंसे भी नहीं कहती थी। किन्तु रमणियाँ अपने प्राणोंमें छिपे हुए प्रणयको लज्जाके कारण ज्यों ज्यों ढँकनेकी चेष्टा करती हैं–ज्यों ज्यों छिपाना चाहती हैं, त्यों त्यों वह फूटकर बाहर निकलता है। बेचारी एनीकी भी यही दशा थी। वह ज्यों ज्यों अपने हृदयके प्रेमको छिपानेका यत्न करती थी, त्यों त्यों वह दूसरों पर प्रकट होता जाता

था । जहाँ प्राण, प्रीतिकी नीरव भाषामें दूसरे प्राणसे सम्भाषण करते हैं वहाँ वह प्रीति छिपाये नहीं छिपती--उसको ढँक रखना असंभव हो जाता है । बहुत सतर्कता--बहुत सावधानी रखने पर भी एनीके प्रेमकी सब बातें चार्ल्स और बड़ी बहन जेन पर प्रकट हो गईं । चार्ल्स अपनेको कृतार्थ समझने लगा ।

धीरे धीरे चार्ल्स और एनीका छिपा हुआ प्रेम अति गंभीर प्रणयके रूपमें बदल गया । अब बात अप्रकट नहीं रह सकी । एनीके सभी परिचित व्यक्तियोंको इस प्रणयका हाल मालूम हो गया । लज्जावती एनी लज्जासे और भी दब गईं । अब वह लाजके मारे किसीके आगे अपना सिर ऊँचा नहीं कर सकती । उसे ऐसा जान पड़ने लगा कि मानों गाँवके सभी आदमी मेरी ही बातें कर रहे हैं, मेरे ही छिपे हुए प्रेम और विवाहकी आलोचना कर रहे हैं ।

कुछ काल इसी प्रकार बीतनेके पश्चात् जेनके प्रयत्नसे चार्ल्स और एनी दोनों ही किसी शुभ दिन, शुभ सम्मेलनमें सम्मिलित होनेके लिए आतुर हो उठे । चार्ल्स रणक्षेत्रके भीषण कोलाहलमें और दूसरे अनेक कामोंमें लगा रहने पर भी एनीको एक क्षणभरके लिए भी नहीं भूलता था । एनीका सच्चा प्रेम और उसकी वह मनोमोहिनी मूर्ति सदैव उसके साथ साथ रहकर उसकी वीर भुजाओंमें दूनी शक्तिका संचार करने लगी । वह उन्नतिके पश्चात् उन्नति—तरक्कीके बाद तरक्की—पाकर एक सेनाका प्रसिद्ध सेनापति होगया । चार्ल्सके युद्ध-नैपुण्य, वीरत्व और सद्गुणोंकी प्रशंसा सैकड़ों लोगोंके मुँहसे सुनाई देने लगी । अपने हृदयाराध्यदेवकी कीर्ति एनीने भी सुनी, और तब अपने हृदयके इस आनंद तथा उल्लासको छुपानेके प्रयत्नमें उसे अपनी बड़ी बहन जेनके सामने पुनःपुनः लज्जित होना पड़ा ।

किन्तु रणक्षेत्रका विषम साहस वीरत्व-व्यंजक होने पर भी विपज्जनक होता है। इसी कारण एनीका स्नेहकातर कोमल हृदय, प्रीतिके साथसाथ एक अनिवार्य भीतिके मारे सदैव धकधक किया करता था। वह किसीसे कुछ नहीं कहती थी। एकान्तमें बैठकर नाना प्रकारकी बातें सोचा करती और दिनमें अनेक बार जब अवसर पाती लोगोंकी नजर बचाकर ईश्वरसे प्रार्थना किया करती थी कि "हे दयामय, मेरे चार्ल्सकी रक्षा करो।" वह अपना अधिकांश समय प्रायः एकान्तहीमें बिताया करती थी—चार आदमियोंसे मिलना-भेटना उसे अच्छा नहीं मालूम होता था।

लन्दनसे पश्चिमकी ओरके एक ग्राममें मि० सटन नामके एक सभ्य पुरुषका निवास था। सटनकी पत्नी, जेन और एनीकी कोई निकट-सम्बन्धिनी थी। आज सटनके घर पर बड़े ठाटबाटके साथ रात्रि-भोजनकी योजना हो रही थी। इंग्लैण्डने एकके बाद एक युद्ध करके सारे यूरोपमें विजयकीर्ति विघोषित कर रक्खी थी। समग्र लन्दन नगरमें आनन्दकी और उत्सवकी लहरें उठ रही थीं। घर घर आनन्द मनाया जा रहा था। आज सटनके भवनमें भी इसी विजयोत्सवकी धूम थी। नगरके प्रधान प्रधान पुरुष, भद्रमहिलायें और आत्मीयस्वजन निमंत्रित किये गये थे। उत्सवगृह खूब सुसज्जित और प्रखर प्रकाशसे सुशोभित था। समाजके प्रधान प्रधान पुरुषोंकी प्रदीप्त-प्रतिभा, सुन्दरियोंके कुसुम-कमनीय अनुपमरूप और वस्त्रोंकी अनूप-प्रभाके साथ मिलकर समस्त उत्सव-गृह जगमगा रहा था। सभी हास्य, विनोद और आनंदमें मग्न हो रहे थे।

आत्मीयके घर उत्सव होनेके कारण जेन और एनी भी आदरपूर्वक बुलाई गई थीं। जेन तो अपने मनके उत्साहसे आई थी, किन्तु एनी परवश और अनिच्छासे उत्सवमें सम्मिलित होनेके लिए बाध्य हुई

थी। एनी उत्सवमें सम्मिलित हुई सही, किन्तु वह और दूसरोंके समान अपनेको उत्सवकी तरल तरंगोंमें बहा देनेमें किसी प्रकार समर्थ नहीं हुई। वह लज्जा और संकोचवश घरके एक कोनेमें जा बैठी।

एनी चार आदमियोंकी दृष्टिसे बचकर रहना चाहती थी । किन्तु लोग उसके मनके भावको नहीं समझते थे। उसके सुशील स्वभाव तथा सुन्दर स्वरूपको देखकर जिस प्रकार सबके मन और नेत्र उसकी ओर आकर्षित हो गये थे, उसी प्रकार उसकी मधुर कंठ-ध्वनि सुननेके लिए भी उत्सव-गृहके अनेक मनुष्य अत्यंत उत्सुक हो रहे थे । एनी ऐसी स्थितिमें घरके एक कोनेमें अपने हृदयकी प्रेम-स्निग्ध शांतिको लेकर कैसे बैठ सकती थी! अनेक लोग पियानोके द्वारा गाना गानेके लिए उससे विशेष आग्रह और अनुरोध करने लगे।

एनीकी इच्छा गाना गानेकी नहीं थी, इस कारण उसने पहले तो अनेक मिस बना कर गाना गानेसे एकदम इन्कार कर दिया, किन्तु पीछे यह सोचकर कि ऐसा रूखा उत्तर देना उचित नहीं है, वह मंदमंद मुस्कराकर अपनी बराबरीकी सखियोंके निकट अनेक अनुनय-विनय करने लगी। किन्तु इस अनुनय-विनय और टालाटूलीका कुछ फल नहीं हुआ। उन्होंने उसकी एक बात नहीं मानी । इसके पश्चात् अनेक सखियाँ चार्ल्स और एनीके गुप्त-प्रणय और भावी विवाहके प्रसंगको लेकर श्लेषपूर्ण परिहास करने लगीं। उस समय बेचारी एनीकी समझमें नहीं आता था कि मैं कहाँ और किसके हृदयमें छिप कर अपनी लज्जाको बचाऊँ।

परिहास-प्रिय आत्मीयोंने बहुत अनुसंधानके पश्चात् एक गीत चुना। अँगरेजी गीत-साहित्यमें शृंगार और वीररसमिश्रित मधुर गीतोंकी कमी नहीं है। आज एनीके लिए जो गीत चुना गया था उसका एक एक अक्षर अमृत बरसानेवाला था। किन्तु उस गीतके भावके साथ एनीकी

प्रणय-कहानीका बहुत कुछ सादृश्य था, इस कारण उसके समान लजीली लड़कीके लिए, इतने आदमियोंके सामने उक्त गीतका गाना बड़ा दुरूह कार्य था।

एनी इस मधुर गीतको गाना नहीं चाहती थी, किन्तु उसकी समान उमरवाली युवतियाँ—जो उससे विशेष स्नेह रखती थीं—उस गीतको गवाये विना उसे किसी प्रकार छोड़ना नहीं चाहती थीं। अनेक आग्रहके पश्चात् उसकी प्रिय सखियाँ उसे पियानोके पास खींच ले गईं। वह लज्जासे दबी हुई थी, अतः बिलकुल अनिच्छासे पियानो लेकर बैठ गई। उसके निपुण हाथके संयोगसे पियानो बजने लगा। जब पियानोकी सुमधुरध्वनि सुननेवालोंके साथ साथ एनीके भी प्राणोंका स्पर्श करने लगी, तब उसकी वह लज्जायंत्रणा बहुत कुछ घट गई। उसके मनका वह विषादभाव भी पियानोके प्रमोद-स्रोतमें कुछ समयके लिए बह गया। एनी श्रोताओंके आग्रहसे गीत गाने लगी:—

सिपहिराके अधरोंसे अमृत झरे।
बतियाँ कहकह चित भरमावे,
मोहनमंत्र करे।

एनीके कंठसे गीतकी तान निकलते ही उत्सवगृहमें एकदम सन्नाटा छा गया। श्रोताओंके कानोंमें अमृत बरसने लगा। कुछ क्षणके लिए सबके मन और प्राण उस प्रेममय मधुर स्वरके महा प्रवाहमें डूब गये। भावमग्न एनी फिर गाने लगी.—

वाकी प्यारी प्रेम-पुलकिता,
सुधि बुधि भूलि सबे।
मोहिनि मूरति वाकी निरखत,
प्रेमकी माल बरे।

गीतका स्वर जब धीरे धीरे मृदुसे मृदुतर होकर लयकी ओर अग्रसर होने लगता था, तब प्रमोदगृहमें चारों ओरसे युवती और प्रौढ़ा

रमणियाँ बारबार "फिर गाओ–फिर गाओ" कहकर आग्रहके साथ आनंदप्रकाश करने लगती थीं। एनी भी उस समय आनंद-विवश हो रही थी। वह सबके मुँहसे अपने प्रियतम पार्सिवलकी यशोध्वनि सुनती और लज्जाका सेतु भंग करके अपने हृदयकी बातें प्रेमसंगीतद्वारा गा रही थी। वह बीच बीचमें मधुर तथा मद हँसी हँसती हुई अपनी समवयस्का सखियोंकी दृष्टिसे दृष्टि मिलाकर एक अपूर्व आवेशमय कंठसे गा रही थी। गीत पूरा होने पर उसी गीतको वह फिर गाने लगी:—

सिपहिराके अधरोंसे अमृत झरै।
बतियाँ कहकह चित भरमावै,
मोहनमंत्र करै।
वाकी प्यारी प्रेम-पुलकिता,
सुधि बुधि भूलि सबै।
मोहिनि मूरति वाकी निरखत,
प्रेमकी माल वरै॥

गाते गाते गीत सहसा रुक गया। वह अमृतमय कंठध्वनि न जाने किस ऐन्द्रिजालिक मोहमें पड़कर गीतके शेष पदका शेषार्ध समाप्त होनेके पहले ही रुक गई! एनीकी अँगुलियाँ पियानोकी चाबी पर जैसी थीं वैसी ही बनी रहीं, किंतु उनकी गति रुक गई, इससे पियानोका बजना बंद हो गया। पियानोसे निकलनेवाला स्वर क्षीणसे क्षीणतर होकर स्वप्नमें सुनाई देनेवाली स्वरलहरीकी नाईं वायुमें विलीन हो गया।

अकस्मात् यह क्या हो गया! सब विस्मयके साथ देखने लगे कि एनी एकटक दृष्टिसे सामने शून्य आकाशकी ओर देख रही है। उसकी आँखोंके पलक नहीं गिरते, गालों पर फूले हुए कमलकी कान्ति नहीं, और न उसके मुख पर वह लज्जाका भाव ही दिखाई देता है। वहाँ

इतने आदमी उपस्थित थे, किन्तु उसे इसका भी ज्ञान नहीं था । जो देखता था वही कहता था कि मानों संगमर्मरकी सुन्दर मूर्त्ति पियानोके सामने स्थापित है । यह क्या बात है, उसकी स्थिति ऐसी क्यों हो गई, इसका कोई निश्चय नहीं कर सकता था ।

बड़ी बहन जेन शीघ्र ही एनीके पास दौड़ी आई और उसके कंधे पर हाथ रखकर उसके मुंहकी ओर देखने लगी । किन्तु उसकी वह आकस्मिक मोहनिद्रा किसी प्रकार भंग नहीं हुई । इसके बाद वह बारंबार जोर जोरसे एनीका नाम लेकर पुकारने और कहने लगी–" एनी, तुझे क्या हो गया बहन ? तू इस प्रकार जडवत् क्यों हो गई है ? "

एनीने न तो जेनकी बात ही सुनी और न उसकी ओर फिर कर ही देखा । उसके दोनों नेत्र आकाशकी ओर उसी प्रकार टकटकी लगाये हुए थे । उसके मुँहसे एक भी शब्द नहीं निकलता था ।

बहुत समयके पश्चात् अनेक प्रश्न करने पर सबको विदित हुआ कि एनी उस समय किसी छायामय मूर्तिको देखकर इस प्रकार संज्ञाशून्य हो गई थी । एनी देख रही थी कि—सामने, समीप ही सैनिकवेषसे सज्जित उसका प्राणाधिक चार्ल्स खड़ा है । उसके समस्त वस्त्र छिन्नभिन्न और रुधिरसे रंगे हुए हैं । वक्षस्थलमें–ठीक हृत्पिण्ड पर–एक भयंकर घाव है । उससे छल छल करके रक्त निकल रहा है । मुख विषादसे मलिन और नेत्र अश्रुपूर्ण हैं । वह अत्यंत कातरदृष्टिसे एनीके मुखकी ओर देख रहा है ।

अन्य लोग जिस स्थानको शून्य देखते थे उसी स्थान पर एनीको ऐसा भयंकर दृश्य दिखाई दे रहा था और उसकी दृष्टि उस पर स्थिर हो रही थी । कुछ समयके पश्चात् वह अत्यंत करुणाव्यंजक स्वरसे चिल्ला उठी । उस करुण चीत्कारको सुनकर सबके हृदय पिघल गये । सभी व्याकुल हो उठे ।

जेन काँपते काँपते फिर एनीके पास आई और उसे दोनों भुजाओंके द्वारा अपने हृदयसे लगाकर कहने लगी–" एनी, आज अकस्मात् तुझे क्या हो गया बहन ? तू बोलती क्यों नहीं है ? " जेनके बहुत प्रयत्न करने पर भी वह किसी प्रकार सचेत नहीं हुई । वह और भी आँखें फाड़-फाड़कर निर्दिष्ट स्थानकी ओर देखने लगी ।

लोग कुछ भी नहीं समझ सके कि इस विचित्र व्यापारका अर्थ क्या है ! कोई कहता था कि सहसा किसी पीड़ाके आक्रमणसे एनी मूर्च्छित हो गई है, कोई कहता था कि मनके आवेगसे सहसा उसकी ऐसी दशा हुई है । सभी स्त्री-पुरुष उसके चारों ओर खड़े होकर इसी प्रकारकी बातें कर रहे थे । इसी समय एनीके दोनों ओंठ हिलते हुए दिखाई दिये और उनसे कुछ अस्पष्ट शब्द भी निकले । जो लोग बहुत समीप थे उन्होंने सुना एनी कहती है––"ये तो ये हैं ! ! ऊह ! यह कैसा भयंकर–कैसा भयंकर–कैसा सांघातिक आघात है !–ठीक छातीके ऊपर–हाय ! मरे-मरे । "–ऐसा कहते कहते बालिका बाणविद्ध कपोतीकी नाई कातरध्वनि करती हुई फिर मूर्छित हो गई । उत्सव-गृहमें इस समय भयंकर कोलाहल मच गया था । सारे उत्सव और आनंदकी लहरें एक गंभीर विषाद और विस्मयके रूपमें परिणत हो गई थीं । बालिकाकी ऐसी शोचनीय अवस्था और आर्तध्वनिको सुनकर कोई स्थिर नहीं रह सका, सब विचलित और किंकर्त्तव्यविमूढ हो गये ।

कुछ समयके पश्चात् उत्सव-गृहकी भीड़ कम हो गई । अधिकांश व्यक्ति शिष्टता और शान्तिके अनुरोधसे गाड़ियों या अन्य सवारियों पर चढ़कर अपने अपने घरोंको चले गये । डाक्टर बुलानेके लिए आदमी भेजा गया । इस समय वहाँ पर एनीके कुछ आत्मीय और कुछ सेवा-शुश्रूषा करनेवाले व्यक्ति उपस्थित थे । वे लोग बहुत सावधानीके साथ उसे उत्सव-गृहसे शयनगृहमें ले गये । देखते ही देखते डाक्टर साहब

आ पहुँचे। एनी इस समय भी शय्या पर मूर्च्छित अवस्थामें पड़ी थी। पूर्वोक्त अस्पष्ट शब्दोंके बाद अभीतक उसके मुँहसे एक भी शब्द नहीं निकला था। समस्त शरीर बर्फके समान ठंडा था। डाक्टरने रोगीको देखकर स्थिर किया कि किसी अज्ञात कारणसे बालिकाके कोमल प्राणों पर सहसा कठोर आघात पहुँचा है। इसी कारण उसकी ऐसी स्थिति हो गई है। डाक्टरने तत्काल एक उत्तेजक ओषधि दी। ओषधिकी शक्तिसे कुछ समयके उपरान्त एनीके शरीरमें धीरे धीरे चेतनाका संचार होने लगा। किन्तु चेतनावस्थाकी दुःसह यातनाको देखकर डाक्टरने कहा–" इस चेतनाकी अपेक्षा तो वह मोहजनित विस्मृति ही हजारगुणी अच्छी है।"

कुछ समयके उपरान्त एनीने दोनों हाथोंसे नेत्र मले, नेत्र मलकर देखा भी, किन्तु उस देखनेका कोई अर्थ नहीं था। जो लोग शय्याके पास खड़े थे कुछ समय तक वह उन्हींकी ओर देखती रही। उसके चेहरे पर मानों खूनका नाम नहीं था, मानों किसीने भस्म लपेट दी थी। शरीरसे ठंडा पसीना बह रहा था। सारा शरीर सुस्त पड़ा हुआ था, केवल दीर्घ निःश्वाससे रह-रहकर वक्षःस्थल काँप उठता था।

एनी आप ही आप कहने लगी—" हा दुर्भागिनी, तू इस समय भी इस अधम शरीरमें पड़ी हुई है! तुम लोगोंने इस हतभागिनीको जाने क्यों नहीं दिया? वे मुझे साथ ले चलनेके लिए आये थे। आहा कितने कातर कंठसे मुझे पुकारते थे।—मैं भी जाती थी,–किंतु तुम लोगोंने क्यों नहीं जाने दिया? क्यों रोक लिया?–परंतु मैं अवश्य जाऊँगी--अवश्य जाऊँगी।"

स्नेहमयी बहन जेन गद्गद कंठसे कहने लगी–" एनी–प्यारी बहन, अब ऐसी बात मुँहसे मत निकालना। चार्ल्स देशान्तरको गया है, शीघ्र ही सकुशल लौट आयगा।"

एनी थरथर काँपती हुई कहने लगी–" नहीं जीजी, नहीं, अब वे कभी लौटकर न आयँगे। मैंने जो कुछ देखा है, वह तूने नहीं देखा, इसी लिए तू ऐसा कहती है। ओह! वह कैसा भयंकर दृश्य था!"

डाक्टर जेन और एनीके पिताका मित्र था। उसने स्नेहपूर्वक एनीके काँपते हुए हाथोंको अपने हाथकी मुट्ठियोंसे दबाकर मृदुस्वरसे कहा—" बेटी एनी, तूने स्वप्न देखा है। तू जो कुछ कहती है वह वास्तवमें उन्मादका प्रलाप है। तू शान्त हो, ऐसी झूठी कल्पनाको मनमें स्थान देना उचित नहीं। मिथ्या दुर्भावना-से अधीर मत बन। मैं फिर भी आग्रहके साथ कहता हूँ कि तू शान्त और स्थिर हो।"

बालिका चकितकी नाईं डाक्टरकी मुँहकी ओर देखकर कहने लगी—" आप क्या कहते हैं, यह स्वप्न है! अलीक कल्पना है! नहीं नहीं, यह स्वप्नका प्रलाप नहीं है। जो कुछ मैंने देखा है वह प्रकृत सत्य है। मेरा चार्ल्स अब नहीं है। मैंने प्रत्यक्ष देखा है–बंदूककी गोली उसके वक्षःस्थलको भेद करके निकल गई है। छातीसे छल छल करके रक्त निकल रहा है। ओह! कैसा भयानक घाव है!" ऐसा कहते कहते उसने तीन चार लम्बी श्वासें लीं और वह फिर पूर्ववत् अचेत हो गई।

जेन और एनीकी आत्मीया, इस घरकी स्वामिनी, मि० सटनकी पत्नी एनीकी शय्याके पास खड़ी थीं। किंतु यह दृश्य उनसे अब नहीं देखा गया। वे मूर्छित होकर गिर पड़ीं, इस कारण दूसरे कमरेमें भेज दी गईं। बेचारी जेन बहुत घबड़ाई। उसका हृदय विदीर्ण होने लगा। किन्तु वह अपनी प्यारी बहनको छोड़कर कहाँ जा सकती थी।

डाक्टरने बहुत परिश्रमसे एनीको फिर सचेत किया। किन्तु उसकी दशा देखकर उसे संतोष नहीं हुआ। डाक्टर बहुत कुछ आश्वासन

देकर और यह कहकर अपने घर चला गया कि रोगीकी अवस्थामें कुछ भी परिवर्तन होनेका समाचार मिलते ही मैं रातमें फिर आ सकता हूँ; अन्यथा सवेरा होने पर आऊँगा।

दूसरे दिन सवेरे ९ बजे डाक्टरने आकर देखा—एनीकी हालत कल-हीके समान है, किन्तु आज कुछ दुर्बलता अधिक है। कलकी अपेक्षा मूर्छा और भी अधिकसमयव्यापिनी हो गई है। एनी बीच बीचमें सिर हिलाती और मन-ही-मन न जाने क्या कहती है। डाक्टरने उसके मुँहके पास अपना कान लगाया। उसे सुनाई दिया—"हाँ—शीघ्र ही—चार्ल्स—शीघ्र ही,—हाँ कल ही। मैं तुम्हें छोड़ कर क्षणभर भी इस पृथ्वी पर नहीं रह सकती।"

एनी किसीकी बात नहीं सुनती। कौन आता है, कौन जाता है, और कौन क्या करता है, इसकी उसे कुछ भी खबर नहीं। पूछने पर भी किसी बातका उत्तर नहीं देती। डाक्टरने दो एक और भी उत्तम डाक्टरोंसे मिलकर परामर्श करना चाहा। संध्यासमय डाक्टरकी रायके अनुसार दो और प्रसिद्ध चिकित्सक बुलाये गये। तीनोंने मिल-कर रोगिणीकी खूब परीक्षा की। अंतमें तीनोंने स्थिर किया कि रोगिणीकी जीविनी शक्ति क्रमशः घट रही है। यदि किसी अलौकिक घटनासे उसकी अवस्थामें परिवर्त्तन न होगा तो वह अधिक समय तक जीवित न रह सकेगी। नवागत दोनों डाक्टर चले गये। एनीके पारिवा-रिक डाक्टरने फिर आकर देखा। यद्यपि उसका मुँह विवर्ण हो गया था, फिर भी उस पर माधुर्य्यकी छटा खेल रही थी। बीचबीचमें उस माधुर्य्य-पर गंभीर विषादकी छाया पतित होती थी और उससे उसके भग्नहृदयके घोर नैराश्यका भाव प्रतिबिम्बित होता था। एनीकी ऐसी स्थिति देख-कर डाक्टरकी आँखोंसे आँसू बहने लगे। वह एनीकी शय्याके समीप बैठा हुआ रूमालसे अपने आँसू पोंछ रहा था। इतनेमें एनी मृदु स्वरसे

आप-ही-आप कहने लगी—“ गये—वे चले गये—गलेमें जयमाला पहिन-कर चले गये ! आहा ! कैसे गौरवके साथ गये ।—और मैं—मैं भी जाती हूँ—उस रणजयी सेनापतिको देखने जाती हूँ—जाऊँगी—अवश्य जाऊँगी। मेरे पास पहुँच जाने पर—वे न जाने—मुझ पर कितना प्रेम करेंगे ! ”

इसके बाद वह कुछ क्षणके लिए चुप हो रही और फिर बोली—“हाँ याद पड़ता है—सिपाहीका वह गीत याद पड़ता है । दयाहीन सहेलि-योंने जिद करके उस गीतको मुझसे गवाया था । मैं उसे गाती थी और मेरी छाती फटी जाती थी ।—” यह कहते कहते युवतीकी निर्जीव देह सहसा काँप उठी और उसमें एकाएक अस्वाभाविक शक्तिका संचार हो गया ! एनीने फिर कहा—“ याद है—उस दुःखके गानका अक्षर अक्षर मुझे याद पड़ता है। यह गीत मेरा ही जीवन-संगीत है। अब मरते समय उसे एक बार फिर गाऊँगी ।” वह मृदु कण्ठसे गाने लगी और पास खड़ी हुई स्त्रियाँ आसू बहाती हुई उसे सुनने लगीः—

सिपहिराके अधरोंसे अमृत झरै ।
बतियाँ कह कह चित भरमावै, मोहनमंत्र करै ॥

वाकी प्यारी प्रेम-पुलकिता, सुधि बुधि भूलि सबै ।
मोहिनि मूरति वाकी निरखत, प्रेमकी माल बरै ॥

अन्त वसन्तहुको नहिं आयौ, छलिया छांड़ि गयौ ।
ऐसे प्रेमीकौ अब जगमें, को विश्वास करै ॥

गानके शेषपद उस प्रेममयीके हृदयको बहुत ही कठोर जान पड़े । वह कह उठी—नहीं—नहीं—कभी नहीं, कभी नहीं—असंभव ।—मेरा चार्ल्स कभी ऐसा नहीं हो सकता ।—हाय हाय ! मेरे चार्ल्स—मेरे प्राणा-धिक चार्ल्स तुम्हें बड़ी गहरी चोट लगी है—चोट खाकर भी तुम मुझे नहीं भुला सके हो । तुम कभी अविश्वासी—छलिया—नहीं हो सकते ! ”

इसके पश्चात् उस रात्रिको फिर उसके मुँहसे एक भी शब्द नहीं निकला। उससे सहानुभूतिपूर्ण अनेक बातें कहीं गईं, स्नेहके अनुरोधसे भी कई व्यक्तियोंने कई बातें कहीं, किन्तु उसके कानोंमें उन्हें स्थान नहीं मिला। वह कभी कभी बीच बीचमें कह उठती थी--"बहुत हुआ—रहने दो—तुमलोग मुझे अपने प्राणप्रियके पास शान्तिपूर्वक जाने दो।"

एनीका मंद जीवन-प्रदीप अगले दो दिनोंमें और भी मंद पड़ गया। इन दो दिनोंमें केवल एक बार उसके मुँहसे कुछ शब्द निकले थे। इसके सिवा अन्य किसी प्रकारसे उसके जीवनके कोई लक्षण प्रकट नहीं हुए। चौथे दिन यूरोपीय रणक्षेत्रसे एनीके घर एक चिट्ठी आई। चार्ल्स जिस सेनाका कप्तान था वह चिट्ठी उसी सेनाके कर्नलकी लिखी हुई थी। चिट्ठी पर चारों ओरसे शोक-सूचक काली रेखायें खिचीं थीं। चिट्ठीमें लिखा था-"युद्धके अंतिम दिन युद्ध बंद होनेके समय चार्ल्स पार्सिवल एक घुड़सवार सेनाका नायक बनकर विषम साहसके साथ शत्रुओंसे लड़ रहा था। सहसा शत्रुदलके किसी घुड़सवारने चार्ल्सको लक्ष्य करके गोली मारी। गोली सन् सन् करती हुई आई और चार्ल्सके वक्षःस्थलको भेदकर निकल गई। गोली लगते ही वीर चार्ल्सने उसी जय-कोलाहलके मध्य अपने प्राण त्याग कर दिये।"

चिट्ठीको पढ़कर एनीके आत्मीय जन अत्यंत विस्मित तथा शोकाकुलित हुए। विस्मयका कारण यह था कि एनीने जो देखा था--वह जिस भीषण दृश्यकी कहानी आर्तस्वरसे कहती थी—वह सच निकली। जिसने सुना वही अवाक् होकर रह गया। इस अलौकिक घटनाका मर्म किसीकी समझमें नहीं आया।

कुछ समयके तर्क-वितर्कके पश्चात् इस शोक समाचारको मुमूर्षु एनीको सुनाना उचित ठहराया गया और इस दुष्कर कार्यका भार

डाक्टरके हाथ सौंपा गया। डाक्टर अश्रुपूर्ण नेत्रोंसे, उस चिट्ठीको हाथमें लेकर एनीकी शय्याके पास जा बैठा।

आज एनीके जीवनमें विषम परिवर्त्तन दिखाई देता है, डाक्टरने एनीकी नाड़ी, श्वास-प्रश्वासकी गति, मुखकी आकृति और हाथ पाँवके शीतकी भली भाँति परीक्षा की। वह जिस दिनसे शय्याग्रस्त हुई थी उस दिनसे उसके पेटमें एक बूँद जल भी नहीं पहुँचा था। इन सब बातोंकी पर्यालोचना करने पर डाक्टरको विश्वास हो गया कि अब अधिक विलम्बका काम नहीं है। वह सोचने लगा कि हाय! ऐसे मुमूर्षु रोगीको ऐसा मर्मभेदी दारुण समाचार कैसे सुनाऊँ। बहुत समय तक सोच-विचार करने पर भी उसे कोई उपाय नहीं सूझ पड़ा। डाक्टर इसी चिन्तामें बैठा था कि सहसा एनी कुछ जागरित सी हुई और वह डाक्टरकी ओर देखने लगी। डाक्टरने झट चिट्ठी लेकर एनीको दिखलाई। चिट्ठी पर चार्ल्सकी सील लगी हुई थी। कुछ समयके उपरान्त एनीकी दृष्टि उस चिट्ठीपरकी चिरपरिचित सील पर पड़ी। उस सील पर दृष्टि पड़ते ही एनीके शरीर और मन पर बिजली जैसा प्रभाव पड़ा। उसने कुछ कहनेकी चेष्टा की, परंतु वह कुछ कह नहीं सकी।

डाक्टर यह सोचकर कि मैंने इस निष्ठुर कार्य्यका भार क्यों लिया, मन-ही-मन अपने आपको धिकारने लगा। इसके पश्चात् उसने चिट्ठी खोली और एनीके मुखकी ओर देखकर स्नेहपूरित मधुर स्वरसे कहा— "बेटी, तुम घबड़ाओ नहीं। यदि तुम घबड़ाओगी तो जो बात मैं तुमसे कहना चाहता हूँ वह न कह सकूँगा।"

एनीका सारा शरीर काँप उठा। विलुप्तचेतना फिर लौट आई। आँखोंसे व्याकुलताका भाव पुनः प्रदर्शित होने लगा। डाक्टरने कहा— "यह चिट्ठी यूरोपीय रणक्षेत्रसे आई है। कर्नलकी लिखी हुई है। इसमें समाचार आया है कि—" इतना कहते कहते डाक्टरका गला भर आया और वह आगे एक शब्द भी नहीं कह सका। किन्तु एनीने

स्वतः ही डाक्टरके वाक्यांशकी पूर्त्ति कर दी। वह कहने लगी-" और क्या समाचार होगा डाक्टर साहब, यही न कि मेरा चार्ल्स अब इस संसारमें नहीं है? मैं इसे जानती हूँ और आप लोगोंसे भी पहले कह चुकी हूँ।"

एनीका कंठ स्वाभाविक और तेज था। उसकी ऐसी अवस्था देख-कर डाक्टरके विस्मयका ठिकाना नहीं रहा। वह सोचने लगा, इस समाचारसे तो इसकी लुप्तप्राय मनःशक्ति फिर जागरित हो उठी। यह निष्ठुर समाचार क्या मरणासन्न एनीके स्वास्थ्यलाभके लिए अनुकूल होगा?

एनीने डाक्टरसे सारा पत्र पढ़कर सुनानेके लिए अनुरोध किया। डाक्टरने पत्र पढ़कर सुना दिया। वह चुपचाप सुनती रही और सुनकर भी पूर्ववत् स्थित बनी रही। पत्र सुना चुकने पर कुछ मिनिटके उप-रान्त डाक्टरने कहा-" बेटी, इस दारुण समाचारको तुम इतनी धीरता और दृढ़ताके साथ सुननेमें समर्थ हुई, इसके लिए मैं जगदीश्वरको धन्यवाद देता हूँ।"

एनीने बहुत कष्टसे धीरे धीरे कहा-" आप डाक्टर और मेरे पिताके परम मित्र हैं। क्या आप कोई ऐसी ओषधि जानते हैं कि जिसके खानेसे मैं जी भरकर रो सकूँ-विलाप कर सकूँ? यदि जानते हैं तो कृपा करके मुझे दीजिए। मेरे हृदयमें पहाड़ सा अड़ा है--श्वासरोध होता आता है। आप ऐसा यत्न कीजिए, जिससे मैं खूब जी भरकर रो सकूँ--।"

डाक्टरने एनीके दोनों हाथ थाम कर स्नेहपूर्वक कहा--"एनी, मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि तुम कुछ समयके लिए शान्त हो जाओ-स्थिर होनेकी चेष्टा करो, फिर तुम्हारी समस्त यंत्रणा आप-ही-आप मिट जायगी।"

एनीने कहा-" हाँ, यह सत्य है। हाय! यदि एक बार मेरी आँखोंमें आँसू आजाते---यदि एक बार कुछ रो पाती-।" इसके पश्चात् और भी कुछ कहा, परंतु वह साफ समझमें नहीं आया। बात पूरी होते होते एनी लुढ़क कर गिर पड़ी। उसके दोनों माधुर्य्यमय नेत्र मुर्देके समान

निस्पन्द और निर्जीव हो गये। डाक्टरने उसके मुँहके पास कान लगाया। उसे स्पष्ट सुनाई देने लगा कि मानों कोई एनीके हृदयके भीतरसे एक भिन्न प्रकारकी आवाजमें कह रहा है—"महाशय, मेरी एनी अब इस पृथ्वी पर आँख नहीं खोलेगी। आप कृपा करके जेनको बुला दीजिए।" यह कंठस्वर किसका है? क्या स्वतः चार्ल्स ही तद्गतप्राणा एनीके शरीरमें प्रविष्ट होकर उसे लिये जा रहा है? इसके पश्चात् एनीका गला घरघराने लगा। डाक्टरने शीघ्र ही सबको बुला लेनेका इशारा किया।

जेन सबसे पहले आई। रोते रोते उसके दोनों नेत्र फूल गये थे, गला बैठ गया था। आते ही वह 'मेरी प्यारी एनी, मेरी प्यारी बहन,' इत्यादि कहती हुई उसके गलेसे लिपट गई और फूट फूटकर रोने लगी। अन्य सब आत्मीय जन भी शय्याको घेरकर खड़े हो गये। सबके नेत्रोंसे आँसू निकल रहे थे—सब शोकसे गरम श्वासें ले रहे थे। इस समय डाक्टर नाड़ी पकड़े हुए था। नाड़ी बिलकुल रुक गई थी। किन्तु इसे वे अपना ही भ्रम समझते थे। वे समझते थे कि व्याकुलताके कारण मुझे नाड़ीकी गति नहीं मालूम पड़ती है।

जेनने फिर एनीका मुख चूमा। किन्तु इस बार वह सहसा— 'हा भगवान्! मेरी एनी अब इस संसारमें नहीं है!' कह कर धरती पर गिर पड़ी और मूर्च्छित हो गई। डाक्टरने देखा, बात सत्य है। एनी इस संसारको छोड़कर अंतर्धान हो गई। चार्ल्सके हृदयको विदीर्ण करनेवाली गोली, किसी अलक्षित शक्तिसे इस प्रेममयी बालिकाके कोमल प्राणोंको भी भेदकर निकल गई। ऐसे सांघातिक आघातकी ओषधि डाक्टरके पास कहाँ? इस प्रकार आशामुग्धा दुःखिनी एनीके प्रेमजीवनका अंतिम अध्याय समाप्त हुआ। सब लोगोंका यही दृढ़ विश्वास है कि उत्सव-गृहमें आमोद्-प्रमोदकी तरंगोंमें एनीको जिस प्रत्यक्ष मूर्तिके दर्शन हुए वह परलोकगत चार्ल्स पार्सिबलकी छायामूर्ति थी।

चतुर्थ अध्याय ।



प्रस्तावना ।

छायादर्शन जिस शास्त्र, दर्शन अथवा विज्ञानकी जिस शाखाके अंतर्गत है वह साम्प्रत यूरोप, अमेरिका प्रभृति सुसभ्य देशोंकी अँगरेजी, फरासीसी आदि विविध भाषाओंमें Psychic science और Psychic philosophy आदि अनेक प्रतिष्ठित नामोंसे प्रसिद्ध है * । इन सब नामोंका सार अर्थ सङ्कलन करने पर इस तत्त्वको हिन्दीमें अध्यात्मदर्शन, अध्यात्मविज्ञान अथवा आत्मिक तत्त्व कहना सङ्गत प्रतीत होता है ।

बहुत लोग अध्यात्मतत्त्वकी जगह प्रेत-तत्त्व शब्दका प्रयोग करते हैं। परन्तु प्रेत-तत्त्व प्राचीन नाम होने पर भी इस समय सर्वथा त्याज्य है। जिन लोगोंने जगदीश तर्कालंकारकी 'शब्द-शक्ति-प्रकाशिका' का अध्ययन नहीं किया, वे भी भली भाँति जानते हैं कि शब्दोंकी शक्ति सदैव बदलती रहती है। शब्दोंका अर्थ सदैव एक समान नहीं रहता। सन्देश कहनेसे पहले केवल समाचार समझा जाता था, किन्तु कुछ दिनोंके पश्चात् वह केवल प्रिय या शुभ समाचारका प्रतिपादक हो गया, और आज कल तो (बंगालमें) सन्देश कहनेसे एक प्रकारकी मिठाईका बोध होता है। पुरातन वैदिक साहित्यके अनेक शब्दोंका अर्थ साम्प्रत बिलकुल बदल गया है । वे पहले किसी अर्थमें व्यवहृत होते थे और आज किसी दूसरे ही अर्थमें कहे जाते हैं । प्रेतशब्दका अर्थ भी इसी

* The Scince of soul, the science of spiritualism अथवा spiritual philosophy प्रभृति नाम भी पाठकोंके स्मरण रखने योग्य हैं।

प्रकार परिवर्तित होकर × घृणाव्यंजक हो गया है । प्रेत (प्र+इत) शब्दसे पहले ' प्रकृष्टरूपेण गतः ' अर्थात् स्वर्गगत सूक्ष्मशरीरी आत्मिकोंका ज्ञान होता था, किन्तु आज उसी शब्दसे एक अत्यंत अवाच्य और अधम पिशाचयोनिका बोध होता है । परलोकगत पितृपुरुष मनुष्यमात्रके पूज्य और भक्तिभाजन हैं । उनको प्राचीन संस्कृतके अनुसार पुरुष-स्त्रीके भेदसे संस्थित या संस्थिता, और अध्यात्मतत्त्वके अनुसार आत्मिक या आत्मिका कहना ही सर्वथा उचित प्रतीत होता है ।

यहाँ प्रसंगवशतः संस्थित शब्दकी आलोचना कर देना अप्रासंगिक न होगा । प्राचीन ऋषिगण किस अर्थसे परलोकगत पितृपुरुषोंको संस्थित कहते थे ? मनुष्य जीवनभर इस संसार-सागरमें एक निर्म्माल्य पुष्प या क्षुद्र तिनकेके समान सुख दुःखकी प्रबल तरंगोंमें बहता हुआ अंतको उसके पार जाकर खड़ा होता है--संस्थित होता है । ज्ञानगुरु ऋषि केवल इसी एक शब्दमें अनेक तथा विस्तृत अर्थोंका समावेश कर गये हैं । साम्प्रत हम सब भी आशा और आकांक्षाओंके स्रोतमें शैवाल या प्रफुल्लित पुष्पकी नाईं बहते जाते हैं, और कभी कभी उद्दाम प्रवृत्तियोंकी भँवरोंमें पड़कर डुबकियाँ खाते हैं । किन्तु एक न एक दिन हम सब

× जिस समय व्यासजीने महाभारतकी रचना की, उसी समयसे ' प्रेत ' ' प्रेतमूर्त्ति ' ' प्रेतयोनि ' प्रभृति शब्द अत्यंत भयंकर और घृणावाचक समझे जाने लगे हैं । प्रेतकी आकृति डरावनी, देह दुर्गंधमय और जीवन--कर्मफलके अटल शासनसे--महान् कष्टप्रद होता है । संसारमें कैसे कैसे पाप तथा दुष्कर्म करनेसे मनुष्यको प्रेतयोनि मिलती है इसका वर्णन पद्मादिपुराणोंमें लिखा है--" स प्रेतो जायते नरः " इस वाक्यकी पुनः पुनः आवृत्ति करके प्रेत शब्द बारंबार घृणा अर्थमें व्यवहृत किया गया है । इस विषयमें एक टिप्पणी पहले लिखी जा चुकी है, प्रसंगानुसार यहाँ पर उसकी पुनरुक्ति की गई है ।

लोगोंको भी इस संसार-सागरके उस पार जाकर और उस जगह ठहरनेके लिए 'स्थान' पाकर संस्थित होना होगा।

वह स्थान कैसा है? हम यहाँ जिसे 'स्थान' कहते हैं वह स्थूल पदार्थ है और स्थूल परमाणुओं द्वारा ही गठित होता है। किन्तु (परलोकका)वह स्थान उस स्थानके अधिवासियोंके शरीर और कर्मेन्द्रियोंके उपयुक्त सूक्ष्मतर अथवा अध्यात्म परमाणुओंद्वारा गठित है। बस दोनोंमें केवल यही प्रभेद है। किन्तु यह प्रभेद वास्तवमें प्रभेद नहीं है। कारण कि जो लोग उस पार चले गये हैं वे लोग वहाँके सूक्ष्मतर स्थानको ही प्रकृत-स्थान समझते और अनुभव करते हैं।

हमारे हाथमें यह एक लोहेका पिण्ड है, इसे हम वस्तु कहते हैं। किन्तु यह वस्तु है इसका हमें ज्ञान कैसे होता है? इस विषयमें हमारा एक साक्षी आँख और दूसरा साक्षी चर्म अर्थात् स्पर्शेन्द्रिय है। आँख कहती है कि उसका रंग काला और आकार गोल है और स्पर्शेन्द्रिय बतलाती है वह कठिन है। इन दोनों साक्षियोंकी साक्षीके द्वारा हमको उक्त पदार्थका जितना ज्ञान हुआ है, उसके सिवा हमको उस लोहपिण्डके विषयमें और क्या प्रकृत वस्तुज्ञान हो सकता है? * यदि इस लोहपिण्डको कढ़ाहीमें चढ़ाकर हम कुछ समय तक खूब तेज आँच देवें तो यह जपाकुसुमके समान लाल हो जावेगा, इसके पश्चात् कुछ नीला श्वेत सा और सबसे अंतमें सूर्यकिरणोंके समान सफेद हो जावेगा। जो लोहपिंड कुछ समय पहले नीरन्ध्र ठोस था, वही गरमी पाकर प्रवाही अग्निका रूप धारण करके अंतमें बाष्परूप होकर आकाशमें मिल जायगा। लोहपिंडकी इस परिणातिके द्वारा क्या हमें यह प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं मिलता है कि हम जिस

---

* Sir William Hamilton और उनके शिष्य Mansel प्रभृति दार्शनिकोंका भी यही सिद्धान्त है, और वर्तमान कालके दर्शन और विज्ञानसे भी यह सिद्धान्त समर्थित होता है।

पदार्थको जिस भावसे वस्तु समझते हैं वह वास्तवमें उस भावसे वस्तु नहीं है ? उसका वस्तुत्व कुछ इन्द्रियोंकी साक्ष्य मात्र है। हम वायुको आँखोंसे नहीं देख सकते, किन्तु उसे वस्तु मानते हैं—और जब वही वायु प्रबल वेगसे झाड़ोंको तोड़ती-मोड़ती हुई बहने लगती है तब हम उसके वस्तुत्वको सोचकर डरसे घबड़ा जाते हैं। वायुका अस्तित्व केवल स्पर्शेन्द्रियकी साक्ष्य पर निर्भर है। शक्करको जब हम दूधमें डाल देते हैं तब उसका वस्तुत्व क्या लोप हो जाता है ? उस स्थितिमें हम शक्करको आँखोंसे नहीं देख सकते; किन्तु आँखोंसे न देख सकने पर भी हमारी जीभ उसका स्वाद बतलाती है और उस स्थितिमें केवल रसनाकी साक्ष्य पर ही हम उसके वस्तुत्वको समझते हैं।

इसीप्रकार जिन्होंने उस पार जाकर सूक्ष्म देह धारण किया है और जो इस समय हमारे निकट आत्मिक या आत्मिका मात्र हैं, उन्होंने भी वहाँ खड़े होनेके लिए वास्तवस्थान पाया है। यहाँ हम वन, उपवन, वृक्षलता, झरने आदि देखकर जैसे पुलकित होते हैं उसी प्रकार वे भी वहाँ विस्तृत वनभूमि, सुन्दर उद्यान, विचित्र तरुलतादिक और तरह तरहकी नदियोंकी लहरें देखकर प्रसन्न होते हैं। जिसप्रकार हम अपने शरीर पर हाथ रखकर उसे अपनी वस्तु समझते हैं, उसीप्रकार वे भी अपने हाथ, पैर आदि अंगप्रत्यंगोंको सारवान् वस्तु मानते हैं। जैसे हम अपने पैरोंके नीचेकी भूमिको दृढ़भूमि समझते हैं, उसीप्रकार वे भी अपने पैरोंके नीचेकी मिट्टीको दृढ़ वस्तु और दृढभूमि मानते हैं। जब ऐसा है, तो फिर हमें वह स्थल, वह जल और वे समस्त सारवस्तुयें क्यों नहीं दिखाई देतीं ? इसका उत्तर यही है कि हमारे चर्मचक्षु—हमारी दर्शनेन्द्रिय—उन सब सूक्ष्म परमाणु-निर्म्मित अध्यात्म वस्तुओंको देखनेके लिए उपयुक्त नहीं है। ज्ञानी पुरुष कहते हैं कि परलोकगत माता-पिता भाई-बहन आदि बीचबीचमें पृथ्वी पर आकर अपने शोकाकुल पुत्रकन्याओंको देख जाते हैं और स्वप्नके आवे-

शमें अथवा अंतःश्रुतिद्वारा उपदेश देकर उनको सान्त्वना देनेका प्रयत्न किया करते हैं। हम लोग साधारणतः उनको नहीं देख सकते, किन्तु जब वे अध्यात्मजगतके नियमानुसार पृथ्वीके स्थूल परमाणुओंको आकर्षित करके कुछ क्षणके लिए * मृन्मयदेहधारण करते हैं तब हम उनको अपनी आँखोंसे देखकर अथवा कानोंसे उनके शब्द सुनकर विस्मित होते हैं।

इस स्थल पर सबके मनमें स्वभावतः यह प्रश्न उठ सकता है कि इन सब अलौकिक बातोंका प्रमाण क्या है ? ज्ञानगुरु ऋषियोंके वचन, महापुरुषोंके वाक्य और कठोर परीक्षा-प्रिय विज्ञान-शास्त्रकी सम्मति ही उक्त बातोंके दृढ़ प्रमाण हैं। हमें यह बात याद रखनी चाहिए कि जो अलौकिक है वह अस्वाभाविक × नहीं हो सकता। इस संसारमें कहीं भी अप्राकृत अथवा अस्वाभाविक घटनाके होनेकी संभावना नहीं। कारण कि, प्रकृतिके मूलकारण परमात्मा पूर्णज्ञान, पूर्णमंगल और पूर्ण-स्वरूप हैं। उनके प्रतिष्ठित नियमोंका उल्लंघन अथवा अन्यथा घटन नहीं हो सकता। किन्तु यही बात अलौकिकके सम्बन्धमें किसी भी अंशमें लागू नहीं होती। क्योंकि कल जो बात अलौकिक समझी जाती थी—लोगोंको अज्ञात थी—वही आज लौकिक हो जाती है और सब लोग उस अलौ-किक घटनाके तत्त्वको समझकर उसे स्वभावसिद्ध और संभव-पर मानने लगते हैं, इतना ही नहीं वरन् उससे काम भी लेने लगते हैं।

* इस समयकी अँगरेजीमें जिसे Materialization कहते हैं, इस जगह इसी अर्थमें ' मृन्मयदेहधारण ' का प्रयोग किया गया है। मृत् कहनेसे केवल मिट्टीहीका बोध नहीं होता, किन्तु इससे जड़ परमाणुओंकी घनीभूतअवस्था भी समझी जाती है।

× अलौकिक शब्दसे इस समय साधारणतः Wonderflu अर्थात् विस्म-यजनक या संसारसे अपरिचित बातका ज्ञान होता है; और अस्वाभाविक कहनेसे उस बातका ज्ञान होता है जो Unnatural or against Nature अर्थात् प्रकृतिके नियमानुसार कभी संघटित नहीं हो सकती है।

ड्यागरोटाइप नामक प्रभाचित्रके आविष्कर्त्ता महामति लुई ड्यागेडर जब अपने घरकी दीवाल पर प्रतिफलित होनेवाली सूर्यप्रभाकी ओर लक्ष्य करके चित्रविद्याके मूलतत्त्वका अन्वेषण करते थे, तब उनकी प्रियतमा पत्नी तक उनको पागल समझकर एकान्तमें आँसू बहाया करती थी। उनका जीवनचरित साम्प्रत हमारे सामने उपस्थित नहीं है, किन्तु जहाँ तक मुझे स्मरण है, मैं कह सकता हूँ कि उनको अपनी अलौकिक प्रतिभाके पुरस्कारमें कुछ समय तक पागलखानेमें भी रहना पड़ा था।

जिस समय महारानी विक्टोरिया अपनी माँकी गोदमें खेलती थीं उस समय संसारमें रेलगाड़ी, धुआँके जहाज और टेलीग्राफ आदि कुछ न थे। इन सब बातोंको उस समयके उन्नतिविमुख वैज्ञानिक भी अलौकिक बातें मानते और उन्हें घृणाकी दृष्टिसे देखा करते थे। जो विचक्षण व्यक्ति पृथ्वी पर टेलीग्राम प्रवर्तित करनेके लिए निखिल-जगन्नियन्ताकी नियमावली पर आधार रखकर, कमर कसकर खड़े हुए थे, उनको पहले कौन पागल नहीं कहता था? कौन उनकी हँसी नहीं करता था? किन्तु बतलाइए, इस समय वे हँसी करनेवाले विज्ञलोग कहाँ हैं और वे उन्नतिप्रवर्तक भी कहाँ हैं? उस समय विद्वान् लोग उनको पागल और पादरी लोग उनको शैतानके शिष्य कहते थे। मनुष्य पृथ्वीके एक प्रान्तमें बैठकर अन्य प्रान्तवासी सम्बन्धीके पास तारद्वारा समाचार भेजेंगे, ऐसे असंभव कार्योंको धर्मयाजकगण शैतानके + कार्यके सिवा और कुछ नहीं समझ सकते थे। किन्तु साम्प्रत क्या विद्वान् और क्या मूर्ख सभीलोग एक देशमें रहकर विदेशवासी

+ प्रचलित ईसाई धर्ममें एक ओर पूर्णमंगलमय ईश्वर और दूसरी ओर सब पापोंके मूल शैतान हैं। इन दोनोंमें नित्य विरोध रहता है। शैतान समस्त शुभकर्मोंके चिरशत्रु हैं।

आत्मीयोंके पास तारद्वारा समाचार भेजते हैं–परस्पर तारद्वारा बातें करते हैं–और इस तड़ित्‌शक्तिसे और भी कई तरहके काम लेते हैं।

मूर्ख मनुष्य सब कुछ समझता है, किन्तु अनन्तलीलामयी–अनन्त चैतन्यरूपिनी प्रकृतिकी अनन्तशक्तिकी अचिन्तनीय महिमाको नहीं जानता। इसी लिए वह जितना जानता है उससे अधिक जाननेकी इच्छा नहीं रखता, वह जितना सीख चुका है या जितना सुन चुका है उसके अतिरिक्त अन्य बातें उसके हृदयको सहन नहीं होतीं। इसी लिए जिन बातोंको वह पहलेसे जानता है उनके सिवा अन्य सब बातोंको असंभव और अलौकिक समझता है। किन्तु मुझे भरोसा है कि जिन लोगोंकी देहमें जगत्पूज्य आर्योंका रक्त प्रवाहित हो रहा है वे विश्वासनिष्ठ और भक्तिपरायण हिन्दू, अलौकिककी दोहाई सुनकर कभी आत्मस्खलित न होंगे। क्योंकि जो बात सारे संसारके लिए अलौकिक है वही चिरकालसे हिन्दुओंके निकट लौकिक है। अलौकिकको छोड़नेसे हिन्दुओंका लौकिक-जीवन अर्थात् पितृतर्पणादि पवित्र अनुष्ठानसमूह एकदम विलुप्त हो जायगा।

लौकिक और अलौकिककी उचित आलोचनाके पश्चात् यहाँ प्रमाणके विषयमें भी दो एक बातें कहना उचित प्रतीत होता है। हम इस (छायादर्शन) ग्रन्थकी प्रस्तावनाहीमें लिख चुके हैं कि वाल्मीकि और व्यासप्रभृति ऋषि परलोकगत आत्माके दर्शन, स्पर्शन और उनके साथ वार्त्तालाप करनेके विषयमें स्पष्ट रीतिसे साक्ष्य दे गये हैं। किन्तु जिन लोगोंको वाल्मीकि और व्यासके ऐतिहासिक अस्तित्वमें भी सन्देह है वे उनकी साक्ष्यको माननेके लिए कैसे सम्मत होंगे? इसके अतिरिक्त वाल्मीकि और व्यासकी रचना इतिहास और उपन्यासमिश्रित है, अतः उक्त अपूर्व मिश्रणमेंसे प्रकृत इतिहासको समझ लेना सहज काम नहीं है। किन्तु कठोर विज्ञानकी बात इससे पृथक् है। विज्ञान प्रत्यक्ष परीक्षा लिए विना किसी बातको कभी स्वीकार नहीं करता। अतएव

छायामूर्त्तिके वस्तुत्व और सत्यताके सम्बन्धमें हम उन्नीसवीं शताब्दीके विज्ञानकी एक साक्ष्य देते हैं। यह कहनेकी आवश्यकता नहीं है कि विज्ञानकी सत्यताके सामने सभी विद्वान् भक्ति और श्रद्धाके साथ अपना माथा झुकाते हैं।

जो लोग विज्ञानशास्त्रसे प्रेम रखते हैं वे वर्त्तमान कालके सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक अलफ्रेड रासेल वालेस* को भली भाँति जानते हैं। वे युग-तत्त्वप्रवर्तक डारविनके सहयोगी और समान श्रेणीके वैज्ञानिक हैं। उन्होंने विज्ञानशास्त्रकी उन्नतिके लिए जिन तत्त्वोंका आविष्कार और जिन ग्रन्थोंकी रचना की है वे वर्त्तमान कालके वैज्ञानिक साहित्यमें बहुमूल्य रत्नोंकी नाई चमकते और प्रतिष्ठा पाते हैं।

डाक्टर वालेस पहले घोर नास्तिक थे। वे संसारकी समस्त अलौकिक बातोंको हँसीमें उड़ा दिया करते थे। जो लोग छायादर्शनका समर्थन करते थे उन्हें वे अर्धपागल समझते और उनकी अवज्ञा करते थे। यदि कोई प्रतिष्ठित विद्वान् उनके पास आकर छायादर्शनकी सत्यताके विषयमें साक्ष्य देता था तो वे उस साक्ष्यको रुग्णावस्थाकी कल्पना, स्वप्नावस्थाका भ्रम अथवा बिगड़े हुए मास्तिष्ककी विडम्बना मात्र समझते थे। चिरकालसे ऐसी बातें सुनते सुनते कालक्रमसे उनके मनमें कुछ कौतूहल उत्पन्न हुआ। वे सोचने लगे कि इतने मनुष्य इतने दिनसे इतनी बातें कह रहे हैं, क्या इन लोगोंके कथनमें सचमुच कुछ सार है? यदि ये बातें वास्तवमें सच हैं तो इनसे मानवजीवनके परिणाम और इहलोक परलोकसे अवश्य घनिष्ठ सम्बन्ध होगा। ऐसा सोचकर वे उसकी वैज्ञानिक ढँगसे कठोर परीक्षा करनेमें प्रवृत्त हुए। २० वर्षके लगातार परिश्रम और अनुसंधानके पश्चात् वे अपने हाथसे छायामूर्तिकी

* Dr. Alfred Russel Wallace, D. C. L., L. L. D., F. R. S.

फोटो लेनेमें समर्थ हुए और एक फोटोको ठीक अपनी स्वर्गीय माताके चेहरेके समान देखकर अत्यंत विस्मित हुए। उस दिनसे वे छायादर्शन तत्त्वके विश्वासी बन गये। उन्होंने छायादर्शनकी सत्यताके विषयमें अनेक पुस्तकें लिखीं और बहुतेरी वक्तृतायें दीं। उन्होंने अपने जीवन-चरितमें–जो उनकी वृद्धावस्थाके समय प्रकाशित हुआ था–इस विषयमें अनेक सारगर्भित और स्मरणीय बातें लिखी हैं। इस स्थल पर हम उनके कुछ प्रसिद्ध वाक्योंका अनुवाद करके इस प्रस्तावनाको समाप्त करते हैं।

डाक्टर वालेस लिखते हैं—"अनेक अनुसन्धानके पश्चात् मैं इस सिद्धान्त पर पहुँचा हूँ कि अध्यात्मतत्त्वकी जिन सब बातोंको लेकर इतना आन्दोलन होता है वे सर्वथा सच हैं। इस विषयके इतने प्रमाण संग्रहीत हो चुके हैं कि अब उनकी और आवश्यकता नहीं रही है। विज्ञानकी अन्यान्य बातें जैसे दृढ़ प्रमाणों पर अवस्थित हैं, उसी प्रकार अध्यात्मतत्त्वकी समस्त घटनायें भी अनेक प्रमाणों द्वारा सत्य प्रमाणित हो चुकी हैं।

"मैं जब तक अध्यात्मतत्त्वकी विविध बातोंको परीक्षाद्वारा सत्य प्रमाणित नहीं कर सका था तब तक एक कठोर बुद्धिका दार्शनिक तथा अविश्वासी था। इस समय जिस प्रकार हर्बर्ट स्पेन्सरके ग्रन्थों पर मेरा अनुराग है, उसी प्रकार उस समय वाल्टेयर, स्ट्राउस और कार्ल फेक्ट आदिके ग्रन्थों पर मेरा प्रगाढ़ अनुराग था। मैं उस समय अत्यंत भयानक, गर्वित, और पक्का जड़वादी था। उस समय अध्यात्म शक्तिकी तो बात ही दूर है; इस संसारकी जड़वस्तु और जड़ शक्तिके अतिरिक्त अन्य किसी भी वस्तुको मेरी बुद्धि ग्रहण नहीं करती थी। किन्तु जब मैंने अनेक दिनोंतक परीक्षा की, आँखोंसे देखकर और कानोंसे सुनकर उन बातोंका मिलान किया, तब मुझे विदित हुआ कि वे बातें सर्वथा सच हैं। उन सब बातोंके आगे मेरी बुद्धिको हार माननी पड़ी। मैं

उनके सामने पराजित हुआ। * मैं इतने दिनोंसे जिन बातोंको असत्य कहकर उड़ा दिया करता था वे ही बातें सत्य माननी पड़ीं। इस समय मेरा दृढ़ विश्वास हो गया है कि मनुष्य इस पार्थिव देहको छोड़नेके पश्चात् परलोक जाते और सूक्ष्म देह धारण करके अपने पार्थिव जीवनके कर्मफलका उपभोग करते हैं। मेरा यह भी दृढ़ विश्वास है कि परलोक-गत जीव अवस्थाविशेषमें, अध्यात्मजगतके खास खास नियमोंके अनुसार, विशिष्ट उद्देश्यसाधनके लिए समय समय पर हम लोगोंको दर्शन दे सकते, हमारे साथ बातचीत कर सकते और हमारे मन तथा जीवन पर प्रभाव डाल सकते हैं। इसके सिवा मेरा यह भी दृढ़ विश्वास है कि जो लोग सत्यके उपासक बनकर इस तत्त्वका अन्वेषण करेंगे वे एक न एक दिन इस तत्त्वको परम सत्य मानेंगे और इस पर विश्वास करेंगे।"

यहाँ पर डाक्टर वालेसकी जो उक्ति उद्धृत की गई है उसका गत आधी शताब्दीमें प्रायः एक सौ प्रधान वैज्ञानिकों और एक हजार प्रख्यात पंडितोंने समर्थन किया है। इसी कारण अध्यात्मतत्त्वकी मुख्य बात, मनुष्य मात्रके लिए बहुत ही बड़ी बात—बहुत ही गुरुतर समस्या—बनकर खड़ी हो गई है—"To be or not to be; that is the question"—आँखें मूँदते ही—श्वास निकलते ही जीवनकी समाप्ति हो जायगी, या उसके पश्चात् भी कुछ शेष रहेगा? आज जो हम अभि-मानके रंगमें रँगकर, ईर्ष्या, क्रोध, सुखलालसा और स्वार्थपरताके नशेमें

" * Facts, however are stubborn things. The facts beat me. They compelled me to accept them as facts long before I could accept the spiritual explanation of them. & c."

मतवाले बनकर, अपनेको भूलकर, दूसरोंके सुख, स्वार्थ, शान्ति और सम्मानके ऊपर कुठाराघात करते हैं; अपने तनिक और क्षणिक लाभके लिए दूसरोंका सर्वनाश करते हैं; जो हमारे ऊपर अन्ध-विश्वास रखता है उसीके साथ विश्वासघात करके उसे दुःख और विपत्तिके जालमें फँसाकर, खिलखिलाकर हँसते हैं; जो हमारा सैकड़ों तरहसे उपकार करता है उसके साथ हम अपने जरासे स्वार्थके पीछे अपकार करनेसे नहीं चूकते; इन सब कामोंकी समाप्ति—इन सब कर्मफलोंका अंत—इसी पार्थिव जीवनके साथ-ही-साथ हो जावेगा या आगे भी कुछ शेष रहेगा ? जो पाठक इन प्रश्नोंके गुरुत्वका अनुभव करेंगे वे इस अध्यायकी आत्मिक कहानीको कर्मफलका एक अपूर्व इतिहास समझकर विस्मित होंगे ।

आत्मिक-कहानी ।

कर्मफलका भयंकर परिणाम ।

वाकर इंग्लैंडका एक ग्रामीण भद्र-पुरुष था । वह उत्तर-इंग्लैंडके डारहम शायरके अंतर्गत चेस्टर-ली स्ट्रीट नामक स्थानमें रहता था । वाकरके कोई नहीं था । एक स्त्री थी, वह भी छोटी उमरमें संतानवती होनेके पहले ही मर गई थी । वाकर उद्योगी पुरुष था । उसके घर रुपये-पैसोंकी कमी नहीं, किन्तु आदमियोंकी कमी थी । गृही होने पर भी वह गृहस्थ नहीं था । उसका घर सूना और अंधकारयुक्त था ।

कुछ समयके पश्चात् एक दूर-सम्बन्धकी युवती वाकरके घर आकर रहने लगी । वह वाकरकी घर-गृहस्थीका सारा भार सँभालने लगी । इंग्लैंड आदि पश्चिमी देशोंमें अनेक अविवाहिता युवतियाँ, अंतमें विवाह कर लेनेके मधुर आश्वासनको पाकर अविवाहित या विपत्नीक पुरुषोंके

आश्रयमें रहा करती हैं। यह युवती भी इसी प्रकारके किसी मधुर आश्वासनको पाकर आई थी या नहीं, यह तो हम नहीं कह सकते, किन्तु उसके यत्नसे थोड़े ही दिनोंके भीतर वाकरके घरमें सुख-शृंखला स्थापित हो गई। वाकरका अँधेरा घर फिर प्रकाशित हो उठा।

युवती जैसी स्नेहशीला थी, वैसी ही घर-गृहस्थीके काम-काजोंमें भी निपुण थी। वाकर सारे दिन कार्यालयमें काम किया करता था और युवती उसके सुख-सुभीतेके लिए जिन जिन चीजोंकी आवश्यकता पड़ती उन सबको यथासमय प्रस्तुत रखती थी। वाकरके दिन बड़े सुखसे व्यतीत होते थे। परन्तु जिस प्रकार जलस्रोतमें ज्वार आता है और फिर भाटा होता है, उसी प्रकार जीवनस्रोतमें भी सुखदुःखरूपी ज्वार और भाटा हुआ करते हैं। किसीके जीवनमें सुखरूपी ज्वार सदैव एकसा नहीं रहता। देखते-ही-देखते वाकरके सुखरूपी ज्वारमें भी भाटेका प्रारंभ हो गया। वाकरके घर जो युवती रहती थी वह यद्यपि अविवाहित थी, फिर भी गर्भवती हो गई। अड़ोस-पड़ोसके चार आदमी इस विषयको लेकर कानाफूसी करने लगे। इस प्रकारकी कानाफूसीको सुनकर यद्यपि वाकरके मनमें कुछ अधिक लज्जा या भयंका संचार नहीं हुआ, किन्तु वह अभागिनी युवती लज्जा और अपमानके कारण रात दिन मन ही-मन जलने लगी।

वाकरका मार्क-सार्प नामका एक विश्वासी आदमी था। वह कोयलेकी खानिमें कोयला खोदनेका काम किया करता था। उसकी जन्म-भूमि लङ्केशायरके अंतर्गत ब्लाक बरनमें थी। एक दिन संध्या समय वाकरके घरमें रहनेवाली वह युवती सार्पके साथ किसी जगहको चली गई। कहाँ गई, इसका किसीको कुछ पता नहीं चला। सब लोग यही समझे कि लोकलज्जाके कारण वह अपने आप कहीं चली गई है। बहुत दिन व्यतीत हो गये; किंतु कहींसे उसका कोई समाचार नहीं

मिला। धीरे धीरे लोग उसकी खबर भूल गये और उसके विषयमें जो अपवाद-चर्चा उठी थी वह भी शान्त हो गई। बाकरकी मान-मर्य्यादा चार बड़े आदमियोंमें ज्योंकी त्यों बनी रही।

जाड़ेके दिन हैं। इंग्लैंडका शीत और हमारे देशका शीत एकसा नहीं होता। इंग्लैंडमें शीतका नाम मृत्यु-यंत्रणा और ग्रीष्मका नाम नव-जीवन है। सब जीवोंको त्रास देनेवाले, साक्षात् मृत्युस्वरूप दारुण शीतने आकर इंग्लैंडको ग्रस लिया है। दिनमान घटकर चार पाँच घंटेका रह गया है और सारे दिन कुहरा गिरनेके कारण इन चार पाँच घंटोंमें भी सूर्यका मुख देखना कठिन हो गया है। फलोंका कहीं पता नहीं रहा, फूल झड़कर गिर गये। फूलों और पत्तोंसे रहित वृक्ष अपने शरीर पर बर्फ लपेटे हुए स्फटिकके विचित्र झाड़ोंके समान जहाँ तहाँ खड़े दिखाई देरहे हैं। शीतसे पीड़ित हुए पक्षीगण अपने कल-संगीतको बंद करके वृक्षके कोटरोंमें जा छिपे हैं। अग्नि भी मानों ठंडी पड़ गई है; उसे छूनेसे अब सहज ही फफोला नहीं उठ आता है। जल जम गया है। नदियोंका बहना बंद हो गया है। अब न कीट पतंग हिलते-डुलते हैं और न पशु पक्षी उड़ते हैं। मजदूर लोग छोटे छोटे दिनोंमें अपना अपना कार्य पूरा नहीं कर पाते, इस कारण उन्हें कारखानोंमें अधिक रात गये तक काम करनेके लिए लाचार होना पड़ा है।

जेम्स ग्राहम नामका एक मनुष्य बाकरका पड़ौसी था। वह बड़ा कर्मठ और परिश्रमी था। शीतकालकी रात्रि है। एक बज चुका है। जेम्स ग्राहम इस समय भी कारखानेमें बैठा चक्की चला रहा है। वह आटा पीसनेका काम कर रहा है। ग्राहमका घर बाकरके घरसे प्रायः दो मील दूर था। रात्रि अधिक हो गई है। ग्राहम थक गया है। उसने चक्की बंद कर दी। बचे हुए अनाजको अच्छी तरह रखकर और कार-

खानेके किवाड़ बंद करके वह घर जानेके लिए निकल पड़ा। उसके हाथमें एक लालटेन है। सर्वत्र सन्नाटा छा रहा है। तुषार बरसानेवाली शीत-रात्रि साँय साँय कर रही है। ग्राहमने कारखानेसे बाहर पैर रखते ही देखा—सामने कोई खड़ा है! लालटेनको उठाकर अच्छी तरह देखा तो मालूम हुआ कि एक स्त्री खड़ी है! उसके बाल खुले हुए हैं और उन छूटे हुए बालोंमेंसे रक्तकी धारा बह रही है। मस्तकमें कई भयंकर घाव हैं। उनसे छल छल करके रक्तका प्रवाह निकल रहा है। ग्राहम इस दृश्यको अधिक समय तक नहीं देख सका। उसकी आँखें मुँद गई। शरीरमें काँटे उठ आये। कुछ समयके उपरान्त सावधान होने पर देखा—वही स्त्रीमूर्त्ति उसी प्रकार सामने खड़ी है! ग्राहम सोचने लगा—यह कोई छायामूर्त्ति नहीं, वास्तवमें कोई स्त्री आहत होकर मेरे पास आई है। किन्तु मस्तकमें इतने भयंकर घाव लगने पर भी कोई मनुष्य जीवित कैसे रह सकता है? तो क्या यह कोई चुड़ैल है? इस बार उसने साहस करके पूछा—"तुम कौन हो, इतनी रात्रिको इस प्रकार यहाँ क्यों खड़ी हो?"

अत्यंत गंभीर और दुःखभरी आवाजसे उत्तर मिला—"ग्राहम! तुम तो जानते हो, वाकरके घर एक अभागिनी रहती थी। वह अभागिनी और दूसरी कोई नहीं, मैं ही हूँ। जब मैं गर्भवती होगई, तब वाकरने लोकलज्जाके डरसे मुझे किसी एकान्त जगहमें भेजनेका निश्चय किया और मुझसे कहा कि संतान होनेके पूर्व और संतान होनेके पश्चात् जब तक तुम्हारा शरीर पूर्ण रूपसे स्वस्थ न हो जावेगा, तब तक मैंने तुमको एक निर्जन स्थानमें रखनेकी व्यवस्था की है। वहाँ तुम्हारी रक्षा और खाने पीनेका पूरा पूरा प्रबंध रहेगा। जब तुम्हारा शरीर पूर्ण रूपसे अच्छा हो जायगा तब तुम फिर इसी घरमें आकर पहलेहीके समान रहने लगना। इसी ठहरावके अनुसार एक दिन संध्याको

उसने मार्क सार्प नामके एक व्यक्तिके साथ मुझे निर्दिष्ट स्थानको भेज दिया। मैं निश्चिन्त होकर सार्पके साथ चल दी। जाते जाते मैं एक जनशून्य स्थानमें पहुँची। उस समय अँधेरा खूब हो गया था, अतः मैं बड़ी सावधानीके साथ चलने लगी। इसी समय पीछेसे सार्पने मेरे सिर पर कोयला खोदनेके कुदालको मारना प्रारंभ कर दिया। हाय! मुझे एक शब्द भी कहनेका अवसर न मिल पाया। मैं दारुण दुःखसे व्याकुल होकर तत्काल मूर्च्छित होगई। जब चैतन्य हुआ, तब देखा कि मेरा वह घायल शरीर धरती पर निर्जीव पड़ा है और मैंने देहसे बाहर होकर रक्षा पाई है। मेरे माथे पर जो पाँच बड़े बड़े घाव दिखाई देते हैं वे उसी कुदालके आघातसे हुए हैं। इसके पश्चात् उस निठुर सार्पने रुधिरसे भींगे हुए मेरे शरीरको एक समीपवर्त्ती कोयलेकी खानिमें डाल दिया और उस कुदालको भी उसी जगह मिट्टीमें पूर दिया। उसके जूते और मोजों पर रुधिरके दाग पड़ गये थे; जब बहुत चेष्टा करने पर भी वे दाग नहीं छूटे तब वह अबलाघाती उन दोनों चीजोंको भी वहीं जमीनमें गड़ाकर चला गया।"

स्त्री कुछ कालतक चुप रह कर फिर कहने लगी—"मैं क्रोध और प्रतिहिंसाकी ज्वालासे रात-दिन जल रही हूँ। माहम, यदि तुम कृपा करके मेरी इस ज्वालाको मिटानेकी चेष्टा करो—यदि तुम मेरी इस कहानीको मजिस्ट्रेटके पास जाकर कह दो, तो मैं तुम्हें हृदयसे आशीर्वाद दूँगी; पर यदि तुमने इस बातको प्रकट न किया तो याद रक्खो मैं तुमको बहुत तंग करूँगी।"

छायामूर्त्तिने ये अंतिम शब्द बहुत कर्कश-स्वरसे कहे। यह कहते कहते ही वह भयंकर छायामूर्त्ति वायुमें विलीन हो गई। वे लम्बे लम्बे बिखरे बाल और वह रुधिरकी धारा कहाँ गई? माहम कुछ कालके लिए चकित, स्तंभित होकर खड़ा रह गया।

यहाँ पर प्रश्न हो सकता है कि परलोक-गत आत्माके अविनश्वर सूक्ष्म-शरीरमें क्या क्षत-चिह्न रह सकते हैं ? विद्वानोंने बहुत अनुसंधान और अनेक परीक्षाओंके द्वारा जाना है कि जड़ शरीरके क्षत-चिह्न या रोग अध्यात्म शरीरमें नहीं रहते । किन्तु आत्मिकगण अवस्थाविशेषमें, प्रयोजनानुसार, कभी कभी उच्च स्थितिके रासायनिक क्षमतापन्न आत्मिकोंकी सहायतासे, पार्थिव शरीरकी अवस्था दर्शानेवाली मूर्त्ति धारण कर सकते हैं । वे संसारी मनुष्योंके निकट अपना परिचय देने या अपनी किसी विशेष अवस्थाको दर्शानेके लिए ऐसा किया करते हैं । प्राचीन आर्यऋषि ऐसी मूर्त्तिको काम-रूप अर्थात् कामनाके अनुरूप रूप कहते हैं । ग्राहमने ऐसी ही मूर्त्ति देखी । वह सोचने लगा– यह क्या मामला है ? मैंने यह क्या देखा ? यह क्या सुना ? बहुत कुछ सोचने विचारने पर भी उसकी बुद्धि इसका निर्णय नहीं कर सकी । वह फिर सोचने लगा– यह सत्य घटना है या केवल आँखोंका भ्रम ? यदि भ्रम ही है तो केवल आँखोंका ही भ्रम नहीं, साथ-ही-साथ कानोंका– मनका और बुद्धिका भी भ्रम है । क्या सभी भ्रम एक ही साथ आ मिले ? यदि मनुष्यकी सभी इन्द्रियोंको इस प्रकार एक साथ सुसङ्गत भ्रम हो सकता है, तो फिर हम अपने जीवनको –अपने अस्तित्वको– भी एक ऐसा ही भ्रम क्यों न मानें ?

ग्राहम मन-ही-मन इस प्रकार अनेक बातें सोचता हुआ बड़े कष्टसे अपने घर पहुँचा । घर आकर वह शय्या पर सो अवश्य गया, किन्तु उसे रातभर नींद नहीं आई । उसने इस अलौकिक घटनाके सम्बन्धमें किसीसे कुछ नहीं कहा और मन-ही-मन दृढ़ संकल्प कर लिया कि मेरा सारा रोजगार मिट्टीमें भले ही मिल जाय, परंतु इतनी रात्रितक मैं अब कभी कारखानेमें काम न करूँगा ।

ग्राहम उस दिनसे बड़ी सावधानीके साथ रहने लगा । किन्तु उस

सावधानीका कुछ फल न हुआ। वह उस छायामूर्तिसे अपना पिण्ड नहीं छुड़ा सका। एक दिन वह अपने कारखानेके आँगनमें खड़ा था। सूर्य अस्त हो चुका है; किन्तु अभी अंधकार सघन नहीं हुआ है। इसी समय ग्राहम सहसा चौंक उठा। वही भीषण मूर्त्ति उसको फिर सामने दिखाई दी। मूर्त्तिने रूखे स्वरसे कहा—"ग्राहम! तुमने मेरी बात न मानी–मेरी बातें मजिस्ट्रेटको न सुनाई!—अच्छा ठहरो।" ऐसा कहते कहते उसके दोनों नेत्र लाल हो गये। वह और भी अधिक क्रोधसे बोली—"मैं एकबार फिर भी कहती हूँ, अब भी मेरी बात मान जाओ, नहीं तो अब तुम्हारी भलाई नहीं।" इतना कहकर मूर्त्ति फिर अदृश्य हो गई। ग्राहमने फिर भी किसीसे कुछ नहीं कहा, पर इस दिनसे उसने कारखानेकी ओर आना जाना एक प्रकारसे बंद ही कर दिया।

यूरोपमें दिसम्बर महीनेमें बड़े दिनोंका उत्सव बड़ी धूमधामके साथ होता है। धीरे धीरे इसी उत्सवके दिन निकट आने लगे। एक दिन ग्राहम संध्या होनेके कुछ समय पहले एक बगीचेमें टहल रहा था। साथमें कोई नहीं था। उसे अकस्मात् फिर वही मूर्त्ति दिखाई दी। ग्राहमके प्राण सूख गये। आज मूर्त्ति बहुत विकराल थी, और उसके दोनों नेत्र दहकते हुए दो अंगारोंके समान दिखाई देते थे। उसने कर्कश स्वरसे कहा—"अब भागकर कहाँ जाओगे? आज तुम मेरे हाथसे नहीं बच सकते।" देखते देखते वह स्त्रीमूर्ति और भी भयंकर हो उठी। अब ग्राहम उसकी ओर आँख उठाकर नहीं देख सका और उस कर्कशवाणीको भी वह न सह सका। भयके मारे उसका हृदय और मन ठण्डा हो गया। अन्तमें उसने शपथ करके कहा—"मैं तुम्हारी सब बातें कल मजिस्ट्रेटके सामने खोलकर कह दूँगा। मैं हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ कि, अब तुम इस प्रकार मेरे पीछे पड़कर मुझे त्रास न देना–भय न दिखलाना।" मूर्त्ति अदृश्य हो गई।

ग्राहम काँपते काँपते घर आया । उस रातको भी उसे नींद नहीं आई । सबेरा होते ही वह नगरके मजिस्ट्रेटके पास गया । मजिस्ट्रेटने उसके मुँहसे आदिसे लेकर अंततक उक्त कहानी सुनी । सनी अवश्य, परंतु वह उस पर विश्वास नहीं कर सका । पहले तो इन अलीक बातोंके आधार पर उसे काम करनेका साहस ही नहीं हुआ; किन्तु पीछे ग्राहमके अधिक अनुरोध करने पर उसने इन बातोंकी जाँच कराई। यद्यपि जाँचका कार्य अनिच्छा और ला-परवाहीसे किया गया था; फिर भी उसका फल अत्यंत विस्मयदायक हुआ । उक्त कोयलेकी खानिमें सचमुच ही एक स्त्रीकी मृतदेह मिली, जिसके मस्तक पर पाँच बड़े बड़े घाव हो रहे थे। एक कुदाल, एक जोड़ी जूते और मोजे भी बतलाये हुए स्थानसे प्राप्त हुए।जूतों और मोजों पर रक्तके दाग अब भी ज्योंके त्यों दिखाई देते थे।

इस प्रकार हत्याका सूत्र पाकर पुलिसने वाकर और सार्पको गिरफ्तार कर लिया। डारहमकी पिछली सेशनमें उनका मुकद्मा हुआ । अदालतने दोनोंको दोषी पाया और उन्हें इस निष्ठुर पापका प्रायश्चित्त करना पड़ा । सहस्रों दर्शकोंके सामने दोनों ही अन्तिम दंडसे दंडित हुए । यह भी कहा जाता है कि छायामूर्त्तिने जज और जूरियोंको भी दर्शन दिये थे और उन्होंने हत्याके सम्बन्धमें छायामूर्त्तिके मुँहसे बातें सुनी थीं ।

यह भयंकर हत्या और छायादर्शनकी कहानी इस समय भी इंग्लैंडके उत्तर प्रदेशमें अनेक लोगोंके मुँहसे सुनी जाती है । जिस जजके पास वाकर और सार्पका विचार हुआ था, उसी जजने छायामूर्तिके दर्शन होनेके विषयमें स्पष्ट उल्लेख करके सार्जेण्ट हाटन नामक एक प्रतिष्ठित पुरुषको एक पत्र लिखा था । उसी पत्र परसे यह कहानी सङ्कलित की गई है ।

इस कहानीको हम सर्वांशमें अलौकिक तो कह सकते हैं; क्योंकि संसा-

रमें ऐसी घटनायें सदैव नहीं होतीं। किन्तु इसकी कोई भी बात अप्राकृत, अतिप्राकृत या अस्वाभाविक नहीं है। क्योंकि जड़जगतके समान अध्यात्मजगत् भी प्रकृतिके अंतर्गत है और अध्यात्मदेहधारियोंका दर्शन देना तथा लुप्त हो जाना, अथवा मनुष्योंके मन पर तरह तरहके कार्योंका अनुष्ठान करना, ये सभी बातें प्राकृत जगतके अनेक प्रकारके अनुल्लंघनीय परन्तु बहुत कुछ अविदित सूक्ष्मतर नियमोंके आधार पर होती हैं। वे सब नियम अभीतक हम लोगोंको विदित नहीं हुए हैं। इसीलिए एक ही व्यक्तिने दर्शन क्यों दिये, सबने क्यों न दिये, अथवा सभी परलोकवासी आत्मिक पृथ्वी पर आकर हम सबसे बातचीत क्यों नहीं करते, इत्यादि प्रश्नोंका उत्तर सहज ही नहीं दिया जा सकता। किन्तु डाक्टर वालेस प्रभृति कई वैज्ञानिकोंने जिस प्रगाढ़ भक्तिके साथ अनुसंधान करना प्रारंभ किया है, उससे भरोसा होता है कि इस प्रत्यक्ष दिखाई देनेवाले जड़ जगतके नियमोंके समान अप्रत्यक्ष अध्यात्म जगतकी कार्य्यप्रणाली अथवा नियमावली भी पृथ्वीकी समस्त परिज्ञात बातोंमें गिनी जाने लगेगी। अभीतक जितनी बातोंका पता लगा है, उसके आधार पर हम वैज्ञानिकोंके गंभीरस्वरमें स्वर मिलाकर कह सकते हैं कि—परलोक सत्य है; और परलोकका न्याय-विचार तथा कर्मफलोंका दंड-पुरस्कार भी परम सत्य है।

पञ्चम अध्याय ।

प्रस्तावना ।

फूलोंमें वन्य जूही और नवयौवना रमणियोंमें समाजसे जुदा रहनेवाली, सुखसम्पत्ति-हीना, वनवासिनी सुन्दरी, इन दोनोंकी अवस्था प्रायः एकसी है ।

छोटासा जूही-फूल अपने छोटेसे शरीरमें रूप और सौरभकी सलज्ज माधुरीको भरकर निर्जन वन या ग्रामके बाहर, विना परिश्रम और विना यत्नसे उत्पन्न हुए बगीचेमें मानों लोगोंकी दृष्टिसे बचकर अपने आप ही फूलता है, और फूलकर अपने उस जूहीके योग्य जीवन-व्रतका उद्यापन करके, अपने रूप और सौरभके साथ अनंत-राग-मिश्रित जगद्-गाथाके सरस मधुर संगीतको गाकर—समय आने पर अपने आप ही डंठलसे जुदा होकर झड़ जाता है । जूही-फूलकी यही स्वाभाविक परिणति है । यद्यपि भगवान् भास्करकी तेजोमय किरणोंसे विकसित होनेवाली शतदल कमलिनी या रजनीनाथ चन्द्रदेवकी अमृतमय चाँदनीमें खिलनेवाली कुमुदिनीके सामने तो जूही-फूलको फूल ही नहीं कह सकते । किन्तु जैसे शतदल कमलिनी एक फूल है, वैसे ही जूही भी एक फूल है । फूल—राज्यमें दोनों समान हैं और दोनों ही, फूलोंके विकास, विलास, विलुप्ति और अंतिम परिणतिके विषयमें एक ही नियमके अधीन हैं ।

उद्भिज्जगतमें जैसे जूही-फूल है, उसी प्रकार प्राणिजगतमें नगरोंकी चहल-पहलसे दूर गाँवों और बनोंमें रहनेवाली निर्धन सुन्दरियाँ हैं । उन्हें न कोई देखता, न कोई जानता और न उनकी कोई कभी भूलकर भी खोज-खबर रखता है । किन्तु अरण्यके अंधकारमें छिपी रहनेवालीं वे नवयौवना सुन्दरियाँ अपने रूप और सौरभसे अपने आप

ही प्रस्फुटित होतीं और प्रस्फुटित होकर दीन-योग्य, दीन-भोग्य जीवन व्यतीत करके जगतके महासंगीतके साथ चुपचाप अपने जीवन-संगीतको मिलाकर गातीं और अंतमें एक दिन इस संसारसे चल बसतीं हैं। इन दुःखिनी वनवासिनी युवतियोंके दुःखपूत सरल जीवनकी यही स्वाभाविक परिणति है। यद्यपि सुसभ्य, सुशिक्षित, सैकड़ों हृदयोंके स्नेह तथा प्रणयानुरागसे संवर्द्धित और स्वर्णालंकारोंसे सुशोभित, महलोंमें रहनेवाली सुन्दरियोंके समक्ष, इन बेचारी दीना, हीना, निरक्षरा और अनाघ्रात-सभ्य-जीवना वनवासिनी सुन्दरियोंको रमणी ही नहीं कह सकते। किन्तु जैसी रोमकी लूक्रिसिया + और फ्रांसकी ला वालियर * रमणी हैं, वैसी ही ये फटे पुराने वस्त्र धारण करनेवालीं वनवासिनी युवतियाँ भी रमणी हैं। रमणियोंके रूपराज्यमें दोनों ही समान और दोनों ही रमणियोंके विकाश, विलास, विलुप्ति और अंतिम परिणतिके विषयमें एक ही नियमके अधीन हैं।

वह जूही-फूल यदि अकालहीमें डंठलसे झड़कर, व्याधाओं या जंगली जानवरोंके पैरों तले पड़कर पिस जाय, तो कहना होगा कि उसके

+ लूक्रिसिया रोमकी एक सती-साध्वी और प्रतिष्ठित महिला थी। शेक्सपियरकी लेखनीने भी उसका सम्मान किया है। उसके दुःख और दुर्गतिकी दारुण कहानीने रोमराज्यके प्रत्येक घरमें भयंकर समराग्नि प्रज्वलित कर दी थी—रोमराज्यमें राष्ट्र-विप्लव मचा दिया था।

* ला वालियर चौदहवें लुईकी प्रणयिनी थी। चौदहवें लुईसे चार आँखें होनेके पहले वह एक देव-स्वभावा स्त्री थी। रूप तथा गुणमें भी वह देवकन्याके समान थी। किन्तु अब राजमहलके सैकड़ों सुख-भोगोंके बीचमें रहने पर भी उसके मनमें अनुतापकी अग्नि भयंकर रूपसे जल उठी तब वह सब प्रकारके सुख-वैभवोंको तिनकेके समान त्याग कर, कठोर तपश्चर्य्याद्वारा अपने किये हुए पापोंका प्रायश्चित्त करनेके लिए दीन-हीन भिखारिनीके वेषसे फ्रान्सके एक तापसी-आश्रममें जाकर रहने लगी थी।

जीवनकी गति जगन्मयी प्रकृतिकी धीरे धीरे पैर बढ़ानेवाली मंगलमयी गतिके साथ नहीं मिली; और जगतमें एक अविहित कार्यका अनुष्ठान हो गया । इसी प्रकार ये वनवासिनी युवतियाँ भी यदि जंगली जानवरोंके समान निष्ठुर पुरुषोंकी पाशवी-लालसामें पड़कर अकालहीमें कालके स्रोतमें बह जायँ, तो कहा जायगा कि उनके जीवनकी गति भी जगतकी सर्व मंगलमयी नित्य-नियमित गतिके साथ नहीं मिली । यह केवल अविहित अनुष्ठान ही नहीं, एक बड़ा भारी पाप होगा और यह महापाप अन्यायकारीको दंड दिलानेके लिए प्रकृतिके दरबारमें बदला लेनेका प्रार्थी बनकर खड़ा होगा ।

जूही-फूल आकार-प्रकारमें कितना ही छोटा क्यों न हो, किन्तु इस अनंत लीलामयी प्रकृतिके साथ उसका घनिष्ठ और गहरा सम्बन्ध है । वह वृक्षसे झड़ने पर, धूपसे सूखकर, वर्षासे भीगकर और वायुकी मंद मंद हिलोरोंसे हिलहिलकर अपने उपादान-परमाणुओंको प्रकृतिके भांडारमें जहाँके तहाँ दाखिल कर देता है; और फिर प्रकृति-देवताके प्रेममय अटल शासनसे जगतके किसी दूसरे स्थानमें, और किसी रूपसे विकसित होकर नये जीवन और नये व्रतको प्रारंभ करता है । ये बातें कवि-कल्पनायें नहीं, किन्तु आधुनिक समयके बढ़े-चढ़े विज्ञानके सत्य सिद्धान्त हैं ।

जूही-फूलके समान दुःखनी युवतियाँ भी बाहुबल और धनबलसे मतवाले हुए समाजके निकट कितनी ही उपेक्षाकी वस्तु क्यों न समझी जायँ, किन्तु वे प्रकृतिके साथ अत्यंत घनिष्ठ और गंभीर स्नेह-सम्बन्ध रखती हैं । क्योंकि वे अनंत धामकी अधिकारिणी और चैतन्यमयी हैं । इसी लिए वे प्रेममय जगदीश्वरके लीला-विधानसे उच्चगति पाकर जगतके किसी अन्य स्थानमें, अन्य रूपसे विकसित होती हैं और उनका वह नवजीवन उनको प्रेममय जगदीश्वरकी ओर, एक सीढ़ी और ऊपरको चढ़ा देता है ।

यहाँ हम पाठकोंकी सेवामें एक मानव-जूहीकी दुःखकहानी भेंट करते हैं। पाठक इसे पढ़कर समझ सकेंगे कि विश्वनियन्ताकी समस्त विश्वको देखनेवाली और रक्षा करनेवाली स्नेहदृष्टि, अंधकार और प्रकाशमें, वन और नगरमें, झोपड़ी और महलमें सर्वत्र समान पड़ती है। जो व्यक्ति यहाँ पर जीवोंकी सुख-शान्ति और उन्नतिकी कामनासे कोई भला काम करता है उसका वह काम प्रेम-सूत्रमें ग्रथित होकर एक दिन पुरस्कारकी प्रेममालाके रूपमें परिणत हो जाता है और वह प्रेममाला उसके गलेमें एक दिन अवश्य शोभा पाती है। उसके तप्तप्राण उसके शीतल स्पर्शसे अवश्य शीतल होते हैं। और जो मनुष्य यहाँ पर जीवोंको दुःख, अशान्ति और अवनतिकी ओर ले जानेकी इच्छासे कोई बुरे कार्य करते हैं, उनके वे कार्य भी प्रकृतिके स्मृतिसूत्रमें ग्रथित होकर प्रतिशोध और परिशोधके वज्र और अग्निके रूपमें परिणत हो जाते हैं। वह वज्र एक दिन उनके हृदय पर पड़ता है—और वह अग्नि सोनेको शोधनेवाली पार्थिव अग्निके समान एक दिन उन्हें जला-जलाकर देवताके समान पवित्र बना देती है।

आत्मिक–कहानी।

वन्य जूही और जंगली पशु।

जमैका एक छोटासा द्वीप है। वह वेस्ट इंडियन द्वीपसमूहके गलेसे छूटकर दूर पड़े हुए, मध्यमणिके समान कैरिबिन सागरमें अव-स्थित है। यह द्वीप पहले स्पेनके अधिकारमें था, किन्तु अंतमें इसे रत्न-भोगी ब्रिटिश राज्यने अपने अंगका आभूषण बना लिया। इसके उत्तरकी ओर क्यूबा और हेटी आदि द्वीप हैं, जो अटलांटिक महासागरकी उत्ताल तरंगोंसे इसकी रक्षा करते हैं। पूर्वकी ओर मेक्सिको समुद्र है। इस मेक्सिको सागरकी तरंग-मालायें प्रणालीके मार्गसे आ आकर जमैकाकी

खबर लिया करती हैं । पश्चिमकी ओर सुदूरव्यापी अटलाण्टिक महासागर सूर्य-चन्द्र-ग्रह-नक्षत्र-जड़ित प्रकृतिके नीलाम्बरको चूम रहा है। दक्षिणमें कैरिबिन सागरके उस पार पनामा डमरूमध्य * है। पनामाकी दुर्बल देह दोनों ओरसे दो महासागरोंकी उन्मत्त तरंगोंकी फटकारोंको सहकर, अमेरिकाके उत्तर और दक्षिण भागोंको अर्थात् साम्य और स्वाधीनता, तथा दासत्व और प्रभुत्त्वकी दो विराट् रंगभूमियोंको, सैकड़ों प्रतियोगिताओंके रहने पर भी न जाने किस मंत्रबलसे एक सूत्रमें बाँधे हुए है। जमैका दक्षिणकी ओर दृष्टि फैलाकर मानों इसी तत्त्वके गूढ़ रहस्यका चिन्तवन कर रहा है।

जमैकाका विस्तार इंग्लैंडकी दो तीन छोटी छोटी कौण्टियों या शायरोंसे अधिक नहीं है। इसकी लम्बाई पूर्व-पश्चिम और चौड़ाई उत्तर-दक्षिण है। इसके प्रायः ठीक मध्यभागमें पूर्वसे पश्चिम तक एक लम्बी पर्वतमाला है। इस पर्वतमालाका नाम 'ब्लू मौण्टेन' अर्थात् नीलगिरि है। नीलगिरिके शिखर जगह जगह आकाशसे बातें करते और बर्फसे ढँके रहते हैं। जमैका द्वीप, इस पर्वतके पाषाणमय कमरपट्टेको कसकर लहराते हुए सागरकी छाती पर प्रफुल्लमुख विराजमान है। जमैका, नाना प्रकारके सुन्दर फल-फूलों, और लता-कुंजोंके लिए बहुत प्रसिद्ध है। नाना जातिके पक्षियोंके मधुर गुंजन और पर्वतसे निकलनेवाली अनेक छोटी छोटी नदियोंकी कलकल ध्वनिसे वह सदैव मुखरित रहता है। वह एक द्वीप भी है और प्रकृतिकी सागरविलासिनी विहार-भूमि भी।

नीलगिरिके उत्तर और दक्षिण दोनों ओर लगभग एक सौ छोटी छोटी नदियाँ बहती हैं, किन्तु ये सब नदियाँ ऐसी सकरीं और वेगवती हैं कि इनमेंसे एक 'ब्लाक-रिवर' या कृष्णानदीको छोड़कर किसीमें नावें नहीं चल सकतीं। जमैकाका जल-वायु भी बहुत अच्छा और

* अब पनामाकी नहर काट दी गई है।

स्वास्थ्यकर है। भारतवर्षके लिए जैसे शिमला, दार्जेलिंग, आदि स्थान हैं, उसी प्रकार संयुक्तराज्यके लिए जमैका है। किसीका तनिक स्वास्थ्य बिगड़ा कि वह झट जमैकाकी तैयारी कर देता है और वहाँके थोड़े ही दिनोंके निवाससे स्वस्थ होकर घर लौट आता है। जमैकामें दिनको अधिक गरमी पड़ती है—९० डिग्री तक पहुँच जाती है है—और वही रात्रिको घटकर ७० डिग्री तक आ जाती है। वर्षा भी वहाँ सालमें दो बार होती है,—एकबार बसंतमें और दूसरी बार ग्रीष्ममें। जमैकामें दो बड़े नैसर्गिक उपद्रव हुआ करते हैं, एक तो भूमिकम्प और दूसरा वज्रपात या बिजलीकी भयंकर तड़तड़ाहट। भूमिकंप सदैव नहीं होता, किन्तु बिजलीका वज्रनिनाद सहसा कब और किस समय होकर लोगोंके हृदयोंको कँपा दे, इसका कोई निश्चय नहीं। क्या वसंत और क्या ग्रीष्म, सभी समय सहसा बिजलीका वज्रनिनाद हो उठता है। किंग्स्टन जमैकाकी राजधानी है। फेल माउथ आदि उसके प्रसिद्ध नगर हैं।

जमैकाके मूल निवासी काले रंगके नीग्रो या हबशी हैं। किन्तु यूरोपके गोरोंके संसर्गसे इस समय वहाँ दो और नई जातियाँ उत्पन्न हो गई हैं। एकका नाम है 'मुलाटो' और दूसरीका 'कोयाड्रुण।' गोरे पिता और नीग्रो माता अथवा गोरी माता और नीग्रो पिताके संयोगसे उत्पन्न हुई संतान मुलाटो कहलाती है; और गोरे पिता और मुलाटो माता अथवा गोरी माता और मुलाटो पिताकी संतान कोयाड्रुण कहलाती है। कोयाड्रुण जाति अपने शारीरिक सौन्दर्य्यके लिए बहुत प्रसिद्ध है।

जमैकाके एक ग्राममें डंकन नाम्नी एक स्त्री रहती थी। वह कोयाड्रुण जातिकी एक अत्यंत सुन्दरी युवती थी। वह अविवाहित थी। यौवनके प्रथम विकासके समय उसकी रूपराशि और भी मनोहर हो गई थी, किन्तु उसके मनमें किसी प्रकारका परिवर्त्तन नहीं हुआ था। वह

अपनेको एक बालिका ही समझती थी और बालिकाओंके समान सरल और शुद्ध चित्तसे सब पर प्रेम रखती थी।

एक दिन पड़ौसियोंने देखा कि डंकन घर नहीं है। उसकी सूनी झोपड़ी उसके विना अँधेरी हो रही है। उस जंगली जूही की ज्योतिसे वह स्थान प्रकाशमान नहीं है। पड़ौसी उस पर सहज ही प्रेम रखते थे। एक पड़ौसीने डंकनको खोजा, किन्तु उसका कहीं कुछ पता न चला। कुछ समयके पश्चात् पुलिसमें खबर पहुँची कि अमुक रास्तेके समीप एक निर्जन स्थानमें डंकनकी मृतदेह पड़ी है। पुलिस डंकनके शवको ले आई और अपराधीको खोजने लगी।

शव-परीक्षा करके डाक्टरने कहा—इसके साथ किसी बलवान् पुरुषने बलात्कार किया है। इसी पाशविक-अत्याचारके असहनीय दुःखसे इसकी मृत्यु हुई है। किस निष्ठुर नर-पिशाचने जमैकाकी इस वन्य-जूहीको पददलित किया, पुलिस बड़े यत्नके साथ इसका अनुसंधान करने लगी। उसने सारा जमैका छान डाला, किन्तु हत्याके सम्बन्धमें कहीं कुछ पता नहीं चिला। धीरे धीरे एक वर्ष बीत गया। गवर्नमेण्टने भारी पुरस्कार देनेकी घोषणा की, किन्तु अपराधी नहीं पकड़ा गया।

इतनेमें पेण्ड्रिल आर चिति नामके दो बलिष्ठ नीग्रो (हबशी) दो भिन्न भिन्न स्थानोंसे छोटे छोटे अपराधोंके कारण दंडित होकर जेल भेजे गये। एक किंग्स्टनकी और दूसरा फेलमाउथकी जेलमें रक्खा गया। दोनों स्थानोंके बीचमें लगभग ८० मीलका अन्तर है। न चिति जानता था कि पेण्ड्रिल जेल गया है और पेण्ड्रिल ही जानता था कि चिति जेलमें है।

सजा अधिक लम्बी नहीं थी। धीरे धीरे समय बीतने लगा और उनके चित्तपरसे दंडका भार भी बहुत हलका हो चला। उनको आशा हो गई कि इसी प्रकार और कुछ समय बीतते ही हम मुक्त हो जायँगे। जिस

समय वे उक्त आशासे प्रसन्न हो रहे थे उसी समय एक दिन रात्रिको एक क्रिंग्स्टनकी जेलमें और दूसरा ८० मीलकी दूरी पर फेलमाउथमें, सोते सोते सहसा चिल्ला उठा। पेण्डिूलके चिल्लानेका जो कारण था, चितिके चिल्लानेका भी वही कारण था। दोनों कैदी, दो भिन्न भिन्न स्थानोंमें किसी छायामूर्त्तिको देखकर बहुत ही विनयके साथ कहने लगे—"तुम–तुम–डंकन–तुम हो! तुम्हारे पैरों पड़ता हूँ, तुम इसी समय यहाँसे चली जाओ। डंकन, मैं तुम्हारे निकट अपराधी हूँ। तुम देवता हुई हो—क्षमा करो–क्षमा करो—मुझ दीनको क्षमा करो। यह क्या! यह क्या!–यह तो आगका हाथ है!–मैं हा हा खाता हूँ, तुम मुझे इस आगके हाथसे मत पकड़ो।"

प्रति दिन रात्रिके समय जब वे सोते तब इसी प्रकार कहा करते थे। ये बातें धीरे धीरे सब जगह फैल गई। अन्तमें अधिकारियोंके कानों तक भी पहुँचीं। दोनों स्थानोंकी एकसी रिपोर्ट पढ़कर अधिकारीगण विस्मित हुए। वे सोचने लगे, क्या इन बातोंका डंकनकी हत्यासे कुछ सम्बन्ध है? सबके मनमें यही प्रश्न उठने लगा। आखिर पेण्डिूल और चितिको लेकर फिर तहकीकात शुरू हुई।

सारे दिन पुलिस और अधिकारियोंके प्रश्नोंसे खीजकर तथा रात्रिको छायामूर्त्तिके उत्पीड़नसे विवश होकर दोनोंने अपराध स्वीकार कर लिया। उन्होंने जिस पाशविक अत्याचारके द्वारा डंकनका धर्मनाश और प्राण-नाश किया था उसका सारा वृत्तान्त कह सुनाया। अपराध प्रमाणित होनेपर दोनोंको कठोर दंड दिया गया।

इस अद्भुत और विस्मयजनक कहानीकी प्रामाणिकताके विषयमें 'एनाटमी आव् स्लीप' अर्थात् 'निद्राका विश्लेषतत्त्व' नामक ग्रंथके रचयिता सुप्रसिद्ध डाक्टर एडवर्ड बिन्स एम. डी. की साक्षी है। जिस

समय वे जमैकामें रहते थे उसी समय यह घटना हुई थी। वहाँके गवर्नर सर चार्लेस मेटकाफ़ उनके प्रिय-मित्र थे। उक्त गवर्नरकी सहायतासे ही इस घटनाकी रत्ती रत्ती जाँच करके वे इस कहानीको लिख गये हैं। राबर्ट डेलवेन आदि लोकमान्य पंडितोंने उन्हींकी साक्षी पर भरोसा रख कर इसकी समालोचना की है।

अब प्रश्न यह होता है कि इस घटनाका अर्थ क्या है? क्या यह कल्पना-प्रसूत झूठा स्वप्न है, या छायामूर्तिके रूपसे प्रकट होनेवाली परलोकगत आत्माकी पार्थिव क्रिया है? यदि हम इसे स्वप्न भी मान लें, तो परस्पर ८० मील दूरी पर रहनेवाले दो व्यक्तियोंको लगातार कई दिनों तक, एक ही समय, एक ही प्रकारका स्वप्न क्यों आया? कोई कोई कहेंगे कि यह अपराधके भारसे दबे हुए विवेकका आत्म-पीडन है। हाँ, विवेकद्वारा इस प्रकार आत्मपीडन होना अस्वाभाविक नहीं है, किन्तु भिन्न भिन्न स्थानोंमें रहनेवाले दोनों अपराधी एक ही प्रकारकी मूर्ति देखकर भयभीत क्यों हुए? डंकनकी छायामूर्ति देखनेकी झूठी बात कहकर अपने सिरपर राजदंडरूपी वज्र पटक लेनेमें भला उनका क्या स्वार्थ था? अतएव सच बात कुछ और ही है। किन्तु निरन्तर आमोद-प्रमोदमें मग्न रहनेवाले अभिमानी मनुष्य उस बातको सुना नहीं चाहते और सुनकर भी उस पर सहसा विश्वास नहीं करना चाहते। किन्तु जो मनुष्य तनिक भी विचार करके देखेंगे वे समझ सकेंगे कि, अभागे वाकरके घर रहनेवाली उस युवतीने ग्राहमको जिस उद्देश्यसे दर्शन दिये थे, उसी उद्देश्यसे डंकनने भी अपनी दुर्गति करनेवाले कैदियोंको दर्शन दिये थे। दोनोंके मनमें प्रतिहिंसा या बदलेकी भयंकर आग धधकती थी। ऐसी स्थिति आत्माकी आशानुरूप उन्नतिके मार्गमें विशेष विघ्नस्वरूप है। जो लोग परलोक जाकर आत्मिक जीवन व्यतीत करते हैं, वे अपने हृदयमें ऐसी ज्वाला या अशान्तिके रहते

अपनी उन्नति करनेमें असमर्थ रहते हैं। डंकनने जिस भयंकर पापसे पीड़ित होकर देह छोड़ी थी उसके कारण उसके मनमें ऐसी विषम ज्वाला उत्पन्न होना बहुत संभव है। वन्य जूही डंकन इस विषमज्वाला-से मुक्त होकर एक दिन नंदन-काननमें फिर खिलेगी, किन्तु जो अप-राधी हैं, वे इस संसारमें सुखी रहने पर भी परलोक जाकर परितापकी अग्निमें जलेंगे और जल जल कर शुद्ध होंगे। यह शुद्ध होनेकी व्यवस्था अटल है।

छट्ठा अध्याय।



प्रस्तावना।

" All Evolution is an awakening to higher realization."

* * * * *

" Discovery, Desire and Development are the Successive steps of progress "–Newcomb.

* * * * *

एक तेरह वर्षकी बालिका सामुद्रिक जाननेवाले (हाथकी रेखाओं द्वारा शुभाशुभ बतलानेवाले) पंडितके हाथ पर अपना कोमल हाथ रखकर एक बार आशासे मंद मंद मुस्कराती है और फिर पंडितके मुखको कुछ गंभीर सा देखकर भयभीत होती हुई, अपनी माताकी आँखोंकी ओर सलज्ज आँखोंसे ताकती हुई, मानों आँखों ही आँखों कुछ कहना चाहती है। क्या उसके अधखिले मनकी अधूरी आशा पूर्ण होगी ? जैसे सुशील, सुन्दर और मधुरभाषी वरकी बातें वह अपनी बहिनके मुँहसे निरन्तर सुना करती थी क्या वैसा ही वर उसे मिलेगा ? तेरह वर्षकी उमरमें उसकी बुद्धि ही कितनी हो सकती है; किन्तु वह समझे या न समझे, उसकी आत्माके अन्तस्तलमें ऋषियोंद्वारा आदिष्ट अदृष्टवादकी सत्ता है।

इसी प्रकार एक ८० वर्षका बुड्ढा है जिसे अधिक दिन जीनेकी आशा नहीं और जिसका मन सदैव धनतृष्णामें मग्न रहता है। उसने जन्मभर लोगोंके हृदयके रक्तको चूस-चूसकर धन इकट्ठा किया है। उसके अत्यंत परिश्रमसे जोड़े हुए धनको उसके स्वेच्छाचारी लड़के पानीकी तरह बहा रहे हैं। यह बूढ़ा भी आज अपनी जन्मपत्रिका

लेकर ज्योतिषी महाराजके पास बैठा है। वह इतने दिनोंतक अपनेही-को अपने घरका कर्ता-धर्ता समझता था, किन्तु अब उसे विश्वास हो गया है कि कर्त्ताके ऊपर भी कोई कर्त्ता है। उस सर्वेश्वरने—उस कर्त्ताने—पूर्व कर्मोंके फलानुसार भाग्यमें क्या लिख रक्खा है, यह जान-नेके लिए ही आज वह ज्योतिषीके पास आया है। कहनेका तात्पर्य यह है कि उसके हृदयमें भी यह भयंकर अदृष्टवाद या भाग्यवाद बैठा हुआ है।

यूरोपके विद्वान भी बहुत समयसे अदृष्टवाद पर विश्वास रखते आते हैं। ग्रीक लोगोंके माननीय गुरु सुकरात (साक्रेटीस) अदृष्टको मानते थे। प्रसिद्ध रोमन वीर सीजर भी भाग्यवादी था। इसी प्रकार कर्मवीर नेपोलि-यन बोनापार्ट, क्या रणक्षेत्र और क्या राजनैतिक क्षेत्र, सभी जगह भाग्य पर भरोसा रखकर खड़ा रहता था। इससे जान पड़ता है कि अदृष्टवाद एक विषम समस्या है; ज्ञानजगतका एक बहुत ही गंभीर रहस्य है। एक ओर मनुष्यकी स्वाधीनता अथवा स्वेच्छातंत्रगति, और दूसरी ओर अदृष्ट-की (भाग्यकी) अटल विधि। इन दोनोंका दार्शनिक सामञ्जस्य होना कैसा कठिन है, इसे विचारशील पाठक स्वतः समझ सकते हैं। मनुष्य कब क्या करेगा और उन किये हुए कर्मोंके अवश्यम्भावी फलसे वह कब किस अवस्थाको प्राप्त होगा, यह सब यदि अनादिकालसे आद्यन्त नियत रहता है, तो फिर मनुष्यके कर्मसम्बन्धी स्वातंत्र्य, और कर्मसू-त्रित उत्तरदायित्वका अर्थ ही क्या है? किन्तु इस स्वातंत्र्य और दायि-त्वके होनेपर भी, अदृष्ट या भाग्यके आधिपत्यको एकदम अस्वीकार कर देना नहीं बन पड़ता। क्योंकि अनेक समय मनुष्य जाना तो चाहता है पूर्वको, किन्तु अज्ञात अवस्थाचक्रके घुमावमें पड़कर जाने पर बाध्य होता है पश्चिमको। हर्बर्ट स्पेन्सर और फिस्के आदि दार्शनिक भारतीय ऋषियोंके अदृष्टवाद अथवा बोनापार्टके भाग्यतत्त्व (Destiny) पर

विश्वास नहीं करना चाहते, किन्तु उन्होंने युग-युगान्तरसे होनेवाले क्रम-विकाश (Evolution) और आवराणिक अवस्था (Environment) की शासनी-शक्तिको जिस प्रकार व्याख्या करके समझाया है, उसके साथ अदृष्टवादका विशेष पार्थक्य नहीं है।

जो लोग दूसरे शरीर प्राप्त करके देवधामके अधिकारी हुए हैं, अथवा अब भी कर्मफलकी परीक्षाके अधीन रहकर बीचबीचमें पृथ्वी पर रहनेवाले अपने मित्रों या स्वजनोंको प्रतिज्ञापालन या प्रीति और आवश्यकताके कारण दर्शन देकर विस्मित करते हैं, वे भी बहुत कुछ अदृष्टवादी हैं। 'अंतमें पूर्ण कल्याण होगा' इस महासत्यके उपासक होने पर भी, वे भाग्य पर भरोसा रखते हैं। जब इस पृथ्वी पर रहनेवाले मनुष्य, मनुष्योंकी शुभाशुभ घटनाओंको थोड़ा बहुत जान सकते हैं, तो जो लोग परलोकवासी होकर जीवनकी गति-विधिके विषयमें अपेक्षाकृत अधिकज्ञान रखते हैं, यदि वे इस विषयमें अधिक अभिज्ञ हों—अधिक ज्ञाता हों—तो इसमें आश्चर्य्य ही क्या है ?

यहाँ हम पाठकोंको एक प्राचीन और प्रसिद्ध अध्यात्मिक-कहानी भेंट करते हैं। इस प्रकृत घटनामूलक पारिवारिक वृत्तान्तकी आद्योपान्त समालोचना करके पाठक जान सकेंगे कि हम जिस वस्तुको आँखोंसे नहीं देख सकते, उसे दूसरे देखते हैं;—हम जिसे कानोंसे नहीं सुन सकते, उसे दूसरे अदृश्य रूपसे पास पास रहकर सदैव सुनते हैं; और हम जिस बातको किसी प्रकार नहीं जान पाते, दूसरे सूक्ष्मदृष्टिकी सहायतासे उसे सहज ही जान लेते हैं। इसके अतिरिक्त पाठकोंको यह भी विश्वास हो जायगा कि हमारे पार्थिव जीवनका पूर्वापर समस्त इतिहास ऊर्द्ध जगतमें चित्रपटके समान चित्रित हो रहा है। उस पटपर जीवनके कर्मानुसार जब कोई नई रेखा खिंच जाती है, तभी वह रेखा आलोचनाका विषय बनकर आत्मीय जनोंके हृदयमें आनंद या विषाद उत्पन्न करती

है। परन्तु हम उसे तनिक भी न जानकर अथवा उसे जाननेके लिए तनिक भी यत्न न करके, कभी अभिमानके रंगमें रँगकर दूसरोंके प्राणों पर भारी चोट पहुँचाते हैं, कभी लोभ या तृष्णाके वशीभूत होकर दूसरोंका सर्वस्व हरण कर लेते हैं और कभी अपने अमूल्य प्राणोंको पाशविक-पिपासाकी प्रबल बहियामें बहाकर कुछ समयके लिए मनुष्य-त्वसे भी हाथ धो बैठते हैं। मनुष्यका हृदय मनुष्य मात्रसे समय समय-पर पूछा करता है कि तुम और कितने दिनों तक–और कितने समय-तक–इस प्रकार अंधे बने रहोगे?

आत्मिक-कहानी।

अदृष्टवाद और आत्माकी स्वाधीनता।

इंगलैण्डके पश्चिमकी ओर, आयरिश सागरके उस पार आयलैंण्ड नामका एक द्वीप है। इस आयलैंडके किसी धनी घरमें एक सुन्दर बालक और एक कोमल कलीके सदृश सुन्दरी बालिका थी। यद्यपि ये दोनों बालक-बालिका एक ही माता-पितासे उत्पन्न भाई–बहनके समान बड़े प्रेमसे रहा करते थे, किन्तु एक ही माता-पिताकी संतान नहीं थे। दोनों ही निराश्रित और बचपनसे मातृ-पितृ-हीन थे। वे जिस प्रतिपालक या आश्रयदाताके पास रहते थे, वह अत्यन्त स्नेहशील और मधुर स्वभावका था। दोनों बच्चे उसे बहुत चाहते और उसे अपना पिता समझते थे। इसी तरह अपनेको परस्पर भाई-बहन समझते थे। दोनों ही एक साथ खाते-पीते, और एक साथ लिखते-पढ़ते थे। इस प्रकार उनका समय आनंदके साथ कटता था। ये ही बालक आगे चलकर लार्ड टाइरन और लेडी बेरेस्फोर्डके नामसे प्रख्यात हुए। अतः इस प्रबंधमें हम भी इन्हें इसी नामसे लिखेंगे।

प्रतिपालक अत्यंत सुशील और सज्जन होनेपर भी धर्म-विषयमें अविश्वासी था। वह नाममात्रको ईश्वर मानता था; परन्तु प्रार्थनाकी आवश्यकता और परलोकको नहीं मानता था। दोनों बालक भी प्रतिपालकके धर्मभावोंको माताके दुग्धके समान पी-पीकर अतमें धर्म तथा परलोकतत्त्वके विद्वेषी बन गये। किन्तु उनकी शिक्षाका यह क्रम अधिक समय तक स्थिर नहीं रहा। उनकी चौदह वर्षकी उम्रमें ही प्रतिपालकका स्वर्गवास हो गया और उसके मरने पर उस घरका भार एक दूसरे पुरुषके हाथ चला गया। यह नवीन प्रतिपालक धर्मप्रेमी और परलोकतत्त्वको माननेवाला था। अतः अब ये बालक बालिका इस नये प्रतिपालकके मुखसे धर्मसम्बन्धी नई नई बातें सुनने लगे। फल यह हुआ कि इस नये संसर्गसे उनके प्राचीन अविश्वासी भाव ढीले पड़ गये; परंतु बचपनके संस्कार समूल नष्ट नहीं हुए। उनके मनमें जो एक प्रबल सन्देहका भाव समा गया था, वह किसी प्रकार दूर नहीं हुआ।

कई वर्ष व्यतीत हो गये। बालक, अब बालक नहीं रहा। अब वह लार्ड टाइरनके नामसे प्रसिद्ध है। बालिका भी अब बालिका नहीं रही, वह सर मार्टिन बेरेस्फोर्डकी प्रियपत्नी—लेडी बेरेस्फोर्ड कहलाती है। दोनोंके जीवनमें बड़ा भारी परिवर्तन हो गया है; किन्तु उनके बचपनका सौहार्द पर्वतके समान अटल है। अब भी वे दोनों भाई-बहनका नाता पालते और परस्पर प्रेम रखते हैं। लार्ड टाइरन, स्वभावके उदार, सुन्दराकार और मैत्रीको निबाहनेमें दृढ़ हैं। लेडी बेरेस्फोर्ड रूपवती, गुणवती और उदार-स्वभावकी रमणी हैं। वे स्वभावसे ही निडर और स्नेहवती हैं। उनके सद्व्यवहारसे सभी मनुष्य प्रसन्न रहा करते हैं। जो उनके पास जाता है वही उनके विनम्र व्यवहारसे आकृष्ट होकर उन पर सहज ही प्रेम करने लगता है। अड़ौस-पड़ौसके सभी लोग उनके सत्स्वभावकी प्रशंसा किया करते हैं। जब वे किसी पर अपना स्नेह

प्रकट करनेमें समर्थ होती हैं, तब अपने मनमें एक अपूर्व सुखका अनुभव करती हैं। वे स्वभावतः धर्मानुरागिणी हैं, किन्तु बचपनके शिक्षा-दोषसे उनका धर्म-विश्वास संशयके झूलनेमें झूला करता है। इसी कारण समय समय पर उनके मनमें घोर अशान्ति उत्पन्न हो जाया करती है। उनका हृदय जिस बात पर विश्वास करना चाहता है, उनका मन और बुद्धि सौ प्रकारके संशयोंको उठाकर उसे हृदयसे निकालनेकी चेष्टा किया करती हैं।

दोनों परिवारोंमें खूब स्नेह है। समय समय पर परस्पर मिलने-जुलने और खाने-पीनेकी प्रीतिवर्द्धक क्रियायें हुआ करती है। लार्ड टाइरन और लेडी बेरेस्फोर्ड दोनों अब भी धर्मविषयमें किसी स्थिर सिद्धान्त पर नहीं पहुँच सके हैं। एक दिन दोनोंमें धर्म-विषयक बातें हो रही थीं। प्रसंगानुसार परलोककी चर्चा उठ खड़ी हुई। कुछ समयतक वादानुवाद होनेके पश्चात् दोनोंने प्रतिज्ञा की—“हम दोनोंमेंसे जिसकी पहले मृत्यु होगी, वह मरने पर यदि संभव होगा तो, दर्शन देकर दूसरेके परलोक तथा जगदीश्वरसम्बन्धी संदेहको दूर कर देगा और साथ ही यह भी प्रकट करेगा कि वास्तवमें कौन धर्म सत्य और ईश्वरानुमोदित है।”

लार्ड टाइरनका विवाह हो गया है। उनके केवल एक कन्या उत्पन्न हुई है। पर लेडी बेरेस्फोर्ड दो कन्याओंकी माता हो चुकी हैं। लार्ड टाइरन और लेडी बेरेस्फोर्ड दोनों अपने अपने घर सुखपूर्वक दिन व्यतीत करते हैं। इधर कुछ समयसे दोनोंका साक्षात् नहीं हुआ है। लार्ड टाइरन कहाँ हैं और कैसे हैं, सर मार्टिन और लेडी बेरेस्फोर्डको इसका कुछ समाचार नहीं मिला है।

गंभीर रात्रि है। लार्ड और लेडी बेरेस्फोर्ड दोनों अपने घर एक बड़े और सुसज्जित पलंग पर सो रहे हैं। दोनों गहरी निद्रामें अचेत हैं। घरमें मंद प्रकाश टिमटिमा रहा है। चारों ओर सन्नाटा है—किसी ओर

कोई शब्द नहीं सुन पड़ता। सहसा लेडी बेरेस्फोर्डकी आँख खुल गई। उन्होंने आँख खोलकर देखा—शय्याके पास लार्ड टाइरन बैठे हैं! पहले आश्चर्य हुआ!—लार्ड टाइरन, ऐसे समय यहाँ कैसे आये! फिर लज्जा-मिश्रित विरक्ति हुई!—आज ऐसा अशिष्ट व्यवहार क्यों? छिः, पतिकी शय्या पर सोती हुई युवतीके पास इस प्रकार एकाएक आ जाना! पर क्या सचमुच ही ये लार्ड टाइरन हैं? लेडी बेरेस्फोर्डका हृदय काँप उठा। उन्होंने चिल्लानेका यत्न किया, किन्तु गलेसे स्पष्ट आवाज नहीं निकली और इस अस्पष्ट आवाजसे सर मार्टिनकी निद्रा भंग नहीं हुई। इस बार लेडी बेरेस्फोर्डने कुछ साहस करके लार्ड टाइरनकी ओर देखकर कहा—"भाई टाइरन! यह क्या? यहाँ इस समय तुम ऐसी अनुचित रीतिसे, किस अभिप्रायसे, किस मार्गसे और कैसे आये?"

लार्ड टाइरनने कहा—"सब भूल गई? क्या तुम्हें उस भयंकर प्रतिज्ञाकी खबर नहीं है? गत मंगलवारको संध्या समय चार बजे मेरा शरीर छूटा है और ईश्वरानुप्राणित पुरुषने प्रतिज्ञाधर्म पालन करनेके लिए मुझे अनुमति दी है। पहले जो बातें सोची थीं, वहाँ जानेपर वे सब भ्रम प्रमाणित हुईं। परलोक सत्य है और पाप-पुण्योंका कर्म-फल अनिवार्य है। पृथ्वी पर हम जो कुछ करते हैं, जो कुछ कहते हैं और जो कुछ सोचते हैं, वह सब परलोकमें कर्मपट पर अंकित हो रहता है। यह भी समझ लेना कि ईश्वर सत्य है। वह अनन्त प्रेममय, अनन्त मंगल-स्वरूप, न्याय-विधाता, परम पुरुष इहकाल और परकालमें व्याप्त हो रहा है। अटल विश्वास, और अविचल भक्तिके साथ उसके चरणोंमें आत्मसमर्पण कर देना ही हमारे परित्राणका उपाय है।" इतना कहकर लार्ड टाइरन चुप हो रहे। थोड़ी ही देरके पश्चात् वे फिर कहने लगे—"मुझे तुम्हें यह सम्वाद सुनानेकी भी आज्ञा हुई है कि तुम शीघ्र ही पुत्र-वती होगी और वह पुत्र समय आने पर मेरी कन्याके साथ विवाह

करेगा। किन्तु डरना नहीं--अधीर मत होना--तुम्हारा वैधव्य अटल है। पुत्र उत्पन्न होनेके थोड़े ही दिनोंके पश्चात् सर मार्टिनका परलोकवास होगा और इसके कुछ समय पश्चात् तुम दूसरे पतिको ग्रहण करोगी। इस द्वितीय पतिके बुरे व्यवहारसे तुम्हारा जीवन अत्यंत दुःखमय और भारस्वरूप बन जावेगा। इस पतिसे तुम्हारे दो कन्यायें और अंतमें एक पुत्र उत्पन्न होगा। पुत्र उत्पन्न होनेके बाद एक महीनेके भीतर--तुम्हारी उम्रके ठीक ४७ वें वर्षके प्रारंभमें--तुम्हारा देहान्त होगा। इस कथनमें जरा भी अन्तर नहीं पड़ सकता।"

इस कठोर भविष्य-वाणीको सुनकर लेडी बेरेस्फोर्ड भयसे काँप उठीं। कुछ समय तक चिन्ता करनेके उपरान्त उन्होंने विनीत तथा कातर स्वरसे पूछा--" इस भवितव्यता या होनहारको टालनेका भी कोई उपाय है या नहीं? और यदि है तो क्या मैं उसे टाल सकती हूँ?"

छायामूर्त्तिने कहा--" हाँ, भवितव्यता टाली जा सकती है और तुम उसे अवश्य टाल सकती हो। क्यों न टाल सकोगी?--तुम स्वाधीना हो, अपने कर्मफलोंकी अधिकारिणी आत्मिका हो, परम पिताकी प्रिय संतान हो, उस अनन्तशक्तिकी एक अस्फुट कलिका हो, अनंतधामकी यात्रिनी हो और अनंत मंगलकी अधिकारिणी हो। अतः तुम्हारा भवितव्य कितने ही अंशोंमें तुम्हारे ही हाथमें है। यदि तुम दृढ़ संकल्प करके तन-मनसे प्रयत्न करोगी तो अपने भाग्यको अवश्य बदल सकोगी। किन्तु यह कार्य बहुत कठिन है। यदि तुम चित्त-संयमके द्वारा दूसरे पतिको ग्रहण करनेके लोभको संवरण कर सकोगी, तो तुम्हारे भाग्यकी गति बदल जायगी--तुम्हारी सारी विपदायें कट जायँगी। किन्तु, तुम नहीं जानतीं कि तुम्हारे भोगविलासकी तृष्णा--प्रीति-सुखलालसा कितनी प्रबल है--तुम्हारी प्रवृत्तियाँ कैसी सशक्त और दुर्दमनीय हैं। और फिर तुमने इस जीवनमें कभी ऐसी कठोर परीक्षाकी आँच सही नहीं है। बस, देवपुरुषने न मुझे इसके अतिरिक्त

और कुछ जानने दिया है और न और कुछ बोलनेकी अनुमति ही प्रदान की है। किन्तु एक बात मैं दृढ़ताके साथ कहे देता हूँ कि यदि तुम अब फिर भी धर्मके विषयमें अविश्वासके भावोंका पोषण करोगी तो परलोकमें तुम्हारी दुर्गतिकी सीमा न रहेगी। इसलिए तीन बार कहता हूँ– सावधान, सावधान, सावधान। जगदीश्वर पर अटल विश्वास रखकर जीवनमें अग्रसर होओ। मानवजीवन मृगजल या मनःकल्पित स्वप्न नहीं है।"

लेडी बेरेस्फोर्डने कहा–"अच्छा, एक बात और पूछना चाहती हूँ— परलोकमें जाकर तुम क्या सुखी हुए हो?"

छायामूर्तिने उत्तर दिया-"यदि मैं किसी अंशमें सुखी न होता, तो कभी तुम्हारे पास न आ सकता।"

लेडी बेरेस्फोर्डने कहा–"तो समझ लिया कि तुम वहाँ खूब सुखी हो।"

इस बार छायामूर्तिने कुछ नहीं कहा। उसके होठों पर कुछ हँसीकी रेखा दिखाई दी। अविश्वास, संशय और कूट-तर्ककी कुशिक्षाके कारण लेडी बेरेस्फोर्डका हृदय अंधकारमय था। वे इस विस्मयजनक दृश्यको प्रत्यक्ष देखकर भी इस पर पूर्ण विश्वास नहीं कर सकीं। उन्होंने कहा–"मैं सवेरा होने पर यह कैसे समझ सकूँगी कि तुम्हारा यह साक्षात्कार सत्य घटना है, मेरे मनकी झूठी स्वप्न-कल्पना नहीं है?"

छायामूर्तिने कहा—"क्यों?–कल ही तो तुम्हें मेरी मृत्युका सम्वाद मिलेगा।"

लेडी बेरेस्फोर्डने कहा–"यदि उस समय मैं यह समझूँ कि गत रातको मैंने जो कुछ देखा सुना था, वह सब स्वप्न था और वही स्वप्न दैवात् सत्य हो गया है तो? नहीं, इससे काम न चलेगा, मैं दूसरा प्रमाण चाहती हूँ।"

छायामूर्त्तिने कहा—“ अच्छी बात है, तो देखो । ” ऐसा कह कर उसने अपना एक हाथ फैला दिया और लकड़ीके चौखटे पर लटकनेवाले मशहरीके एक छोरको छतमें लगे हुए एक हुक पर टाँग दिया । यह हुक इतनी ऊँचाई पर था कि किसी अन्य वस्तुका सहारा लिये बिना उसको पा लेना मनुष्यकी शक्तिसे बाहरकी बात थी।

लेडी बेरेस्फोर्डने कहा—“ यह भी यथेष्ट नहीं है । जाग्रत् अवस्थामें हम जिस कामको नहीं कर सकते, कभी कभी उसे स्वप्नावस्थामें अनायास ही कर डालते हैं । सवेरे मशहरीकी इस दशाको देखकर मैं समझ सकती हूँ कि यह मेरी ही निद्रित अवस्थामें किया गया अज्ञात अन्ध-शक्तिका काम है । ”

छायामूर्तिने कहा—“ यह पास ही तुम्हारी पाकेटबुक और पेन्सिल रक्खी है । इस पाकेटबुक पर मैं अपना नाम लिख रखता हूँ । तुम मेरे हस्ताक्षरोंको भली भाँति पहचानती हो । प्रातःकाल मेरे इन हस्ताक्षरोंको देखते ही तुम समझ सकोगी कि मेरा यह साक्षात्कार स्वप्न नहीं, प्रकृत घटना है । ”

इतना कहकर छायामूर्तिने पाकेटबुक पर अपना नाम लिख दिया।

लेडी बेरेस्फोर्ड सदाकी अविश्वासिनी थीं । अब भी उन्हें परितृप्ति नहीं हुई । बचपनसे अविश्वास ही उनके हृदयका स्वाभाविक भाव बन रहा था । वे आखों देखी बात पर भी विश्वास नहीं करना चाहती थीं । उन्होंने कहा—“ नहीं, इससे भी मेरा संदेह दूर नहीं होगा । मैं तुम्हारे लिखे हुए इस नामको भी तुम्हारे हस्ताक्षरोंकी नकल करके लिखा हुआ, अपना ही स्वप्नावस्थाका लेख समझ लूँगी और मेरे मनका संशय ज्योंका त्यों रह जायगा । ”

इस बार छायामूर्त्तिने कुछ अप्रसन्न होकर कहा—“ हाय विश्वास-शून्य संशयिनी ! मैं देखता हूँ कि तुम्हें किसी भी बात पर विश्वास

नहीं है। मैं इसी समय तुम्हें छू सकता हूँ, किन्तु परलोकगत आत्माका स्पर्श, आध्यात्मिक-जीवनकी जिस अवस्थामें जीवित मनुष्योंके लिए सुख-शांतिदायक होता है, अभी मैं उस अवस्थाको नहीं पहुँचा हूँ। अतः मेरे इस समयके स्पर्शसे तुम्हारा जो अनिष्ट होगा वह जीवन भर बना रहेगा—इस स्पर्शका चिह्न कभी न मिटेगा।

लेडी बेरेस्फोर्डने कहा—"एक चिरस्थायी चिह्न ही न बन जायगा? भले ही बन जाय, इस छोटेसे चिह्नसे मेरा क्या बिगड़ेगा?"

छायामूर्त्तिने कहा—"ठीक है। तुम्हारे समान असम-साहसिका स्त्रीके लिए यह उक्ति संभवपर है। अच्छा तो इस ओर अपना हाथ बढ़ाओ।"

लेडी बेरेस्फोर्ड उस समय ऐसी मोहमुग्ध हो गई थीं कि, उन्होंने अबोध बालककी नाईं बड़ी उत्सुकतासे अपना हाथ चटसे आगे बढ़ा दिया। छायामूर्त्तिने अपनी अंगुलियोंसे उसके हाथकी गाँठको पकड़ लिया। स्पर्शमात्रसे ही उनका शरीर थर्रा गया। वे जैसे किसीने बर्फका चूड़ा पहना दिया हो, इस प्रकारकी दुःसह शीतलताका अनुभव करने लगीं। उसी क्षण पकड़े हुए स्थानकी पेशियाँ संकुचित हो गईं, और नसें सूख गईं! छायामूर्त्तिने कहा—"देखो, जब तक जीती रहो, तब तक तुम इस चिह्नको गुप्त रखना। इसका दिखलाना नितान्त विधिविरुद्ध और विपज्जनक होगा।" इतना कहकर छायामूर्त्ति चुप हो रही। कुछ ही क्षणके उपरान्त लेडी बेरेस्फोर्डने देखा कि लार्ड टाइरनकी वह छायामूर्त्ति अब उस स्थान पर नहीं है।

जो लोग आत्मिकतत्त्वके ज्ञाता हैं, वे कहते हैं कि परलोकगत सभी आत्माओंका स्पर्श जीवित मनुष्योंके लिए दुःखदायक नहीं होता। जो आत्मायें दया धर्मकी आनन्दमय महिमासे देवभावोंसे युक्त हैं, उनका स्पर्श सदैव सुख-शांतिदायक होता है। किन्तु जो लोग परलोकगामी

होने पर भी पार्थिव लालसाओं और पापज्वालाओंसे सर्वथा छुटकारा नहीं पासके हैं, उनका स्पर्श पृथिवीके जीवोंके लिए असह्य और बहुत कुछ अनिष्टकारक होता है।

लेडी बेरेस्फोर्ड जब तक छायामूर्तिसे बातचीत करनेमें लगीं थीं, तब तक उनके मनमें भय और अनेक प्रकारकी भावनाओंका संचार होते रहने पर भी, वे एक प्रकारकी परवश और मोहमयी जड़ीभूत अवस्थाको प्राप्त थीं। इसी कारण वे कुछ कुछ शान्त और अपने आपेमें थीं। किन्तु ज्यों ही छायामूर्ति अदृश्य हुई, त्यों ही न जाने कहाँसे एक अस्वाभाविक आतङ्क और भयने आकर उन्हें अधीर कर डाला। वे काँपने लगीं। उन्हें मालूम पड़ने लगा कि मेरे साथ-ही-साथ मेरा घर और पलंग भी काँप रहा है। उन्होंने सर मार्टिनको जगाना चाहा, किन्तु उनके मुँहसे एक शब्द भी नहीं निकला। इस प्रकार भय और विस्मयसे वे कुछ समय तक असह्य दुःख पाती रहीं, किन्तु थोड़े ही समयके उपरान्त उनके मनमें लार्ड टाइरनका शोक उमड़ पड़ा। दोनों नेत्रोंसे आँसुओंकी धारा बहने लगी और धीरे धीरे इस आँसुओंके प्रवाहमें ही उनके हृदयका शोक और अधीरता बह गई। शोकार्त्त प्राण नेत्रोंके जलसे शीतल हो गये। इसके पश्चात् न जाने कब, उनकी आँख लग गई।

सबेरा हो गया। सर मार्टिन उठ बैठे। मशहरीकी ओर उनकी दृष्टि नहीं गई। वे प्रतिदिनकी नाईं उठकर चुपचाप बाहर चले गये। लेडी बेरेस्फोर्ड उस समय भी सो रही थीं। कुछ समयके पश्चात् उनकी भी नींद खुली। आँख खुलते ही उनकी दृष्टि मशहरी पर पड़ी। मशहरीकी यह अवस्था देखकर किसीके मनमें कुछ सन्देह न हो, इस लिए उन्होंने जल्दीसे उठ कर और खिड़कियाँ साफ करनेकी लम्बी बुहारी लाकर, उससे मशहरीके उस ऊपर टँगे हुए छोरको नीचे गिरा दिया। फिर उनकी दृष्टि हाथके उस चिरस्मरणीय चिह्न पर पड़ी। उन्होंने उसी

समय उस बर्फके स्पर्शसे सूखे हुए और काले पड़े हुए स्थान पर एक काला फीता बाँध दिया। इसके बाद वे पतिके पास गईं। रात्रिके उद्वेग और चिन्ताके अनेक लक्षण उनके चेहेरे पर उस समय भी स्पष्ट रूपसे झलक रहे थे। सदैव प्रसन्न रहनेवाली प्रेमशीला पत्नीके उस विषादमय मलिन मुखको देखकर पति चौंक पड़े। उन्होंने पूछा—आज मैं तुम्हें ऐसी क्यों देखता हूँ? कोई पीड़ा तो नहीं हुई?" उत्तर मिला—"नहीं, मैं खूब स्वस्थ हूँ।" पतिने पूछा—"यह क्या? तुम्हारे हाथमें यह काला फीता क्यों बँधा है? क्या हाथमें मोच आगई है?" उत्तर मिला—"नहीं, मोच या चोट कुछ नहीं है। किन्तु आज मैं हाथ जोड़कर एक प्रार्थना करती हूँ कि तुम इस फीतेके सम्बन्धमें अब मुझसे कोई बात मत पूछना। मैं जब तक जीवित रहूँगी, तब तक यह फीता मेरे हाथमें इसी प्रकार बँधा रहेगा। तुम मेरे स्वामी हो, प्राणाधिक हो, तुमसे छिपाने योग्य मेरे पास कोई बात नहीं। मैंने आज तक कभी कोई तुम्हारी बात टाली भी नहीं। यदि तुम आग्रह करोगे, तो मैं इसका सारा वृत्तान्त खोलकर कह दूँगी। किन्तु ऐसा करनेसे तुम्हारा अनिष्ट हुए बिना न रहेगा। अतएव मेरा विनीत अनुरोध है कि इस विषयमें तुम मुझे क्षमा करो।" सर मार्टिनने हँसकर कहा—"एक साधारण बात पर जब तुम्हारा इतना अनुरोध है, तब इस विषयमें मैं तुमसे कभी कुछ न पूछूँगा।"

इसके पश्चात् फिर और कोई बातचीत नहीं हुई। सबेरेके सब काम-काज पूर्ण हुए। आज लेडी बेरेस्फोर्ड बहुत व्यग्र हो रही थीं—मानों किसीके आनेकी आशासे बारंबार दरवाजेकी ओर देखती थीं। कुछ समयके पश्चात् उन्होंने व्यग्रताके साथ पूछा—"आजकी डाँक आ गई?" डाँक उस समय भी नहीं आई थी। वे घड़ी घड़ी, पुनः पुनः डाँकके लिए पूछने लगीं, पर डाँक नहीं आई। सर मार्टिनने पूछा—"आज डाँकके लिए

इतनी व्याकुल क्यों हो रही हो, क्या कोई जरूरी चिट्ठी आनेवाली है ? ” लेडी बेरेस्फोर्डने कहा—“ जरूरी चिट्ठी और क्या होगी, मृत्यु-सम्वाद है—लार्ड टाइरनका मृत्यु-सम्वाद आना है ! गत मंगलकी संध्याको चार बजे उनका देहान्त हुआ है ! ” इतना कहकर वे मुँह ढाँककर रोने और व्याकुल होने लगीं । सर मार्टिन नाना प्रकारकी बातें कह कर उन्हें समझानेकी चेष्टा करने लगे । उन्होंने कहा—“जान पड़ता है, कल रातको तुमने कोई बुरा स्वप्न देखा है और उसी झूठे स्वप्नको सत्य समझकर तुम ऐसी अधीर हो रही हो ।” सर मार्टिन इस प्रकार बातें कर ही रहे थे कि इतनेमें एक नौकर काले चिह्नवाली एक चिट्ठी लेकर भीतर आया । चिट्ठी देखते ही लेडी बेरेस्फोर्ड कह उठीं—“ हाय जिसकी आशङ्का कर रही थी, वही हुआ ! भविष्यद्वाणी सत्य हुई ! लार्ड टाइरन अब इस संसारमें नहीं हैं ! ”

सर मार्टिनने पत्र खोलकर पढ़ा । पत्र लार्ड टाइरनके स्टुआर्डका लिखा हुआ था । उसमें सचमुच ही लार्ड टाइरनका मृत्यु-सम्वाद था । लेडी बेरेस्फोर्डने जिस तारीखको जिस समय लार्ड टाइरनकी मृत्यु बतलाई थी, ठीक उसी तारीखको उसी समय उनकी मृत्यु हुई । सर मार्टिन चकित होकर रह गये । फिर वे अपने मनके आवेगको रोककर लेडी बेरेस्फोर्डको सान्त्वना देने लगे । लेडी बेरेस्फोर्ड कुछ समय तक तो स्तंभित और हतबुद्धिकी नाईं चुपचाप बैठी रहीं, फिर कहने लगीं—“ मुझे शोक नहीं है । मैं अपने मनको कभीका धैर्य्य दे चुकी हूँ; वह स्थिर है । जो हो, मैं इस दुःखके समय भी तुम्हें एक आश्चर्य्य-जनक सम्वाद सुनाऊँगी—तुम शीघ्र ही पुत्रलाभ करोगे । इस संवाद पर आप तनिक भी सन्देह न करें । ” यह सुन सर मार्टिनने प्रसन्नताके साथ विस्मय प्रकट किया । इसी समय उनकी दृष्टि हाथके उस काले फीते पर पड़ी । उन्होंने सोचा— लार्ड टाइरन और लेडी बेरेस्फोर्डमें

बाल्यकालसे अत्यंत स्नेह और बन्धुता थी, मालूम होता है लेडी बेरेस्फोर्डको लार्ड टाइरनकी छायामूर्त्तिके दर्शन हुए हैं ।

कई महीने बीत गये । लेडी बेरेस्फोर्ड अब पुत्रवती हैं । पुत्रदर्शनसे सर मार्टिनको बहुत आनन्द हुआ, किन्तु लेडी बेरेस्फोर्ड उतनी प्रसन्न न हो सकीं; उनके मनमें वैधव्यकी आशंका लगी हुई थी । पति अब अधिक दिनोंतक जीवित न रहेंगे, इसी दुःखसे उनका हृदय फटा जाता था । वे एकान्तमें उस सद्योजात बच्चेका मुँह देखतीं और चुपचाप आँसू गिरातीं थीं । उन्होंने समझ लिया था—छायामूर्त्तिकी कही हुई एक भी बात मिथ्या नहीं होगी । पुत्रजन्मके पश्चात् सर मार्टिन चार वर्ष और कुछ महीने तक और जीते रहे ।

अब लेडी बेरेस्फोर्ड विधवा हैं । विधवा होने पर भी वे निराधार और परमुखापेक्षी—दूसरोंका मुँह ताकनेवाली नहीं । वे पतिकी प्रचुर धन-सम्पत्तिकी अधिकारिणी हैं । विपन्न होने पर भी वे नगण्य नहीं हैं ।—अब भी पतिके गौरवान्वित नामसे उनका परिचय दिया जाता है । इसके सिवाय अनाथ होने पर भी ऐसा नहीं है कि उनके लिए कोई आसरा न हो । दो कन्यायें और एक पुत्र उनके प्राणोंके अवलम्ब हैं । इतना होने पर भी वे निरन्तर दुखी रहा करती है । पति ही स्त्रियोंका सर्वश्रेष्ठ आभूषण और सब धनोंका धन है । विधवा स्त्री, युवती होने पर भी वृद्धा, स्वरूपवती होने पर भी विरूपा और अपार धन-सम्पत्तिकी स्वामिनी होने पर भी कंगालिनी है । प्राणोंके भीतर प्रेमका—स्नेहका—स्वाभाविक उच्छ्वास उठता था, परन्तु प्रेमास्पद पति परलोकके अन्धकारमें और स्नेहास्पद सहोदरतुल्य लार्ड टाइरन सूक्ष्मलोकमें छुप गये थे । शोकातुर दुःख-विह्वल लेडी बेरेस्फोर्डने चारों ओर अँधेरा ही अँधेरा देखा ।

इस देशमें भारतीय ऋषियोंने विधवाओंको सब प्रकारके सुख भोगोंका परित्याग कर ब्रह्मचर्य्यपूर्वक धर्मजीवन बितानेकी व्यवस्था की है ।

लेडी बेरेस्फोर्ड जिस देशकी विधवा थीं, उस देशमें वैधव्यव्रतकी कोई कठोर व्यवस्था नहीं है। तो भी लेडी बेरेस्फोर्ड बहुत कुछ संयमके साथ रहने लगीं। उन्होंने शोक-सूचक वस्त्रोंसे अपने शरीरको आच्छादित कर लिया, सब प्रकारके सुख-सम्भोगोंका और विलास-वासनाओंका बिलकुल त्याग कर दिया, और सब तरहसे दीन दुःखिनीके समान अपनी दो कन्याओं तथा पुत्रको हृदयसे लगाकर वे अपने घरमें ही समय बिताने लगीं। वे न तो किसी सभा सोसायटीमें जाती थीं और न किसी आमोद-प्रमोदके उत्सवों या भोजोंमें। छायामूर्त्तिकी वह भविष्यद्वाणी उनके हृदयमें सदैव गूँजा करती थी।

छायामूर्त्तिने कहा था–" यदि तुम चित्तसंयमके द्वारा द्वितीय पति ग्रहण करनेके प्रलोभनको रोक सकोगी, तो तुम्हारे भाग्यकी गति बदल जायगी—तुम्हारी सारी विपत्तियाँ कट जायँगीं।" अतएव वे इस विषयमें विशेष सतर्कता और सावधानीके साथ रहने लगीं। जहाँ तक बनता था वे न तो कभी किसीसे मिलतीं थीं, और न किसीके मुँहकी ओर आँख उठाकर देखती थीं। मनुष्यकी आँखोंका विश्वास क्या? और अपने चंचल मनका भी क्या भरोसा? वे प्रायः कहीं भी न जातीं थीं—जाती थीं केवल एक धर्मयाजक या पादरीके घर—जो उनके पड़ौसहीमें था। उसके यहाँ जानेका उद्देश्य था—धर्मशिक्षा और धर्मोपदेशके द्वारा आत्माकी पवित्रताका लाभ करना।

किन्तु भाग्यके हाथकी कठोर रेखाको साधारण मनुष्य कहाँ मिटा सकते हैं! कुछ समयके पश्चात् इसी पादरीके घरमें ही लेडी बेरेस्फोर्डके सर्वनाशकी सूचना हुई। पादरीके एक पुत्र था। वह देखनेमें सुन्दर और तरुण था। किन्तु फलके भीतर विषहरे कीड़ेके समान उसके हृदयके भीतर अत्यंत प्रबल पाशव-लालसा और गंदी भोग-पिपासा छिपी हुई थी। एक दिन बुरे मुहूर्त्तमें लेडी बेरेस्फोर्ड और पादरी-पुत्रकी चार आँखें

हो गई। युवककी आँखें फिर नहीं लौटीं—लेडी बेरेस्फोर्डके—उस सन्तानवती सुन्दरी विधवाके—विषादयुक्त उदास मुख पर न जाने क्या देखकर क्या समझकर, न जाने किस विचित्र मोहसे पादरीपुत्रके लालसाकुल नेत्र स्थिर हो रहे। लेडी बेरेस्फोर्डने सिर झुकाकर दृष्टि फेर ली । बहुत दिनोंके बाद, उन सफेद पड़े हुए गालों पर क्षण भरके लिए ललाई दौड़ आई । उन्होंने उसे अपने रूमालसे छुपा लिया और अपनी दुर्बलता पर बहुत ही लज्जित होती हुई वे घर लौट आईं । इस संसारमें बहुतसे मनुष्य अकेले नहीं रह सकते । लेडी बेरेस्फोर्ड इसी श्रेणीके मनुष्योंमेंसे थीं । उनका हृदय बचपनहीसे अकेले रहनेके अयोग्य और स्नेह-लालसासे दुर्बल था । उनका हृदय उदारता और महत्तासे परिपूर्ण होने पर भी इस ढँगका बना था कि वह एक घड़ीभर भी अपने आपमें सन्तुष्ट नहीं रह सकता था । फिर भी उन्हें भविष्यवाणीका स्मरण हो आया, और तब संकल्प किया कि आजसे कभी पादरीके घर न जाऊँगी ।

संकल्प करना जितना सहज है, संकल्प-रक्षा करना उतना ही कठिन है । उस दिनसे वह सुन्दरी विधवा दिनमें दस बार संकल्प करती और दस ही बार भूल जाती थी । याजकके घरका आना जाना बंद नहीं हुआ । उसका चंचल चित्त उसे कुछ भी न समझने देकर, उसके विना जाने धीरे धीरे पादरी-पुत्रका पक्षपाती होने लगा । उन्होंने एक बार अपने पति-ध्यान-निरत पवित्र हृदयकी ओर दृष्टि डाली; वहाँ उन्हें यौवनश्रीसम्पन्न कालसर्पस्वरूप पादरी-पुत्रका प्रतिबिम्ब भी चोरकी नाईं चारों ओर घूमता-फिरता—विचरण करता हुआ दिखाई दिया । फिर भी वे अपने मनको यथाशक्ति संयत करनेकी प्राणपनसे चेष्टा करने लगीं ।

पादरी-पुत्रने सेना-विभागमें भरती होनेकी ठानी । उसके माता-पिता पहले उसके इस विचारसे सहमत नहीं थे; किंतु पुत्रका अधिक आग्रह

देखकर अंतमें उन्होंने अनुमति दे दी। युवक, लेडी बेरेस्फोर्डके पास अन्तिम विदा माँगनेके लिए उपस्थित हुआ। वह लेडी बेरेस्फोर्डके एकान्त कमरेमें जाकर, उनके पैरोंके पास, घुटने टेककर बैठ गया और बोला—"मैं चला—सदैवके लिए चला। सेनामें भरती होनेके लिए जा रहा हूँ। रणक्षेत्रमें प्राण विसर्जन करना ही मेरा उद्देश्य है। मेरा हृदय अंधकार-पूर्ण है। मेरे जीवनके सारे सुख और भावी सुखकी आशायें सदाके लिए लुप्त हो गई हैं और मेरी इस विपत्तिकी तुम्ही एक मात्र कारण हो।" लेडी बेरेस्फोर्ड विधवा युवती थीं। वे प्रेमके इस प्रबल प्रवाहको हृदयमें दबाकर आत्मसंवरण करनेमें समर्थ नहीं हुईं। उनके हृदयका संकल्प, वेगवती नदीके तीर पर स्थित तरङ्गाहत बालूके स्तूपकी नाईं फिसल पड़ा। उनके संकल्पकी दृढ़ता वसन्त-वायुसे छुये हुए कपूरकी नाईं उड़ गई। अबलाके चिरपरिचित परप्रीति-कोमल प्राणोंने अपने स्वभावका परिचय दिया। उन्होंने यह जानते हुए भी—कि द्वितीय विवाहका परिणाम घोर विपत्ति और निश्चित मृत्यु है—दूसरे प्रणय-मोहसे मुग्ध होकर, बड़ी ही बुरी घड़ीमें, उस बहुत ही बुरे विवाहके प्रस्तावको स्वीकार कर लिया। वे रूपज मोह और करुण-स्नेहको ही प्रणय समझ कर ठगी गईं। अदूरदर्शी अबलाने कुसुमवृक्षके भ्रमसे विष-वृक्ष हृदयसे लगा लिया।

लेडी बेरेस्फोर्ड अब पादरी-पुत्रकी पत्नी हैं। वह अभागा शराबी, अपव्ययी, निष्ठुर और महान् स्वार्थपर निकला। मनुष्यत्वका प्रायः कोई भी उपकरण उसमें नहीं था। लेडी बेरेस्फोर्डने थोड़े ही दिनोंमें अपने इस नूतन पतिके क्रूर स्वभावका परिचय पा लिया। वे पतिके दौरात्म्य और अत्याचारसे तंग आ गईं। जहाँ वे उस पर अपने परस्नेह-लालायित हृदयके अनुरोधसे प्रेम किया करती थीं, वहाँ वह उनको अपनी भोग्यवस्तु और पैसेका साधन समझकर चाहता था। उसके

सरल हृदय पर पतिके स्वार्थपूर्ण निर्दय व्यवहारके कारण दारुण आघात पहुँचा। उनके स्वभावमें अब वह प्रसन्नता नहीं रही। वे निरंतर अनुतापकी अग्निमें जलकर आँसू बहाने लगीं। अंतमें उन्हें पतिसे पृथक् रहनेके लिए लाचार होना पड़ा। उन्होंने मनमें दृढ़ संकल्प कर लिया कि ऐसे निर्दय पतिसे अब कभी बात भी नहीं करूँगी। किन्तु उनका स्नेहशील चंचल-चित्त दो ही दिनोंमें फिर मोह-मुग्ध और विवश हो गया। पादरी-पुत्रकी नम्रतापूर्ण बातों और प्रार्थनाओंको सुनकर वे फिर पत्नीरूपसे उसके पास रहने लगीं।

अनेक लोगोंका विश्वास है कि यूरोपकी स्वाधीन नारियाँ प्रायः सभी अवस्थाओंमें अत्यंत भाग्यवती और सुखी हैं। लेडी बेरेस्फोर्ड भी स्वाधीन देशकी स्वाधीन नारी थीं। उन्होंने अपना आधा जीवन पूर्ण सम्मान और सुखशांतिके साथ व्यतीत करके, प्रौढ़ उमरमें, प्रणयके मोहमें पड़कर अपने धन, मान और प्राणोंको एक दुर्दान्त युवकके हाथमें समर्पित कर दिया। यह प्रेमविह्वला युवती, प्रेमकी पिपासासे आत्मविस्मृत होकर अथाह सागरमें कूदी थी, किन्तु इसे प्रेमके बदले पदाघात, और उदारताके बदले अकथनीय अपमान और असह्य लांछना सहन करनी पड़ी। आखिर अपात्रको दिये हुए प्रणय तथा जीवनको फिर वापिस पाकर भी वह स्वाधीना अभागिनी उसे नहीं रख सकी। क्या यही स्वाधीनता है? अपने ऊपर जिसका बिन्दुमात्र भी आधिपत्य नहीं, हाय क्या वह भी स्वाधीन है? यह स्वाधीनता बहुधा इसी प्रकार अपमानित और लांछित होती है। तब क्या इस स्वाधीनताकी अपेक्षा हिन्दू विधवाओंका कठोर संयम और अंतःपुरमें निरुद्ध रहनेकी पराधीनता 'बहुतसे स्थानोंमें' हजारगुनी अच्छी नहीं है? पतिव्रता और पुत्रवत्सला भारतीय स्त्रियाँ लेडी बेरेस्फोर्डको बिलकुल पथभ्रष्ट और पतित स्त्री समझ सकती हैं। किन्तु यूरोप और अमेरिकामें विधवा-विवाहके ऐसे सैकड़ों हजारों विकृत चित्र

समाजके सामने प्रायः नित्य ही उपस्थित हुआ करते हैं; और इन सब विडम्बनाओंको देख-सुनकर विज्ञ विचक्षण समाजसुधारकोंका मन जरा भी विचलित नहीं होता है।

दूसरे पतिसे लेडी बेरेस्फोर्डके क्रमसे दो कन्यायें और एक पुत्र उत्पन्न हुआ। किन्तु उनके नेत्रोंकी अविरल अश्रुधारा कभी बंद नहीं हुई। पुत्र उत्पन्न होनेके पश्चात् एक दिन उन्होंने हिसाब लगाकर देखा कि मेरी आयुका वह घातक सैंतालीसवाँ वर्ष व्यतीत हो चुका है। इससे उस अनुतापदग्ध दुःखिनीके दुःखी प्राणोंमें कुछ आशाका संचार हो आया। वह समझी कि अब मैं बच गई!

नवजात पुत्रकी उमर एक महीनेकी हो गई। आज लेडी बेरेस्फोर्डका जन्म दिवस है। लेडी 'बेट्टी कब' उनकी प्रिय सखी थीं। अन्य आत्मीय, परिचित व्यक्तियोंके साथ आज वे भी जन्मदिनके उपलक्षमें निमंत्रित होकर आई हैं। प्रायः सात बजे उनके दीक्षागुरु पादरी भी अचानक आ पहुँचे। पुरोहितने पूछा—"अच्छी तरह तो हो?" लेडी बेरेस्फोर्डने उत्तर दिया—"हाँ एक तरहसे अच्छी ही हूँ। आज मेरी वर्षगाँठका दिन है। आजसे मेरा ४८ वाँ वर्ष प्रारंभ होता है। क्या आप आज मेरे घर आतिथ्य-ग्रहण करनेकी कृपा करेंगे?" पुरोहितने कहा—"क्या कहा? अड़तालीसवाँ वर्ष? नहीं, नहीं, तुम भूलती हो। इस विषयमें एक बार तुम्हारी माँसे भी मेरा विवाद हो गया था। किन्तु इस समय मैं अच्छी तरह जान चुका हूँ कि मेरा ही कहना ठीक है। जिस गाँवमें तुम्हारा जन्म हुआ था, मैं कोई एक सप्ताह पहले उस ग्राममें घूमते-घामते पहुँच गया था। वहाँ मैं जन्म-राजिस्टरकी खोज करके तुम्हारी जन्मतिथि देख आया हूँ। उसके अनुसार आज तुम्हारा सैंतालीसवाँ वर्ष प्रारंभ होता है।" यह सुनकर लेडी बेरेस्फोर्ड काँप उठीं और बोलीं—"हाय! सचमुच ही क्या आज मेरे सैंतालीसवें वर्षका

प्रथम दिन है ? तो अब विलम्ब नहीं है । मेरी मृत्युका वारंट जारी हो गया । अब मैं कुछ ही घंटोंकी मेहमान हूँ । ” इतना कहकर उन्होंने पुरोहितसे बाहर जानेका अनुरोध करते हुए कहा—“ मुझे मरनेके पहले एक बड़े भारी कामका प्रबंध कर जाना है । ” पुरोहितजी शिष्याके मुँहसे ऐसी बातें सुनकर और उस समयका उसका भाव तथा अधीर चेहरा देखकर विस्मित होते हुए धीरे धीरे बाहर होगये ।

पुरोहितके चले जाने पर लेडी बेरेस्फोर्डने अपने प्रथम पुत्र—जिसकी उमर इस समय २२ वर्षकी थी—और अपनी प्रिय सखी लेडी कबँको अपने पास बुलाकर अपने जीवनकी वह भयंकर गुप्त कहानी आदिसे अंत तक कह सुनाई । सुनकर दोनों विस्मित, भीत और दुखी हुए । लेडी बेरेस्फोर्डने कहा—“ देखो, डरनेकी और दुःख माननेकी कोई बात नहीं है । आज मुझे निश्चय हो गया है कि मेरी उमर ४८ वर्षकी नहीं, किन्तु ४७ वर्षकी है । परलोकवासी छाया-मूर्तिकी भविष्यवाणी अक्षरशः सत्य होगी । अब मैं कुछ ही समय और जीवित रह सकूँगी । जो हो, इस समय मुझे मृत्युका जरा भी भय नहीं है । मैं अपने जिस अमूल्य धनको—विश्वासको खो बैठी थी, और जिसके बिना मैं बहुत ही विडम्बित तथा लाञ्छित हुई थी वही धन मुझे जीवनके अंतिम मुहूर्त्तमें पुनः प्राप्त हो गया है । इस समय मैं प्रकृत विश्वास-भक्तिके अमृत मंत्रद्वारा सुरक्षित हूँ । मनुष्योंका परम शत्रु मृत्यु है, किन्तु इस समय मृत्युसे मुझे जरा भी डर नहीं है—वह मेरा कुछ भी अनिष्ट नहीं कर सकती । मैं अब निर्भय चित्तसे इस नश्वर देहसे सदैवके लिए विदा होनेके लिए प्रस्तुत हूँ । मेरी देह पर एक विशेष चिह्न है । मृत्युके समय अब उसे छिपा रखना उचित नहीं है । प्रिय सखी कब, तुम मेरी मृत्युके पश्चात् मेरे हाथके इस काले फीतेको खोलकर देखना । ” कुछ समय चुप रहनेके पश्चात् उन्होंने अपने पुत्रको सम्बोधन करके कहा—

"वत्स ! तुम्हारी जन्मदुःखिनी, कुमार्गगामिनी, पतिता जननी तुमसे सदैवके लिए पृथक् होती है । बेटा, तुम आशीर्वाद दो कि मैं सद्गतिको प्राप्त होऊँ । मेरा एक अनुरोध और है । यदि तुम जीवनभर सुखी रहना चाहते हो, तो तुम जैसे बने वैसे लार्ड टाइरनकी कन्याके साथ विवाह करना । अच्छा, अब इस समय मैं थोड़ीसी नींद लूँगी, तुम कुछ समयके लिए बाहर बैठो और मेरी मृत्युकी प्रतीक्षा करो ।"

पुत्र और लेडी कब दोनों आँखोंसे आँसू बहाते हुए बाहर चले गये । केवल एक दासी उनके पास बैठी रही । डेढ़ घंटे तक बिलकुल सन्नाटा रहा । अनन्तर एकाएक एक करुणाजनक शब्द सुनाई दिया । सब लोग दौड़कर शय्याके पास पहुँचे । देखा कि लेडी बेरेस्फोर्डकी मृत देह शय्या पर पड़ी हुई है । लेडी कबने उनके हाथका फीता खोलकर देखा । लेडी बेरेस्फोर्डने जो कुछ कहा था वह अशरशः सत्य निकला । उस जगहकी समस्त पेशियाँ संकुचित और नसें शुष्क थीं ।

कुछ समय बीतने पर लेडी बेरेस्फोर्डके पुत्रने लार्ड टाइरनकी कन्याके साथ विवाह कर लिया और दोनों सुखसे रहने लगे । पाकेट बुक और फीता लेडी कबके पास रहा । वे अपने दीर्घ जीवनमें अनेक बार अनेक लोगोंके समक्ष शपथपूर्वक इस कहानीकी सत्यताको प्रकट कर गई हैं । इंग्लैंडके जिन प्रख्यात पुरुषोंने इस कहानीको लेकर आन्दोलन किया था, उनमेंसे अनेकोंने आधुनिक अध्यात्मविज्ञानका नाम भी नहीं सुना था । फिर भी वे इस प्रकृत वृत्तान्त पर अविश्वास नहीं कर सके थे । जो लोग विश्वासी थे, उन्होंने इसकी समस्त घटनाओंको विधाताके हाथका लेख समझ कर भय और भक्तिसे माथा झुकाया था । उनके मतसे लेडी बेरेस्फोर्डके लिए भी अन्तिम मुक्ति और चिरन्तनी सुखशान्ति मिली होगी । किन्तु, वह परत्र और उच्चतर धाममें—एवं और भी अनेक शिक्षाजनक परीक्षाओंके बाद ।

सप्तम अध्याय।



प्रस्तावना।

जो असम्भव है, उस पर विश्वास करना सचमुच ही बहुत दुष्कर है। इसी लिए विश्वास और अविश्वासकी बात उठते ही सबसे पहले संभव और असंभव पर तर्क वितर्क हुआ करता है।

नर्मदा नदीके किनारे अब भी एक विशाल वटवृक्ष है। इतिहास-लेखकोंने लिखा है कि इस विशाल वटवृक्षकी छायाके नीचे एकबार दसहजार आदमी खूब आरामके साथ ठहरे थे। यह बात असंभव नहीं मालूम होती। कारण कि इस बड़की छायाकी लम्बाई चौड़ाईको मनुष्योंने माप कर देखा है और इस मापके प्रत्यक्ष प्रमाणद्वारा जाना गया है कि इस समय भी उसके नीचे दस हजार मनुष्य ठहर सकते हैं।

दूसरी जगह इतिहासलेखकोंने यह भी लिखा है कि एकबार इंग्लैंडके राजा प्रथम चार्ल्स राज-विप्लवसे विपन्न होकर नर्डामटन शायर नामक प्रदेशके अंतर्गत डेण्ट्री नामक स्थानमें सेनासहित ठहरे थे। उस समय नेसबीर युद्धके एक दिन पहले, अर्थात् १३ जून सन् १६४५ के संध्यासमय उनको अपने भूतपूर्व मंत्री स्ट्राफोर्डकी छायामूर्तिके दो बार दर्शन हुए थे। उस दिन छायामूर्तिने कमसे दो बार दर्शन देकर उनको युद्ध करनेसे रोका था। छायामूर्तिके निषेधको न माननेके कारण उनको उस युद्धमें कैसी घोरतर विपत्तिमें पड़ना पड़ा था, सो इतिहासप्रेमी पाठकोंसे छिपा नहीं है। अनेक इतिहास-लेखक छायादर्शनकी उक्त प्रामाणिक कहानीको लिख गये हैं, किन्तु अधिकांश मनुष्य उस कहानी पर विश्वास नहीं करते। कारण, कहानियाँ असंभव होती हैं।

किन्तु विधाताके इस अनन्त-सूत्र-जड़ित विचित्र जगतमें क्या संभव है और क्या असंभव है, यह हम लोग, अपनी सामान्य बुद्धिसे, हर समय, सहजमें नहीं समझ सकते। नर्मदा-किनारेका वह विशाल वटवृक्ष, एक दिन नेत्रोंसे कठिनाईसे दिखाई देनेवाले अति क्षुद्र बीजमें कैसे छुपा था और किस प्रकार वह बीजसे बाहर निकलकर धीरे धीरे बढ़कर एक विशाल वृक्षके रूपमें परिणत हो गया; हम इसके संभव अथवा असंभव तत्त्वको समझनेमें समर्थ नहीं हैं।

छायामूर्तिके सम्बन्धमें विशेषकर दो बातें साधारण लोगोंकी समझमें असंभव समझी जाती हैं—एक तो जीवात्माका सूक्ष्म देह धारण करना, और दूसरे उस सूक्ष्म देहके द्वारा समय समय पर लोगोंको दर्शन देना या उनसे बातचीत करना।

जिन लोगोंकी बुद्धि विज्ञानशिक्षाकी सहायतासे विचारशील बन गई है, उनको उक्त दोनों बातोंमेंसे एक भी बात असंभव प्रतीत नहीं होती। क्योंकि वे प्रत्यक्ष परीक्षाके द्वारा जानते हैं कि जैसे वायु और बिजली लोगोंकी आँखोंसे अदृश्य होने पर भी सूक्ष्मरूपसे अवस्थित रहती और निरंतर संसारका कार्य किया करती है, उसी प्रकार मनुष्योंकी आत्मा भी मृण्मय स्थूल देहको छोड़नेके पश्चात्, सूक्ष्मतर आकाशिक देहमें, परिचय देने योग्य आकृति धारण करके जीवित और अवस्थित रह सकती है और उसी सूक्ष्मतर देहके द्वारा, किन्हीं विशेष नियमोंकी सहायतासे, मनुष्योंको दर्शन देने और उनसे बातचीत करनेमें समर्थ होती है।

इस विषयमें अध्यात्मवादियोंके उपदेशकी अपेक्षा जड़वादियोंके सुप्रसिद्ध गुरु जान स्टुअर्ट मिलकी बातें अनेक पाठकोंको अधिक प्रामाणिक समझ पड़ेंगी। मिलका नाम पचास वर्षसे सुधी-समाजमें बहुत आदरके साथ लिया जाता है। अब तक भी अनेक लोगोंके मनोराज्यमें

वे सम्राट्के आसन पर विराजमान हैं। मिल कहते हैं—"हृदयका भाव और मनकी चिन्ता जैसी प्रकृत वस्तु है, संसारका और कुछ भी वैसा नहीं है। हम अपने प्रत्यक्ष ज्ञानसे केवल इन दो वस्तुओंको ही प्रकृत वस्तु कह सकते हैं। * "

मिलके उक्त कथनसे साफ समझमें आता है कि हृदयका भाव और मनकी चिन्ता, जिसका आश्रय लेकर संसारमें प्रकट होती है, वह जीवात्मा भी जडवस्तुसे अधिक सारवान् प्रकृत वस्तु और अविनाशी है। जब असार जड़वस्तुका ही किसी प्रकार विनाश (annihilation) नहीं हो सकता, तब श्रेष्ठसारवान् जीवात्माके विनाशकी संभावना कहाँ रही ?

यहाँ एक बड़ी भारी शंका यह रह जाती है कि क्या जीव जड़ देहसे पृथक् होने पर भी मनमें किसी प्रकारकी चिन्ता, हृदयमें किसी प्रकारका भाव, या चित्तमें किसी प्रकारकी इच्छाको पोषण कर सकता है ? इस विषयमें मिलने और भी अधिक स्पष्टाक्षरोंमें लिखा है—"ऐसा अनुमान किया जा सकता है कि हम यहाँ जिन सब चिन्ताओं, भावों, इच्छाओं ओर अनुभूतियोंको लेकर जीवित हैं, ठीक वे ही सब, देहत्याग करनेके उपरान्त भी ज्योंकी त्यों रह जाती हैं, अथवा और किसी स्थानमें ओर किसी अवस्थामें, फिरसे आबद्ध हो सकती हैं ?" +

---

* अनुवाद आशानुरूप सरल और शुद्ध न होनेके कारण मूल लेख नीचे उद्धृत किया जाता है । 'Fealing and thought are much more real than any thing else; they are the only things which we directly know to be real.'

+ We may suppose that the same thoughts, emotions, Volitions, and even sensations which we have here, may persist or recommence somewhere else under other conditions."

मिलकी इस गवाहीके पश्चात् और किसी वैज्ञानिक साक्षीकी आवश्यकता नहीं रह जाती। केवल प्रत्यक्ष साक्षी शेष रह जाती है। जो हो सकता है–जो संभव है, वह अवश्य ही हुआ है, यह कोई आँखोंसे देखे बिना कैसे मान सकता है? यह बात ठीक है; किन्तु आत्माकी अविनश्वरता और परलोकगत आत्माके दर्शनादिके विषयमें प्रत्यक्ष साक्षियोंकी भी कमी नहीं है '

मूल ग्रन्थकारका कथन है कि जिस समय मैं इस प्रबंधको लिख रहा हूँ उस समय मेरे सामने एक सत्तर वर्षका प्रतिष्ठित अँगरेज बैठा है। वह शपथ करके बारंबार कहता है–" आप लिखिए, मैं अपनी आँखों देखी बात कहता हूँ। मैंने तथा मेरे एक विश्वस्त मित्रने एक ही समय, एक ही स्थान पर, दो तीन जगमगाते हुए दीपकोंके प्रखर उजेलेमें जो कुछ देखा है, उसे हम अपनी आखोंका भ्रम या मनकी कल्पना कैसे मान लें? हम दोनों व्यक्तियोंने इसी नगरके एक प्राचीन घरमें रात्रिको लगभग साढ़े ग्यारह बजनेके समय अपने एक स्वर्गीय मित्रकी छायामूर्ति देखी है। वह छायामूर्ति कोठरीके एक छोरसे दूसरे छोरतक उदास भावसे टहल रही थी। जिसे आँखोंसे देखा उस पर अविश्वास कैसे करें?"

मैंने ऊपर जिन महाशयकी साक्षी लिखी है वे अपना परिचय देनेके लिए तैयार हैं। उनके समान और भी अनेक प्रतिष्ठित व्यक्ति—हिन्दू, मुसलमान और ब्राह्म, प्रत्यक्ष दर्शनकी साक्षी देनेके लिए अपना अपना परिचय देनेको तैयार हैं। किन्तु हम पूछते हैं कि उनके परिचय देनेसे क्या लाभ होगा? उन्हें कौन पहिचानता है? और उनकी साक्षी पर निर्भर होकर कितने मनुष्य अपने स्वर्गीय माता-पिताकी मंगलकामनाके हेतु श्राद्ध-तर्पण करनेको प्रस्तुत होंगे?

अतएव मैं ऐसे दो प्रसिद्ध पंडितों और परीक्षापटु वैज्ञानिकोंकी प्रत्यक्षदर्शनविषयक साक्षी देता हूँ कि जिन्हें सब जानते हैं–सब पह–

जानते हैं, और जो उन्हें नहीं जानते हैं, वे मानों अपनी मूर्खता और अल्पज्ञता ही प्रकट करते हैं । यदि ऐसे जगद्विख्यात लोगोंकी साक्षी पर भी किसीको सन्देह रहे तो समझना चाहिए कि वह कुछ समय तक और भी घोर अंधकारमें रहेगा ।

बंगाल प्रान्तके बालक भी विश्वविद्यालयकी कृपासे प्रोफेसर डी. मारगेनका नाम प्रीतिपूर्वक लिया करते हैं । डी. मारगेनका काव्य और उपन्यासोंसे कभी कोई सम्बन्ध नहीं रहा है । उनका सारा जीवन गणितविज्ञानके कठोर तत्त्वों और कष्टसाध्य गणनाओंहीमें व्यतीत हुआ है । जो बातें गणितके सिद्धान्तोंके समान सार और सत्य नहीं, उन बातोंको वे घृणाके साथ उड़ा दिया करते थे । यही डी. मारगेन अपने 'जड़ वस्तुसे जीवात्मा' * नामक-प्रसिद्ध ग्रन्थकी भूमिकामें लिखते हैं,—"मैंने आँखोंसे देखा और कानोंसे सुना है । जो आँखोंसे देखा और कानोंसे सुना है, उससे अध्यात्म तत्त्व पर अविश्वास करना नितान्त असम्भव है ।"

यूरोपके विद्युद्विज्ञानी पंडितगण जिसे अपना गुरु कहकर सन्मान देते हैं,—जो बहुत समयसे इंग्लैंड और अमेरिकाकी अन्तर्जातीय टेलीग्राफ कम्पनीके प्रधान वैद्युतिक और इंजीनियर थे और जिन्होंने सागरके गर्भमें भीतर-ही-भीतर तार डालकर समाचार भेजनेके कार्य्यमें सर माइकेल फ्यारडे और सर विलियम टामसनको सहायता दी थी, वही जगत्प्रख्यात सी. एफ. वारली साहब सन् १८८० ईस्वीमें अपने

---

*"Matter to spirit" इस ग्रंथको पढ़कर भी पाठक लाभ उठा सकते हैं । इस ग्रंथकी दो पंक्तियाँ नीचे उद्धृत की जाती हैं—

"I have both seen and heard, in a manner which would make unbelief impossible regarding things called spiritual."

हाथसे लिख गये हैं—"पच्चीस वर्ष पहले मैं घोर अविश्वासी था । इसके पश्चात् मेरे परिवारमें अकस्मात् और अचिन्तित रूपसे छायादर्शन-सम्बन्धी अनेक आश्चर्य्यजनक घटनायें होने लगीं । + + + मैं उनका अनुसंधान करनेके लिए बाध्य हुआ । अनुसंधानके लिए अनेक कला और कौशलोंसे काम लिया । ये कला-कौशल ऐसे थे कि यदि उक्त घटनाओंमें किसीकी चतुराई, प्रवंचना अथवा स्वार्थ-शठताका तनिक भी सम्पर्क होता, तो वह पकड़में आये विना न रहता । इस प्रकार बहुत अनुसंधानके पश्चात् मुझे दृढ़ विश्वास हो गया कि ये सब अध्यात्म-घटनायें प्रकृत सत्य हैं । इस विषयमें प्रमाणोंकी कमी नहीं है । प्रमाण ढेरों हैं और इन प्रमाणोंकी उपेक्षा करनेके दिन अब नहीं रहे हैं ।*

इन विपुल प्रमाणोंकी बातें स्मरण रखनेसे पाठकोंको ये आत्मिक कहानियाँ उपन्यासोंकी अपेक्षा अधिक कीमती प्रतीत होंगी, और इनकी प्रत्येक घटना कमसे कम कुछ क्षणोंके लिए मनुष्योंकी आत्माको परलोकतत्त्वका चिन्तवन करनेके लिए अवश्य बाध्य करेगी । अब पाठकगण डी मारगेन और सी. एफ वारलीके महावाक्यों—अथवा मनोग्राहि महासाक्ष्यका स्मरण रखकर निम्नलिखित अपूर्व और आश्चर्य्यमयी कहानीको पढ़नेका कष्ट उठावें ।

---

* "Twenty-five years ago, I was a hard-headed unbeliever......Spirit phenomena, however, Suddenly and quite unexpectedly, were soon after developed in my own family......That the phenomena occur there is over whelmings evidence, and it is too late now to deny their existence," C. F. Varley, the distinguished English Electrician &c. &c.

आत्मिक-कहानी ।

प्रेम-समुद्रमें प्राणनाशक विष ।

जर्मनीके अंतर्गत किसी नगरके एक छोटेसे घरमें पति-मनो-मोहिनी मिन्ना अकेली बैठी है । दोपहरका समय बीत चुका है । किन्तु अब भी मिन्ना किसी गहरी चिन्तामें डूबी है । मिन्ना सुन्दरी युवती है, किन्तु आज उसका मुँह ग्रीष्मकालके मुरझाये हुए गुलाब-फूलकी नाईं शुष्क और निष्प्रभ हो रहा है । उसके चिन्ताग्रस्त ललाट पर छोटे छोटे स्वेद-बिन्दु झलक रहे हैं । दृष्टि शून्य है । होठों पर सदैवकी नाईं वह यौवनसुलभ सरस हँसीकी रेखा नहीं है । रमणी एक लम्बी तथा दुःखभरी श्वास लेकर अपने आप ही बोल उठी–"हाय ! इस भयंकर युद्धका क्या कभी अंत न होगा !–आज मेरे प्राण सहसा ऐसे विकल क्यों हो रहे हैं ?–वे कुशलसे तो हैं ?"

कुछ ही दिन पहले मिन्नाका विवाह हुआ है । मिन्नाका पति एक धनवान् और बलिष्ठ युवक है । मिन्ना जिस तरह पतिप्रेममुग्धा और पतिगतप्राणा है, उसी प्रकार उसका पति भी प्रेमी और पत्नीगतप्राण है । वह सैनिक पुरुष है । इस समय वह अपनी प्रियतमासे जुदा होकर समरक्षेत्रमें लड़ रहा है । मिन्ना इसी कारण दुःखी और चिन्तित है । मिन्ना जिसे घड़ी भर भी नहीं देख पाती थी तो व्याकुल होकर चारों ओर अँधेरा देखती थी, उसे ही अब दिनोंके बाद दिन और महीनोंके बाद महीने बीतते जाते हैं, पर नहीं देख पाती है । अतः उसके दुःखका पारावार नहीं है । वह जीवन्मृतके समान हो रही है ।

मिन्ना, युद्ध-यात्राके समय खिड़कीके पास खड़े होकर रणसज्जासे सजे हुए पतिकी वीर-छविको एकटक दृष्टिसे देख रही थी । पति भी, जब तक उसे दिखाई दिया बारबार खिड़कीकी ओर अपने हाथका

रूमाल उड़ा-उड़ाकर पत्नीकी ओर देखता रहा था । मिन्नाके मानस-नेत्रोंमें वही दृश्य भरा है–वह बारबार उसी दृश्यको देखती है। इस समय भी मानों उसके कान, क्षण क्षणमें, उन कतार बाँधकर एक साथ चलते हुए घोड़ोंकी टापोंकी आवाज सुनकर चौंक उठते हैं । वह बार-बार उस खिड़कीके पास जाती और शून्य हृदयको लेकर फिर लौट आती है। आज किसी भी तरह उसके मनको शान्ति नहीं मिलती।

सहसा सीढ़ियों पर कुछ शब्द हुआ। मिन्नाने कान लगाकर सुना कि किसीके पैरोंका शब्द है। किन्तु वह किसी अपरिचित आगन्तुकका नहीं–सहस्रों बार सुना हुआ चिरपरिचित शब्द है। युवती घबड़ाकर झट उठ खड़ी हुई। पैर आगेकी ओर बढ़ाया ही था कि इतनेमें दरवाजा खुल पड़ा; देखा–सामने प्रियतम खड़े हैं ! उसी रणसज्जासे सज्जित हैं। किन्तु उनके वस्त्र छिन्न भिन्न और रक्तसे रँगे हुए हैं। ललाट पर गहरा घाव है। घावसे बड़ी तेजीसे रक्तकी धारा बह रही है। प्राणाधिक प्रियतमकी एकाएक ऐसी भयंकर और शोचनीय मूर्ति देख कर पतिप्राणा मिन्नाका हृदय काँप उठा । इच्छा हुई कि दौड़कर आहत पतिको छातीसे लगा लूँ, किन्तु वह ऐसा कर न सकी। भय और विस्मयसे उसके पैर अचल और शिथिल हो गये । वह वज्राहतकी नाई अर्धमूर्च्छित सी होकर खड़ी रही। मुँहसे एक शब्द भी न निकला।

मूर्त्तिने मिन्नाकी ओर कातर दृष्टिसे देखकर कहा—“ मिन्ना, तुम विस्मित और भयभीत हो गई हो। भय त्याग करो और मेरी बातें स्थिरचित्त होकर सुनो। यह जो तुम मेरे ललाटमें एक गहरा घाव देख रहीं हो, इसी सांघातिक आघातसे आज रणक्षेत्रमें मेरी इस शरीर-सम्बन्धी मृत्यु हो गई है। तुमको स्मरण होगा कि एक दिन हम दोनोंने प्रतिज्ञा की थी कि हममेंसे जिसकी पहले मृत्यु हो, वह दूसरेके निकट आत्मिक-देहसे उपस्थित होगा। उसी प्रतिज्ञाको पूर्ण करनेके लिए मैं

इस वेषमें तुम्हारे पास आया हूँ। तुम मेरे वियोगसे दुखी तथा अधीर मत होना। मैं परलोकमें जाकर भी तुमको भूल नहीं सका हूँ। अब मैं पहलेकी अपेक्षा भी तुम्हारे अधिक निकट हूँ। जब प्रवृत्ति और शक्ति होगी, तभी तुमको दिखाई दूँगा। तुम मुझे देखकर शायद डरोगी, इस लिए जब मैं आया करूँगा तब घंटेके समान एक शब्द किया करूँगा। जिस समय तुमको उक्त शब्द सुनाई देगा, उसी समय तुम्हारे कानोंके पास आकर कहूँगा—'मिन्ना, मैं आगया'।" यह कहते कहते ही छायामूर्त्ति अदृश्य हो गई।

मिन्ना कुछ समय तक आत्मविस्मृत और चकित होकर रह गई। इसके पश्चात् जब वह कुछ ठिकाने आई तब सोचने लगी—"स्वामी ऐसे भयावह वेषको दिखाकर कहाँ चले गये! मैंने यह क्या देखा! प्रियतम क्या अब इस संसारमें नहीं हैं! क्या सचमुच ही समरक्षेत्रमें आज इस अभागिनीका सर्वनाश हो गया!"—ऐसी अनेक बातें सोचते सोचते वह बहुत ही व्याकुल हो उठी और आँखोंसे आँसुओंकी धारा बहाने लगी। रणक्षेत्रसे समाचार पानेके लिए वह पागलिनीके समान अधीर हो उठी।

तीन चार दिनके भीतर ही संवाद आया। सचमुच ही उसके पतिने उस दिन रणक्षेत्रमें शरीर त्याग किया था। इस भीषण शोकसंवाद-को सुनकर पतिप्राणा मिन्नाका हृदय विदीर्ण होगया। वह कभी मूर्च्छित हो जाने लगी और कभी रो-रोकर आँसुओंकी नदी बहाने लगी।

मिन्नाके अपना कहने योग्य कोई निजी सम्बन्धी नहीं था। तब इस दुःसमयमें कौन उसकी खबर ले? कौन दो चार धीरज बँधाने-वाली बातें कह कर उसके जले हुए प्राणोंको शान्ति दे? किन्तु एक अद्भुत और विचित्र घटना उसे इस दुःसह शोकके समय शान्ति देनेका प्रयास क[illegible]गी। अब प्रायः नित्य ही पतिकी छायामूर्ति उसके पास आने लगी। मिन्ना, जब जब शोक और दुःखसे बहुत व्याकुल होती थी, तब

तब टन टन करके घंटेकी आवाजके समान एक आवाज सुनाई देती थी और उसके कानोंके पास उसके चिरपरिचित प्रियकंठसे–" मिन्ना, मैं आगया " ये थोड़ेसे शब्द धीरे धीरे उच्चारित होते थे।

पहले पहल घंटेकी आवाजको सुनकर मिन्ना काँप उठती थी और एक भयके भावसे अवश और अवसन्न हो जाती थी। किन्तु यह अवस्था अधिक दिनों तक नहीं रही। दिन पर दिन भय कम होने लगा। वह कुछ दिनोंके पश्चात् पतिकी छायामूर्तिको देखकर भीतिके बदले प्रीति और, बातचीतमें आतंकके बदले आनंदका अनुभव करने लगी। यहाँतक कि अंतमें छायामूर्तिके दर्शन पानेकी आशामें वह घंटों उत्सुक होकर बैठी रहने लगी और प्रतिदिन अपनी एक धर्मपरायणा बूढ़ी परोसिन तथा घरकी एक परिचारिकाको इस आश्चर्यमयी घटनाका समस्त वृत्तान्त सुनाने लगी।

मिन्नाका वैधव्य-व्रत भंग नहीं हुआ, किन्तु उसके वैधव्यका दुःख अवश्य दूर हो गया। इस दुखदायक अवस्थामें भी वह एक प्रकारसे सुखसे रहने लगी। छायामूर्त्ति कहा करती थी–" मिन्ना, तुम दुखी मत होओ, मैं नित्य इसी प्रकार तुम्हारे पास आया करूँगा और तुम्हारे रक्षककी भाँति सदैव तुम्हारे पास रहूँगा!" मिन्ना भी कहा करती थी–" मैं इस जीवनमें दूसरा विवाह न करूँगी और कालान्तरमें जब इस शरीर-पिंजरसे मुक्त होऊँगी तब तुम्हारे समान होकर तुमसे आ मिलूँगी। यही मेरे जीवनका चरम सुख और अंतिम आकांक्षा है।"

मिन्नाके मुँहसे ऐसी प्रतिज्ञा सुनते ही छायामूर्त्तिका मुँह गंभीर भाव धारण कर लेता था और वह कहती थी–" मिन्ना, मनमें कुछ भी क्यों न हो, किन्तु सावधान, किसी प्रकारकी प्रतिज्ञामें मत बँधना। तुम स्वाधीन हो; इच्छा हो तो फिर विवाह करना और न हो तो न करना। किन्तु विवाह न करनेकी प्रतिज्ञा न करना।" मिन्ना छायामूर्त्तिके इस निषेधको नहीं मानती थी। क्योंकि इस प्रतिज्ञासे उस प्रेममयीका मन

आत्मगौरवके आनन्दसे भर जाता था । इस प्रतिज्ञाका वृत्तान्त समय समय-पर वह अपनी बूढ़ी परोसिनको भी सुना दिया करती थी।

बहुत दिन बीत गये हैं । मिन्नाका वेष अब पहलेके समान मलिन नहीं है। अब वह समय समय पर नाच और भोजनादिके उत्सवोंमें भी सम्मिलित हुआ करती है । किन्तु अब भी उसके पतिपरायण पवित्र हृदयमें कुछ भी पविवर्त्तन नहीं हुआ है।

एक बार रात्रिके एक भोजमें मिन्नाको निमंत्रण हुआ। भोजके साथ-ही-साथ बाल या नृत्यका भी आयोजन हुआ । मिन्ना नृत्योपयोगी पोषाक पहिनकर भोजस्थानमें उपस्थित हुई। उत्सव-गृहमें बहुत लोगों-का जमाव हुआ है। आगत पुरुषोंमेंसे फ्लोरेन्सके एक युवक पर उसकी दृष्टि आकृष्ट हुई। केवल दृष्टि ही आकृष्ट नहीं हुई, उसके मनमें भी एक भावान्तरका जन्म हो गया । विधवा होनेके दिनसे जिस भावने उसके हृदयमें एक क्षणके लिए भी स्थान नहीं पाया था, आज उसी भावने उसके हृदय पर बलपूर्वक अधिकार कर लिया । युवक युवती दोनों एक दूसरेकी ओर खिंच गये। आँखों-ही-आँखोंमें उनके मनका विनि-मय होने लगा। मिन्ना सोचने लगी—आहा! ऐसा सुन्दर, ऐसा मिष्ट-भाषी और ऐसा सुरसिक पुरुष तो मैंने अपने जीवनमें कभी नहीं देखा! वह आत्म-विस्मृत-सी हो गई और युवकके प्रेममय अनुरोधसे विवश होकर उसके साथ नृत्य करनेको उद्यत हो गई। उसका शरीर रोमाञ्चित हो गया था। इतनेहीमें उसके कानोंके पास वह चिरपरिचित घंटेकी ध्वनि हुई । मिन्नाने उसे सुनकर भी मानों नहीं सुना । समीपवर्त्ती अनेक लोग सहसा घंटेकी ध्वनि सुनकर यहाँ वहाँ देखने लगे । परन्तु मिन्ना तो उस समय अपने आपेमें नहीं थी, वह फ्लोरेन्सनिवासी युवकके नये भावमें निमग्न थी । भला, ऐसी स्थितिमें उसके कानोंमें घंटेकी वह मृदु ध्वनि कैसे स्थान पाती?

घंटा फिर बजा। इस बार उससे नित्यके समान मृदु स्वर नहीं,

किन्तु मृत्युकालीन गंभीर शोकध्वनि प्रकट हुई। यह क्या आश्चर्य्य है! उत्सवगृहके सभी मनुष्य इस अज्ञात शब्दको सुनकर चौंक उठे। घंटेकी आवाजके साथ-ही-साथ "मिन्ना, मैं आ गया" इस शब्दने भी मिन्नाके कर्णकुहरोंमें प्रवेश किया। पासके लोगोंने भी इस शब्दको स्पष्ट रूपमें सुना; इसलिए वे भी कहाँ किसने यह बात कही, यह जाननेके लिए उत्सुक नेत्रोंसे इधर उधर देखने लगे। मिन्ना, चौंक उठी और भयचकित नेत्रोंसे अपने सामने लगे हुए एक बड़े आइनेकी ओर देखने लगी। उसने देखा—उसके प्रतिबिम्बके ऊपर उसके स्वामी-का प्रतिबिम्ब प्रतिफलित हो रहा है! युवती उसी समय "ये तो मेरे स्वामी हैं—" कहकर चिल्ला उठी और मूर्च्छित होकर धरती पर गिर पड़ी। अनेक लोग उसे सँभालनेके लिए दौड़े। परन्तु उन्होंने पास जाकर देखा कि मिन्ना मूर्च्छाकी निद्रामें नहीं, किन्तु मृत्युनिद्रामें सो रही है! मिन्ना अपने शरीरमें नहीं रही—उसके प्राण-पखेरू उड़ गये हैं—मृतदेह धूलमें लोट रही है। फ्लोरेन्स निवासी युवकके नयनप्रान्तसे एक आँसूका बूँद टपक पड़ा। समस्त उत्सव-गृहमें भय, विस्मय और विषाद छा गया। नाच और भोज बंद हो गया। सभी लोग इस अद्भुत घटनाके सम्बन्धमें तरह तरहकी आलोचनायें करते हुए अपने अपने घरको चले गये।

मालूम होता है कि मिन्ना यदि पतिकी छायामूर्त्तिके निकट कठोर वैधव्य-व्रतकी प्रतिज्ञासे न बँधती तो अच्छा होता। उसकी मृत्यु उसके पतिके क्रोधसे नहीं, किन्तु उसकी आंतरिक लज्जा, दुःख, अनुताप और अस्वाभाविक आतंकके आकस्मिक संघातसे हुई। कई जगह केवल भयसे ही अनेक मनुष्योंकी मृत्यु हो जाती है। यहाँ भयके साथ अनेक प्रकारके क्लेशजनक भावोंका भी मिश्रण हो गया था। हाय दुर्बलहृदया मिन्ना! तुम अपनी इस अनचीती मृत्युसे विचारहीन और चंचलचरित्र मनुष्य जातिको क्या सिखाकर अकस्मात् कहाँ चली गई?

अष्टम अध्याय ।



प्रस्तावना ।

जो अत्यंत बुरा है उसे भी एक दिन अच्छा होना पड़ता है। जिसके दुरभिमान-दम्भसे और दयाधर्म-रहित क्रोध-गर्जनसे आज समीपवर्त्ती मनुष्योंका हृदय बारंबार काँप उठता है—जिसकी विकट दृष्टि स्त्री-पुत्रादि कुटुम्बियोंके कोमल हृदयोंमें भी विषाक्त शलाकाके समान दाह उत्पन्न करती है, उसे भी सम्मुखवर्त्ती अनंतकालके किसी न किसी समयमें शाक्यसिंहके समान दयाधर्मपरायण और शंकराचार्य्यके समान तन्मय-भक्त और सज्जन बनना पड़ता है। यही करुणासागर जगदीश्वरकी अनुलंघनीय विधि है और जिन देवप्रकृति नरनारियोंने समय समय पर मनुष्योंको दर्शन देकर पारलौकिक जीवनके सम्बन्धमें उपदेश दिया है, यही उन सबके उपदेशका सार है। किन्तु यह विस्मयजनक परिवर्त्तन—यह प्रकृत पुनर्जन्म—किसीका इसी लोकमें और किसीका परलोकमें प्रारंभ होता है। इस संसारमें अनेक मनुष्य तो मरते मरते तक लोगोंको नाना प्रकारके दुःख देकर और उनका अपकार साधन करके एक प्रकारके सुखका अनुभव करते हैं, और अनेक मनुष्य समय रहते ही भय अथवा भक्तिसे सचेत होकर सुमतिका आश्रय ग्रहण करते और धीरे धीरे सुधरने लगते हैं। आज हम पाठकोंको एक ऐसे ही अचिन्त्य परिवर्त्तनकी आश्चर्य्यजनक कहानी भेट करते हैं। जिस जगदीश्वरकी विचित्र सृष्टिमें अस्पृश्य जलता हुआ कोयला भी सुमधुर मिश्रीके रूपमें परिणत हो जाता है, उसी परमात्माके मंगलमय शासनसे दुश्चरित्र, दुराचारी और निष्ठुर पुरुष भी एक न एक दिन सुधरकर मनुष्यत्वको प्राप्त होगा—एक समय वह भी भीतर बाहर सब प्रकारसे अच्छा बनकर भगवानके उक्त मंगलमय व्रतमें योग देगा।

आत्मिक-कहानी ।

असुरका असार दर्प ।

इंगलैण्डके एक किसानी ग्राममें मेस्टर हाण्ट नामका एक मनुष्य निवास करता था। उक्त ग्राम राजधानीसे केवल १२ मीलकी दूरी पर है। इंग्लेण्डके ग्राम इस देशके ग्रामोंकी नाईं नीरव, निस्पन्द और मृतवत निस्तेज नहीं होते। उनमें जीवनकी चहल पहल और काम-काजकी स्फूर्त्ति दिखाई देती है। ग्रामके दोनों ओर लोगोंकी वस्ती और बीचमें चौड़ा मार्ग रहता है। खेत और बगीचे ग्रामके बाहरी हिस्सेमें रहते हैं। प्रायः प्रत्येक ग्राममें पादरी और चर्च, होटल और औषधालय होते हैं। वहाँके छोटेसे छोटे गाँवोंमें भी समाचारपत्रोंके ग्राहक और पाठक रहते है। उनके द्वारा सामाजिक और राजनैतिक आन्दोलन होते हैं और इससे वहाँ सर्व साधारणके मतोंका भी बहुत कुछ प्रभाव और प्रभुत्व रहता है। हाण्ट, अपने ग्रामके समीपवर्त्ती किसी बड़े जमींदारका प्रधान शिकार-रक्षक था। वह बहुत दिनोंतक सेनामें सिपाही रह चुका था और कईबार रणक्षेत्रमें भयंकर गोलोंकी वर्षामें निर्भय घूम चुका था। भय किसे कहते हैं, इसे वह स्वप्नमें भी नहीं जानता था। उसके समान असमसाहसी, दुर्द्दान्तप्रकृति और कठोरकर्मा पुरुष उस गाँवमें और भी कोई था या नहीं, इसमें संदेह है।

हाण्टका शरीर ऊँचा पूरा, सुन्दर और वज्रके समान सुदृढ़ था। गर्दन छोटी और मोटी, तथा छाता चौड़ा और पाषाण-फलकके समान दुर्भेद्य था। लोगोंको विश्वास था कि उसकी छाती पर बन्दूककी गोली टकरा कर लौट जाती है, उसके एक ही मुक्केसे साँड़का मस्तक विदीर्ण हो जाता है और उसके लाल लाल नेत्रोंकी तीक्ष्ण दृष्टिके सामने बाघकी दृष्टि भी नीची पड़ जाती है। हाण्टके चलनेसे धरती काँपती और कंण्ठस्वरसे ग्राम प्रतिध्वनित हो उठता था। हाण्टका नाम लेकर मातायें

अपने गोदके दुरन्त बच्चोंको शान्त करती थीं। हाण्टकी आहट पाकर पागल बुल-डाग (कुत्ता) भी पूँछ दबाकर कोनेमें जा छिपता था। रक्षित शिकार पर कभी कभी अश्वारोही डाँकू आकर धावा किया करते थे। ऐसे अवसर पर वह अपने जिस वीरत्व और साहसके द्वारा उन लोगोंको मार भगाता था, वह वास्तवमें भयावह और विस्मयकर होता था।

हाण्टके पाषाणहृदयमें दया, दानशीलता, शिष्टता और मिष्टताका लेश भी नहीं था। वह व्याघ्र और रीछोंके समान भयावह और गैण्डेके समान अरोकगति और दुर्द्धर्ष था। वह जिस रास्तेसे जाता उस रास्तेसे बालकोंका आना जाना रुक जाता था। दुबले पतले मनुष्य उसके भयसे दूर हट जाते और स्वाधीना रमणियाँ अपनी मान-मर्यादाको लेकर सशंक हृदयसे भाग जाती थीं।

हाण्ट अपने मनके जिस भावको स्नेह या अनुराग समझता था, उस भावका भी उसमें बिन्दुमात्र स्थायित्व नहीं था। उसका वह प्रेमभाव आज एक जगह झुकता और कल दूसरी जगह जाकर अनुराग प्रदर्शित करता था। तथापि न जाने वह किस पुण्य-प्रभावसे अपने इस तुच्छ काचके बदले सच्चे काञ्चन (सोने) को पा गया था। एक कोमलस्वभावा रमणी इस व्याघ्रको सचमुच ही प्राणोंसे बढ़कर चाहती थी। वह युवती उसकी विवाहिता स्त्री थी।

यहाँ हम उस युवतीके रूपकी चर्चा न करेंगे। युवतीके सुकोमल शरीरमें तथा उससे भी अधिक उसके कोमल प्राणोंमें जो कुछ सुषमा और माधुरी थी, वह इस निष्ठुर पतिके कर्कश व्यवहारसे सूखकर प्रायः निःशेष हो गई थी। तब इस पददलित कुसुमके अतीत गौरवकी विषादमय कहानी कहनेसे क्या लाभ? हाण्ट अपनी मधुरस्वभावा आज्ञाकारिणी पत्नीकी ओर कभी भूलकर भी नहीं देखता था। इस समय उसका अनुराग पड़ोसकी एक युवती पर था।

इस विषयमें धीरे धीरे सर्वसाधारणमें हाण्टकी अत्यंत निन्दा होने लगी। हाण्टकी पत्नीके कानों तक भी ये बातें पहुँची। पहले तो उसने विश्वास नहीं किया, किन्तु पीछे स्वामीके व्यवहारसे उसे सब विदित हो गया। उसकी यंत्रणा धीरे धीरे असह्य हो चली। युवतीके सरल और पवित्र प्राणों पर भारी धक्का लगा। वह अपने हृदयकी छिपी हुई अग्निसे निरंतर जलकर अकालहीमें शय्याग्रस्त हो गई और इस रोग-शय्यासे वह फिर नहीं उठी।

पत्नीकी मृत्यु हो गई, परन्तु इससे हाण्टका पाषाण-हृदय जरा भी व्यथित नहीं हुआ। उसके शुष्क नेत्रोंसे एक बूँद भी जल नहीं गिरा—वह प्रसन्नमनसे पत्नीको समाधि दे आया। अब उसे कोई बाधा, विघ्न या अंतराय नहीं रहा। पत्नीका स्वर्गवास होते ही हाण्टकी वह प्रणयिनी हाण्टके घरकी मालिकिन बन गई। पत्नीका वियोग हुए तीन रात्रियाँ भी गत न हुई थीं कि हाण्टने इस युवतीके साथ अपना विवाह कर डाला। इस निष्ठुर पाशव विवाहके पश्चात् ग्रामके सभी आदमी उसे और भी अधिक घृणाकी दृष्टिसे देखने लगे। उसकी निन्दा सारे गाँवमें फैल गई। किन्तु हाण्टने इन बातोंकी ओर जरा भी ध्यान नहीं दिया। यह जानने‌का कोई उपाय नहीं है कि यह दूसरी पत्नी हाण्टको वास्तवमें ही चाहती थी या भयके कारण उसने यह आत्मोत्सर्ग किया था।

इस दूसरे विवाहको हुए कोई एक महीना बीत गया है। जिस भोग-लालसाके तीव्र आवेगसे सुशीला पत्नी विषतुल्य जान पड़ने लगी थी, उस लालसामय प्रेममें अवश्य ही अब भाटा आना शुरू हो गया है; परन्तु अब भी उसके प्रवाहको अन्य किसी ओर जानेका अवसर नहीं मिला है। इसलिए पति-पत्नी अब भी एक ही घरमें वास करते हैं। एक बार रात्रिको हाण्ट अपनी नवीन पत्नीके साथ शय्या पर लेटा हुआ था। अभीतक दोनोंकी ही आँखोंमें नींद नहीं थी। इसी समय बंद खिड़की

पर न जाने किसने 'खट खट' शब्द किया । शब्द साफ सुनाई देता था। दोनोंने समझा कि कोई पथिक मार्ग भूलकर यहाँ आ पहुँचा है। अतएव शब्द सुनकर भी दोनों चुप हो रहे । किन्तु थोड़ी ही देरके पश्चात् फिर पूर्ववत् शब्द हुआ। परन्तु हाण्ट उठा नहीं । क्या मामला है, बाहरसे कौन खिड़कीको खड़खड़ा रहा है, इत्यादि बातें जाननेके लिए पतिकी आज्ञा पाकर पत्नी ही उठी और खिड़कीके पास पहुँची। उसने जल्दीसे दरवाजा खोल दिया । खिड़की खोलते ही उसने जो कुछ देखा, उसे देखकर वह अपने आपेमें न रह सकी। वह "अरे बापरे! यह कौन है?" कहकर जोरसे चिल्ला उठी और भयभीत होकर जमीन पर गिर पड़ी।

"अरे! यह क्या! बेवकूफके माफिक क्यों चिल्लाती है?" यह कहकर स्वामी गर्ज उठा। युवती भीति-विस्फारित नेत्रोंसे खिड़कीकी ओर देखती हुई और हाथसे हाथ रगड़ती हुई अस्पष्ट स्वरसे कहने लगी-" तुम्हारी स्त्री!-तुम्हारी मृत स्त्री!-देखो, देखो,-इस खिड़कीकी ओर ताककर देखो-वह-खड़ी हुई है-वह तो है।"

मिष्टभाषी स्वामीने उत्तर दिया-"खड़ी है तेरा सिर! मूर्ख कहींकी, जा, फिर अच्छी तरह देख कि कौन है । और न हो तो खिड़की बंद कर आ।"

पत्नी न उठी । खिड़कीके पास जानेका उसे साहस नहीं हुआ। उधर पतिके भैरव-गर्जनको सुनकर वह भयके मारे शय्याके पास भी नहीं जा सकी। तब हाण्ट अत्यंत अप्रसन्न होकर उठा और पत्नीकी मूर्खता-पर मन-ही-मन बड़-बड़ाता हुआ खिड़कीके पास पहुँचा।

हाण्टने खिड़कीके पास जाकर जो कुछ देखा, उससे उसके नेत्र स्थिर हो गये-माथा चक्कर खा गया । उसने देखा-खिड़कीसे केवल एक फूटकी दूरी पर सचमुच ही उसकी मृतपत्नी खड़ी हुई है! जीते

समय वह जिन कपड़ोंको सदैव पहने रहती थी, वही कपड़े पहने है; और अनिमेष दृष्टिसे उसकी ओर देख रही है। उसकी दृष्टि ऐसी तीव्र और मर्मभेदी थी कि हाण्टका निर्भीक पाषाणहृदय भी काँप उठा। उसका अदम्य साहस और दुर्जय गर्व आज न जाने कहाँ उड़ गया। वह संज्ञाशून्य-सा होकर पीछे लौट आया। इस समय उसका सारा शरीर थर थर काँप रहा था। इस अवस्थामें वह अधिक समय तक खड़ा नहीं रह सका। शिथिल होकर एक कुर्सी पर बैठ गया और विकारग्रस्त रोगीकी नाई आप-ही-आप प्रलाप करने लगा—"मेरी स्त्री!–सचमुच मेरी ही स्त्री है! मैंने जो पाप किये हैं उनका बदला देनेके लिए आई है।—मैंने उसे जो महान् कष्ट दिया है उसका बदला लेनेके लिए ही वह आई है! ओह! कैसी लाल लाल आँखें हैं!—कैसी तीक्ष्ण दृष्टि है!—सुशीले! मुझे क्षमा कर।—मैं पैरों पड़ता हूँ। अब इस भयंकर दृष्टिसे मेरी ओर मत देख। अरे! फिर—फिर—वह फिर देखने लगी!–हाय, मैं क्या करूँ?–हाय, अब मैं कहाँ भाग जाऊँ?"

हाण्ट अब वह हाण्ट नहीं रहा–बिल्कुल विकल और उन्मादग्रस्त होगया। सहसा रात्रिके समय ऐसा हल्ला और गुल-गपाड़ा सुनकर अनेक अड़ौस पड़ौसके लोग जुड़ आये। पहले वे हाण्ट और उनकी पत्नीके इस भयके कारणको नहीं समझ सके। विशेष यत्न और परिश्रम द्वारा वे पति-पत्नीको स्वस्थ करनेकीही चेष्टा करने लगे। कुछ समयके पश्चात् हाण्टकी स्त्री कुछ सचेत हुई। उसके मुखसे सबने यह छायादर्शनकी अद्भुत कहानी सुनी। किन्तु हाण्ट किसी तरह सचेत नहीं हुआ। उसकी दोनों आँखें खुलीं हुई थीं और आँखोंके तारे ऊपरको चढ़े हुए थे। वह रह-रहकर भयकंपित स्वरसे विकट आर्तनाद कर उठता था। उसके हृदयमें घोर भय समाया हुआ था। ऐसा जान पड़ता था मानों कोई उसे पकड़नेको उद्यत हुआ है, कोई मानों उसके दो टुकड़े कर डालनेके

लिए तलवार तान रहा है। एक साथ मर्मस्थानमें सहस्रों बिच्छुओंके काटनेके समान उसे असह्य वेदना हो रही थी। अनेक उपाय करने पर भी उसकी इस अवस्थामें कुछ भी संतोषजनक परिवर्त्तन नहीं हुआ। न तो शरीरका काँपना बन्द हुआ और न रोमोंका खड़ा होना। वह कभी जमीनपर लेट रहता, कभी उठ बैठता और कभी भागनेकी चेष्टा करता था। बीच बीचमें उसके मुँहसे वही आर्त्तनाद सुनाई देता था— "यह तो मेरी स्त्री है! सचमुच ही मेरी स्त्री है! यही तो है।"

इसके पश्चात् चार पाँच महीने तक हाण्टका स्वास्थ्य नहीं सुधारा। अंतमें बहुत दिनोंके पश्चात् जब वह पूर्णरूपसे स्वस्थ हुआ तब एक नया ही आदमी बन गया। उसका वह दुर्दान्त क्रूरस्वभाव बिलकुल बदल गया। अब वह पहलेके समान कठोरभाषी और उद्धत स्वभावका मनुष्य नहीं रहा। उसके मुख पर अनुतापकी विषाद-रेखा दिखलाई देती है। वह बहुत ही नम्र, विनीत और शिष्ट-शान्त हो गया है। जीवन भरमें उसने जिस जिसके अपकार किये थे, उनकी हानि भर देनेके लिए वह प्रयत्न करता है और पापोंका प्रायश्चित्त करनेके लिए तत्पर रहता है। इसके बाद जब कभी वह प्रसंगवश किसीके पास छायादर्शनकी यह कहानी कहता था तभी उसका हृदय काँपने लगता था और वह अपनी स्वर्गीया सती पत्नीके नाम पर चार आँसू बहाये बिना न रहता था।

हाण्टकी मृत-पत्नीने अपने हृदयमें छिपे हुए विषाद और क्षोभकी उत्तेजनासे आत्म-विडम्बनाका बदला लेनेकी इच्छासे दर्शन दिये थे, या हाण्टके इस मंगल-जनक परिवर्त्तनके उद्देश्यसे किसी देवपुरुषके उपदेशानुसार दर्शन दिये थे, इसका निर्णय करना कठिन है। इसके सिवा उसने ऐसे शासनकारी भावसे ही दर्शन क्यों दिये? आज तक सहस्रों सती स्त्रियाँ पतिके अत्याचारसे दुखित होकर अपने प्राण विस-

र्जित कर चुकी हैं, किन्तु उनमेंसे तो कोई इस प्रकार दर्शन देने नहीं आती। तब इसका कारण भी कौन बतला सकता है? बात यह है कि मनुष्यकी आत्मा पृथ्वी पर जिस प्रकार स्वाधीन है परलोकमें उससे भी अधिक स्वाधीन है। जो आत्मा परलोकमें अपनी स्वाधीन प्रवृत्तिकी उत्तेजनासे प्रतिहिंसा (बदला लेने) के मार्गको त्याग कर स्नेह और शांति मार्गको ग्रहण करती है, उस पर परलोकवासी देवगण अधिक संतुष्ट होते हैं और वह स्वतः भी अपने हृदयमें अधिकतर आनंदका अनुभव करती है।

नवाँ अध्याय ।



प्रस्तावना ।

महाकवि मिल्टन लिखते हैं,—

Millions of Spiritual beings walk the earth
Unseen, while we wake and when we sleep.

अर्थात्—जिस समय हम जागते अथवा निद्रावस्थामें अचेत रहते हैं, उस समय असंख्य आत्मिक अलक्षित रूपसे इस पृथ्वीपर निरंतर घूमा करते हैं ।

महाकविका यह महावाक्य इतने दिनों तक वाल्मीकि और व्यासकी साक्षीकी नाईं केवल कल्पनाकी बात समझा जाता और उपेक्षाकी दृष्टिसे देखा जाता था । किन्तु वर्त्तमान कालके सहस्रों तत्त्वजिज्ञासुओंने विज्ञानकी कठोर परीक्षाओंके द्वारा भली भाँति जान लिया है कि जो लोग इस पार्थिव शरीरको छोड़कर परलोकको चले गये हैं, वे मर नहीं गये हैं, और न आकाशहीमें मिल गये हैं । उनके साथ सबकी फिर परलोकमें भेट होगी; और तब कोई उनके आशीर्वादसे कृतार्थ और कोई अभिशापसे दुःखी होकर अपने जीवनकी अतीत कहानीको स्मरण करनेके लिए बाध्य होंगे । वे इस समय आत्मिक देह धारण करके अपने अपने कर्मफलोंके अनुसार सुख-दुःख भोगते हैं; और उनमेंसे कई एक आत्मकृत या अन्यकृत कर्मोंके आकर्षणसे,—और कभी कभी उच्चभावोंके अनुशासनसे—पृथ्वी पर आकर मनुष्योंकी खबर लेते हैं । वे जिस प्रकार जड़ जगतमें जीते थे, अध्यात्म जगतमें जाकर भी उसी आकृति उसी प्रकृति, उसी आकांक्षा और उसी जानकारीको लेकर उसी प्रकार जीते हैं; और वहाँ उनके शरीर तथा मनकी उच्चतर शक्तिका विकाश

हो जानेके कारण वे जीव-हृदय पर कार्य करनेकी अधिक सुविधा पाते हैं।

माँ, अपने प्राणप्रिय दुधमुँहे बच्चेको छोड़कर परलोकको चली जाती है, किन्तु वह उसके प्रेममय आकर्षणको सहज ही निवारित नहीं कर सकती। उसका मन नहीं मानता और देवधामके अधिकारी भी यह नहीं चाहते, इस लिए वह बीच बीचमें अदृश्यरूपसे पृथ्वी पर आकर अपने प्राणधनको देखती, सान्त्वना देती और कभी कभी उसके शरीर-पर हाथ फेरकर अपनी उपस्थितिका परिचय देती है। इसी प्रकार अनेक स्थलोंमें माताके सांसारिक जीवनका एक मात्र सहारा, प्रियपुत्र अकस्मात् किसी कठिन बीमारीमें फँसकर अकालहीमें पृथ्वीके बंधनको छोड़कर चला जाता है। वह भी अपनी शोकातुरा माताको क्षणभरके लिए नहीं भूलता। इसी लिए वह दयामयकी शक्तिसे संचालित, देव-पुरुषोंकी कृपा-पूर्ण आज्ञासे बीचबीचमें इस पृथ्वी पर आता और माताका उपकार करनेकी कामनासे दूसरोंके हृदयों पर कार्य करनेमें तत्पर होता है।

इससे जाना जाता है कि परलोकके अधिवासियोंमेंसे जिनका पृथ्वीके साथ जितना अधिक सम्बन्ध रहता है, पृथ्वी पर आने जानेके लिए उनका हृदय उतना ही अधिक लालायित रहता है। किन्तु इन सब आकर्षणोंके सिवा एक प्रकारका आकर्षण और भी है। वह अत्यंत भयानक और दुःखदायक है। किसी व्यक्तिने किसी जगह अत्यंत छुपी रीतिसे किसीके प्राणों पर आघात करके अपना स्वार्थ-साधन किया। यद्यपि इस समय उसका वह क्षणस्थायी स्वार्थ कालके अथाह सागरमें डूब गया है, फिर भी उस पापकी स्मृति और उस स्मृतिका आकर्षण उसका पीछा नहीं छोड़ता। उसने जिस जगह अंधकारमें छुपकर दूसरेकी छातीमें छुरी मारी थी, उसकी आत्मा बहुत समयतक उसी जगह बेड़ियोंसे जकड़े हुएके समान उपस्थित रहती है, और निर्जन कारागारके समान

उस स्थानमें कर्मजनित अनुतापकी अग्निसे जलकर धीरे धीरे शुद्ध होती है। कोई कोई स्वयं उस गर्हित पापसे निर्लिप्त रहने पर भी, प्रतिहिंसाके (बदला लेनेके) प्रबल आकर्षण द्वारा तादृश पापस्थलमें उपस्थित होते हैं और वहाँ बीच बीचमें मनुष्योंको छायामूर्तिके रूपमें दर्शन देकर अपने हृदयके अतृप्त क्रोध और प्राणोंको जलानेवाली ज्वालाको शान्त करनेका प्रयास करते हैं।

इस अंतिम प्रकारकी छायामूर्त्तिके संबंधमें तात्त्विकोंमें कुछ मतभेद है । पाठकोंने थियासोफिष्ट (Theosophist) या दिव्य तात्त्विक सम्प्रदायका नाम अवश्य सुना होगा । थियासोफिस्ट लोग जड़वादी नहीं हैं । अध्यात्मवादियोंकी नाईं वे भी जड़-देह-मुक्त जीवात्माके स्वतंत्र अस्तित्वको स्वीकार करते हैं । इसके सिवा वे इस बातको भी मानते हैं और परीक्षा-सिद्ध सत्य कहकर प्रचार करते हैं कि मनुष्य मृत्युके पश्चात् अध्यात्मजगतमें रहकर अपने किये हुए शुभाशुभ कर्म्मोंके अनुसार पुरस्कार या दंड भोगते हैं। किन्तु मनुष्योंको यहाँ वहाँ छायामूर्त्तिके समान जो कुछ दिखाई देता है उसकी सारवत्ता और वास्तविकतामें उन्हें संदेह है।

उक्त सम्प्रदायकी आधुनिक उपदेशिका वाग्मिकुलभूषणा श्रीमती ऐनी बीसेण्ट कहती हैं कि, मनुष्य पृथ्वी पर जिन छायामूर्त्तियों (Apparition) को देखकर चौंक उठते हैं, वे प्रधानतः Revelations in astral light—अर्थात् आत्मिक-मूर्त्तियोंके आकाशिक प्रतिबिम्ब * हैं।

* "This kind of (unconscious) apparition was nothing more than what Theosophy described as a picture or revelation in the astral light. The modus operandi was this. There was an intense thought in the mind of some person. That thought was a real energy,–a real Force,—quite as real as electricity."—Lecture at Milton Hall, Hawley–Crescent, Kentish Town.

इसका गूढ़ अर्थ यह है कि जिसकी हत्या की जाती है, वह अपने हत्या-स्थल पर बद्ध नहीं रहता, किन्तु उसकी आत्मा अध्यात्म-जगतके किसी स्थान विशेषमें रहकर स्वभावतः उस हत्याकी दुःखदायक घटनाका चिन्तवन किया करती है; और इसीसे उसकी चिन्तामयी मूर्ति समय समय पर लोगोंकी दृष्टिके सामने आकर उनके मनमें भय तथा विस्मय उत्पन्न करती है। थियासोफिष्ट सम्प्रदायके मतानुसार ऐसी मूर्तिका नाम Thought-body अर्थात् 'चिन्तात्मिका देह' है। ऐसी मूर्त्ति या देहके नेत्र रहते हैं किन्तु उनमें दृष्टि नहीं होती, उसके कान होते हैं किन्तु उनमें सुननेकी शक्ति नहीं रहती।

इस प्रकार निर्जीव मूर्त्तिकी बातें और भी कई लोग करते हैं। ड्रेसडेन नगरके निवासी प्रख्यात पंडित डयूमर (Professor Daumer) कहते हैं कि, मनुष्यकी आत्मा जब देह-बंधनसे मुक्त होती है तब वह दूर स्थानमें रहकर भी नाना प्रकारकी मनःकल्पित मूर्त्तियाँ दिखा सकती है। उनके मतसे इस प्रकारकी प्रदर्शित मूर्त्तियोंका नाम आइडोलन (Eidolon) अर्थात् आभासिका + है।

अध्यात्मवादी अर्थात् Spiritualist-स्पिरच्युआलिस्ट नामसे पुकारे जानेवाले दार्शनिक, और भारतीय ऋषि भी इस प्रकारकी अन्तःसार-शून्य आभासित मूर्तिके अस्तित्वको अस्वीकार नहीं करते और यह भी नहीं कहते हैं कि जो लोग मारे जाते हैं वे निरंतर हत्यास्थलमें ही घूमा करते हैं। किन्तु जिस जगह मूर्ति सिर हिलाकर, और सजीव नेत्रोंसे देखकर बातें करती है—अथवा बातें न करने पर भी, हाथ फैलाकर, किसी विशेष स्थानको उँगली द्वारा बतलाती है—अथवा नियमित रीतिसे नियत समय पर अनेक व्यक्तियोंको दर्शन देकर बदला लेनेकी चेष्टा करती है, उस जगह उसे मनःकल्पित मूर्ति कैसे कह सकते हैं! आज हम

+ "These Apparitions are neither bodies nor Souls."

पाठकोंके सामने जिस छायामूर्तिकी कहानी लेकर उपस्थित होते हैं वह नीरव–मौन होने पर भी अचल और निष्क्रिय नहीं है । वह निर्जीव है या सजीव, पाठक इसका स्वतः विचार करेंगे ।

इस लेखमें हमने प्रतिहिंसाकी वासनाको भी एक प्रबल पार्थिव आकर्षण माना है । किन्तु अध्यात्मवादियोंके मतसे प्रतिहिंसा अत्यंत गर्हित और महापातक है । जो लोग दूसरोंके क्रोध या दोषसे अपने प्राणोंको खोकर संसारके समस्त सुखोंको तिलांजलि दे बैठते हैं, और फिर प्रतिहिंसाके भावको हृदयमें पोषित करके पृथ्वीपर छायामूर्ति धारण करके विचरण करते हैं, वे सचमुच ही बड़े अभागी हैं । उनके कर्मोंकी गति एक दिन कैसी लोकभयंकर हो उठती है, आगे दी हुई कहानी उसका प्रामाणिक इतिहास है । प्रतिहिंसा दूष्य और गर्हित अवश्य है, किन्तु उससे सैकड़ों और हजारों गुणा दूषित और गर्हित उस प्रतिहिंसाका प्रवर्तक वह प्रथम पाप होता है । जो लोग किसी सुखसे सोये हुए प्राणीका प्राणनाश करके उसे प्रतिहिंसा की (बदला लेने की) तीव्र अग्निमें जलाते हैं उनके समान पापी हतभागियोंका छायादर्शन भी मनुष्योंके लिए विपज्जनक होता है ।

आत्मिक–कहानी ।

ईर्ष्याकी अग्नि और आशाका अंत ।

इंग्लैण्डके उत्तर प्रदेशमें डार्बीशायर है । चेस्टरफील्ड डार्बीशायरका एक समृद्धशाली नगर है । चेस्टरफील्डसे छः मीलके फासलेपर हार्डविक हाल (Hardwick-hall)–अर्थात् हार्डविकवंशीय जमींदारोंका निवासगृह है । हार्डविक हाल अत्यंत प्राचीन और प्रसिद्ध महल है । सन् १५८४ ई०में डिवेनशायरके ड्यूकने महाराणी एलिजाबेथके युगके अनुरूप आदर्शके अनुसार उक्त महल बनवाया था । हार्डविक हालके

स्वामी इंग्लैण्डके एक प्रधान बैरोनेट थे--इस कारण उनके वंशधर भी 'सर' उपाधिसे विभूषित माननीय पुरुष गिने जाते थे। उस महलके चारों ओरकी विस्तृत भूमि उन्हींके अधिकारमें थी।

हार्डविक-हालके चारों ओर कुछ दूर तक विशाल और सघन वन है। इस सुन्दर वन्य भूमिके मध्यमें, सुनील सागरके वक्ष पर, स्वर्ण-कान्ति मैनाकके समान हार्डविक-हाल अपना माथा ऊँचा किये हुए खड़ा है। उसकी पार्श्ववर्तिनी अत्यंत प्राचीन और प्रकाण्ड वृक्षश्रेणियाँ, जड़ प्रकृतिके कठोर संग्राममें विजयी होकर उसकी प्राचीनताकी साक्षी दे रही हैं। एक समय हार्डविक-हाल उत्तर इंग्लैण्डमें सचमुच ही एक दर्शनीय सामग्री और शोभा तथा सम्पत्तिका उज्ज्वल चिह्न था।

जिस समय इंग्लैण्ड गृहविवाद और आत्मद्रोहके कारण विध्वस्त हो रहा था, जिस समय वहाँ क्रामवेल जनसमाजका अद्वितीय नेता समझा जाकर पूजा जाता था, उन भयंकर हलचलके दिनोंमें, हार्डविक-हालके एकांत कमरेमें इंग्लैण्डके इतिहासका एक स्मरणीय अंक खेला गया था। उस समय इंग्लैण्डके विप्लवग्रस्त राजा प्रथम चार्ल्सने राजसिंहासनको छोड़कर हार्डविक-हालमें छिपकर अपनी रक्षा की थी। हार्डविक-हालके तत्कालीन स्वामीने अपने कष्टोपार्जित धन, हृदयके रक्त और अपने प्राणप्रिय ज्येष्ठपुत्रके जीवनको उत्सर्ग करके समरक्षेत्रमें चार्ल्सकी सहायता की थी।

इस कार्यमें हार्डविक-हालके स्वामी बहुत ऋणग्रस्त हो गये। उनकी दशा यहाँ तक बिगड़ गई कि वे अपने घरकी वस्तुयें बेचकर तथा स्थावर सम्पत्तिको गिरवी रखकर भी आवश्यक धनको एकत्रित नहीं कर सके। समयके प्रभावसे उक्त राजभक्त जमींदारको अपनी अपूर्व सहायता और राजभक्तिके बदले राजदंड सहन करना पड़ा। राजपक्षकी सहायता करनेके अपराधमें क्रामवेलकी पार्लियामेण्टने उसे प्रचुर अर्थदंडसे दंडित

किया। इस अर्थ-दंडसे उसकी दशा अत्यंत शोचनीय हो गई। सर्वस्व छिन गया। उसे अपने पेट भरनेके लिए भी दूसरोंका मुँह ताकनेका अवसर आ गया। किन्तु ऐसी हिनावस्था हो जाने पर भी उसका संकल्प नष्ट नहीं हुआ। वह अपने प्राणप्रिय पुण्य-व्रतसे जरा भी न डिगा। इस घटनाचक्रके अंतिम दृश्यमें जब इंग्लैण्ड राजरक्तसे कलंकित हुआ, उस समय भी दारिद्र्यपीडित हार्डविक, निर्वासित और निराश्रित राजकुमार द्वितीय चार्ल्सकी ओर देखकर वज्रके समान अटल बना रहा।

मनुष्यकी आपत्ति चिरस्थायी नहीं होती। इंग्लैंडमें फिर राजभक्तिका ज्वार आया,—राजशक्तिकी नूतन पताका उड़ी और सुखशान्तिके सुदिन फिर लौट आये। कठोरकर्मा क्रामवेलके वीर-विक्रमकी कथा अतीत स्मृतिके गर्तमें लुप्त होनेके कुछ ही दिनोंके पश्चात् द्वितीय चार्ल्स इंग्लैंडके सिंहासन पर विराजमान हुए। साथ-ही-साथ हार्डविक-हालके भाग्यका भी परिवर्त्तन हुआ। हार्डविक-हालकी शोभा, सम्पत्ति और क्षमतासे चेस्टरफील्डका यह अञ्चल फिर चमक उठा।

हार्डविक-हालका यही प्राचीन और संक्षिप्त इतिहास है। जिस समय हमारी इस कहानीका प्रारंभ होता है, उस समय हार्डविककी समस्त विपत्ति कट गई थी। हार्डविक-हाल उस समय पूर्ण गौरवसे गौरवान्वित था। उस समय एक हृष्ट पुष्ट और बलवान् युवक उक्त राजमहलका स्वामी था। युवकका नाम सर राल्फ हार्डविक था। सर राल्फ आक्सफोर्ड विश्व-विद्यालयके उत्तीर्ण छात्र थे। यूरोप और अमेरिकामें राजा-महाराजा और धनकुबेर भी यदि अच्छी तरह पढ़ना लिखना न सीखें तो भद्रलो-गोंमें बैठनेको स्थान नहीं पाते। इसी कारण सर राल्फने रीत्यनुसार पूर्ण शिक्षा प्राप्त की थी। उनके विमल स्वभावमें धन-सम्पत्ति और मान-मर्य्या-दाके साथ साथ ज्ञान-गौरव भी पूर्ण रीतिसे सम्मिलित था। किन्तु इन सब गुणोंसे विभूषित होने पर भी वे धनवान-सम्प्रदायके दो एक चिर-

परिचित दोषोंके स्पर्शसे सर्वथा मुक्त नहीं हो सके थे। वे एक ओर जैसे वंश-परम्परागत गुणोंके उपयुक्त उत्तराधिकारी थे, उसी प्रकार दूसरी ओर वंशानुक्रमिक दोषोंके भी आधारस्वरूप थे।

भोजन करनेमें उनको सदैव ही बहुत समय लगता था। उनकी प्रबल जठराग्नि किसी दिन स्वल्प आहुतिसे तृप्त नहीं होती थी। मद्यपान करनेमें भी वे एक ही थे। सर राल्फ अपने पिता और पितामहके समान बड़े ही शिकारी, विषमसाहसी और अव्यर्थ निशानेबाज थे। वे घोड़ोंके भी बड़े ही शौकीन थे। उनका अस्तबल एक-से-एक बढ़कर घोड़ोंसे भरा रहता था। न्यूमार्केट और इप्समकी घुड़दौड़में सर राल्फकी जय पराजयकी ओर ही सब दर्शकोंकी आँखें लगी रहती थीं। हार्डविकके विशाल जंगलके शिकारी जानवर और व्याघ्रोंके समान भयंकर शिकारी कुत्ते सर्वत्र प्रसिद्ध थे। अभ्यागत अतिथियोंके लिए हार्डविक-हालका दरवाजा सदैव खुला रहता था। सर राल्फ अतिथि-सत्कार करनेमें कोई बात उठा नहीं रखते थे। कोई कैसा ही दीन दुःखी अतिथि क्यों न हो, वे उसका हार्दिक सम्मान करनेमें तनिक भी त्रुटि नहीं करते थे। इस प्रकार अतिथि-अभ्यागतोंके समागमसे हार्डविक-हाल सदैव उत्सवमय बना रहता था और सर राल्फ हार्डविकका नाम और यश देशमें सर्वत्र ही व्याप्त हो रहा था।

सर राल्फने विवाह कर लिया। उस समय उनकी उमर ३० वर्षके लगभग थी। उनकी पुत्रवत्सला जननी भी जीवित थीं। राल्फकी नवोढ़ा स्त्री जैसी स्वरूपवती थी वैसी ही अनेक सद्गुणोंसे भी विभूषित थी। सर हार्डविकके भवनकी शोभा नवीन गृहस्वामिनीके चरित्रसौन्दर्य्यसे दूनी बढ़ गई। जननी, सुन्दर और अत्यंत सुशील पुत्रवधूको देखकर बहुत सुखी हुई। ऐसी पत्नीको पाकर सर राल्फ भी अपनेको सौभाग्यशाली समझने लगे।

यथासमय सर राल्फको एक पुत्र उत्पन्न हुआ। सदाकी प्रथाके अनुसार वह पुत्र ही हार्डविकका भावी स्वामी था। समस्त हार्डविक-स्टेटने प्रसन्नमनसे नवजात प्रभुपुत्रका सम्मान किया। पितृकुल और मातृकुलके परिचयके लिए बच्चेका नाम रक्खा गया—राल्फ एस्सिटन हार्डविक। सर राल्फ पुत्रजन्मसे सुखी हुए और हार्डविक-हाल आमोद-प्रमोदसे भर गया। इस प्रकार आनंद-उत्सवमें तीन वर्ष व्यतीत हो गये। लेडी राल्फ फिर संतानवती हुईं। इस बार एक कन्या उत्पन्न हुई। किन्तु अबकी बार सुकुमार जननी कठोर प्रसववेदनाको सहन नहीं कर सकी। हार्डविककी गृह-लक्ष्मी, अकालहीमें इस लोकसे अंतर्धान हो गई। बालक एस्सिटन एक प्रकारसे अनाथ हो गया। हार्डविक-हालमें अँधेरा छा गया। सर राल्फके हृदय पर वज्र टूट पड़ा। मातृहीन बच्चेको इस समय केवल पिताका ही अवलम्ब था। सर राल्फ एक हाथसे आँसू पोंछते और एक हाथसे मातृहीन शिशुको हृदयसे लगाते थे।

वृद्ध पिताका स्वर्गवास हुए अनेक दिन हो चुके थे। माता जीवित थीं, सो वे भी स्नेहमयी पुत्रवधूके साथ-ही-साथ परलोकको सिधारीं। सर राल्फ शोकाकुल होकर चारों ओर अँधेरा ही अँधेरा देखने लगे। उनका वह सुन्दर भवन शून्य श्मशानतुल्य हो गया। उनके प्राण, हृदय और मन समस्त ही मानों शून्यमय हो गये। धन-सम्पत्ति, आज्ञाकारी सेवक, आश्रित परिजन आदि किसी भी बातकी कमी नहीं है। लोग आते हैं और पूर्ववत् सम्मान पाकर प्रसन्न-मनसे लौट जाते हैं। अतिथि-अभ्यागतोंके सत्कार और अभ्यर्थनाओंमें हार्डविक हाल रातदिन सुसज्जित और मुखरित रहता है। तथापि सर राल्फके जीवनमें पहलेके समान प्रसन्नता नहीं दिखाई देती। वे अपनेको अकेला, असहाय और निर्जीवसा समझते हैं। धीरे धीरे यह अवस्था असहनीय हो उठी। आत्मीय जनोंके अनुरोधसे उन्होंने फिर विवाह करनेका विचार किया।

किन्तु अब प्रश्न यह उपस्थित हुआ कि उनकी इच्छाके अनुरूप रमणी कहाँ मिलेगी ? वे जिस सुशीला और देवस्वभावा रमणीको अकालहीमें खो बैठे हैं, उसके समान पत्नी कहाँसे आवेगी ?

सर जारवेज मूर हार्डविक-हालके समीपवर्त्ती पड़ोसी हैं। वे उत्तम कुलके प्रतिष्ठित नाइट, किन्तु निर्धन हैं। एक दिन उनकी अवस्था बहुत अच्छी थी, उनकी 'नाइट' उपाधि ही इसका प्रमाण है। उनका घर भी, एक दिन धनी लोगोंके विलास-भवनकी नाईं उज्ज्वल मूर्तिसे खड़ा था और हार्डविक-हालके अतिथियोंकी दृष्टि आकर्षित करनेमें समर्थ था। किन्तु इस समय उसकी अवस्था बहुत ही गिरी हुई है।

सर जारवेज मूर अदूरदर्शी और अपव्ययी थे। उन्होंने कुछ अधिक उमरमें एक रमणीके साथ विवाह किया था। दहेजमें उनको खूब सम्पत्ति मिली थी। मूरकी पैत्रिक सम्पत्ति भी कुछ कम न थी। किन्तु सम्पत्ति पाकर भी वे थोड़े ही समयमें दारिद्र्यग्रस्त होकर नाना प्रकारकी तकलीफें सहन करने लगे। मूर जैसे अपव्ययी थे, उनकी पत्नी उससे भी अधिक उच्छृंखल थीं। पत्नी मानो पतिके साथ स्पर्द्धा करके खर्चके नित्य नये अवसरोंको खोजा करती थी, और इस प्रकार जो थोड़ा बहुत धन संचित हो सकता था, वह भी सुख-लालसाकी प्रबल आँधीमें उड़ जाता था। ऐसे अंधाधुंध खर्चसे मूरकी तो बात ही क्या है, कुबेरका खजाना भी खाली हो सकता है। इस तरह पति-पत्नीके अनुचित व्यवहारसे थोड़े ही दिनोंमें उनकी गौरव-गरिमा मिट्टीमें मिल गई। उनकी दुर्दशा और गरीबीकी बात सर्वत्र फैल गई।

लेडी मूरकी गणना एक दिन रूपवती रमणियोंमें की जाती थी। उनके जीवनके उस वसन्तकालको व्यतीत हुए बहुत दिन हो गये हैं। इस समय उनका स्वार्थ ही एक मात्र उपास्य देव और कपटाचार ही

उनका अलङ्कार है। वे सदैवसे कोधयुक्ता, क्रूरा, कर्कशा, घमंडिनी और कटुवादिनी हैं। धनसे उन्हें बहुत ही मोह है; किन्तु उसके सद्व्यवहारसे वे सर्वथा अनभिज्ञ हैं। आनन्द-विलासकी कौन सामग्री, कहाँसे, कितने दामोंमें प्राप्त हो सकती है—वे केवल यही जानतीं, यही समझतीं और एकान्तमें बैठकर केवल इसी विषयका विचार किया करती हैं।

मूरके घर एक कन्या है। कन्याका नाम इथेला मूर है। इथेला युवती है। इस समय इथेलाकी प्रस्फुटित रूपराशि ही उस दुःखान्धकारपूर्ण मूर-गृहके लिए प्रकाशरूप है। इथेला मूरके मोहमय रूपका यह एक विशेष लक्षण है कि वह पहले दर्शकके नेत्रोंको और इसके बाद अवस्थाविशेषमें उसके मन और प्राण तकको खींच लेता है। उस रूपमें चाँदनीकी शीतलता और माधुरी नहीं है—उससे नेत्र ठण्डे नहीं होते, किन्तु झुलस जाते हैं। हाँ, समयविशेषमें, यही रूप ही स्नेहमय सरलताका रूप धारण करके युवतीकी मुखश्रीपर एक विचित्र ही प्रकारका रंग फैला देता है।

इसी समय एक दिन सहसा युवती इथेलाकी सर राल्फसे भेंट हो गई। मनोमोहिनीने प्रथम दृष्टिमें ही राल्फके मनोभावको समझ कर, अपने प्रखर रूपकी तीव्र छटाके ऊपर प्रशान्त माधुरीका वही सामयिक रंग फैला लिया। सर राल्फ युवतीकी मनोहर कान्तिको तृषित नयनोंसे देखने लगे; और देखते ही उस रूपवतीके चरणोंमें अपने हृदय, मन और प्राणोंको गिरवी रख कर मंत्र-मुग्धकी नाईं न जाने क्या सोचते सोचते अपने घर लौट आये।

सर जारवेज मूर और उनकी पत्नीने जो कभी स्वप्नमें भी नहीं सोचा था, जिसकी कभी कल्पना भी नहीं की थी, आज उनके सौभाग्यसे वही हुआ। मूरके दुःख-दारिद्र्यपीड़ित घरकी ओर हार्डविक

जैसे धनी और प्रतिष्ठित व्यक्तिका आकृष्ट होना कुछ कम सौभाग्यकी बात नहीं थी। मूर-दम्पत्तिके आनंदकी सीमा न रही। एक उच्चवंश-सम्भूत और अमितधनशाली पुरुष पर कन्याका वह आकस्मिक आधिपत्य पाना जारवेज मूरको आशातीत धनके पानेके समान ही बोध हुआ। वे इस सम्बन्धकी सूचना पाकर अपनेको बहुत ही गौरवान्वित समझने लगे। इधर लेडी मूर भी राल्फकी प्रज्वलित प्रणय-अग्निमें अत्यंत सावधानीके साथ ईंधन झोंकनेका यत्न करने लगीं। अधिक कहनेकी आवश्यकता नहीं, निरानन्द हार्डविक-हाल शीघ्र ही उत्सवपूर्ण हो गया। सर राल्फने थोड़े ही दिनोंके भीतर इथेला मूरका पाणिग्रहण कर लिया। उनका शून्य गृह भर गया। हार्डविक-हालको फिर गृह-स्वामिनी मिल गई। किन्तु मातृहीन बालक एस्सिटनको भी क्या फिर माँ मिल गई?

रूपाभिमानिनी इथेला, सर राल्फकी पत्नी बनकर राजरानीके समान हार्डविक-हालमें निवास करने लगी। दास दासियाँ सभी उसकी आज्ञानुवर्तिनी हो गईं। उसकी हृष्टपुष्ट सुदीर्घ देह, गरबीली दृष्टि और आडम्बरपूर्ण व्यवहारको देखकर सभी चकित और स्तम्भित थे। वह थोड़े ही समयमें हार्डविक-हालमें प्रदर्शनकी एक उत्तम वस्तु अथवा धनी घरकी एक जीती जागती गृहसामग्रीके समान शोभा पाने लगी। उसके उद्धत व्यवहारसे सर राल्फके कौलीन्य अभिमानने, पहले पहल कुछ समय तक कभी कभी किञ्चित् परितृप्ति लाभ की, किन्तु अंतमें उसकी निष्ठुर दृष्टि, नीरस संभाषण और प्रीतिस्पर्शरहित थोथा आडम्बर उन्हें अच्छा नहीं लगा। उनका हृदय भी धीरे धीरे शुष्क हो चला। प्रणयके प्राणोंमें दारुण आघात लगा। सर राल्फ संसारसुखसे उदासीन, अनुत्साही और अकालहीमें वृद्धसे हो गये। विवाह होनेके दो चार दिनके बाद ही वे समझ गये कि हमने कांचन समझकर काच

खरीदा है—पुष्पमालाके भ्रमसे काठकी माला गलेमें पहनी है। इस जानकारीसे उनका हृदय निराशासे ढँक गया।

लेडी जारवेज मूरके समान माताके गर्भसे इथेला मूरके समान कन्याका उत्पन्न होना ही स्वाभाविक है। स्नेह, पवित्रता, प्रसन्नता और मृदुता आदि उत्तम गुण सर्वत्र सुलभ न होनेपर भी, स्त्री-जातिके आवश्यक आभूषण और प्रकृत धन हैं। किन्तु मूर-पत्नीके समान माताके गर्भसे उत्पन्न होकर और वैसी माताके लाड़-चाव और देख-रेखमें शिक्षा पाकर लड़की यदि इस अंशमें भाग्यवती न हो तो कोई आश्चर्यकी बात नहीं है। कन्या, थोड़े ही दिनोंमें स्वार्थपरता, क्रूरता, कपटाचारिता, ईर्षा आदि माताकी गुण-सम्पत्ति पर अधिकार करने लगी। कन्याके उर्वर हृदयमें माताका डाला हुआ एक कण भी व्यर्थ नहीं गया। छल, कपट, चातुरी और मनोगत भावोंको छिपानेमें कन्याने यहाँ तक निपुणता प्राप्त की कि समय-समय पर माताको भी उसके सामने हार मानना पड़ती थी। ऐसी दुष्ट स्वभावा पत्नीका संसर्ग सरलस्वभाव, उदारचेता स्वामीके हृदयमें सुख-शान्तिदायक कैसे होता?

स्वर्गीय लेडी हार्डविकका पुत्र राल्फ एस्सिटन इस समय चार वर्षका है। धनवानोंके लड़के एक अंशमें बड़े ही अभागी होते हैं। उनके शिक्षा-मार्गमें अनेक कंटक और तरह तरहके अंतराय रहते हैं। इतनी बड़ी जमींदारीका भावी स्वामी, बालक होनेपर भी लाड़का पुतला है—बच्चा होने पर भी प्रभु है। किन्तु सर राल्फ इस विषयमें विशेष सावधान थे, इस कारण बालकके स्वभावमें बचपनके दोष अपना कोई बुरा प्रभाव नहीं जमा सके। ऐसी प्रतिकूल अवस्था, और घातक संयोगोंके उपस्थित रहने पर भी, बालक अपरिपक्व उमरमें ही अकालपक्व प्रभु बननेका सुयोग नहीं पा सका। उमरकी बढ़तीके साथ साथ एस्सिटनके हृदयमें अनेक उत्तम गुणोंके अंकुर जमने लगे।

जिस समय एस्सिटनकी उमर ४ वर्षकी थी, उस समय उसकी नई माताके एक सुन्दर पुत्र उत्पन्न हुआ। सर राल्फ पुत्रजन्मसे बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने सोचा कि शायद अब पत्नीका पाषाण-हृदय सन्तान-वात्सल्यके मधुर स्पर्शसे स्वयं ही स्नेहका झरना बन जायगा और वहाँ मेरा ज्वालादग्धजीवन कुछ सुख-शीतल आश्रयको पाकर कृतार्थ होगा। किन्तु राल्फकी यह आशा भी नैराश्यके गहरे अँधकारमें डूब गई। पत्नी जैसी थी, वैसी ही रही। पाषाण नहीं पिघला, सूखे काठमें फूल नहीं फूले।

सर राल्फ, इसके बाद पत्नीके प्रेमसे पूर्ण निराश होकर, दोनों पुत्रोंकी सुशिक्षाकी ओर विशेष ध्यान देने लगे। उन्होंने देखा कि मेरे दोनों ही पुत्र सुन्दर और रूपवान् हैं; किन्तु ज्येष्ठ पुत्रके मुख-मण्डल पर हार्डविक वंशके चिह्न जैसे साफ़ हैं, वैसे दूसरे पुत्रके मुखमण्डल पर नहीं हैं। ज्येष्ठ पुत्र सब ओरसे हार्डविक है, पर छोटा आधा हार्डविक और आधा मूर है। छोटे पुत्रके मुख पर माताकी मूर्तिका ही पूरा प्रतिबिम्ब है। उसके नेत्रोंकी दृष्टि और अधरोंकी हँसीमें भी मूर-वंशका सादृश्य देखकर सर राल्फ मन-ही-मन दुखी हुए। हार्डविक-हालके अन्य मनुष्य भी उतने प्रसन्न नहीं हुए। जो हो, सर राल्फने दोनों पुत्रोंसे अपनेको गौरवान्वित समझा और दोनों भाइयोंमें किसी प्रकार किसी रूपमें तारतम्य और पार्थक्य न रहे, इसके लिए यथेष्ट व्यवस्था कर दी।

दोनों भाई एक साथ प्रतिपालित होने लगे। दोनों एक ही जगह रहते, एक ही जगह भोजन करते, एक ही किस्मके कपड़े पहिनते, एक ही साथ एक ही तरहके घोड़ोंपर भ्रमण करते और एक ही शिक्षकके पास शिक्षा पाते थे। वस्त्र-आभूषण, शयन-विचरण, आदर-सम्मान, लाड़-प्यार किसी विषयमें दोनोंमें किसी प्रकारका पार्थक्य नहीं था। परन्तु इस तरह दोनोंके बीच कुछ भी विभिन्नता न रहने पर भी, परिवारके सब

लोगोंके मनमें मूल बातके सम्बन्धमें एक बहुत भारी पार्थक्य था। वह पार्थक्य यह था कि एक तो सुविस्तृत हार्डविक जमींदारी और सम्पत्तिका भावी उत्तराधिकारी है और एक उक्त स्टेटसे बिलकुल सम्पर्कशून्य है। कुछ ही दिनोंके पश्चात् एक तो राजाके समान समृद्धिशाली जमींदार होगा, और दूसरा अपने बेगको बगलमें दबाकर कहीं अन्यत्र जाने पर बाध्य होगा। इस विभिन्नताको—इस पार्थक्यको—सर राल्फने एक दिन भी अपने हृदयमें स्थान नहीं दिया, अन्य लोगोंने जान कर भी, उस पर ध्यान नहीं दिया। सबसे पहले उक्त विभिन्नताकी बात छोटे पुत्रकी मातामही (नानी) मूर-पत्नीके मनमें उत्पन्न हुई, और पीछे मूर-तनया अर्थात् लेडी हार्डविकके मनमें उसने स्थान पाया। एक दिन मूरपत्नीने अपनी लड़कीको इस विभिन्नताकी बात इस प्रकार समझा दी कि, वह उसके रोम रोममें भिद गई। माँ-बेटीमें एकांतमें बहुत समय तक कानाफूसी और अनेक बातें हुई। कौन कौन बातें हुई, क्या क्या युक्तियाँ और मन्तव्य सोचे गये यह किसीको मालूम नहीं हुआ। लोगोंने केवल यही देखा—यही समझा कि सर राल्फकी नई पत्नी जब माताके सलाह-भवनसे निकलकर बाहर आई तब उसका मुँह अत्यंत गंभीर और मलिन था; नेत्रों-की दृष्टि ऐसी तीव्र और भयंकर थी कि देखते ही चित्त चौंक उठता था।

बालक राल्फ एस्सिटन ज्यों ज्यों उमरमें बढ़ने लगा, विमाताकी विद्वेष और घृणाव्यंजक दृष्टि भी उसी प्रकार अधिकाधिक बढ़ती गई। माताके मनमें अग्नि उत्पन्न हो गई—किन्तु प्रज्वलित नहीं हुई, वह उपयुक्त समयकी प्रतीक्षामें हृदयके भीतर-ही-भीतर सुलगने लगी। कुछ वर्षोंके पश्चात् दोनों बालक किशोरावस्थाको लाँघ गये। विमाता उस समय भी मानों समयकी प्रतीक्षामें धीर, स्थिर और प्रशान्तमूर्ति थी।

कुछ दिनोंके उपरान्त लेडी जारवेज मूरका स्वर्गवास हो गया। सर राल्फके वृद्ध श्वशुर भी सदैवके लिए महानिद्रामें सो गये। उनके घरका

अधिकार एक दूसरे पुरुषके हाथमें चला गया । इस बीचमें लेडी राल्फ और भी कई सन्तानोंकी माता होकर जेठी सयानी मालकिन कहलाने लगीं । इस तरह अच्छी-बुरी अनेक घटनायें हो गई, अनेक परिवर्त्तन हो गये, किन्तु लेडी राल्फके हृदयकी अग्नि न बुझी । काले साँपके जहरीले दाँत नहीं गिरे ।

सर राल्फका पत्नीके साथ कोई बाहरी बे-बनाव नहीं था । दोनोंमें प्रणय है या नहीं, बाहरसे इसे कोई नहीं समझ सकता था । पत्नी गंभीर-मूर्तिसे मुँह भारी किये हुए पतिके सामने आती थीं और पति भी उस गंभीरताको बनाये रखकर गृह-कार्योंकी व्यवस्था किया करते थे। सर राल्फका स्नेह, अनुराग, ममत्व, प्यार, सभी धीरे धीरे बढ़ते हुए ज्येष्ठ पुत्रमें केन्द्रीभूत होने लगा ।

अवस्था बढ़नेके साथ-ही-साथ बालक एस्सिटनके हृदयमें अनेक उच्च गुणोंका विकाश हुआ । वह देखनेमें जैसा सुस्वरूप था, स्वभावमें भी वैसा ही सर्वप्रिय, पिताका अनुगत और आज्ञाकारी हुआ । समय समय पर विमाताके वाक्य-वाणोंसे मर्माहत होकर भी उसके बाहरी व्यवहारमें कुछ विकार नहीं हुआ। वह अपने सौतेले भाई फिलिफ जारवेज हार्डविकको अपने सगे भाईके समान प्राणोंसे अधिक चाहता था । वह नौकर-चाकरोंसे भी कभी कठोर व्यवहार नहीं करता था । सभी उसको चाहते थे और वह भी सबको स्नेहकी दृष्टिसे देखता था । अब वह हार्डविक वंशके उज्ज्वल रत्न और उपयुक्त वंशधरके रूपमें सर्वत्र ही सम्मानित होता था । सर राल्फ अब बूढ़े हो चले थे । यद्यपि वे सांसारिक सुखोंसे निराश हो बैठे थे, फिर भी ज्येष्ठ पुत्रकी योग्यता और सच्चरित्रताको देखकर इस समय आशासे उत्फुल्ल थे । पुत्रकी उमर २० वर्षके लगभग हो गई । वे सोचने लगे कि दो वर्ष और व्यतीत होने पर पुत्र सम्पत्तिका उत्तराधिकारी बननेके योग्य हो जायगा ।

किन्तु हाय ! उनकी आकांक्षा पूर्ण नहीं हुई । सर राल्फ उमरके हिसाबसे अधिक वृद्ध न होने पर भी, रोग-शोक और अनेक मानसिक चिन्ताओंके कारण अकालहीमें अत्यंत जीर्ण-शीर्ण हो गये थे । इसपर ऊपरसे एक और विपत्ति आ पड़ी । एक दिन दुर्भाग्यसे शिकार खेलते समय चोट लग जानेके कारण वे एकदम शय्याशायी हो गये ।

इस बार वे इस शय्यासे उठनेमें समर्थ नहीं हुए और अंतिम समय तक अपने प्राणप्रिय पुत्रको देखते देखते स्वर्गधामको सिधार गये। छोटे पुत्रसे स्नेहरुद्ध कण्ठसे वे केवल यही कह गये—"वत्स ! तुम सब प्रकारसे अपने जेठे भाईके अनुरूप और आज्ञाकारी बनना ।"

सर राल्फका स्वर्गवास हो गया । दो एक महीनेके बाद ही युवक एस्सिटन सर राल्फ एस्सिटन नाम धारण करके हार्डविक-हालकी सम्पत्तिका स्वामी होगा । सर राल्फ, पुत्रकी शैशव अवस्थामें ही पुत्रवधूका निर्वाचन कर गये हैं । सर राल्फकी यह अन्तिम आज्ञा है कि पुत्रके विवाहका और वयःप्राप्ति (बालिगी) का उत्सव एक साथ ही किया जाय । नौकर-चाकर शोकाभिभूत होने पर भी स्वर्गीय प्रभुके आज्ञाकारी हैं और प्रभु स्वतः एस्सिटनके विवाहका कुल प्रबंध कर गये हैं, तब उनकी इच्छाके प्रतिकूल कार्य्य करनेका साहस कौन करता ? इस कारण वे सब समीपवर्त्ती उत्सवकी आशामें और उत्साहमें आमोद-विह्वल न होने पर भी उत्सुक हैं । उत्सवकी तैयारी हो रही है । भावी वधू मिस क्लिलिशिया विनग्रोव भी अपने पिता और चाचासहित कई दिनोंसे हार्डविक-हालमें उपस्थित हो गई है ।

मिस क्लिलिशिया सुन्दरी युवती है । उसकी कोमल कान्ति फूले हुए गुलाबके समान मनोहारिणी है । उसके अभिनव प्रीतिके निर्मल झरनोंके तुल्य नेत्रोंकी सरल दृष्टि, साँचेमें ढला हुआ गोल ललाट, और

नेत्ररंजन अधरोंकी सलज्ज हँसीकी अधखिली माधुरीको जिसने देखा वही प्रसन्न और मोहित हो गया। मिस फिलिशियाके मृदु मधुर विनीत व्यवहार और अकृत्रिम सौजन्य और शिष्टाचारको देखकर हार्डविक हालके सभी मनुष्य उसे उपयुक्त गृह-स्वामिनी समझकर आदर देने लगे। फिलिशियाके पिता स्वर्गीय सर राल्फके अत्यंत पुराने मित्र हैं। जिस समय फिलिशिया चाँदीकी सुन्दर पुतलीके समान धायकी देखरेखमें शैशव-दोलामें झूलती थी, उसी समय सर राल्फने उसके साथ अपने पुत्र एस्सिटनका विवाह-सम्बन्ध स्थिर कर लिया था। इस हिसाबसे मिस फिलिशिया वाग्दत्ता थी। वह अपने पितृपक्षकी ओरसे भी विपुल सम्पत्तिकी उत्तराधिकारिणी थी।

गरमीके दिन हैं। संध्याकाल है। वायु धीरे धीरे चल रही है। संध्या-समयकी सूर्यकी सुनहली किरणें हार्डविक हालके विस्तृत उद्यानमें तरल सोनेके समान झिलमिला रही हैं। हार्डविक-हालके दूसरे मंजिलके एक सुसज्जित कमरेमें खिड़कीके पास एक प्रौढ़ा स्त्री बैठी है। उसकी उमर प्रायः ४० वर्षकी है। उसके प्रगल्भ रूपकी प्रखर प्रभा अब भी निस्तेज नहीं हुई है। स्त्रीके प्रदीप्त नेत्रोंमें तीक्ष्ण दृष्टि है। वह इधर उधर, वृक्ष-बहुल उद्यानमें विचरण नहीं करती है। स्त्री एक युवक और युवतीकी गतिविधिको स्नेहशून्य नीरस दृष्टिसे, छिपी हुई बिल्लीके समान गुप्तरीतिसे पर्यवेक्षण कर रही है। युवक युवती विश्रब्ध आलाप करते हुए पुष्पोद्यानके एक निर्जन मार्गमें, अपनेको भूले हुए, टहल रहे हैं। क्रम क्रमसे वे उक्त खिड़कीके नीचे आकर खड़े हो गये। पास आते ही स्त्रीने उन्हें अच्छी तरह देखा और उनकी बातें भी सुनीं। ग्रीष्मका समीर उनके कल-कंठकी कोमल ध्वनिको स्त्रीके उत्सुक कानोंतक बहा ले गया। यह स्त्री और कोई नहीं सर राल्फकी विधवा पत्नी—लेडी हार्डविक है। युवक उसीके गर्भसे उत्पन्न हुआ पुत्र—राल्फ एस्सिटनका सौतेला भाई—

फिलिफ और युवती राल्फ एस्सिटनकी वाग्दत्ता भावी पत्नी फिलिशिया विनग्रोव थी ।

विधवा मुख बनाकर आप-ही-आप कहने लगी—"मेरी मंत्रणा व्यर्थ न जायगी । औषध काम कर रही है । यही तो ये दोनों हैं । मेरे कार्य्यारंभ करनेका योग्य समय आ गया । जो हो, मैंने अपना मार्ग ठीक कर रक्खा है । अभागी फिलिफके मनमें यदि सचमुच ही उच्चाकांक्षा या उच्चाशा होगी और उससे यदि प्रतिहिंसाकी प्रवृत्ति थोड़ी भी जागरित की जायगी, तो सब काम बन जायगा । " इतना कहकर उसने एक विकट हँसी हँसी ।

इसी समय समीपवर्त्ती कमरेसे किसीके आनेका शब्द सुनाई दिया । स्त्री सोचने लगी— फिलिफ तो नहीं है ? पीछे फिरकर देखा—हाँ, फिलिफ ही तो है । शिकारी पोषाक पहने एक बलिष्ठ युवक उसके सामने आ खड़ा हुआ । लेडी हार्डविकने कहा—" फिलिफ ! " फिर कुछ क्षणके उपरान्त कुछ उत्तेजित स्वरसे कहा—" फिलिफ-जारवेज-हार्डविक ! "

फिलिफने कहा—" माँ, मैं ही हूँ । " लेडी हार्डविकने कहा—" जो तुम सचमुच फिलिफ-जारवेज-हार्डविक हो, तो इस ओर देखो । " ऐसा कहकर माताने बगीचेकी ओर संकेत किया ।

फिलिफने तत्काल माताकी आज्ञा प्रतिपालित की । उसने खिड़कीके पास जाकर बगीचेकी ओर देखा । देखते ही रक्त-संचारसे उसके गालों पर लाली दौड़ आई । वह सिर झुका-कर माताके सामने खड़ा रहा ।

माताने कहा—" इस युवतीको पहचानते हो ? "

फिलिफ—" हाँ, पहचानता हूँ । इस निरभ्र दिनके प्रकाशसे भी अधिक उज्ज्वलप्रभा, और देवप्रभामयी उषासे भी अधिक मनोमोहिनी युवतीको कौन नहीं पहचानता ? माँ, मैं पागल-सा हो गया हूँ । मैं

उसे चाहता हूँ। किन्तु इस बातको मुँह खोलकर उसके सामने कहनेका मुझमें साहस नहीं। मैंने इसी समय उसके निकट अस्फुट कौशलसे जो दया-भिक्षा माँगी है, उसके सम्बन्धमें इसके मुखसे यदि अनुकूल उत्तर न मिला तो मैं स्थिर न रह सकूँगा। अवश्य ही पागल हो जाऊँगा या प्राण खो बैठूँगा। ”

लेडी राल्फने कहा—“ क्या तुमने सुना नहीं बेटा, कि वह शीघ्र ही तुम्हारे सौतेले भाईकी पत्नी होनेवाली है। उसके लिए तो वह रीत्यनुसार वाग्दत्ता हो चुकी है। तुम इस अभागिनीके भिखारी पुत्र हो, तुम्हें और आशा ही क्या है? तुम अपनी इच्छानुकूल उत्तर पाओगे या नहीं, इसमें घोर संदेह है। ”

फिलिफने कहा—“ क्यों, क्या मैं इसका प्रतिरोध नहीं कर सकता? प्रतिरोध करनेमें—”

माताने सहसा बीचहीमें रोक कर कुछ हँसते हुए कहा—“ क्या, तुम क्या बलप्रयोग करना चाहते हो? ”

फिलिफने कहा—“ आवश्यकता पड़ने पर वह भी करूँगा। मैं शपथ करके कहता हूँ कि मैंने आपके मुँहसे जितनी बातें सुनी हैं, उनका एक अक्षर भी मैं नहीं भूला हूँ। ”

माताने कहा—“ क्या तुम उसे अच्छी तरह पहचान और समझ सके हो? ”

फिलिफ—“ किसे? एस्सिटनको न?–उसे पहचानने और समझनेमें क्या अब भी कुछ बाकी है? ”

माताने कुछ दुःखी स्वरसे उत्तर दिया,—“ नहीं–नहीं–तुम उसे इस समय भी अच्छी तरह नहीं पहचान सके हो। तुम जितना सोचते हो, केवल उतना ही नहीं, वह उसकी अपेक्षा बहुत बड़ा है। ”

फिलिफ, बातोंका तात्पर्य न समझकर कहने लगा—"बड़ा!—किस बातमें बड़ा है?"

लेडी हार्डविकने कहा—"तो क्या तुम सब बातें भूल गये?"

फिलिफ—सब क्या—माँ, मैं कौनसी बात भूल गया हूँ?

लेडी हार्डविकने कहा—"राजमहलके समान यह विराट् अट्टालिका, विशाल जमींदारी, विपुल सम्पत्ति—भीतर और बाहर दोनों आँखोंसे जो कुछ देखते हो—यह उद्यान, यह वनभूमि, मैदान, बगीचे, नदी, तालाब इन सब वस्तुओंका एक मात्र स्वामी वही है! अरे मूर्ख! यह बात क्या तू भूल गया?"

युवक दाँत पीसने लगा। क्षणभरमें उसके नेत्रोंसे अग्निकी चिनगारियाँ निकलने लगीं। उसने क्रुद्ध अजगरकी नाईं श्वास ले ली। वह विकृत स्वरसे कहने लगा—"हाँ, याद है माँ, सब याद है,—मैं इसी समय सब झंझट मिटाये देता हूँ।"—"पेउलो (Paolo)—पेउलो कहाँ है माँ?"

लेडी हार्डविकने कहा—"वह अरसिनो (Orsino) के साथ है। गढ़ा खुद चुका है। उनसे जो जो काम करनेको कहा गया था, वह उन्होंने सब किया है। सब काम-काज ठीक करके वे दोनों चले गये हैं?"

फिलिफने विस्मयके साथ कहा—"चले गये हैं! कहाँ चले गये हैं?"

लेडी हार्डविकने विकृत मुखभङ्गीसे हँसकर कहा—"यहाँ उनको बहुत लोग पहचानते थे। जिस जगह जाने पर कोई उन्हें कभी देख और पहचान नहीं सकेगा, वे उसी जगह चले गये हैं।"

इसके अनन्तर फिलिफने क्या किया और कहाँ क्या हुआ, इसे कोई नहीं जान सका। केवल एक पुरानी दासीने माँ-बेटेकी इस भयंकर बातचीतको सुन लिया। जिस समय ये बातें सुनीं उस समय उसने इन सब बातोंका यथार्थ मर्म न समझकर, एक दूसरी परिचा-रिकाको ये बातें कह सुनाईं। किन्तु वह भी उक्त बातोंका कुछ स्पष्ट

मतलब न समझ सकी, इस लिए उस समयके लिए उसने भी चुप रहना उचित समझा।

सूर्य डूब गया। क्रमक्रमसे रात्रिके सघन अंधकारने हार्डविक-हालको ढँक लिया। किन्तु इस रात्रिको ही राल्फ एस्सिटन अकस्मात् अदृश्य हो गये। स्वर्गीय सर राल्फके प्राणोंसे प्यारे और आदरके धन, हार्डविक-हालके भावी अवलम्बन, प्रियदर्शन और मधुरभाषी एस्सिटन-को इसके अनन्तर फिर कोई नहीं देख सका।

एस्सिटन किसीसे कुछ न कहकर इस प्रकार कहाँ चले गये, किस उद्देश्यसे इस प्रकार कहाँ जाकर छुप रहे, इसका पता न पानेसे हार्डविक प्रदेशके सभी लोग विस्मित, उत्कण्ठित और अतिशय दुःखित हुए। पेउलो और अरसिनो नामके दो इटालियन नौकरोंको भी उसी दिनसे किसीने नहीं देखा कि कहाँ गये। इस घटनाके कुछ दिन पहले जब लेडी हार्डविक इटाली परिभ्रमणके लिए गई थीं, तब वे लौटती बार इन दोनों नौकरोंको अपने साथ ले आई थीं। राल्फ एस्सिटनके साथ-ही-साथ इन दोनों इटालियन नौकरोंके गुम हो जानेके कारण लोगोंने सहज ही सन्देह किया कि राल्फ एस्सिटनके गुम होनेमें इन लोगोंके भी इस तरह गुम हो जानेका कुछ न कुछ सम्बन्ध अवश्य है।

देश भरमें घोर हलचल मच गई। चतुर गुप्तचरोंके दलके दल अनु-संधान करनेके लिए चारों ओर दौड़े। उन्होंने वन, ग्राम और नगरको रत्ती रत्ती छान डाला, पर कहीं कुछ पता नहीं चला। राजकर्मचारियों तथा विमाता और उसके पुत्र फिलिपने एक बहुत बड़े पुरस्कारकी घोषणा की। तथापि राल्फ एस्सिटन और उन इटालियन भृत्योंका कुछ पता नहीं चला।

ज्यों ज्यों घटना प्राचीन हो चली त्यों त्यों उसकी चर्चा भी कम हो चली। हार्डविक-हालकी उत्कण्ठा और शोकोच्छ्वास भावी स्वामीके

आदरसे और उपचारसे बहुत कुछ प्रशमित हो गया । अब एस्सिटनका सौतेला भाई सर जारवेज फिलिफ, हार्डविक-हालका उत्तराधिकारी हुआ। स्टेटके समस्त किसान, कर्मचारी और अन्यान्य प्रजा भोजन-पानसे तृप्त होकर अपने होनहार स्वामी सर जारवेज फिलिफकी दीर्घायुके लिए ईश्वरसे प्रार्थना करने लगी । थोड़े ही दिनोंके अनन्तर यह भी निश्चय हो गया कि सर जारवेज फिलिफ बालिग होते ही हतभाग्य एस्सिटनकी वाग्दत्ता प्रणयिनी कुमारी फिलिशियाका पाणिग्रहण करेंगे; तथा जिस दिन वे पैत्रिक आसन पर स्वामिरूपसे विराजमान होंगे उसी दिन यह शुभ विवाह भी सम्पन्न होगा ।

दुःखके पश्चात् सुख और शोकके पश्चात् उत्सवकी बारी आती है । भावी उत्सवके आयोजनसे हार्डविक-हाल फिर चमक उठा । किन्तु इसी समय उत्सव पर एक अचिन्तित गंभीर विषादकी छाया पतित हुई । हार्डविक हालके सभी नोकर चाकर प्रतिदिन रात्रिके समय अत्यंत भयभीत और व्यस्त होने लगे और यहाँ वहाँ चुपचाप बहुत ही उदास और दुखियोंकी नाई, न जाने किस विषयमें कानाफूसी करने लगे । उनमेंसे कई लोग काम छोड़नेको तो तैय्यार थे, किन्तु रात्रिके समय हार्डविक-हालके किसी किसी स्थानमें—विशेषकर एक खास गैलरीके निकट—जानेके लिए किसी तरह सम्मत नहीं होते थे । तब नौकर-चाकरोंकी इस घबड़ाहटके मूलमें मनकी कल्पनाके सिवा क्या कुछ सत्यता भी है ?

मूलमें सत्यता न होती तो केवल मनगढ़न्त बातें मनुष्य-जीवनके सुख-शांतिके स्रोतमें कभी इतना भयंकर परिवर्त्तन नहीं कर सकतीं । बात छिपी नहीं रही । जिसे छिपानेके लिए इतना यत्न किया गया था, वही बात अब ढोलों पिटने लगी । धीरे धीरे सबको विदित हो गया कि कुछ दिनोंसे हार्डविक-हालके लोग रात्रिको छायामूर्तियोंके विचारणसे बहुत ही तंग हैं । अब वहाँ मनुष्योंका रहना कठिन हो गया है । अवश्य

ही कई लोगोंने अविश्वास करके इन बातोंको उड़ा देनेकी चेष्टा की। जिन्होंने देखे बिना ही विश्वास कर लिया था वे, और जिन्होंने स्वत: अपनी आखोंसे देखा था वे भी, बहुत ही भयभीत और संकुचित हुए। छायामूर्तियोंका दर्शन तथा उपद्रव केवल महलके भीतर ही सीमाबद्ध नहीं था। हाल और हालके बाहर उद्यान तथा वनभूमिमें सर्वत्र ही अत्यंत भयानक दृश्य दिखाई देने लगे। मकानके भीतर, रात्रिके समय, लम्बी पोशाकसे ढँकी हुई और मूछोंवाली दो भयानक छायामूर्तियाँ घूमा करती थीं। यद्यपि वे किसीसे कुछ कहती नहीं थीं, किन्तु जलते हुए अंगारोंकी नाई विकट दृष्टिसे वे जिसकी ओर दृष्टिपात करती थीं, वहीं आकस्मिक भय और विस्मयसे अवश, स्तंभित अथवा एकाएक मूर्छित हो जाता था। मकानके बाहर जो कुछ दिखाई देता था, वह शिकारकी निम्नलिखित घटनासे प्रकट होगा।

एक दिन हार्डविक-हालके उत्तराधिकारी सर आरवेज फिलिफ शिकार खेलनेके लिए बाहर निकले। साथमें सैकड़ों सेवक और पारिषद थे। फिलिफ एक तेज घोड़ेपर सवार थे। उनकी भावी पत्नी, सुन्दरी फिलिशिया उनके दाहिने बाजू एक दूसरे घोड़े पर जा रही थीं। उनके पीछे भी अनेक अश्वारोही भद्र पुरुष और भद्र महिलायें थीं। घोड़ोंकी हिनहिनाहट, शिकारी कुत्तोंकी भयावनी भों-भों, और पैदल शिकारियोंकी शिङ्गा-ध्वनिसे वनभूमि शब्दमय हो रही थी। चारों ओर हँसीकी हिलोरें, आमोदके उच्छ्वास, विनोदकी लहरें और वीरत्वकी वाहवाहियाँ उठ रही थीं।

सबसे पहले एक हिरणका बच्चा शिकारियोंके सामने आया। वह प्राणोंके भयसे व्याकुल होकर विद्युद्वेगसे भागा। फिलिफ हार्डविक, प्रसन्नमुखी फिलिशियाके साथ उसके पीछे दौड़े। उनके पीछे सवारोंका समूह था। उस ऊँची-नीची विषम वनभूमिमें उन लोगोंने भी अपने अपने

घोड़े छोड़ दिये । वे लोग इतने आगे निकल गये कि वहाँसे हार्डब्रिक-हालका शिखर भी नहीं दिखाई देता था। जाते जाते एक अनुरागकी बात कहनेके लिए फिलिफने पीछे मुड़कर फिलिशियाकी ओर देखा। उस समय उन्हें दिखाई दिया कि उनके पीछे उन्हींके समान शीघ्रगतिसे एक सवार और आ रहा है। अच्छी तरह निहारकर देखा—यह घुड़सवार और घोड़ा अन्य घुड़सवारों या घोड़ोंके समान नहीं है। सवार और घोड़ेमें गति थी, किन्तु शब्द नहीं था, सब अंग प्रत्यंग थे, किन्तु वे जड़ परमाणुओं द्वारा गठित नहीं थे । अश्वारोही और अश्व मानों दोनों ही बाष्पमय छायामूर्ति थे । फिलिफको रोमांच हो आया । उसका तेज घोड़ा भी स्तम्भित होकर रुक रहा। छायामूर्तिके मुखसे एक भी शब्द नहीं निकला, किन्तु वह घोड़ेकी पीठ पर निश्चलतासे बैठी हुई फिलिफकी सङ्गिनी युवतीकी ओर गंभीर घृणा और तिरस्कारव्यंजक दृष्टिसे देखने लगी। युवती देखते ही काँप उठी और छायामूर्तिके मुँहकी ओर देख कर पहचान गई। उसके प्राण सूख गये, क्षणभरके भीतर ही उसके मुखमंडल पर एक बड़ा भारी परिवर्त्तनसा हो गया।

इसके पश्चात् छायामूर्तिने अपने जलते हुए दोनों नेत्र फिलिफकी ओर फिराये, और भृकुटि—कुटिल विकट मुखभङ्गीसे अँगुलीद्वारा एक समीपवर्त्ती स्थानको बतलाया। उस स्थानकी घास और लतायें उखड़ी हुई और जमीन छिन्न भिन्न थी। छायामूर्तिने अँगुलीके इशारेसे मानो यही कहा—"देखो, यह वही स्थान है।"

फिलिफके काँपते हुए प्राण भी इस भयानक इशारेसे समझ गये कि—"हाँ—यही तो वह स्थान है।"

फिलिफ घबराकर चिल्ला उठा । घोड़ा भी भयके मारे अधीर और उच्छृंखल होकर उछलने लगा । सवारोंमेंसे और भी बहुतसे लोगोंने छायामूर्त्तिके इस दृश्यको देखा और वे भी अत्यंत विस्मित और स्तंभित

हो रहे। चारों ओर एक तरहकी आतंककी ध्वनि हुई। फिलिफ अपने आपको और न सँभाल सका, वह मूर्च्छित होकर गिर पड़ा और उसका खूनसे लथ-पथ शरीर जमीन पर लोटने लगा। समीपवर्त्ती सवारोंने नौकरोंको पुकारा। नौकर दौड़े आये। वे फिलिफको कन्धोंपर रखकर घरकी ओर ले चले। फिलिशिया धराशायी तो नहीं हुई थी, किन्तु उसका मुँह पीला पड़ गया था, हृदय-जोर जोरसे धड़क रहा था और भयके मारे सारा शरीर काँप रहा था। एक सवार उसके घोड़ेको लगाम थामकर सावधानीके साथ ले चलने लगा। कहीं वह गिर न पड़े, इस आशंकासे उसे दोनों ओरसे दो आदमी पकड़कर चलने लगे। इस प्रकार फिलिशिया अपने विश्राम-भवनमें पहुँचाई गई। इस तरह एक क्षणभरके भीतर शिकारका हर्ष-कोलाहल विषादके रूपमें परिणत हो गया। जो लोग पीछे रह गये थे, उन्हें कुत्तोंकी अवस्था बहुत ही विचित्र, विस्मयकर और आतङ्कजनक जान पड़ी। वे छाया-मूर्त्तिके दिखलाये हुए उस स्थान पर बारबार घूम-घूमकर जाते थे और उस स्थानकी मिट्टीको नखोंसे खोद-खोदकर, सूँघ-सूँघकर कभी क्रोधसे भोंकने लगते और कभी विलापके स्वरसे चीत्कार करने लगते थे। कुत्तोंकी घ्राणेन्द्रिय बहुत तीव्र होती है। जब वे बारबार उस जमीनको सूँघने और नखोंसे खोदने लगे और जब उस जगहकी मिट्टी भी कुछ ढीली पाई गई, तब लोगोंके मनमें एक प्रबल संदेह हुआ। वे सब उस जगह इकट्ठे हो गये। कुदाली और फावड़ा मँगाया गया। तीन चार आदमी उस जगहको खोदने लगे। खोदनेपर जो कुछ दिखाई दिया उससे उनके नेत्र स्तम्भित हो रहे--माथा चकरा गया। उस जगह राल्फ एस्सिटनकी मृतदेह पड़ी थी--जिसमें जगह जगह गहरे घाव लगे हुए थे, अंग प्रत्यंग कुचले हुए, और रक्त तथा कीचड़से लथ-पथ थे। सबका प्यारा राल्फ एस्सिटन इस स्थानमें, ऐसी निष्ठुरतासे मारा गया है, यह भयंकर शोकावह सत्य इस समय सब तरहसे साफ प्रकट हो गया।

शिकारीसमूहके हार्डविक-हालमें वापिस आनेके पहले ही यह भीषण सम्वाद चारों ओर फैल गया। हार्डविक-हालमें भी पहुँच गया। सुनते ही लेडी हार्डविक पर मानों वज्रपात हुआ। देखते देखते उसकी अवस्था अत्यन्त शोचनीय और भीतिजनक हो गई। वह भयंकर चीत्कार करके पागलकी नाईं बाहरकी ओर दौड़ी। पहले वह बारण्डेकी ओर गई और वहाँ जीनेके पासकी गैलरीमें खड़ी होकर लगातार अर्थशून्य प्रलाप करने लगी। इस प्रलापको जिन्होंने ध्यानपूर्वक सुना, वे सब कुछ समझ गये। राल्फ एस्सिटन क्यों, कैसे और किसके भड़कानेसे मारे गये, उक्त प्रलापसे यह सब प्रकट हो गया। उन्मादिनी विधवा जिसे सामने पाती, उसीको अपनी करतूतकी सारी बातें विवरणपूर्वक सुनाती थी। कभी वह धरती पर लेटकर, एक पत्थरके पटियेके पास माथा झुकाकर, अपने उन दोनों इटालियन नौकरोंका नाम खूब जोर जोरसे ले-लेकर पुकारती थी। इससे लोगोंके मनमें एक नये संदेहकी सृष्टि हुई। जब वह पत्थर वहाँसे हटाया गया, तो उसके नीचे एक कब्र दिखलाई दी, जिसमें उन इटालीय नौकरोंकी गलित देह पाई गई। दोनों लाशें विष-प्रयोगसे हरे रंगकी हो गई थीं। लेडी हार्डविकके प्रलापसे उनकी भी हत्या-कहानी प्रकट हो गई।

यहींसे हार्डविकहालकी सुख-समृद्धि और गौरवका सदाके लिए अन्त हो गया। भय, दुःख, घृणा और भावनासे सभी लोग उस स्थानको छोड़कर चले गये। आशायुक्त फिलिफने फिर आशासे उत्फुल्ल होकर आँखें नहीं खोलीं। आनन्दमयी फिलिशियाने भी उस आनन्द-निकेतनमें गृहस्वामिनी बनकर प्रतिष्ठित होनेका अवसर नहीं पाया। हार्डविक-हाल श्मशान-भूमिमें परिणत हो गया और हार्डविक-हालकी शोचनीय कहानी अध्यात्मधर्मके इतिहासमें एक आश्चर्य्यजनक अध्यायके रूपमें ग्रथित हो रही।

दशम अध्याय ।

प्रस्तावना ।

इस अध्यायमें हम दो देशोंकी दो विभिन्न प्रकारकी कहानियाँ लिखते हैं। जो पाठक इन प्रामाणिक कहानियोंको मनोयोगपूर्वक पढ़ेंगे, वे उनमेंसे नीचे लिखीं कई सार सत्य बातोंको जाननेमें समर्थ होंगे।

१ मृत्युका नाम महानिद्रा अथवा महानिर्वाण नहीं है। मृत्युका नाम देह-परिवर्त्तन अथवा दूसरे शरीरकी प्राप्ति है। साँपका शरीर एक बाहरी आवरणसे ढँका रहता है। उसे निर्मोक या केंचुली कहते हैं। जैसे साँप उस केंचुलीको परित्याग करके भी जैसेका तैसा बना रहता है—किसी अंशमें जरा भी परिवर्त्तित नहीं होता, उसी प्रकार मनुष्य भी अपने अस्थि-मांसमय स्थूल शरीरका परित्याग करनेपर सूक्ष्मतर परमाणुओं द्वारा निर्मित सूक्ष्म देहको धारण करके सिरकी चोटीसे लेकर पैरोंके नखों तक ठीक जैसाका तैसा बना रहता है—किसी परिवर्त्तनके अधीन होकर किसी अंशमें भी वह कोई दूसरा मनुष्य नहीं बन जाता है।

२ मृत्युके पश्चात् जिस प्रकार आकृतिमें परिवर्त्तन नहीं होता, उसी प्रकार किसीकी प्रकृतिमें भी सहसा कोई परिवर्त्तन नहीं होता। जो अत्यंत बुरा, मूर्ख, मनुष्योंको दुख देनेवाला और सुख-शांति मिटानेवाला है, वह अग्निदग्ध स्वर्णकी नाईं, आत्मद्रोहजनित अनुतापकी परिशोधक अग्निमें जल-जलकर क्रमक्रमसे अच्छा होता है—क्रमशः पवित्र, प्रशान्त, प्रेमभक्तिपूर्ण और परोपकारी देवपुरुष होकर उन्नति-लाभ करता है। किन्तु किसी व्यक्तिका ऐसा परिवर्त्तन एक ही दिनमें नहीं हो जाता—क्रम क्रमसे होता है;—क्रमसाध्य यत्न, साधना और बहुत अनुतापके पश्चात् बहुत दिनोंमें होता है। जिस समय प्रकृतिमें ऐसा

वांछित परिवर्तन होता है, उस समय आकृति भी अत्यंत सुन्दर, ज्योत्स्नाके समान शीतल और दूसरोंको आनंददायक हो जाती है। जबतक ऐसा नहीं होता तबतक वह यहाँ जैसा था, परलोकमें भी वैसा ही बना रहता है और यहाँ जिसके प्रति जैसा अनुरक्त या विरक्त था, वहाँ भी उसके प्रति वैसा ही अनुरक्त अथवा विरक्त रहता है।

३ इहलोक और परलोक, अथवा पृथ्वी और अध्यात्म-जगत् दोनों ही धर्मराज्यके अन्तर्गत हैं—धर्मप्रतिष्ठाता जगदीश्वरके मङ्गलमय शासनके अधीन हैं। मनुष्य यहाँ धर्मको उल्लंघन करके चल सकता है; परन्तु वहाँ यह बिलकुल ही संभव नहीं है। क्यों कि वहाँ सभी सबकी पार्थिव जीवनसम्बन्धिनी समस्त बातें प्रत्यक्षके समान जानते हैं—और जानकर जो जिस प्रकारके आदरसम्मानके योग्य होता है, उसका उसी प्रकार आदरसम्मान करते हैं। वहाँ केवल यही एक विशेष बात है कि वहाँ कोई किसीका अपकार नहीं करता, सभी सबका उपकार करनेके लिए व्याकुल रहते हैं।

इस अध्यात्मकी पहली कहानीमें जिसकी कथा लिखी गई है वह स्त्री परलोकमें जाकर भी सुख-शान्ति नहीं पा सकती है। कारण कि, उसका हृदय ऋणकी यंत्रणासे पीड़ित है। ऋण थोड़ा है, किन्तु वह है तो ऋण ही। दूसरी कहानीकी आदिसे लेकर अंत तककी सारी कथा एक दुःसह दुःखकथा है। जिसके दुःखी जीवनकी दुःखमय कथा उसमें लिखी गई है वह परलोकमें जाकर भी अपनी प्राणोंसे प्यारी आश्रित बालिकाकी विपत्ति और दुःखसे आत्मविस्मृत है। पाठक इन दोनों कहानियोंसे अनेक शिक्षा तथा परीक्षा करनेयोग्य बातें जान सकेंगे।

आत्मिक-कहानी।

१ आत्माकी शान्ति।

स्काटलैंडकी राजधानी एडिनबरासे ४३ मील दूर टे नदीके दाहिने किनारे पार्थ नामका एक पुराना नगर है। इस पार्थ नगरमें फौजी छावनीके समीप दो दुःखिनी विधवायें रहती थीं। एकका नाम एनी सिम्सन (Anne Simpson) और दूसरीका मालय (moloy) था। एनी और मालय एक घरमें नहीं रहती थीं; एक दूसरेकी बहुत ही पास रहनेवाली पड़ौसिनें थीं। दोनों ही प्रौढ़ा थीं। एनी सिम्सनके कोई नहीं था, मालयके भी अपना कहने योग्य कोई नहीं था। परस्पर कोई नाता न रहने पर भी दोनोंमें बड़ा सौहार्द था। अपनी अपनी आजीविका चलानेके लिए दोनों ही दिनभर परिश्रम करती थीं और अवकाशके समय दोनों एक जगह बैठकर अपने अपने दुःख-सुखकी बातें कह-सुन कर थकावट मिटाया करती थीं।

कुछ दिनोंके अनन्तर मालय बीमार हुई। बीमारी कठिन थी। एनीकी शुश्रूषा और अश्रुपूर्ण बातचीत उसकी रक्षा नहीं कर सकी। मालयकी मृत्यु हो गई। बेचारी निराश्रिताकी खबर लेनेवाला कौन था? भिक्षावृत्तिसे जीवन धारण करनेवाली एक दुःखिनीकी मृत्युसे किसके प्राण आकुल होंगे? मालय चुपचाप चली गई। एनीके एकबिन्दु अश्रु और एक नीरव निश्वाससे उसका अन्तिम संस्कार हुआ। एनीके और कोई नहीं था; दुःखिनीकी एक मात्र दुःख-सङ्गिनी मालय थी, सो वह भी आज परलोकके अंधकारमें जा छिपी। एनी अब बिलकुल अकेली रह गई।

एनी सारे दिन भोजन-वस्त्रकी फिकरमें नाना स्थानोंमें घूमा करती और रात्रिको अपनी कुटीमें आकर विश्राम करती थी। पर अब इस रात्रिके विश्राममें भी विघ्न उपस्थित हुआ। मालयकी मृत्युके कुछ दिन

पश्चात् एक रात्रिको एनीकी नींद सहसा खुल गई । घरमें दीपक टिम टिमा रहा था । उसके मंद प्रकाशमें उसे दिखाई दिया कि शय्याके पास मालय खड़ी है । वही मुख था, वही चितवन थी और वे ही मलिन वस्त्र थे, किन्तु उसका मुख आज अत्यंत कातर और दुखी था । एनी देखकर चौंक उठी । वह सोचने लगी कि मैं यह क्या देख रही हूँ—यह क्या आँखोंका भ्रम है ! उसने दोनों हाथोंसे नेत्र मलकर फिर दृष्टि डाली । देखा, वही मूर्ति उसी प्रकार खड़ी है । शरीरमें रोमांच हो आया; भयसे उसके नेत्र मिंच गये ।

छायामूर्त्तिने कहा—“ एनी, किसे डरती हो ? अच्छी तरह देखो—मैं तुम्हारी वही पड़ौसिन दुखिनी मालय हूँ । तुम जानती ही हो कि संसारमें मेरा कोई नहीं है—कुछ भी नहीं है । बहन, मैं तुमसे एक भिक्षा माँगती हूँ । ”

उस परिचित मूर्तिको प्रत्यक्ष देखकर और उसके मुँहसे ये बातें स्पष्ट सुनकर एनी अत्यंत भयभीत हो गई । उसे नेत्र खोलनेका साहस नहीं हुआ । अंतको बहुत कुछ साहस करके एनीने कंपित स्वरसे कहा—“ क्या तुम सचमुच मालय हो ? तब क्या तुम अब भी जीवित हो ? ”

छायामूर्त्तिने कहा—“ तुम्हारे हिसाबसे मेरी मृत्यु हो गई है । मैं इस समय भी, जैसी थी, वैसी ही हूँ । किन्तु कष्ट पहलेकी अपेक्षा बहुत बढ़ गया है । बहन, क्या तुम मेरा कुछ उपकार करोगी ? मैं कुछ ऋण छोड़ गई हूँ । वह अधिक नहीं है—केवल तेरह आनेका है । यही ऋण मेरे लिए दुःख और अशान्तिका कारण बन गया है । इस ऋणके कारण मुझे यहाँ क्षणभरके लिए भी चैन नहीं मिलती । एनी, तुम मेरे लिए कुछ परिश्रम करो, किसी पादरीको खोजकर उन्हें मेरे ऋणका वृत्तान्त सुनाओ । वे दुखिनी समझकर मुझपर कृपा करेंगे और अवश्य ही मेरा ऋण चुका देंगे । ”

अब एनीने कुछ साहस करके नेत्र खोले। देखा, तो वहाँ छायामूर्त्ति नहीं है। एनीका भय और विस्मय दूर नहीं हुआ। उसने जो देखा, जो सुना, वह स्वप्न है या विभीषिका; कुछ भी उसकी समझमें नहीं आया। बाकी रात उसने जागते जागते ही बिताई।

इस दिनसे रातको जब एनी शय्या पर जाकर लेटती थी, तब माल-यकी छायामूर्ति नित्य उसके पास आती और ऋणकी बात किसी धर्म-पुरोहितसे कहनेके लिए बारंबार अनुरोध करती थी। छायामूर्तिके उत्पीडनसे एनीको रात भर नींद नहीं आती थी। दिनको भी उसे शांति नहीं थी, अपने दैनिक कार्य्यके सिवा पुरोहितकी खोजमें भी उसे जगह जगह भटकना पड़ता था।

इसी समय रेवरेण्ड चार्ल्स मेके पार्थ शायर नगरके रोमनकैथलिक मिशनके अधिकारी बनकर वहाँ आये। एनी यह खबर पाकर शीघ्र ही उनके पास पहुँची और उनको रीत्यनुसार प्रणाम करके दूर खड़ी हो गई।

धर्माचार्यने पूछा—"तुम क्या चाहती हो बेटी?"

एनीने कहा—"महाशय, आज सात आठ दिनसे एक छायामूर्तिके आविर्भावसे मैं अत्यंत दुःख पा रही हूँ और उक्त भयसे छुटकारा पानेकी अभिलाषासे आपके पास आई हूँ। आपकी सहायताके विना मेरा यह कष्ट किसी प्रकार दूर नहीं हो सकता।"

धर्माचार्यने कहा—"तुम कैथलिक हो?"

एनीने कहा—"नहीं महाशय, मैं प्रेसबिटिरियन हूँ।"

धर्माचार्य—"तो फिर तुम मेरे पास क्यों आई? मैं तो कैथलिक सम्प्रदायका गुरु हूँ।"

एनी—जो स्त्री मुझे नित्य रातको दिखाई देती है वह मुझसे जो कोई धर्म्माचार्य मिले उसीके पास अपना वृत्तान्त कहनेका अनुरोध

किया करती है । मैं एक सप्ताहसे धर्माचार्यकी खोजमें जगह जगह भटक रही हूँ।

धर्मयाजकने कहा—"वह धर्माचार्यके निकट जानेका अनुरोध क्यों करती है ?"

एनीने कहा—"वह कहती है कि मैं कुछ ऋण छोड़ आई हूँ, धर्माचार्य्य उसे चुका देंगे।"

धर्माचार्य—ऋण कितना है ?

एनी—केवल तेरह आने।

धर्माचार्य—ये तेरह आने किसे देने हैं ?

एनी—यह मैं नहीं जानती, उसने मुझसे नहीं कहा।

धर्म्मयाजक—तुमने स्वप्न तो नहीं देखा ?

एनीने कहा—"नहीं महाशय,—कभी नहीं। धर्म साक्षी है, यह बात कभी स्वप्न नहीं हो सकती। वह प्रति रात्रिको मुझे दर्शन देकर बारंबार इस ऋणके विषयमें कहा करती है । मैं स्वप्न क्या देखूँगी, मुझे रात्रिको एक क्षणके लिए भी निद्रा नहीं आती।"

धर्म्मयाजकने कहा—"क्या वह स्त्री तुम्हारी परिचित थी ?"

एनीने कहा—"हाँ, वह मेरी पड़ोसिन थी । हम दोनों छावनीके समीप दो जुदी जुदी झोपड़ियोंमें रहती थीं। वह प्रति दिन मुझसे मिलती जुलती और बातचीत किया करती थी । उससे मुझे कुछ स्नेह भी हो गया था। उसका नाम मालय था।"

धर्म्मयाजकने अनुसन्धान करके जाना कि मालय कपड़े धोनेका काम करती थी। मालय किसकी ऋणी है, यह जाननेके लिए उन्हें थोड़ासा परिश्रम करना पड़ा। वह जिस मोदीकी दूकानसे खाने-पीनेकी वस्तुयें मोल लिया करती थी उसके पास जाकर पूछा, तो मोदीने कहा—"मुझे

मालयसे कुछ पाना है; परंतु कितना पाना है, इसकी मुझे याद नहीं।"
इसके बाद मोदीने उसका खाता खोलकर देखा और हिसाब लगाकर कहा--"मालय पर केवल तेरह आने पैसे निकलते हैं।"

धर्म्माचार्य्यको बड़ा विस्मय हुआ। उन्होंने चट तेरह आने पैसे निकालकर मोदीको दे दिये। मालय ऋण-मुक्त हो गई। एनीसे पूछनेपर विदित हुआ कि ऋण चुकनेके दिनसे छायामूर्त्तिने फिर कभी दर्शन नहीं दिये।

उक्त धर्म्माचार्य महाशय स्रुजबेरी (Shrewsbury) के काउण्टके गुरु और मित्र थे। इस छायादर्शनकी विचित्र कहानीकी सत्यताके संबंधमें वे, स्रुजबेरीकी काउण्ट-पत्नी, और काउण्टके मित्र Anatomy of Melancholy (विषाद-विश्लेष तत्त्व) नामक ग्रन्थके रचयिता विख्यात पंडित डाक्टर विम्स, उत्तरदाता हैं। डाक्टर विम्सने अपने ग्रन्थमें लिखा है कि इस विषयकी इससे अधिक प्रामाणिक घटना हमारी दृष्टिमें नहीं आई। इस जगह प्रश्न हो सकता है कि और भी सहस्रों मनुष्य ऋणग्रस्त अवस्थामें इस संसारको छोड़कर चले जाते हैं, किंतु वे मालयके सदृश ऋण चुकानेके लिए क्यों नहीं आते? इसका उत्तर यही है कि वे प्रवृत्ति, शक्ति और सुयोगके अभावसे अथवा वहाँ ही महाजनकी कृपासे क्षमा पा जानेके कारण नहीं आते हैं। इसके सिवा और भी न जाने कितने अज्ञात कारण हो सकते हैं। उन्हें कौन बतला सकता है?

२ आश्रित-वात्सल्य।

काले सागरके किनारे,--सुसभ्य जगतसे दूर, छोटी छोटी पहाड़ियोंके ऊपर ओडेसा नामका एक सुन्दर नगर बसा हुआ है। ओडेसा (odessa) रूस-साम्राज्यका चौथा नगर है। इस समय उसकी मनुष्यसंख्या तीन लाखसे कम न होगी। उसमें गरीबोंका निवास समु-

द्रके पास नीची भूमि पर और धनी लोगोंका निवास समुद्रसे कुछ दूर उच्च भूमि पर है। इस नगरमें लकड़ीका कारबार बहुत होता है। एक लकड़ीके कारखानेके समीप एक वृद्धकी झोपड़ी थी। वृद्धका नाम माइकेल था। वह अन्धा था। वह अपने सामने एक काष्ठका पात्र रखकर रास्तेके समीप बैठा रहता था। रास्ता चलनेवालोंमेंसे जिसे दया आती थी वह उसके काष्ठपात्रमें पैसा धेला डाल देता था। इस प्रकारकी भिक्षासे उसे जो कुछ थोड़ा बहुत मिल जाता था, उसीके द्वारा वह अपना निर्वाह किया करता था।

माइकेलके कोई नहीं था। अंधेके हाथकी लकड़ी पकड़कर उसे दूर बसनेवाले धनी लोगोंके द्वारों तक ले जाया करे, ऐसा कोई नहीं था। इसी लिए वह एक जगह बैठकर जो कुछ पाता था उसीसे अत्यंत कष्टके साथ अपना जीवन निर्वाह करता था। प्रत्येक मनुष्यका कुछ न कुछ परिचय हो ही जाता है। धीरे धीरे लकड़ीके कारखानेवाला अंधा भी सर्व साधारणके निकट परिचित हो गया—उसे सब जानने लगे। अंधा माइकेल युवावस्थामें बड़ा साहसी योद्धा था। वह युद्धस्थलमें अनेक बार आहत हुआ था। कहते हैं कि एक बार गोलीके आघातसे उसके दोनों नेत्र नष्ट हो गये और उसी दिनसे वह इस दुरवस्थामें आ पड़ा है। वृद्ध माइकेलके सम्बन्धमें लोकोंके मुँहसे ही ये बातें सुन पड़ती थीं, किन्तु वह इस जन-रव-रचित उपन्यासके सम्बन्धमें एक बात भी नहीं कहता था। वह बैठे बैठे चुपचाप सुनता और सुनकर चुप हो रहता था।

एकबार रात्रिके समय अंधेकी झोपड़ीके सामने एक क्षीण कंठसे निकली हुई अत्यंत करुणाजनक रोदन-ध्वनि सुनाई दी। अंधेने द्वार पर आकर हाथके स्पर्श द्वारा जाना कि एक दुबली पतली और वस्त्रहीना बालिका धरती पर पड़ी हुई है। रूसके प्रबल शीतसे नदियाँ जमकर स्फटिक पत्थरसे पटे हुए चौड़े राजमार्गोंकी नाई शोभा देने लगती हैं और

शरीरकी शिराओंमें रक्तका बहना बन्द हो जाता है। दुःसह शीतके कारण बालिकाका शरीर थर थर काँपता था। मुँहसे बात नहीं निकलती थी। पेटमें अन्न नहीं था। उठने बैठनेकी शक्ति चली गई थी। मालूम पड़ता था कि उसकी अंतिम घड़ी निकट आ रही है। आँखें खोलकर देखती नहीं थी, और किसी प्रकारके शब्द या संकेत द्वारा भी अपने मनका भाव प्रकट नहीं कर सकती थी। उसके हृदयकी धड़कन भी धीरे धीरे मंद पड़ती जाती थी। बालिकाके दुःखका अनुभव करके वृद्धके अंधे नेत्रोंसे आँसू गिरने लगे। ये आँसू नहीं—मंदाकिनीकी अमृतधारा थी। 'तुम कौन हो बेटी, जो इस अवस्थामें इस अक्षम अंधेके द्वारपर आकर धूलमें पड़ी हो?' यह कहकर वृद्ध बालिकाको गोदमें उठाकर झोपड़ीके भीतर ले गया।

वृद्धके यत्न, शुश्रूषा और अग्निके उत्तापसे बालिका धीरे धीरे कुछ सचेत हुई। वृद्धने जाना कि बालिकाका नाम पोलस्का (Powleska) है। उमर दश वर्षकी है। अभागिनीके माता, पिता, भाई, बंधु, आदि कोई नहीं है। निराश्रिता और दुखिनी बालिक आज मुमूर्षु अवस्थामें वृद्ध अंधेकी गोदमें माथा रखकर बच गई।

अंधेने बालिकाको अपनी कन्याके समान कुटीरमें आश्रय देकर रख लिया। पितृहीन दुखिनी बालिका भी बूढ़से बाबा बाबा कहकर अपने कोमल प्राणोंको शीतल करने लगी। अंधा बालिकाको, और बालिका अंधेको पाकर कृतार्थ हुई। इस समय दोनों ही परम सुखी हैं। अब अन्धा रास्तेके समीप बैठकर पथिकोंकी दयाकी प्रतीक्षा नहीं करता, बालिका भी अब रात्रिके घोर अंधकारमें बिना भोजन-वस्त्रके अनाथकी नाई मारी मारी नहीं फिरती। बालिका अंधेकी आँख और लाठी थी, एवं अन्धा, बालिकाका पिता माता और एक मात्र आश्रय था। अब अन्धा पोलस्काकी सहायतासे धनी लोगोंके द्वारों पर जा-जाकर भिक्षा

माँगने लगा । उसके दिन विशेष सुखके साथ कटने लगे। देखते देखते पाँच वर्ष व्यतीत हो गये । बालिका अब पन्द्रह वर्षकी बुद्धिमती सयानी लड़की है ।

किन्तु विश्व-रहस्यके अज्ञात नियमानुसार उसके भाग्यने फिर पलटा खाया । एक दिन सबेरे उक्त अंधा और बालिका दोनों एक घर भिक्षा माँगनेके लिए गये थे । उसी समय उस घरमें चोरी हो गई । पुलिसने गृहस्वामिनीके कथनानुसार संदेह करके पोलस्काको पकड़ा और उसकी भीखकी झोलीमेंसे चोरीकी चीज भी बरामद कर ली । चोरीका प्रत्यक्ष प्रमाण पाकर पुलिस पोलस्काको पकड़कर उसी समय ले गई । अंधा फिर अकेला रह गया । अंधे नेत्रोंसे उसे और भी भयावह अंधकार दिखाई देने लगा ।

इसी दिनसे अकस्मात् अंधा भी अदृश्य हो गया । वह कहाँ चला गया, इसका किसीको कुछ भी पता नहीं मिला । अंधेके इस प्रकार सहसा गायब हो जानेसे उस पर भी चोरीका संदेह हुआ । ऐसा अनुमान करके कि बालिकाको उसके चले जानेका भेद मालूम होगा, वह मजिस्ट्रेटके समीप उपस्थित की गई । मजिस्ट्रेटने पूछा—" तुम कह सकती हो कि माइकेल कहाँ है ? "

बालिकाने कहा—" वे अब इस संसारमें नहीं हैं । " इतना कहकर बालिका दोनों हाथोंसे मुँह ढँककर फूट-फूट कर रोने लगी ।

बालिका तीन दिनसे हवालातमें बंद है । बाहरसे उसे कोई खबर नहीं मिली । तथापि वह दृढ़ताके साथ कहती है कि माइकेलकी मृत्यु हो गई । केवल मुँहसे कहती ही नहीं, कहते कहते वह पितृहीन बालिकाके समान दुःखित हृदयसे रो भी देती है । यह सचमुच ही बड़े विस्मयकी बात है ।

मजिस्ट्रेटने फिर पूछा—" माइकेल मर गया है, यह बात तुमसे किसने कही ? "

बालिका—किसीने नहीं।

मजिस्ट्रेट—तो फिर तुमने कैसे जाना कि वह मर गया है?

बालिका—मैंने उन्हें मारे जाते देखा है। उनकी हत्याकी गई है।

मजिस्ट्रेट—तुम तो हवालातसे बाहर नहीं हुई, फिर तुमने देखा कैसे?

बालिका—तो भी सचमुच ही मैंने उनकी हत्या होते देखी है।

माजिस्ट्रेट—यह कैसे संभव हो सकता है। इस बातको अच्छी तरह समझाओ, देखें।

बालिका—यह मुझसे नहीं होगा। मैं केवल इतना ही कह सकती हूँ कि मैंने मार डालते देखा है।

मजिस्ट्रेट—किस समय और किस प्रकार उसको मार डाला?

बालिका—मैं जिस समय पकड़ी गई हूँ, उसी समय।

मजिस्ट्रेट—यह कैसे हो सकता है? तुम जिस समय पकड़ी गई उस समय तो वह जीवित था।

बालिका—हाँ, था। मेरे पकड़े जानेके एक घंटे बाद उनकी हत्या की गई है। उन लोगोंने उन्हें छुरीसे मारा है।

मजिस्ट्रेटका विस्मय धीरे धीरे बढ़ता जाता था। उन्होंने पूछा—“तुम उस समय कहाँ थीं?”

बालिका—यह नहीं जानती; किन्तु मैंने यह देखा है।

बालिका जैसे दृढ़ विश्वाससे बातें करती थीं, उससे उसकी बातों पर अविश्वास करनेको जी नहीं चाहता था। किन्तु उसकी बातें ऐसी असंभव और अयौक्तिक थीं कि सुननेवाले उन पर विश्वास भी नहीं कर सकते थे। उन्होंने अनुमान किया कि बालिका या तो पागल हो गई है, या पागल बन रही है। इसके पश्चात् माइकेलके संबंधकी बातें छोड़कर उन्होंने चोरीके सम्बन्धमें प्रश्न करना प्रारंभ किया।

मजिस्ट्रेट—अच्छा, ये बातें रहने दो। तुमने चोरी की है?

बालिका—नहीं-नहीं-नहीं, चोरीका हाल मैं कुछ नहीं जानती।

मजिस्ट्रेट—तो फिर तुम्हारी झोलीमें चोरीकी वस्तु कहाँसे आई?

बालिका—यह मैं नहीं जानती। मैंने माइकेलकी हत्याके सिवा कुछ नहीं देखा।

मजिस्ट्रेट—माइकेल मारा गया है ऐसा अनुमान करनेका कोई कारण दिखाई नहीं देता। यदि वह मारा गया होता तो उसकी लाश अवश्य पाई जाती।

बालिका—क्यों, नहरमें ही तो उनकी लाश पड़ी है।

मजिस्ट्रेट—तुम कह सकती हो कि उसकी हत्या किसने की है?

बालिका—हाँ, कह सकती हूँ। एक स्त्रीने उनकी हत्या की है। पुलिसके द्वारा माइकेलके पाससे मेरे छीन लिये जाने पर वे अकेले धीरे धीरे चले जा रहे थे। उस समय एक स्त्री भी एक तेज छुरा लिये हुए उनके पीछे पीछे जा रही थी। माइकेल समीपहीमें किसीके पैरोंकी आहट पाकर ज्यों ही पीछेकी ओर लौटे, त्यों ही उस स्त्रीने उनके सिर पर मैले रंगका एक वस्त्र डालकर उनका मुँह ढँक दिया और फिर वह उन्हें छुरा मारने लगी। लगातार आठ आघात सहकर बाबा जमीन पर गिर पड़े। वह मैले रंगका वस्त्र रक्तसे भीग गया था। स्त्रीने उसे नहीं निकाला। वह जैसा मुँह पर लिपटा था उसी प्रकार लिपटा रहा। फिर वह उस मृतदेहको झट खींचकर पासकी जल-प्रणाली या नहरमें फेंक कर चली गई।

मजिस्ट्रेटने देखा कि उसकी इन बातोंकी सत्यताकी परीक्षा करना सहज है। अतः उसने उसी समय जल-प्रणाली * देखनेके लिए कई

* रूस-राज्यमें डिनिस्टर (Dniester) नामकी एक नदी है। वह नदी ओडेसासे २७ मील दूर है। डिनिस्टरसे नहर (Aquiduct) या जल-प्रणाली द्वारा पानी आता है और वही जल ओडेसामें व्यवहृत होता है।

आदमी भेजे। बड़े ही आश्चर्यकी बात है कि बालिकाने जिस प्रकार कहा था ठीक उसी अवस्थामें मैले रंगके वस्त्रसे ढँके हुए सिरवाली एक लाश नहरमेंसे निकाली गई। वह लाश और किसीकी नहीं—माइकेल-हीकी थी।

माइकेलकी लाश मिलने पर मजिस्ट्रेटने फिर पूछा—"सच कहो, तुमको ये सब बातें कैसे विदित हुईं?" उसने केवल यही उत्तर दिया—"मैं यह कह नहीं सकती। मैंने आँखोंसे जो कुछ देखा है, वही कहती हूँ।"

मजिस्ट्रेट—अच्छा, जिसने हत्या की है तुम उसका नाम जानती हो?—उसे पहचानती हो?

बालिका—नाम ठीक नहीं कह सकती। जिस स्त्रीने उनकी आँखें फोड़ी थीं उसीने उनकी हत्या की है। आज रातको उन्होंने ये सब बातें मुझसे स्पष्ट कहनेके लिए कहा है। यदि वे कहेंगे, तो कल आपसे सब कह दूँगी।"

मजिस्ट्रेट—"वे कौन?"

बालिका—"और कौन, वही माइकेल;—निश्चय ही वही माइकेल।"

मजिस्ट्रेटने बालिकाको हवालातमें ले जानेकी आज्ञा दी। बालिका चली गई। वह सारी रात क्या करती है और क्या कहती है, यह अच्छी तरह जाननेके लिए मजिस्ट्रेटने चुपचाप कई चतुर मनुष्य नियुक्त कर दिये।

पहरेवालोंको भी बड़ा कुतूहल था। वे यथार्थ बात जाननेके लिए बहुत उत्सुक थे। उन्होंने देखा कि बालिकाको नींद नहीं आई। कुछ तो एक प्रकारके अवसादमें और कुछ निद्राके भावमें उसने सारी रात बैठे-ही-बैठे बिता दी। शरीर साधारणतः स्पन्दनरहित होनेपर भी, बीच बीचमें स्नायुओंकी उत्तेजना या हलचल हो उठती थी और ऐसा

मालूम होता था कि वह मानो सामनेकी ओर देखती हुई अस्फुट स्वरमें किसीसे बातचीत कर रही है। दूसरे दिन इस रिपोर्टके साथ बालिका मजिस्ट्रेटके सामने उपस्थित की गई। मजिस्ट्रेटके सामने आते ही वह बोली—"मैं हत्या करनेवालीको पहिचान गई हूँ और उसका परिचय भी पा गई हूँ। अब मैं उसका नाम बतला सकती हूँ।"

मजिस्ट्रेट—अच्छा, मैं तुमसे जो पूछता हूँ उसीका उत्तर देना। माइकेलकी आँखें कैसे फूट गई थीं, क्या जीवित अवस्थामें इसके विषयमें उसने तुमसे कुछ कहा था?

बालिका— नहीं। जिस दिन मैं पकड़ी गई हूँ, उसी दिन सबेरे उन्होंने मुझसे कहा था कि मैं तुम्हें इसका सारा हाल सुनाऊँगा और उनका यह कहना ही उनकी मृत्युका कारण हुआ।

मजिस्ट्रेट—यह उसकी मृत्युका कारण कैसे हुआ?

बालिका—गत रातको बाबा मेरे पास आये थे। उस दिन जो जो घटनायें हुई थीं वे उन सबको मुझे दिखला गये हैं। बाबाने जिस जगह बैठकर अपने नेत्र फूटनेकी सारी कहानी मुझे सुनानेकी इच्छा प्रकट की थीं, ठीक उसी जगह एक आदमी छुपा हुआ ये सब बातें सुन रहा था। वह ये बातें सुनकर ही—

मजिस्ट्रेटने बालिकाको बीचहीमें रोककर पूछा—"तुम उस मनुष्यका नाम बतला सकती हो?"

बालिका—उसका नाम (Lack) लाक है। लाक माइकेलकी ये बातें सुनकर एक चौड़े मार्गकी ओर मुड़कर जाने लगा। वह मार्ग जहाज ठहरनेके घाटकी ओर गया है। फिर कुछ दूर जाकर वह दाहिने ओरके तीसरे घरमें घुस गया।

मजिस्ट्रेट—तुम उस स्ट्रीटका नाम जानती हो?

बालिका— नहीं मैं स्ट्रीटका नाम नहीं जानती। किन्तु उस स्ट्रीटके

उसी मकानके मनुष्यके साथ एक स्त्रीकी जो बातचीत हुई और उसके पश्चात् जो कुछ हुआ है, वह सब मैं कल रातको बाबाके पाससे प्रत्यक्षके समान जान गई हूँ और उसे अच्छी तरहसे कह सकती हूँ।

मजिस्ट्रेट और न्यायालयके सभी मनुष्य ये बातें जाननेके लिए उत्सुक थे। मजिस्ट्रेटने कहा-" कहो, कहो,-तुम जो कुछ जानती हो सब खोल कर कह दो। " तब बालिका आँखोंमें आँसू भरकर धीरे धीरे कहने लगी,—

" मैं पहले कह चुकी हूँ कि लाक हम लोगोंकी बातें सुनकर चला गया था और जहाज-घाटके निकटवर्त्ती स्ट्रीटके एक घरमें घुस गया था। उसने इस मकानके एक कमरेमें झाँककर देखा, एक स्त्री उसकी प्रतीक्षामें बैठी हुई है। स्त्रीका नाम कैथरिन है। कैथरिनने कहा-' क्यों लाक ! उसके पेटकी बात जान ली ? ' लाकने कहा-' हाँ, जान ली है और जानकर मैं बहुत ही भयभीत हो गया हूँ। कैथरिनने कहा-' तो अब विलम्ब करना उचित नहीं है। जिस प्रकार बन सके आज उसका अंत कर ही देना चाहिए। अन्यथा सब बातें प्रकट हो जायँगीं। ' लाकने कहा-' नहीं, नहीं, मैं इस कामको न कर सकूँगा-किसी प्रकार न कर सकूँगा। माइकेलने हमारा क्या बिगाड़ा है ? पन्द्रह वर्ष हुए जब यह बेचारा तुम्हारे घरके द्वार पर पड़ा सो रहा था। उस समय मैंने तुम्हारे कहनेसे उसके दोनों नेत्र फोड़कर अत्यंत पापकर्म किया था। और अब हत्या करनी होगी ! नहीं, नहीं,-यह काम मुझसे न हो सकेगा '। "

बालिका कहती जाती थी और अदालतके सब आदमी कान लगा कर उसके कथनका एक एक अक्षर ध्यानपूर्वक सुनते जाते थे। अदालतमें बहुत लोगोंका जमाव था, किन्तु सभी चित्रलिखेसे निस्पन्द और नीरव हो रहे थे।

मजिस्ट्रेट—इस प्रकारकी बातचीतके पश्चात् फिर क्या हुआ ?

बालिका—इसके कुछ समयके बाद ही हम दोनों इसी कैथरिनके घर भिक्षा माँगनेके लिए गये। कैथरिनने एक प्लेट लाकर मेरी झोलीमें डाल दिया और फिर हल्ला कर दिया कि मेरा प्लेट चोरी गया है। इसके पश्चात् कैथरिन एक तेज छुरा लेकर जल-प्रणालीके पास जाकर छिप रही। इतनेमें ही मैं पुलिसके द्वारा पकड़ी गई और उधर कैथारिनने छुरेके आघातसे बाबाको मार डाला।

मजिस्ट्रेट—अच्छा, जब तुम ये सब बातें जानती थीं बेटी, तब तुमने झोलीमें प्लेट क्यों रक्खा ? और इस विषयमें कोई बात पहले क्यों नहीं कही ?

बालिका—महाशय, आप भूल रहे हैं। मैं उस समय यह सब कुछ भी नहीं जानती थी। बाबा कल रात्रिको ही मुझे ये सब बातें प्रत्यक्ष-के समान दिखलाकर अच्छी तरह समझा गये हैं।

मजिस्ट्रेट—अच्छा, यह बात पीछे होगी। किन्तु कैथरिनने ऐसा दुष्कर्म्म क्यों किया ? माइकेल उसका कौन था ?

बालिकाने सिर नीचा करके कहा—"कैथरिन बाबाकी स्त्री है। वह उन्हें परित्याग करके और किसी पुरुषको ग्रहण करनेकी अभि-लाषासे ओडेसा भाग आई और लाकके साथ रहने लगी। तब वे भी उसका पता लगानेके लिए ओडेसामें आ पहुँचे। एक दिन कैथरिन, उन्हें देखकर गुप्तरीतिसे अपने घरमें छिप रही। उन्होंने भी उसे देख लिया, परन्तु कैथरिनने मुझे नहीं देख पाया है इस खयालसे उसकी गति-विधिदेखनेके लिए वे उसके दरवाजेके पास छिप रहे। किन्तु सहसा उन्हें नींद आगई। उन्हें नींदमें अचेत पाकर लाकने उनके दोनों नेत्र गरम शलाकाओंसे फोड़ दिये और उन्हें वह दूर स्थानपर रख आया।"

मजिस्ट्रेट—माइकेलने क्या सचमुच ये बातें तुमसे कही हैं ?

बालिका—हाँ उन्होंने कही हैं। कारागारमें वे मुझे पहले भी देख-

नेको आये थे, और कल रातको भी उन्होंने मुझे दर्शन दिये थे। देखा, वे बहुत कातर--बहुत दुःखी हैं। मुँख पीला पड़ गया है, सारा शरीर रक्तसे लथ-पथ है। उन्होंने मेरा हाथ पकड़कर अपने शरीरके सब घावोंको अँगुली रख रख कर दिखलाया है और अपनी समस्त दुःख--कहानी कह सुनाई है।

इसके पश्चात् लाक और कैथरिन पकड़ी गईं। माजिस्ट्रेटका मन बिलकुल संशयहीन नहीं था। उसने और भी अनुसन्धान करनेका प्रयत्न किया। मालूम हुआ कि खारसन नामक स्थानमें सचमुच ही कैथरिनके साथ माइकेलका विवाह हुआ था और कैथरिन उसे परित्याग करके किसी अन्य शहरको भाग गई थी।

कैथरिन और उसके प्राणोंके साथी अथवा पापके साथी लाकने पहले तो अपराध स्वीकार नहीं किया, किन्तु पोलस्काने जब उनकी दृष्टिसे दृष्टि मिलाकर आँखों देखीहुईके समान दृढ़ताके साथ एक एक करके सब घटनायें कह सुनाईं और जब वह अपने हृदयके उद्वेगसे रोने लगी, तब क्या लाक और क्या कैथरिन किसीके मुँहसे एक बात भी न निकली। उस समय दोनों ही अपने किये हुए पापोंको स्वीकार करने पर बाध्य हुए। न्यायाधीश और दर्शक सभीके मनमें एक अचिन्तनीय विस्मय उत्पन्न हुआ। उस समय ओडेसाकी अदालत दर्शकोंसे खचाखच भरी थी। प्रायः सभी उपस्थित लोग माइकेलके अतीत जीवन और आत्मिक पुरुषकी गवाहीके विषयमें नाना बातें कहकर भय और भक्तिसे भगवानका नाम ले रहे थे। जो धार्मिक थे, वे ऊपरकी ओर देखकर, अँगुलीसे इशारा करके एक दूसरेसे ऊपरकी ओर दृष्टिपात करनेके लिए कहते थे। सभी समझ गये कि जगदीश्वरके इस अनन्त धर्म-राज्यमें अंतमें धर्महीकी जय होती है।

एकादश अध्याय।



प्रस्तावना।

जिस प्रकार आकाशके अनन्त विस्तारमें ज्योत्स्नामयी चन्द्रमूर्त्ति सुशोभित होती है, उसी प्रकार पृथ्वीमें आनंदमयी रमणी मूर्त्ति शोभा पाती है। स्नेहवती रमणीका स्निग्ध शीतल मधुर रूप चन्द्रमाके प्रशान्त स्निग्ध विचित्र रूपसे भी कई अंशोंमें श्रेष्ठ है। क्योंकि चन्द्रमाका रूप निर्जीव निस्पन्द और सुशिक्षिता, उन्नतहृदया, पवित्रचित्ता, स्नेह-दया-वती रमणीका रूप सजीव वस्तु है। चन्द्रमाके रूपमें तिथिक्रम और मेघ-समागम आदिके कारण उत्पन्न हुए चिरपरिचित परिवर्त्तनके सिवा और किसी प्रकारके परिवर्त्तनकी संभावना नहीं है; किन्तु रमणियोंके हृदयमें क्षण क्षणमें प्रेम-स्नेह अथवा प्रेम-भक्तिकी नई नई तरंगें उठा करती हैं और उन तरंगोंका प्रतिबिम्ब उनकी मुखच्छविपर पड़ कर एक अपूर्व सौन्दर्य्यको प्रकट करता है। रमणीका अनूप सौन्दर्य्य वास्तवमें विधाताकी एक आश्चर्य्य रचना है। किन्तु यह सब होनेपर भी रमणियाँ मानव-समाजमें आज भी तिरस्कृत, लांछित और विडम्बित होती हैं, तथा नाना प्रकारकी छलनाओं और प्रवंचनाओं द्वारा ठगी जाती हैं। जैसे चन्द्रमाके रूपमें कलंक है, उसी प्रकार रमणियोंका चरित्र भी समाजकी अनेक प्रकारकी अवस्थाओंमें, ऐसा नहीं है कि कलङ्क-चिह्नोंसे चिह्नित न हुआ हो। ऐसे ही कलंकित चित्रोंकी ओर दृष्टि रखकर कविने दुःखके साथ कहा है—"Frailty, thy name is Woman." किन्तु जो सब स्त्रियाँ, आकृति और प्रकृतिमें देवताओंके समान हैं, जो स्नेह-भक्तिकी प्रत्यक्ष मूर्त्ति अथवा मूर्त्तिवती आराधना हैं,—पवित्रता ही जिनके हृदयका स्वाभाविक धर्म है,—जो दूसरोंकी भला-

ईके लिए अपनी समस्त सुख-शांति और यहाँ तक कि अपने शरीर और प्राणोंको भी उत्सर्ग करनेसे नहीं चूकतीं,-जिनके दर्शनमात्रसे मनुष्यके हृदयकी कलुषित लालसायें भय और लज्जासे अपने आप ही संकुचित हो जाती हैं और अत्यंत पापिष्ठ भी अपने हृदयमें उच्च और पवित्र भावके आकस्मिक स्फुरणसे एक प्रकारके अपूर्व आनंदका अनुभव करने लगता है, ऐसी देवस्वभावा रमणियाँ या देवकन्यायें भी इस पृथ्वीपर आकर मनुष्योंके पैरों द्वारा पीसी या प्रेम-छलना द्वारा क्यों ठगी जाती हैं ? इसका उत्तर मानव-जाति या मानव-समाजका क्रम-विकाश है। समाजमें जहाँ इस समय भी पशुशक्ति अधिक प्रबल है— जहाँ पशुभावका प्रभुत्व और आधिपत्य है, वहाँ देवत्वकी पूजा हो कैसे सकती है ?

मनुष्यसमाजकी पहली अवस्थामें पाशवी शक्ति ही पूज्य गिनी जाती थी। जो व्यक्ति पशुबलसे बली, और असुर अथवा दानवोंके समान परपीड़नमें समर्थ थे, वे ही उस समय समाजके प्रभु अथवा राजा माने जाते थे। इस समय भी ऐसे अनेक राजा पृथ्वीके अनेक स्थानोंमें आदिम असभ्य जातियोंमें और कहीं कहीं सुसभ्य जातियोंके बीच भी अलक्षित स्थानोंमें दिखाई देते हैं। ये लोग दूसरोंकी वस्तुयें छीन कर खाते और दुर्बल पड़ोसियोंका सर्वस्व लूटकर आनंदसे खिलखिला कर हँसते हैं। इन लोगोंके निकट अथवा इन लोगोंके समाजमें कोमल प्रकृति अबलाओंका आदर कभी नहीं हो सकता।

पाशवी शक्तिके बाद धन-बलका प्रभाव है। शरीरमें वैसा बल न रहने पर भी यदि घरमें अपार धन संचित हो, तो वह मनुष्य भी समाजका अगुआ—सर्व साधारणका प्रभु—अथवा सर्व शक्तिमान् राजा—बन जाता है। अमेरिकामें इस समय भी इस प्रकारके अनेक धनकुबेर समाजके ऊपर आधिपत्य करते और सुशिक्षिता सुन्दरी युवतियोंके रूप

और यौवनके साथ पिशाचके समान क्रीड़ा करते हैं। समाज उनका कुछ नहीं कर सकता। समाजके लोग उनके पैरोंका नख छूनेमें भी असमर्थ हैं। समाज जब बिलकुल हीनावस्थामें अवस्थित रहता है तब केवल रमणियाँ ही लाञ्छित नहीं होतीं, किन्तु रमणियाँ जिन सब गुणोंके कारण समाजकी मुकुट-मणि समझी जाती हैं उन्हीं सब गुणोंसे विभूषित अर्थात् स्नेह, दया, भक्ति और करुणासे युक्त ऋषि, योगी अथवा महापुरुष भी पशुबल अथवा धनबल द्वारा अतिशय पीड़ित होते हैं। इनमेंसे कोई कोई इसी पीड़नकी प्रबलतासे अपने प्राणोंको खोकर साधु-सज्जनोंके अश्रु-तर्पणद्वारा अपनी आत्माको शांत करते हैं।

वास्तवमें इस समय समाज जिस अवस्थाको पहुँच गया है उसमें अनेक जगह प्रकाश और अंधकार दोनों परस्पर मिले हुए दिखाई देते हैं। समाजमें कहीं पूर्णिमाकी चाँदनी और कहीं भूत-पिशाचोंके वासयोग्य अंधकार छाया हुआ है। कहीं शंकराचार्य और चेनिंग, पार्कर और कार्लाइलके समान उन्नत-मस्तक सरलहृदय साधुओंका प्रेमालाप और कहीं कपट-प्रीति अथवा प्रेमगन्धि छलनाका घृणित आलाप सुनाई देता है। छायादर्शनके इस अध्यायमें हम कपट-प्रीतिकी एक सत्य और मर्म-स्पर्शिनी कहानी लिखते हैं। इस कहानी या घटनासे पाठकोंको ज्ञात होगा कि सरल स्नेहवती तथा ईश्वरपरायणा रमणियाँ आज भी प्रेमके नामसे कैसी ठगीं जातीं और पुरुषोंके घृणाजनक अत्याचारसे पीड़ित होकर किस प्रकार आँखोंसे आँसू बहाती हुई अपने प्राण विसर्जन करती हैं। इसके सिवा यह भी मालूम होगा कि इस लोकके पश्चात् परलोक है या नहीं, और उस परलोकमें ऐसी प्रतारित स्त्रियाँ देवपुरुषोंके न्याय-विचारसे सुख, शांति और सद्गति पाती हैं या नहीं। जिस प्रकार वृन्तच्युत (डंठलसे झड़े हुए) कोमल कुसुम वन्यपशुओं द्वारा पददलित होने पर भी प्रकृतिकी अचिन्त्य महिमासे फिर नई मूर्ति धारण करके जगतके कार्यमें नियुक्त

होते हैं, उसी प्रकार व्रत-धर्मकी ग्रन्थिसे च्युत अबला-कुसुम भी पशुचरित्र पुरुषोंद्वारा पददलित होकर अथवा मनको मोहित करनेवाले प्रलोभनोंमें फँसकर मर्मदाही तुषाग्निसे जलकर प्राणत्याग करते हैं। ये अबला-कुसुम भी दयासागर जगदीश्वरके अचिन्त्य और सूक्ष्मातिसूक्ष्म न्यायकी महिमासे अध्यात्म-जगतके उच्च धाममें उच्चतर जीवनको पाकर कृतार्थ हो सकेंगे या नहीं, कहानीमें इसका भी प्रमाण पाकर ज्ञानपिपासु भगवद्भक्त अवश्य ही विस्मित होंगे।

आत्मिक-कहानी।

निराश प्रेमका निशीथ-संभाषण।

गंभीर रात्रि है। सर्वत्र सन्नाटा छाया हुआ है। कोलाहलमयी पृथिवी मौन तथा शांति धारण किये हुए है। मानों माता अपनी असंख्य संतानोंको हृदयसे लगाकर गंभीर निद्रामें सो रही है। संध्यासमय नगरके उद्यान तथा उपवनोंमें हजारों पक्षी जिन वृक्षोंकी खोहों-खोहों और शाखा-प्रशाखाओं पर बैठकर आनंदसे कलरव करते थे, वे वृक्ष भी इस समय ध्यानमग्न योगी अथवा पृथ्वीकी रक्षा करनेवाले छाया-पुरुषोंके समान चुपचाप खड़े हैं। वृक्षोंके अधिवासी पक्षी भी घोर निद्रामें अचेत हैं। नगरके राजमार्ग भी जीवजन्तुओंके आवागमनसे शून्य हैं। गृहस्थोंके पालतू कुत्ते अवश्य ही बीच बीचमें प्रभुभक्तिका परिचय देनेके लिए पहरेवालोंके समान शब्द करते हैं; किंतु मालूम पड़ता है कि उनका यह शब्द सोती हुई जनताके कानोंमें प्रवेश नहीं करता है। ऐसी गंभीर रात्रिके समय, १६ अगस्त सन १८६७ ई० को इंग्लैण्डके अन्तर्गत हाल नगरके पास होकर बहनेवाली एक छोटी नदीके संकीर्ण तथा सुरम्य पुलके ऊपर एक युवक एक युवतीके पास खड़ा हुआ है।

युवकका नाम आर. डन्स्टन (R. D,onston) और युवतीका

लुइसी है । युवक और युवती दोनों ही कुछ समय पहले नदीके समीपवर्ती उद्यानमें विचरण करके इस पुलपर आकर खड़े हुए हैं । डन्स्टन और लुइसी दोनों ही सुशिक्षित और सुन्दर हैं । डन्स्टन धनसम्पत्ति और मान-मर्य्यादामें कुछ बड़े हैं । लुइसी इस अंशमें कुछ कम होने पर भी प्रकृतिदत्त अनुपम सौन्दर्य-सम्पत्तिमें देवकन्याके समान है । लुइसी पुलके एक किनारेके रेलिंगके ऊपर वामाङ्ग झुकाकर खड़ी है । इस समय वह ऐसी सुशोभित हो रही है, मानो कोई स्वर्गवासिनी देव-ललना किसी मनुष्यको कृतार्थ करनेके लिए पृथ्वी पर अवतीर्ण हुई हो । आकाशमें शरद्का चन्द्रमा अपनी प्रफुल्ल चाँदनीसे जगमगा रहा है और उस चाँदनीको शरीरमें लपेटकर लुइसी भी आज अपने अतुल रूपकी अपूर्व ज्योतिसे जगमगा रही है । किन्तु इस समय लुइसीका मुख-मण्डल अश्रुधारासे धुल रहा है । पाठक पूछेंगे कि इसका कारण क्या है ? नीचे संक्षेपमें इसका कारण लिखा जाता है ।

हम पहले ही कह चुके हैं कि डन्स्टन और लुइसी दोनों ही सुशिक्षित हैं; किन्तु उन दोनोंकी शिक्षामें एक भारी पार्थक्य है । डन्स्टनकी सारी शिक्षाका झुकाव सांसारिक सुख-सम्पत्तिकी ओर है ।—वे सर्वथा हृदय-शून्य न होने पर भी घोर सांसारिक—हरएक बात माप-तौलकर करनेवाले काम-काजी आदमी हैं । उनके हृदयमें निरन्तर इन्हीं बातोंकी चिन्ता रहती है कि किन उपायोंसे संसारमें गण्य-माण्य, धन-मान-वैभव-सम्पन्न यशस्वी बना जा सकता है । इस प्रकारकी वैषयिक चिन्ताके मध्य यदि प्रेम, भक्ति और स्नेह कुछ अंशमें विकसित हो तो भले ही हो जाय, किन्तु मानव-जीवनकी जिस अवस्थामें केवल भक्ति, प्रेम और स्नेह ही सर्वतोभावसे परिपूर्ण रहते हैं उस अवस्थाकी कल्पना ऐसे लोग स्वप्नमें भी नहीं कर सकते ।

किन्तु लुइसी बचपनहीसे प्रेम, भक्ति और स्नेहकी एक जीवन्तमूर्त्ति

है। उसके हृदयमें प्रेम, आत्मामें भक्ति और शरीर तथा मनकी समस्त वृत्तियोंमें स्नेह—वर्षाकालीन नदियोंके उद्वेल, आकुल और कलकल जलके समान भरा हुआ है। घरके बच्चों और सेवकोंकी बात रहने दो, वनके पशुपक्षी भी उसके मधुर स्वभावसे मोहित हैं। उसने अपनी प्रीतिपूर्ण दृष्टि जिसकी ओर डाली है, वही अपने हृदयमें एक अननुभूत आनंदका अनुभव करता है।

स्नेहवती लुइसीकी ईश्वरपर भी प्रगाढ़ भक्ति है। वह बचपनसे ही उपासना करनेमें बहुत प्रीति रखती है। अपने समान उमरकी लड़कियोंके साथ किसी अच्छे कविके बनाये हुए स्तोत्रोंको पढ़नेमें उसे बड़ा आनंद मिलता है। वह अपने सुमधुर कंठसे ईश्वरके गुण गाकर सबको पुलकित करती और कभी कभी एकान्तमें अकेले घुटनोंके बल बैठकर ईश्वराराधन करते करते आँसुओंसे भीग जाती है। उसके इस निर्मल और निःस्वार्थ हृदयमें सांसारिक सुख-सम्पत्तिकी चिन्ताओंको स्थान ही नहीं मिलता। लुइसी बड़ी ही विश्वासवती है। वह स्वयं कभी अविश्वासका कार्य नहीं करती और न दूसरोंके यह कहने पर—आँखमें अँगुली गड़ाकर दिखाने पर भी—कि अन्य लोग विश्वासघातकताद्वारा दूसरोंका सर्वनाश कर सकते हैं–उसे समझ ही सकती है। जिस संसारमें प्रेमपात्र जनपर विश्वास करनेके कारण जूलियस सीजरके समान जगज्जयी शक्तिमान् प्रधान पुरुषोंको भी दुखी होना पड़ा है, यदि उसी जगतमें सरल-हृदया लुइसी अपने अखंड प्रेमके धन और हृदयाराध्य पुरुष पर प्रेम करके इस प्रकार दुःखी हो—विपन्न हो, तो इसमें आश्चर्य्य ही क्या है?

इस गंभीर रात्रिको पुलके ऊपर डन्स्टनकी लुइसीके साथ जो बातचीत हुई उसका कुछ अंश नीचे लिखा जाता है। पाठक इस सम्वादको पढ़कर उक्त युवक-युवतीकी सब बातें—विशेषकर दुःखिनी लुइसीकी हृदयदाही मर्मव्यथा—समझ सकेंगे। लुइसी प्रेमके सब अर्थोंमें

और सब भावोंमें प्रेममयी होने पर भी लालसामयी युवती नहीं है । वह कुछ भाव-विभोरा और उदासिनी है । प्रायः सभी समयोंमें वह भाव-विह्वललोचना, कुसुमाभरणा वनदेवताके समान जान पड़ती है । आज भी वह वैसी ही वनदेवीके समान पुल पर आकर खड़ी है ।

लुइसीने कहा—“ डन्स्टन ! इसी सेतुपर खड़े होकर एक दिन ऐसी ही गंभीर रात्रिके समय मैंने तुमको कविवर लाँग फेलोकी ‘ ब्रिज ’ अर्थात् सेतु नामकी एक कविता सुनाई थी । वह कविता मुझे बहुत प्रिय लगती है । मैं चाहती हूँ आज वही कविता फिर सुनाऊँ । तुम अप्रसन्न तो न होगे ? अनुमति दो तो सुनाऊँ । ”

डन्स्टन—सुनाओ—सुनाओ । कविता सुनानेसे मैं अप्रसन्न क्यों होऊँगा ? कविता तो तुम्हारे प्राण हैं–विशेषकर लाँग फेलोकी प्रायः सभी कवितायें तुम्हें कंठस्थ हैं । तुम एक नहीं दस सुनाओ । किंतु तुम जानती ही हो कि मैं काम-काजी आदमी हूँ । कविताकी अपेक्षा मैं कामकाजकी बातोंसे अधिक अनुराग रखता हूँ । ”

लुइसीने इसका कुछ भी प्रत्युत्तर न देकर एक लम्बी साँस छोड़ दी । इसके बाद उसने वह कविता पढ़ी । कविताकी पहली पंक्ति यह थी—

“ I Stood on the bridge at midnight ” *

पुलके नीचे निर्मल जलवाली नदी, मानिनीके समान कभी क्रोधसे उछल उठती है, कभी धीरे धीरे रोने लगती है,—और कभी जगह जगह चन्द्रमाकी किरणोंके पड़नेसे झलमल झलमल करने लगती है । इधर पुलके ऊपर, मानाभिमान-क्रोधशून्या मर्माहता दुःखिनी युवती प्रियतमके मुँहकी ओर निहारती हुई मानसिक आवेगसे कविता पढ़ रही है । अवश्य ही इस दृश्यको ऊपर देवगण टकटकी लगाकर देख रहे हैं ।

* अर्थात्–गंभीर रात्रिमें हमने पुल पर खड़े होकर—।

कविता समाप्त होनेपर डन्स्टनने कुछ लज्जित और दुःखित होकर कहा—" लुइसी, मैं सचमुच ही बड़ा पापिष्ठ हूँ । मैं सांसारिक जीवनकी गुरुतर आवश्यकताके कारण आज इस पाँच वर्षके प्रणय और प्रणयकी सैकड़ों प्रतिज्ञाओं और प्रीतिपूर्ण अनुष्ठानोंके पश्चात् तुम्हें त्याग कर पार्लियामेंटमें मेम्बर होनेकी लालसासे एक धनी और प्रतिष्ठित जमींदारकी कन्याके साथ विवाह करनेके लिए जा रहा हूँ । ऐसा करना सचमुच ही मेरे लिए पापजनक है। किन्तु क्या करूँ ! माता-पिताका संकल्प जैसा दृढ़ है, मेरी यशोवासना भी वैसी ही दुर्निवार है । यदि परलोक सचमुच ही कुछ है, तो मैं अवश्य ही दंडित होऊँगा । क्योंकि मेरे अनन्त मधुर वाक्योंसे मोहित होकर तुमने मुझ पर जैसा प्रेम किया है, वैसा प्रेम मैं इस जीवनमें और कभी, कहीं भी, न पा सकूँगा । "

लुइसीने बहुत ही कातर स्वरसे कहा—" देखो डन्स्टन, इहकालके पश्चात् निश्चय ही एक परकाल है और परलोकके सम्बन्धमें साधारणतः जितनी बातें सुनी जाती हैं वे भी प्रायः सत्य हैं । किन्तु मैं परकाल और परलोकका भय दिखाकर तुम्हें अपनी उच्चाभिलाषाके मार्गसे हटानेके लिए उपदेश नहीं देना चाहती । यदि मैं तुम्हारे सुखके मार्गमें काँटा हुई तो फिर मैंने तुम पर प्रेम ही क्या किया ? और मेरा यह प्रेम निःस्वार्थ ही कैसे हुआ ? "

यह कहते कहते लुइसीने रो दिया । इसके बाद उसने आँसू पोंछकर और कुछ स्थिर होकर कहा—" सुनो प्रियतम, जिस दिन पहले पहल तुमको चाहा था उस समय मैं एक अस्फुट बालिका थी । मैंने अपने बाल्य और यौवनके संधिकालमें, अपने इन अधरों पर तुम्हारे सुधामय प्रेमार्द्र चुम्बनको प्राप्त करके, जिस दिन पतिज्ञानसे तुम्हें आलिंगन किया था—पति समझकर मैं तुम्हारे इस वक्षस्थलपर लोट गई थी, मैं उस समय जो थी इस समय भी वही हूँ । मैं अपनी चिन्ता नहीं करती ।

क्योंकि मेरा यह वर्तमान दग्धजीवन रातदिन दीर्घ श्वासोंहीमें क्षयित होगा। किन्तु मुझे एक बड़ा भय है। यद्यपि कहनेकी इच्छा नहीं होती, तथापि कहे बिना भी नहीं रहा जाता। मेरे मनमें सचमुच ही यह भावना उठती है कि, तुम जिस आशाके वशवर्ती होकर इस जीवनसङ्गिनी अथवा प्रेमकी दासीका परित्याग करते हो, तुम्हारी वह आशा भी पूर्ण न होगी। ऐसी दशामें यदि अंतमें किसी प्रकार तुम्हें दुःसह मनस्ताप होगा, तो मेरी अपेक्षा तुम्हारे लिए और कौन अधिक व्याकुल होगा?"

डन्स्टन—तुम जो कहती हो वह सर्वथा मिथ्या नहीं है। जिसके साथ मेरा विवाह निश्चित हुआ है वह एक बड़े धनी घरकी लड़की है। पिताके अमित वैभवकी वही एक मात्र उत्तराधिकारिणी है। वह न तो तुम्हारे समान रूपवती है और न तुम्हारे समान शिक्षिता और सरलहृदया है। वह बहुत अभिमानिनी और दंभ दिखलानेवाली है। मुझे यह विश्वास नहीं है कि मैं उसकी मनस्तुष्टि कर सकूँगा। किन्तु मेरे माता-पिताको दृढ़ विश्वास है कि उसके साथ मेरा विवाह-सम्बन्ध होते ही मैं पार्लियामेण्टमें प्रवेश कर सकूँगा और शीघ्र ही बड़ा मनुष्य होकर देशविख्यात हो जाऊँगा। मातापिताकी इस इच्छामें बाधा देनेका मुझे किसी प्रकार साहस नहीं होता।

लुइसी—अच्छा, ऐसा ही हो; तुम्हारे माता-पिताकी मनोवांछा पूर्ण हो। मैं अपने दो दिनके जीवनको अपनी निर्जन अँधेरी कोठरीमें शून्य हृदयसे पड़ी रहकर काट लूँगी और सदैव तुम्हारी मंगल-कामना करती रहूँगी। यदि कभी तुम्हारे सुख-समाचार ही सुन पाऊँगी तो उसीसे विशेष सुखी हो सकूँगी।

डन्स्टन—क्यों लुइसी, दो दिनका जीवन क्यों कहती हो? अभी तो तुम्हारी उमर केवल १९ ही वर्षकी है और ईश्वरकी कृपासे तुम रूप और गुणोंमें अतुलनीया हो। मेरे साथ तुम्हारे विवाहकी बात

स्थिर हो जानेके कारण अभीतक अन्य युवक तुम्हारे प्रणय-प्रार्थी नहीं हुए हैं, किन्तु यह बात जब सब लोगोंको विदित हो जायगी तब, सैकड़ों सुन्दर और धनी युवक आग्रहके साथ तुम्हारे प्रणय-प्रार्थी होंगे। उनमेंसे तुम किसी एक युवकको चुन करके विवाह कर लोगी, तो तुम्हारे सब दुःख दूर हो जायँगे।

लुइसीने फिर एक गंभीर निःश्वास फेंक कर कहा—"हाँ, दुःख दूर हो जायँगे अवश्य, किन्तु नहीं कह सकती कि मेरे हृदय, मन, प्राण और आत्माकी क्या गति होगी। परमेश्वरने मुझे जैसी चित्तवृत्ति देकर उत्पन्न किया है, उसके अनुसार मैं एक जीवनमें दो पुरुषोंको पतिभावसे प्रेमपुष्पाञ्जलि देनेमें सर्वथा असमर्थ हूँ। और प्रकृत सत्यको छुपाकर मैं इस देहको फिर किसी दूसरेको स्पर्श करने दूँ, यह असंभव है। हा जगदीश्वर! क्या मैं तुम्हारी दृष्टि बचाकर ऐसा गर्हित कार्य्य कर सकती हूँ?

डन्स्टन—अच्छा तो तुम क्या करोगी?

लुइसी—पतिप्राणा सतीकी नाँई केवल तुम्ही पर प्रेम करूँगी—तुम्हारी उसी प्राचीन प्रीतिपूर्ण मूर्त्तिका सदैव ध्यान करूँगी और प्रतिदिन परमेश्वरके निकट भिखारिनीकी नाई हाथ जोड़कर तुम्हारे कल्याणकी भिक्षा माँगते माँगते, ग्रीष्मकी गरमीसे मुरझाये हुए कुसुमकी नाई वृन्तच्युत होकर, कालके गालमें चली जाऊँगी।

डन्स्टन—छिः! लुइसी, तुम अपने इस रूप लावण्यमय नवयौवनके अथवा जीवनके प्रथम उन्मेषके समय ऐसी विषाद और दुःखकी बातें कह कर मेरे हृदयको मत दुखाओ। मैं नियमानुसार तुम्हारे साथ विवाह करनेकी प्रतिज्ञासे आवद्ध हूँ। यदि तुम चाहो तो तुम मेरे लिखे हुए उस प्रतिज्ञापत्रको अपने पिताके हाथमें दे दो। वे मुझे तुम्हारे साथ विवाह करनेके लिए बाध्य कर सकते हैं, अथवा मेरे नवीन ब्याहके प्रस्तावमें भारी आघात पहुँचाकर क्षतिपूर्तिस्वरूप प्रचुर धन ले सकते

हैं। किन्तु तुम तो सांसारिक लोभ-लालसाओंसे रहित पुण्यमूर्ति हो ! तुमने निषेध नहीं किया, बल्कि एक प्रकारकी मौन-सम्मति दे दी है, यह समझकर ही मैं उस जमीन्दारकी कन्याके साथ विवाह करनेके लिए अग्रसर हुआ हूँ। तुम विवाहकी उस पुरानी प्रतिज्ञाको पूर्ण करानेके सिवा आज मुझसे जो कुछ भी प्रार्थना करोगी, मैं उसे अवश्य पूर्ण करूँगा। "

लुइसी—करोगे ?

डन्स्टन—हाँ करूँगा।

लुइसी—सचमुच प्रतिज्ञापालन करोगे ?

डन्स्टन— हाँ, सचमुच ही प्रतिज्ञापालन करूँगा।

लुइसी—अच्छा तो तीन बार शपथ करके कहो कि, मैं प्रतिज्ञा पालन करूँगा ?

डन्स्टन—मैं तीन बार शपथ करके कहता हूँ कि, अपने विवाहकी पहली प्रतिज्ञाके सिवा आज तुम मुझसे जिस विषयका अनुरोध करोगी, यदि वह मेरी शक्तिभर साध्य होगा, तो मैं उसे अवश्य ही मान लूँगा।

इसी समय समीपवर्त्ती गिरजामें टन् टन् करके बारह बजे। लुइसी-ने कहा—" सुनो, गिरजाकी घड़ीमें १२ बजे हैं। यह बड़ा भयानक समय है। सुना है कि ऐसी ही गंभीर रात्रिमें देवतालोग मनुष्योंका सुखदुःख जाननेके लिए पृथ्वी पर विचरण किया करते हैं। मनुष्य इस समय जो प्रतिज्ञायें करते हैं, उन्हें देवगण कान देकर सुनते हैं। प्रियतम !—हाँ, इसके सिवा और किस शब्दसे तुम्हें पुकारूँ ?—प्रियतम—प्राणाधिक, तुम देवताओंको साक्षी करके और मेरा हाथ पकड़कर प्रतिज्ञा करो कि मैं आजसे ठीक १२ महीनेके पश्चात् ऐसी ही रातको, इसी पुल पर, तुम्हें दर्शन दूँगा और उस दर्शनके दिनसे फिर ठीक १२ महीनेके पश्चात् अर्थात् परवर्त्ती २६ वीं अगस्तको एकबार फिर तुम्हें इसी जगह दर्शन दूँगा। मैंने इस कलकलवाहिनी नदीके तीरपर पहले

पहल तुम पर प्यार करना सीखा था, अतः इसी नदी पर इस पुल पर इस जीवनमें तुमसे दो दिन और संभाषण करके मैं तुमसे सदैवके लिए बिदा लूँगी। कहो प्रियतम, तुम मेरी इस इच्छाको पूर्ण करोगे या नहीं? इसके सिवा मैं तुमसे और कुछ नहीं चाहती।"

डन्स्टन प्रार्थनाकी निःस्वार्थता, पवित्रता और गंभीरताको देखकर कुछ समयके लिए स्तम्भित हो रहा। फिर स्थिर होकर कहने लगा–" हाँ, मैं सन् १८६८ और १८६९ की २६ वीं अगस्तको इसी समय इसी पुल पर उपस्थित होकर तुम्हें दर्शन दूँगा। किन्तु एक बात है, यदि मैं मर गया या तुम्हारा स्वर्गवास हो गया तो?"

लुइसी— कहो कि जीवित अथवा मृत (dead or alive)–जिस अवस्थामें जो रहेगा वह उसी अवस्थामें प्रतिज्ञाके समय पर इस स्थल पर आकर एक दूसरेसे साक्षात्कार करेगा।

डन्स्टन लुइसी पर भक्ति रखता था। भक्तिका कारण लुइसीकी उच्च शिक्षा, उदारता, भाव-गंभीरता और उसके चरित्रकी निःस्वार्थ-निर्मलता थी। साथ-ही-साथ वह उससे कुछ भय भी खाता था। भयका कारण लुइसीकी एक प्रकारकी उदासीन दृष्टि और पागलों जैसी अलौकिक-प्रियता थी। लुइसी कभी कभी आकाशकी ओर भावाविष्टके समान देखा करती थी। किसी किसी दिन किसी देवात्माके दर्शन पानेके कारण उसके नेत्र अश्रुपूरित हो रहते थे और वह नाना प्रकारकी विस्मय-जनक बातें कहती थीं। इन सब अवसरोंपर डन्स्टन भक्तिके साथ-ही-साथ भयके आकस्मिक संमिश्रणसे चकित होकर लुइसीके मनोहर मुखकी ओर आश्चर्यसे देखने लगता था। वह आज भी उसी भय और भक्तिके उद्रेकसे आत्मविस्मृत होकर कुछ समय तक उसके मुँहकी ओर ताकता रहा और अंतमें प्रतिज्ञा करके कहने लगा–" मैं जीवित या मृत जिस अवस्थामें होऊँगा, उसी अवस्थामें प्रतिज्ञाके समय पर तुमको दो बार

अवश्य दर्शन दूँगा । " इस प्रतिज्ञाके पश्चात् वे दोनों युवक-युवती दो भिन्न भिन्न रास्तोंसे चले गये । यह कहनेका प्रयोजन नहीं कि उससमय डन्स्टनका हृदय एक नये भावसे अभिभूत हो गया ।

पाठकोंसे एक बात नहीं कही गई । डन्स्टन हाल-नगरका निवासी नहीं था। वह सैनिक सिपाही था और सेनाविभागके किसी कार्यसे कुछ दिनोंसे इस नगरमें रहता था। इंग्लैंडमें इस प्रकारके सैंकड़ों प्रतिष्ठित युवक सेना-विभागमें काम करते और समय पर उन्नति प्राप्त करके बड़े आदमी बन जाते हैं। डन्स्टन हाल-नगरमें पहले लुइसीके समीपके ही एक घरमें रहता था। इसी सूत्रसे उसका लुइसीके साथ परिचय, प्रणय और चिरस्थायी प्रेम-प्रतिज्ञाका विनिमय हुआ था। इस समय वह समाजमें प्रतिष्ठा और उच्चासन प्राप्त करनेकी अभिलाषासे इंग्लैण्डके उत्तर प्रदेशमें रहनेवाले एक समृद्ध जमींदार (लार्ड) की कन्याके साथ विवाह करनेकी कोशि-शमें है। इसी लिए वह सावधानीके अनुरोधसे लुइसीके घरसे कुछ दूर जाकर रहने लगा है। डन्स्टनकी नई प्रणयिनीका पूरा नाम पुस्तकमें नहीं मिला । जान पड़ता है लेखकने जमींदारके सम्मानकी ओर दृष्टि रखकर ही ऐसा किया है। उसने केवल यही लिखा है कि वह लड़की माता पिताकी इकलौती लड़की और विशाल सम्पत्तिकी उत्तराधिकारिणी थी। उसका नाम Miss K. था। किन्तु हम 'मिस के०' न लिखकर मिस केरी नामसे उसका उल्लेख करेंगे।

देखते देखते एक वर्ष बीत गया। सन् १८६८ की वह प्रतिज्ञावाली २६ वीं अगस्त क्रम-क्रमसे समीप आने लगी । डन्स्टन इस समय भी लुइसीके रूप-मोह और निःस्वार्थ प्रेमके आकर्षणसे बिलकुल मुक्त नहीं हुआ है। वह उससे मिलते जुलते तो रहना चाहता है, किन्तु उसे भय है कि कहीं इस गुप्त-मिलनका समाचार किसी प्रकार मिस केरीके कानों तक न पहुँच जाय, नहीं तो मेरी प्रबल उच्चाशा एक बार ही मिट्टीमें

मिल जायगी और फिर उसके साथ मेरा विवाह होना कठिन हो जायगा। जो हो, डन्स्टनने प्रतिज्ञाकी पालना की । वह रात्रिको १२ बजनेके कुछ पहले ही उस पुलपर जाकर लुइसीके आनेकी प्रतीक्षा करने लगा।

डन्स्टनको बहुत समय तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। कुछ ही मिनिटके पश्चात् लुइसी वहाँ आ पहुँची। उसके खुले हुए केश लहरा रहे थे और वह भावोंके आवेशसे विह्वलसी हो रही थी। डन्स्टनके प्रेममें उन्मत्त सी होने पर भी आत्मसम्मानकी रक्षाके लिए वह उससे कुछ दूर हटकर खड़ी हुई। डन्स्टनने पूछा—" क्यों लुइसी, मैंने प्रतिज्ञाका पालन किया न? कहो, कोई नई बात कहना है ? "

लुइसीने उत्तर दिया—" नहीं, और नई बात कुछ नहीं कहना। यदि तुम अपनी शेष प्रतिज्ञा भी इसी तरह पूर्ण कर दोगे तो बस उसीसे मेरे संतप्त प्राण शीतल हो जायँगे। मैं आजसे फिर एक एक करके बारह महीने उँगलियोंपर गिनती रहूँगी और आगामी २६ वीं अगस्तको ठीक इसी समय इसी स्थान पर उपस्थित होकर तृषित नेत्रोंसे तुम्हारे आनेकी प्रतीक्षा करूँगी। इस तरह वर्षभरके उपरान्त एक बार और भी तुम्हारी मुखच्छविको देखकर तुमसे सदैवके लिए विदा ले लूँगी।

डन्स्टनने कहा—" नहीं—नहीं, लुइसी, अब मैं किसी प्रकार न आ सकूँगा। अभी आया हूँ, इसीसे मुझे डर लग रहा है। मैं तुमसे कह चुका हूँ कि मिस केरी बहुत ही अभिमानिनी और सहज ही अप्रसन्न हो जानेवाली है। यदि वह घुणाक्षर-न्यायसे भी इस गुप्त-मिलनकी बात जान जायगी तो फिर उसके साथ मेरा विवाह न हो सकेगा। "

लुइसी प्रत्युत्तरमें कुछ न कहकर बहुत ही विषण्णमुख और विषादपूर्ण नेत्रोंसे डन्स्टनकी ओर देखने लगी।

डन्स्टनने कहा—" तुम्हारे मुँहसे तो ऐसा मालूम होता था, मानों तुम कुछ कहना चाहती हो, फिर चुप क्यों हो रही ? "

लुइसीने कहा—"कहनेके लिए तो सहस्रों-लाखों बातें हृदयमें भरी हुई हैं, वे सब बातें तुम्हारे निकट इस जीवनमें कहाँ कह पाई ? किन्तु एक बात कहे बिना नहीं रहा जाता। तुम परलोक नहीं मानते, मैं मानती हूँ। केवल मानती ही नहीं, बल्कि परलोकको कई अंशोंमें प्रत्यक्षके समान सत्य जानती हूँ। मैं पहले जब किसी उज्ज्वलकान्ति अध्यात्म देहीको एकाएक देखती थी, तब सब ही उसे आँखोंका भ्रम कह कर उड़ा देना चाहते थे। किन्तु अब यह बात उड़ाई नहीं जा सकती। मेरे जो सब कुटुम्बीजन परलोकवासी हो चुके हैं, उनमेंसे मैंने एक व्यक्तिकी छायामयी अध्यात्म-मूर्तिको, आजसे एक महीने पहले, दिनके प्रखर प्रकाशमें, देखी है और कानोंसे उसके मुँहकी बातचीत भी सुनी है। उसने तुम्हारे सम्बन्धमें और मेरे सम्बन्धमें दो विशेष बातें कही हैं। प्रियतम, इस विषयमें अब जरा भी सन्देह नहीं रहा है कि परलोकवासी आत्मायें पृथ्वीपर रहनेवाले मनुष्योंके अदृष्ट (भाग्य या होनहार) के सम्बन्धमें पहलेसे ही थोड़ा बहुत जान लेती हैं। जिसने मुझे दर्शन दिये हैं, उसे मैं देखते ही पहिचान गई थी। मैं उसका नाम न बतलाऊँगी, क्योंकि वह तुम्हें भी पहिचानती है और तुम्हारे-हमारे प्रेमके इतिहासको भली भाँति जानती है। उसने तुम्हारे सम्बन्धमें जो भविष्यवाणी कही है, वह मेरे मुँहसे निकलती नहीं।"

डन्स्टन—अब अधिक भूमिका बढ़ाकर मुझे कष्ट मत दो, उसने क्या कहा है, झट कह डालो।

लुइसी—उसने कहा है कि तुम पर शीघ्र ही कोई सांघातिक विपत्ति आनेवाली है; और तुम जिसके साथ विवाह करनेके लिए इतने आतुर हो रहे हो वह तुम्हें नहीं चाहती। उसके साथ तुम्हारा विवाह न होगा।

लुइसीकी बातें सुनकर डन्स्टनके मुखपर कुछ उदासी छागई। वह कहने लगा—"अच्छा, मेरे भाग्यमें जो लिखा होगा सो होगा। मैं

सैनिक पुरुष हूँ; विघ्न विपत्ति कष्ट आदि मेरे नित्यके सहचर हैं। किन्तु यह सुनाओ कि तुम्हारे विषयमें उसने क्या कहा है ? ”

लुइसी—आज नहीं—आज उसके कहनेका निषेध है।

डन्स्टन—तो कब सुनाओगी ?

लुइसी—आगामी २६ वीं अगस्तको।

डन्स्टन—लौट फेरकर फिर वही बात ! मुझे क्या सचमुच ही एक वर्षके उपरान्त फिर इस स्थान पर आना पड़ेगा ?

लुइसी—हाँ प्रियतम, मैंने ५ वर्ष तक जैसे आकुल प्राणों और उन्मत्त हृदयसे तुम पर प्यार किया है, उसे स्मरण करके एक दिन और भी इस दुःखिनीको दर्शन देनेकी कृपा करना।

डन्स्टन—स्वीकार है—स्वीकार है क्यों प्रतिज्ञा करता हूँ कि, आगामी २६ वीं अगस्तको तुम्हारे अनुरोधकी रक्षा करनेके हेतु फिर इसी समय इस स्थान पर उपस्थित होऊँगा। किन्तु अभी तुमने कहा है कि शीघ्र ही तुमपर कोई शारीरिक विपत्ति आनेकी संभावना है; यदि मैं उस दिन तक जीवित न रहा तो ?

लुइसी माथा झुकाकर और अत्यंत दीना हीना दुःखिनीके समान हाथ जोड़कर बोली—“ dead ar alive ”—चाहे जीवित होओ या मृत, किन्तु इस दुःखिनीके अनुरोधकी रक्षा करनी ही होगी। ”

इस बार डन्स्टनने कुछ अविश्वास-व्यंजक स्वरसे कहा—“ जो मर जाता है क्या वह भी फिर इस पृथ्वी पर आ सकता है ? ”

लुइसी—तुम स्वतः इसका अनुभव करोगे।

डन्स्टन—अच्छा, तुम्हारी ही बात ठीक है। मैं किसी अवस्थामें क्यों न होऊँ, परंतु इस जगह प्रतिज्ञाके समय अवश्य उपस्थित होऊँगा। तुम जो परलोक-सम्बन्धी बातें कहा करती हो, वे सच हैं या नहीं, उस दिन उनकी भी प्रत्यक्ष परीक्षा हो जायगी।

प्रतिज्ञाका विनिमय हो चुकने पर दोनों युवक-युवती दो भिन्न भिन्न मार्गोंसे चल दिये। किन्तु डन्स्टन अपने मार्ग पर घड़ी भरके लिए थमकर लुइसीकी लावण्यमयी मूर्तिको उस समय तक निहारता रहा, जब तक कि वह आँखोंसे ओझल न हो गई।

लुइसी पैरोंमें एक विचित्र प्रकारके जूते पहिना करती थी। उनमें पीतलकी एक बहुत सुन्दर बेष्ठनी थी, जिससे पैर रखते समय वे एक विचित्र प्रकारकी आवाज करते थे। लुइसी दृष्टिपथसे अदृश्य हो गई, किन्तु जब तक उसके चलनेका वह शब्द सुनाई देता रहा तब तक डन्स्टन उसी प्रकार खड़ा रहा। इसके बाद वह भी अपने घरकी ओर चल दिया।

गत अगस्तके उस साक्षात्कारके बाद १० महीने बीत गये। किन्तु तब तक डन्स्टन पर कोई आपत्ति नहीं आई। इससे उसे बहुत कुछ धीरज बँध गया। उसे विश्वास हो चला कि परलोकके अस्तित्व सम्बन्धकी बातें सम्पूर्ण सत्य नहीं हैं; और यदि परलोक सत्य भी हो, तो भी परलोकवासी आत्मायें मनुष्यके अदृष्टको जाननेमें तो समर्थ नहीं हैं।

यद्यपि डन्स्टन पर अभी तक कोई शारीरिक आपत्ति नहीं आई थी, किन्तु उसके सांसारिक सुखकी आशा, इतने दिनोंके बीचमें ही बहुत कुछ निराशामें परिणत हो चली थी। क्योंकि उसके भावी सम्मानकी कारण जमींदारकी कन्या अब उसकी कुछ भी खोज-खबर नहीं लेती थी। इसी समय, अर्थात् जुलाई सन १८६९ के प्रथम सप्ताहमें, डन्स्टन अपने तीन मित्रोंको—जो शिकार खेलनेमें बहुत निपुण थे—एक छोटेसे बोट या नाव पर बिठलाकर समुद्री पक्षियोंकी शिकार करनेके लिए निकला। ये चारों शिकारी यार्क शायरके किनारे किनारे शिकार खेलते हुए बड़े आनंद और आमोद-प्रमोदके साथ दिन बिताने लगे। चौथे दिन जब डन्स्टन और उसके साथी फ्लेमबरा हेड (Flamborough

Head) नामक स्थान पर पहुँचे तब वहाँ टामस पिलेस नामका एक व्यवसायी शिकारी भी एक छोटी नाव पर बैठकर पक्षियोंकी शिकार कर रहा था। हठात् उसकी बन्दूककी गोली डन्स्टनकी दाहिनी जाँघमें आकर घुस गई। डन्स्टन तत्काल ही मूर्छित होकर गिर पड़ा।

इंग्लैण्ड और स्काटलैंडके समुद्री तट पर अनेक चिकित्सालय हैं। डन्स्टन जिस जगह आहत हुआ, उसके समीप ही 'ब्रिडलिंगटन की' नामक स्थानमें एक चतुर अस्त्र-चिकित्सक रहता था। उसने ब्लेक लायन (Black Lion) नामक होटलमें डाक्टर अलेक्जेंडर मेकी (Dr, Alexander Mackay) की सहायतासे बड़ी कठिनाईसे डन्स्टनकी मांसल जांघसे वह गोली निकाली। डाक्टरोंने तौल कर देखा— गोलीका वजन सवा औंस (लगभग चार तोले) था!

इस घटनाकी चर्चा हाल-नगरके चारों ओर फैल गई। कई समाचार-पत्रोंने भी इस दुर्घटनाका समाचार प्रकाशित किया और इस तरह यह समाचार उत्तरी इंग्लैण्डमें मिस केरीके कानों तक भी पहुँच गया। परन्तु प्रेमीकी इस आकस्मिक विपत्तिका समाचार पाकर उसके नेत्रोंसे एक बूँद आँसू भी नहीं गिरा; बल्कि उसके हृदयमें कुछ विरक्ति ही उत्पन्न हो गई।

डन्स्टन तीन सप्ताह तक उसी होटलमें पड़ा रहा और अंतमें बड़े कष्टके साथ हाल नगरमें पहुँचाया गया। वहाँ डाक्टर केलबरन किंग (Dr. Kelburne King) मन लगाकर उसकी चिकित्सा करने लगे। चिकित्सासे शीघ्र ही लाभ पहुँचा। थोड़े ही दिनोंमें डन्स्टन पङ्गुग्रश्रया यष्टि (Crutch) की सहायतासे दस पाँच कदम चलने फिरने लगा।

वह प्रतिज्ञावाली २६ वीं अगस्तकी रात्रि धीरे धीरे समीप आने लगी। डन्स्टनका मन भी क्रम क्रमसे अनुतापकी गहरी छायासे ग्रसित होने लगा। डन्स्टन परलोक न मानने पर भी ईश्वरको मानता था। उसके

मनमें यह बात सदैव जागरित रहा करती थी कि, मैं उस अबोध बालिका लुइसीके सुख-सम्मानके विषयमें ईश्वरके निकट अवश्य उत्तरदाता हूँ। मैंने पहले उसे प्रेमके प्रवाहमें बहाकर उसका सर्वस्व अपहरण कर लिया और अब मैं धन-वैभवके लोभमें पड़कर चिरघृणित जोंककी नाईं उस ज्योत्स्नासिक्त जूही-फूलको परित्याग करके कण्टकाकीर्ण केतकीके अंगसे लगनेका प्रयत्न कर रहा हूँ। क्या ऐसा करना उचित है ? क्या धर्म ऐसे भयावह अनुष्ठानको सहन करेगा ? इन्हीं सब कारणोंसे इस बार डन्स्टन लुइसीसे मिलनेके लिए कुछ विशेष उत्सुक था। उसे विश्वास था कि अगर मैं लुइसीको मीठी मीठी बातोंसे विदा कर सका और मेरी मधुर बातोंसे मोहित होकर लुइसीने भी सच्चे हृदयसे मुझे क्षमा कर दिया, तो मैं अवश्य ही उक्त पापसे मुक्त हो जाऊँगा।

२६ वीं अगस्तका दिन ज्यों त्यों करके बीत गया। रात्रिके ग्यारह बजते ही डन्स्टन अपने वृद्ध बब (Old dob) नामके एक पुराने और विश्वस्त नौकरकी सहायतासे 'बाथ चेयर' पर बैठकर उस पुलके समीप जा पहुँचा और वहाँ वह चेयर पर ही बैठा बैठा अपने विचित्र भाग्यकी विविध बातोंकी आलोचना करनेमें समय बिताने लगा।

जब रात अधिक हो गई तब वह एक भुजासे अपनी उस पंगु-यष्टिका सहारा लेकर और दूसरी भुजासे बबका आश्रय लेकर पुलके ऊपर, एक दीपस्तंभके पास, जा खड़ा हुआ। डन्स्टन अपने प्रणयके प्रबल प्रवाहके दिनोंमें जब छिपकर लुइसीसे मिलने आता था, तब अपने साथ इसी बबको लाया करता था। लुइसी भी इसे खूब पहिचानती थी। बब डन्स्टनके चुरुटको जलाकर, उसकी दृष्टिसे बाहर, जहाँसे बुलाते ही आ सके ऐसे स्थानमें, बाथ चेयरकी ओटमें छिपकर बैठ रहा। डन्स्टन बारबार पाकेटकी घड़ी खोल-खोलकर समय देखने लगा।

कुछ ही मिनिटके उपरान्त गिरजाकी घड़ी बज उठी। डन्स्टनने देखा कि एक समय जिसे मैं अपना प्राणप्रिय धन और देव-दुर्लभ रत्न

समझकर प्रेम-पुष्पाञ्जलिद्वारा पूजा करता था--जिसे नवयौवनके प्रथम उन्मेषके समय मैं दिनमें दस दस बार प्रेमपूर्ण सम्भाषणद्वारा संतुष्ट करनेकी चेष्टा किया करता था, वही प्रतारिता और परित्यक्ता लुइसी मूर्त्तिमती माधुरी अथवा ज्योत्स्नामयी मूर्त्तिके समान चली आ रही है और उसके प्रत्येक पदक्षेपसे वही चिरपरिचित मधुर शब्द हो रहा है। पुल परसे जानेवाला राजमार्ग लगभग २०० गजकी दूरी तक पुलके प्रकाशसे प्रकाशित हो रहा था। लुइसी यह दो सौ गज भूमि पैरों चलकर आई है, यह डन्स्टनने अच्छी तरह देखा। पुलपर कई दीपस्तंभ थे; लुइसी एक एक करके सब दीपस्तंभोंको लाँघती हुई डन्स्टनसे २० गजकी दूरी पर आकर खड़ी हो गई और तृषित नेत्रोंसे उसकी ओर देखने लगी। वह भी उस असाधारण रूपवतीको देखकर मानो क्षणभरके लिए अपनी नई आशाओं-- सुख-सम्पत्तिकी नई आकांक्षाओं और नये विवाहकी बातोंको भूल गया।

लुइसीके सिरपर वस्त्र नहीं था। उसकी कमर तक लटकती हुई सघन कृष्णकेशराशि बिखर बिखरकर कुछ पीठ पर, कुछ छाती पर और कुछ दोनों भुजाओं पर पड़ रही थी। उसका शरीर मकड़ीके जालके समान एक अत्यंत महीन और सफेद वस्त्रसे सुशोभित था। उसके शरीरकी वह हृदयोन्मादिनी रूपप्रभा उस सूक्ष्म वस्त्रको भेदकर चारों ओर शुभ्र चंद्रिकाके समान छिटक रही थी। डन्स्टन देखता है और सोचता है कि हाय! मैं ऐसी देवमूर्त्तिको प्रतारित करके पृथ्वीके किस सुखकी लालसामें क्या करने जा रहा हूँ! डन्स्टन रूपके क्षणिक मोहमें आत्मविस्मृतसा होकर, बाँये हाथकी लकड़ीको हटाकर और पुलके रेलिंग पर पीठका भार रखकर, बहुत दिनोंके पश्चात् आज लुइसीको हृदयसे लगानेके लिए उद्यत हुआ। उसने अपनी दोनों भुजायें फैला दीं। उधरसे लुइसी भी प्रेमोन्मत्ताकी तरह उसके ऊपर आ पड़ी। पर

हाय ! यह क्या ! डन्स्टन अपने नेत्रोंके निकट बाहुवेष्टिता और वक्षःस्थिता लुइसीके स्नेहपूर्ण मुख और चमकते हुए दोनों नेत्रोंको तो देखता है, किन्तु उसे उसके स्पर्शसुखका अनुभव नहीं होता ! इसका कारण क्या है ?

डन्स्टन अधिकाधिक भ्रान्त होकर कहने लगा–" लुइसी–लुइसी, तुम क्या वही लुइसी हो ? मैं तुम्हें हृदयसे लगाये हूँ–तुम्हारा नखसे लेकर शिख तक समस्त शरीर देख रहा हूँ—मेरे दोनों कंधों पर तुम्हारे दोनों हाथ चाँदनीके टुकड़ोंकी तरह झूल रहे हैं, यह भी देख रहा हूँ और गाढ़से गाढ़ आलिंगन करनेके लिए तुम्हें जोरसे आकर्षण कर रहा हूँ, किन्तु तुम्हारे स्पर्श-सुखका अनुभव नहीं कर पाता हूँ। इस आश्चर्य्यका मर्म क्या है ? " लुइसीने कहा—" वही पुरानी बात–क्या याद नहीं है ?–Dead ar alive,–जीवित या मृत ! "

उपरिलिखित शब्द लुइसीके अधरसे ऐसे अपूर्वश्रुत, श्रुतिमधुर और अस्फुट स्वरसे उच्चारित हुए कि डन्स्टनने उन्हें कानोंसे सुना, या अन्तः-श्रोत्रोंसे सुना, यह हम शपथपूर्वक नहीं कह सकते; किन्तु इसमें कोई संदेह नहीं कि उसने कुछ शब्द सुने अवश्य । जिस प्रकार गृहान्तर-स्थित दीपकका प्रतिबिम्बित आलोक अथवा खुली हुई खिड़कीसे प्रविष्ट हुई चन्द्रमाकी चाँदनी अंधकारपूर्णगृहमें कुछ समय तक मनुष्यके शरीर पर रहती है, उसी प्रकार लुइसी भी अपनी ज्योत्स्नामयी मूर्त्तिसे कुछ समयतक प्राणोंकी अतृप्त पिपासासे डन्स्टनके शरीर पर रही । ऊपर आकाशमंडलमें करोड़ों नक्षत्र अनंतदेवके अनंत नेत्रोंकी नाईं खुले हुए थे और नीचे धरती पर वह छोटीसी धारवाली नदी कलकल शब्द करती हुई बह थी। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था । डन्स्टन देख रहा था कि ज्योत्स्नामयी देव-ललना मेरे वक्षः-स्थलसे लिपट रही है । इसमें संशयकी जरा भी संभावना नहीं ।

उसके नेत्र लुइसीके नेत्रोंपर स्थिर हो रहे थे। अब लुइसीके नेत्र अश्रु-पूर्ण नहीं हैं–उसका मुख भी पहलेकी नाईं उदास नहीं है। वह सोचने लगा—तो लुइसी मरकर क्या देवता होगई है? यदि देवता नहीं हुई, तो मुझे उसके स्पर्शका अनुभव क्यों नहीं होता?

डन्स्टन जिस समय उक्त चिन्तामें मग्न हो रहा था, उसी समय उसे बलवान् पुरुषोंके जोरसे पटके हुए पैरोंके शब्दोंके समान कितने ही शब्द सुन पड़े। उसी समय लुइसीकी ज्योत्स्नामूर्ति भी–अनंतकालके लिए–डन्स्टनके वक्षःस्थलको त्याग कर देखते-ही-देखते अदृश्य हो गई–या वायुमें मिल गई। डन्स्टनको इस देवमूर्तिके दर्शन क्या फिर भी कभी होंगे? मालूम होता है, नहीं। वैसा निर्मल प्रेम और वैसी सती साध्वी-का संग कुत्सित-लालसाशून्य, कठोर और दीर्घ तपस्याके सिवा मनुष्यको कभी प्राप्त नहीं हो सकता।

"अवाप्यते वा कथमन्यथा द्वयम्
तथाविधं प्रेम" सती च तादृशी।

डन्स्टन भीरु नहीं था तो भी वह उस निर्जन पुल पर थर थर काँपने लगा,–उसके प्राण थर्रा गये,–शरीरका रक्त बर्फके समान ठंडा होकर जम-सा गया। उसने बड़े कष्टसे बब–बब–बब कह कर पुकारा। बब शीघ्र ही दौड़ा आया। पास आते ही डन्स्टनने पूछा–"क्या तुम्हारे पाससे होकर कोई आदमी इस तरफ आया था?"

बब—"हाँ, मिस लुइसी आई थीं।"

डन्स्टन—तुमने उसे आँखोंसे देखा है?

बब—"नहीं, आँखोंसे तो नहीं देखा, किन्तु मैंने उनके पैरोंकी चिरपरिचित आवाज सुनी है। जब वे पुलके निम्नवर्त्ती पाषाण-मार्गपरसे आपकी ओर आई हैं, तब मैंने उनके पैरोंकी आवाज सुनी है। इसके बाद जब वे पुलके ऊपर चढ़कर चलकर गई हैं, मैंने उस समय भी

उनके प्रत्येक पद-शब्दको मनोयोगपूर्वक सुना है । मैं सहस्रों पैरोंकी आवाजमेंसे आँख मीचकर उनकी आवाज पहिचान सकता हूँ । चलो, इस जगह अब इन बातोंकी जरूरत नहीं है—घर चलो । आपके पास जो आई थी, जान पड़ता है, वह लोकान्तरित लुइसीकी छायामूर्त्ति थी ।'

डन्स्टन पहले ही सब समझ गया था । अब बबके मुँहसे उक्त बातें सुनकर उसे अपने सिद्धान्त पर दृढ़ विश्वास हो गया । वह बाथ-चेयर पर बैठकर भीतविह्वलचित्तसे घर लौट आया । घर आकर शेष रात्रि उसने वृद्ध बबके साथ केवल इसी एक विषयकी लौट-फेरकर तरह तरहसे पूछताछ करनेमें व्यतीत की ।

सवेरा हो गया । डन्स्टनने शीघ्र ही अपने एक विश्वस्त मित्रको लुइसीके घर भेजा। पाठकोंको स्मरण होगा कि वह घर यहाँसे कुछ दूर था और डन्स्टन मिस केरीके भयसे बबको भी उस ओर कभी संवाद लेनेके लिए नहीं भेजता था, इस कारण उसे लुइसीका कोई संवाद नहीं मिलता था । कुछ समयके पश्चात् मित्र मलिन मुख किये लौट आये । उन्होंने आते ही कहा—" जो सोचा था, वही सत्य निकला । आज तीन महीने हो चुके, लुइसीका ज्वर-विकारसे लिवरपुलमें देहान्त हो गया । उसने मरनेके तीन चार घंटे पहले बहुत प्रलाप किया था । प्रलापमें उसके मुँहसे बारबार यही वाक्य निकलते थे—' Dead or alive—Dead or alive—जीवित या मृत—जीवित या मृत !—मैं उस जगह जा सकूँगी ? हाय ! क्या एक बार उन्हें देख सकूँगी ? ' जो लोग उसके आसपास रहकर परिचर्या करते थे, वे लुइसीके घनिष्ठ आत्मीय होने पर भी परिवारके नहीं थे । वे लोग इन वाक्योंका कुछ अर्थ नहीं समझे । किन्तु लुइसी आर्त्तस्वरसे बारबार उक्त वाक्योंकी ही आवृत्ति करती थी । "

डन्स्टनने माथा झुकाकर सब सुन लिया—सुनकर वह शय्याशायी हो गया । उसके भाई-बन्धु चिन्ताकुल होकर उसकी सेवा-शुश्रूषा करने

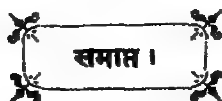
लगे। कुछ दिनोंके उपरान्त जब वह स्वस्थ हुआ तब सर्वांशमें एक नया ही मनुष्य बन गया। कुछ दिनों तक उसके नेत्रोंसे क्षण क्षण पर प्रीति, अनुताप और करुणाके मिश्रणसे उत्पन्न हुए अंतर्दाहकी धारा बहती रही; और उसके भाई-बन्धु तथा अड़ौस-पड़ौसके लोग भी उसके 'हा करुणामय!' प्रभृति अन्तर्विदारित कातर शब्दों और उसकी गरम गरम श्वासोंसे कुछ समयतक हृदयमें क्लेशका अनुभव करते रहे। इसी समयसे उसके जीवनका रुका हुआ स्रोत एक नये ही भावसे नई दिशाकी ओर प्रवाहित होने लगा। ईश्वर पर दृढ़ भक्ति और परलोक पर प्रत्यक्ष देखे हुएके समान प्रगाढ़ विश्वास, ये दो सूत्र ही उसके उस नये जीवनके प्रधान सूत्र हुए। डन्स्टन कुछ अभिमानी था। उसका सारा अभिमान और स्वार्थपूर्ण-सांसारिकताका कठोर भाव एक बार ही नष्ट होकर प्रीति, मधुरता, नम्रता और दैन्यमें परिणत हो गया।

पाठकोंसे इस कहानीके उपसंहारमें केवल यही कहना है कि डन्स्टनने फिर विवाह नहीं किया। वह हाल-नगरमें रहकर सेनाविभागमें काम करते हुए भी चित्तमें और अधिक समय तक स्फूर्ति नहीं पा सका। पीछे पारलौकिक जगतकी सत्यताविषयक अनेक आलोचनाओंके उपलक्ष्यमें उसकी विख्यातनामा स्टेड साहबसे विशेष मित्रता हो गई।

इस स्थलपर दो प्रश्न उठते हैं। डन्स्टनका प्रेम-जीवन यदि पाप—कलुषित था, तो लुइसी भी तो कुछ अंशमें उस पातककी अंशिनी थी। ऐसी दशामें वह मरनेके पश्चात् ज्योत्स्नामयी देवमूर्ति पाकर देवलोककी अधिकारिणी क्योंकर हुई? उत्तर—लुइसीका हृदय निःस्वार्थ—निर्मल,—स्वच्छ पात्रमें रक्खे हुए पवित्र गंगाजलके समान, प्रेमसे झलमल झलमल करता था। देवगण मनुष्यका बाह्य आवरण नहीं देखते; वे देखते हैं उसीके भीतरी हृदय या अन्तरात्माकी क्रियाको। वे मनुष्योंकी परीक्षा उनके हृदयकी निर्मलता, निःस्वार्थता और निष्पाप वृत्तिसे करते हैं। इसे कौन अस्वीकार करेगा कि लुइसी इस अंशमें देवतुल्या नहीं थी? लुइसीके हाथमें

डन्स्टनके हाथका लिखा हुआ एक स्वीकार-पत्र था। यह स्वीकार-पत्र विषयासक्त युवतियोंके हाथका एक नित्योपयोगी प्रबल अस्त्र है। लुइसीके हाथमें ऐसा प्रबल अस्त्र रहने पर भी, उसने कानूनका आश्रय नहीं लिया, किन्तु उसने अपने प्रेमास्पदके मनःकल्पित सुख-सौभाग्यके लिए स्वतः अपना तथा अपने प्राणोंका बलि कर दिया! ऐसे उदाहरण क्या मानव-जगतमें सर्वत्र मिलते हैं? देवताओंके विचारसे पवित्रहृदया, आत्मोत्सर्गशीला लुइसी पहलेहीसे देवता थी।

दूसरा प्रश्न—डन्स्टनने पुलपर जो अदृश्य मूर्तियोंके पद-शब्द सुने थे, वे कौन थे? उत्तर—वे निस्सेन्देह लुइसीके परिरक्षक और परिचालक, देव-पुरुष थे। जिनका हृदय निष्पाप और ईश्वरकी भक्तिसे परिपूर्ण रहता है, देवपुरुष ऐसे पुण्यात्माओंकी रक्षा करनेमें बहुत प्रेम रखते हैं। संभवतः इन्हीं देवपुरुषोंमेंसे ही किसीने प्रथम लुइसीको दर्शन देकर डन्स्टनकी भावी शारीरिक विपत्ति आदिके विषयमें भविष्य-सूचना की थी। देवता लोग तरह तरहसे मनुष्योंके साथ रहकर, उनके जीवनके अनन्त कार्य्योंमें भाग्यकी रेखाको कर्मफलके साथ संघटित कराके मनुष्योंका कल्याण साधन किया करते हैं। किन्तु मनुष्य आँखोंके रहते हुए भी अंधा और कानोंके रहते हुए भी बहरा है। पृथ्वीके लालसायुक्त मनुष्य देव और धर्म दोनोंकी ही परवा न करके चलने अथवा उन्हें भुला देनेके लिए बहुत प्रयत्नशील रहा करते हैं। किन्तु यह पृथ्वी जिन महापुरुषोंकी पद-रज पाकर समय समय पर कृतार्थ हुई है उनका उच्चजीवन देवसेवा और धर्मसेवा-पूर्वक ही व्यतीत हुआ है और उनमेंसे अनेक पुरुषोंने देवपुरुषोंको नित्यके सङ्गी मित्रजनोंके समान देखा है।



अन्तिम निवेदन।

छायादर्शनके प्रकाशित करनेका मुख्य उद्देश्य यह है कि इस देशके विद्वानोंमें भी प्राचीन ऋषि-महर्षियोंके इस सत्सिद्धान्तकी चर्चा हो और वे भी इस विषयके अध्ययन, मनन और परीक्षणमें दत्तचित्त हों। हमारा विश्वास है कि पाश्चात्योंकी अपेक्षा भारतवासी इस सिद्धान्तपर विचार करनेके विशेष अधिकारी हैं। किसी समय उन्होंने विचार किया भी है और इतना किया है कि, उससे अधिक किया जाना संभव नहीं। परन्तु अब आवश्यकता आ पड़ी है एक नये ढंगसे विचार करनेकी, जिस तरह कि पाश्चात्य विद्वान् किया करते हैं और जिसका आभास पाठकोंको इसी ग्रन्थमें मिलेगा।

हमें भय है कि कहीं हमारे पाठकगण इस ग्रन्थमें प्रकट किये हुए सभी सिद्धान्तोंको सुनिश्चित और भ्रान्तिहीन सत्य सिद्धान्त न समझ बैठें। उन्हें जानना चाहिए कि अभी पाश्चात्य देशोंका यह पारलौकिक तत्त्वज्ञान बाल्यावस्थामें है। अतः उसकी बातें मीठी, मनोरंजक और कुतूहलवर्धक हो सकती हैं और कुछ अंशोंमें उनपर विश्वास भी किया जा सकता है; परन्तु सर्वथा आप्त-वाक्य नहीं मानी जा सकतीं। इसके सिवाय उक्त देशोंमें ही इस तत्त्वज्ञानका विरोध करनेवाला एक दल—जिसके अनुयायियोंको बुद्धिवादी या रेशनलिस्ट कहते हैं—खड़ा हो गया है, जो रात दिन इसके खण्डनमें दत्तचित्त रहता है और जिसकी बातें सहज ही उड़ा देने योग्य प्रतीत नहीं होतीं।

एक बात और भी है। इन सिद्धान्तोंपर ईसाई-धर्मकी छाप बहुत स्पष्ट रूपसे दिखलाई देती है। क्योंकि इनका प्रतिपादन करनेवाले प्रायः सभी विद्वान् ईसाई धर्मके माननेवाले थे और हैं। अतः उनकी कृतिपर यदि उनके हार्दिक संस्कारोंकी छाया दिखलाई दे, तो कोई आश्चर्य नहीं। यह मानता ईसाईयोंकी ही है कि जीव कीटानुकीटकी अवस्थासे उन्नति करते करते मनुष्य होता है और फिर मनुष्यशरीर छोड़कर प्रेतलोकमें विचरण करता करता अन्तमें पिता (ईश्वर) और पुत्र (क्राइस्ट) के निकट पवित्रात्माके रूपमें उपस्थित होता है। परन्तु भारतके हिन्दू, जैन या बौद्ध, कोई भी धर्म इस उत्क्रान्तिवादको नहीं मानते। उनकी दृष्टिसे 'श्वापि देवोऽपि देवः श्वा जायते धर्मकिल्बिषात्' अर्थात् धर्मसे कुत्ता भी देव और पापसे देव भी कुत्ता हो जाता है। जिस तरह एक वृक्ष कीट-पतंग पशु-पक्षी आदिके

शरीर धारण करते करते देवगति प्राप्त कर सकता है, उसी तरह एक प्रभावशाली तेजःपुंज देव भी अधःपतित होकर पशु-पक्षी, कीट-पतंग या लता-गुल्मका शरीर धारण करनेके लिए लाचार होता है । इस सिद्धान्तको कोई भी भारतीय धर्म नहीं मानता कि जितने मनुष्य मरते हैं सभी देवलोक या प्रेतलोकमें चले जाते हैं । हाँ, वे यह मानते हैं कि कोई कोई मनुष्य अपनी 'करनी' के अनुसार व्यन्तर-लोकमें भूतप्रेतादिका शरीर भी पाते हैं और उनमेंसे कोई कोई पूर्व-संस्कारोंके वशवर्ती होकर अपने स्नेहियों या शत्रुओंको दर्शनादि देनेका भी प्रयत्न करते हैं ।

इन सब बातोंकी सूचना कर देनेकी आवश्यकता इस लिए हुई कि कहीं पाठकगण आँख मूँदकर इस ग्रन्थके विचारोंके प्रवाहमें ही अपने विचारोंको न बहा दें । हम आशा करते हैं कि अपनी सदसद्विवेकबुद्धिको जागृत् रख कर ही वे अपने सिद्धान्त स्थिर करेंगे ।

हमको विश्वास है कि यदि हमारे देशके विद्वान् इस ओर ध्यान देंगे और इस विषयके पाश्चात्य साहित्यके साथ साथ प्राचीन भारतीय साहित्यका भी अध्ययन तथा मनन करेंगे, तो वे इस गूढ़ तत्त्वज्ञानकी अनेक गुप्त ग्रन्थियोंको सुलझानेमें समर्थ हो सकेंगे । और यह कहनेकी तो आवश्यकता ही नहीं है कि इस तत्त्व-ज्ञानसे संसारका निरतिशय कल्याण होगा । पृथ्वीकी छाती परसे पापराशिका बोझा कम करने और सर्वत्र सुख-शान्तिका साम्राज्य स्थापित करनेका इससे अच्छा और कोई भी उपाय आविष्कृत नहीं हो सकता ।

हिन्दीमें इस ढंगके साहित्यका एक तरहसे अभाव ही है । हिन्दीके बहुत ही थोड़े पाठक ऐसे होंगे, जो यह जानते हों कि भौतिक विज्ञानकी उन्नतिमें ही तन्मय रहनेवाले पाश्चात्य विद्वान् अब परलोक-तत्त्वकी मीमांसामें भी दत्तचित्त हुए हैं और यह विषय भी वहाँ एक स्वतंत्र विज्ञान-शास्त्रका रूप धारण करता जाता है । इसी लिए इस ग्रन्थका प्रकाशित करना उचित समझा गया । इसमें परलोकके अस्तित्वका सिद्धान्त बहुत ही उत्तमतासे प्रतिपादित हुआ है । इसे पढ़कर उन लोगोंके हृदय भी–जो परलोकको सर्वथा कविकल्पना मानते हैं– डगमगा जायँगे और वे भी इसे, और नहीं तो कमसे कम सोचने-विचारनेका विषय अवश्य समझने लगेंगे ।

अन्तिम निवेदन।

इस ग्रन्थमें जितनी घटनायें लिखी गई हैं, वे सब पाश्चात्य देशोंकी हैं, इस देशकी एक भी घटनाको स्थान नहीं दिया गया है। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि इस देशमें छायामूर्तियोंके दर्शन होते ही नहीं हैं, अथवा इस प्रकारकी घटनायें यहाँ संग्रह ही नहीं हो सकतीं। बात यह है कि इस देशका शिक्षितसमुदाय पारलौकिक बातोंके सम्बन्धमें बहुत ही अविश्वासी बन गया है, इसलिए वह तो इस ओर लक्ष्य नहीं देता और अशिक्षित अपढ़ लोगोंकी बातों पर कोई विश्वास नहीं करता। आप चाहे जिस गाँवमें चले जाइए वहाँके आदमी ऐसी सैकड़ों घटनायें आपको सुना जायँगे, परन्तु उनपर विश्वास कौन करेगा? इसी लिए ग्रन्थकर्त्ताने पाश्चात्य देशोंकी उन्हीं घटनाओंका संग्रह किया है जिनकी साक्षी बड़े बड़े विद्वानोंने दी है और जिनपर इस देशका शिक्षितसमुदाय विश्वास कर सकता है।

यदि इस देशके शिक्षितोंकी श्रद्धा इस विषयकी ओर झुकी, तो हमें आशा है कि यहाँ भी ऐसी शतशः घटनायें परीक्षासिद्ध और साक्ष्य-सिद्ध होकर लिपि-बद्ध की जा सकेंगी। कलकत्तेके 'हिन्दू स्प्रिच्युअल मेगजीन' नामक मासिक-पत्रमें जिसे अमृतबाजारपत्रिकाके सुप्रसिद्ध सम्पादक बाबू मोतीलाल घोष निकालते हैं—इस प्रकारकी देशी घटनायें प्रकाशित भी होने लगी हैं। हम उस दिनकी प्रतीक्षा कर रहे हैं, जब हिन्दीमें भी परलोक-विज्ञानकी स्वतंत्ररूपसे आलोचना करनेवाले पत्रोंका जन्म होगा और छाया-दर्शनके समान और भी अनेक ग्रन्थ हिन्दी पाठकोंके सम्मुख उपस्थित होंगे।

अन्तमें हम मूल-ग्रन्थ-कर्त्ता श्रीयुक्त कालीप्रसन्न विद्यासागर महाशयके प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते हैं जिनके इस अपूर्व ग्रन्थको हम हिन्दी पाठकोंके सामने उपस्थित कर रहे हैं। बंगालके सुप्रसिद्ध और श्रेष्ठ साहित्यसेवियोंमें आपकी गणना है। आपका 'बान्धव' नामक मासिकपत्र बंगला भाषाका बहुत पुराना और प्रौढ़ मासिकपत्र है। आपने अपनी अतिशय वृद्धावस्थामें जब कि आपकी दृष्टिशक्ति और श्रवणशक्ति बहुत ही क्षीण हो गई थी, लोककल्याणकी प्रबल आकांक्षासे इस ग्रन्थका प्रणयन किया है। इससे पाठक इस ग्रन्थके महत्त्वको और भी विशेष रूपसे हृदयङ्गम कर सकेंगे।

पौष सुदी १४
सं० १९७५ वि०।

निवेदक—
नाथूराम प्रेमी।

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर-सीरीज ।



हमारे यहाँसे इस नामकी एक ग्रन्थमाला प्रकाशित होती है। हिन्दी-संसारमें यह अपने ढंगकी अद्वितीय है । अभी इसमें जितने ग्रन्थ निकले हैं वे भाव, भाषा, छपाई, सौन्दर्य आदि सभी दृष्टियोंसे बेजोड़ हैं । प्रायः सभी साहित्य-सेवियोंने उनकी मुक्त कण्ठसे प्रशंसा की है । स्थायी ग्राहकोंको पूर्व प्रकाशित और आगे प्रकाशित होनेवाले सभी ग्रन्थ पौनी कीमतमें दिये जाते हैं । पूर्व-प्रकाशित ग्रन्थोंका लेना न लेना ग्राहकोंकी इच्छापर है; परन्तु आगेके ग्रन्थ लेने पड़ते हैं । स्थायी ग्राहक होनेकी ' प्रवेश-फी ' आठ आने हैं । अभी तक नीचे लिखे ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं:—

१–२ स्वाधीनता । जान स्टुअर्ट मिलकी 'लिबर्टी' अनुवाद । मूल्य दो रु० ।

३ प्रतिभा । प्रसिद्ध लेखक श्रीयुत अविनाशचन्द्रदास एम. ए. बी. एलके 'कुमारी' नामक शिक्षाप्रद और भावपूर्ण उपन्यासका अनुवाद । मूल्य एक रु० ।

४ फूलोंका गुच्छा । उच्च श्रेणीकी ११ गल्पोंका संग्रह । मूल्य नौ आने।

५ आँखकी किरकिरी । डाक्टर सर रवीन्द्रनाथ टागोरके ' चोखेर बालि ' नामक प्रसिद्ध उपन्यासका अनुवाद । मूल्य डेढ़ रु० ।

६ चौबेका चिट्ठा । बंग-साहित्य-सम्राट् स्वर्गीय बंकिम बाबूके ज्ञान-विज्ञान और देश-भक्तिपूर्ण मनोरंजक ग्रंथका अनुवाद । मूल्य बारह आने ।

७ मितव्ययता । सेमुएल स्माइल्स साहबके ' थिरिफ्ट ' नामक ग्रंथके आधारसे लिखित । मूल्य पन्द्रह आने ।

८ स्वदेश । डा० सर रवीन्द्रनाथ टागोरके चुने हुए स्वदेश-सम्बन्धी निबंधोंका अनुवाद । मूल्य दस आने ।

९ चरित्र-गठन और मनोबल । राल्फ वाल्डो ट्राइनके ' कैरेक्टर बिल्डिंग थाट पावर'का अनुवाद । मूल्य तीन आने ।

१० आत्मोद्धार । प्रसिद्ध हबशी विद्वान् डाक्टर बुकर टी० वाशिंगटनका बहुत ही शिक्षाप्रद आत्मचरित । मूल्य एक रु० दो आने ।

११ शान्तिकुटीर । श्रीयुत अविनाश बाबूके 'पलाशवन' नामक शिक्षाप्रद गार्हस्थ्य उपन्यासका अनुवाद । मूल्य चौदह आने ।

१२ सफलता और उसकी साधनाके उपाय । कई अँगरेजी पुस्तकोंके आधारसे लिखित । मूल्य बारह आने ।

१३ अन्नपूर्णाका मन्दिर । अतिशय हृदयभेदी, करुणरसपूर्ण और शिक्षाप्रद उपन्यास । मूल्य बारह आने ।

१४ स्वावलम्बन । सेमुएल स्माइल्सके 'सेल्फ-हेल्प' नामक ग्रन्थके आधारसे लिखित । मूल्य डेढ़ रुपया ।

१५ उपवास-चिकित्सा । उपवाससे, अर्धोपवाससे और अल्प भोजनसे तमाम रोगोंको नष्ट करनेके उपाय । मूल्य बारह आने ।

१६ सूमके घर धूम । सभ्य हास्यरसपूर्ण प्रहसन । मूल्य तीन आने ।

१७ दुर्गादास । प्रसिद्ध स्वामि-भक्त वीर दुर्गादासके ऐतिहासिक चरित्रको लेकर इस नाटककी रचना की गई है । यह बंगालके सर्वश्रेष्ठ नाटकलेखक स्वर्गीय द्विजेन्द्रलाल रायके नाटकका अनुवाद है । मूल्य एक रुपया ।

१८ बंकिम-निबंधावली । स्वर्गीय बंकिम बाबूके चुने हुए विविध निबंधोंका अनुवाद । मूल्य चौदह आने ।

१९ छत्रसाल । बुंदेलखंड-केसरी महाराज छत्रसालके ऐतिहासिक चरित्रके आधार पर लिखा हुआ देश-भक्तिपूर्ण उपन्यास । मूल्य डेढ़ रुपया ।

२० प्रायश्चित्त । नोबेल प्राइज-प्राप्त, बेलजियमके सर्व-श्रेष्ठ कवि मेटरलिंकके एक भावपूर्ण नाटकका हिन्दी अनुवाद । मूल्य चार आने ।

२१ अब्राहम लिंकन । गुलामोंको स्वाधीनता दिलानेवाले अमेरिकाके प्रसिद्ध सभापतिका जीवनचरित । मूल्य दस आने ।

२२ मेवाड़-पतन । ऐतिहासिक नाटक । मूल लेखक स्वर्गीय द्विजेन्द्रलाल राय । मूल्य बारह आने ।

२३ शाहजहाँ । स्वर्गीय द्विजेन्द्रलालरायके सर्वश्रेष्ठ नाटकका अनुवाद । यह भी ऐतिहासिक है । मूल्य चौदह आने ।

२४ मानवजीवन । अँगरेजी, गुजराती, बंगला और मराठीकी कई सदाचार-सम्बन्धी पुस्तकोंके आधारसे लिखा हुआ उत्कृष्ट ग्रन्थ । मूल्य १।=)

२५ उसपार । द्विजेन्द्रबाबूके एक अतिशय हृदयद्रावक और शिक्षाप्रद सामाजिक नाटकका अनुवाद । मूल्य एक रुपया ।

२६ ताराबाई । यह भी द्विजेन्द्रबाबूके एक नाटकका अनुवाद है । यह पद्य-मय है । हिन्दीमें यही सबसे पहला पद्य नाटक है । मूल्य १)

२७ देशदर्शन । इसमें इस देशकी शोचनीय अवस्थाका रोमाञ्चकारी दर्शन कराया है । अँगरेजीके कोई पचास ग्रन्थोंके आधारसे इसकी रचना हुई है । मूल्य तीन रु० ।

२८ हृदयकी परख । स्वतंत्र और भावपूर्ण सचित्र उपन्यास । मूल्य ॥=)

२९ नवनिधि । प्रसिद्ध गल्प-लेखक श्रीयुत प्रेमचन्द्रजीकी एकसे एक बढ़-कर सुन्दर और भावपूर्ण नौ गल्पोंका संग्रह । मूल्य चौदह आने ।

३० नूरजहाँ । स्व० द्विजेन्द्रलाल रायके ऐतिहासिक नाटकका अनुवाद । मू० १)

३१ आयर्लैण्डका इतिहास । राष्ट्रीय ग्रन्थ । मूल्य १॥=)

३२ शिक्षा । डाक्टर सर रवीन्द्रनाथ ठाकुरके शिक्षासम्बन्धी निबन्धोंका सुस्पष्ट अनुवाद । मू० ॥-)

३३ भीष्म । स्वर्गीय द्विजेन्द्र बाबूके पौराणिक नाटकका अनुवाद । मू० १=)

३४ कावूर । इटलीको स्वतंत्र सुव्यवस्थित राष्ट्र बनानेवाले प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ और देशभक्तका जीवनचरित । मू० १)

३५ चन्द्रगुप्त । स्वर्गीय द्विजेन्द्रबाबूका हिन्दूराजत्वकालीन अपूर्व ऐतिहासिक नाटक । मू० १)

३६ सीता । स्व० द्विजेन्द्रबाबूका पौराणिक नाटक । मू० ॥-)

नोट—उपर्युक्त पुस्तकोंकी जो कीमत छपी है वह सादी जिल्दकी है । कप-ड़ेकी जिल्दवाली पुस्तकोंकी कीमत चार छह आने ज्यादे है ।

हमारी अन्यान्य पुस्तकें।

१ **व्यापार-शिक्षा**। व्यापार-सम्बन्धी प्रारंभिक पुस्तक। मूल्य नौ आने।

२ **युवाओंको उपदेश**। विलियम कावेटके " एडवाईस् टू यंगमेन " के आधारसे लिखित। चरित्रगठन करनेवाला ग्रन्थ। मूल्य नौ आने।

३ **कनकरेखा**। प्रसिद्ध गल्प-लेखक केशवचन्द्र गुप्त एम. ए. बी. एल. की बंगला-गल्पोंका अनुवाद। मू० बारह आने।

४ **शान्तिवैभव**। ' मैजेस्टी आफ कामनेस ' का अनुवाद। मूल्य पाँच आने

५ **लन्दनके पत्र**। विलायतसे एक देशभक्त भारतवासीकी भेजी हुई देश-भक्तिपूर्ण चिट्ठियोंका संग्रह। मूल्य तीन आने।

६ **अच्छी आदतें डालनेकी शिक्षा**। मूल्य ढाई आने।

७ **पिताके उपदेश**। एक सुशिक्षित पिताके अपने विद्यार्थी-पुत्रके नाम भेजे हुए पत्रोंका संग्रह। मू० दो आने।

८ **सन्तान-कल्पद्रुम**। इसमें वीर, विद्वान् और सद्गुणी सन्तान उत्पन्न कर-नेके विषयमें वैज्ञानिक पद्धतिसे विचार किया गया है। मूल्य बारह आने।

९ **कोलम्बस**। नई दुनिया या अमेरिकाका पता लगानेवाले प्रसिद्ध उद्योगी और साहसी नाविकका जीवनचरित। मूल्य बारह आने।

१० **ठोक पीटकर वैद्यराज**। प्रसिद्ध नाटक-लेखक मौलियरके फ्रेंच प्रह-सनका सुन्दर हिन्दी रूपांतर। मूल्य पाँच आने।

११ **बूढ़ेका ब्याह**। खड़ी बोलीका सचित्र काव्य। मू० छह आना।

१२ **दियातले अँधेरा**। स्त्रीशिक्षासम्बन्धी दिलचस्प कहानी। मूल्य ‑)॥

१३ **भाग्यचक्र**। एक हृदयद्रावक शिक्षाप्रद गल्प। मू० एक आना।

१४ **विद्यार्थीके जीवनका उद्देश्य**। निबन्ध। मूल्य एक आना।

१५ **सदाचारी बालक**। एक शिक्षाप्रद कहानी। मू० दो आने।

१६ **बच्चोंके सुधारनेका उपाय**। प्रत्येक मातापिताके पढ़ने योग्य। मू० ।।)

१७ **गिरना, उठना और अपने पैरों खड़े होना**। अर्थात् अस्तोदय और स्वावलम्बन। मू० १=)

१८ योग-चिकित्सा। योगकी सीधी सादी क्रियाओंसे रोगोंको दूर करनेके उपाय। मूल्य दो आने।

१९ दुग्ध-चिकित्सा। केवल दूध पिलाकर समस्त रोगोंको दूर करनेके सरल उपाय। मूल्य ≈)

२० श्रमण नारद। बौद्धयुगकी एक बहुत ही शिक्षाप्रद कहानी। परोपकारका जीता जागता चित्र। मू० ≈)

२१ देवदूत। जन्मभूमिको स्वर्गसे भी बढ़कर अनुभव करानेवाला अभिनव काव्य। नई कल्पना। लेखक पं० रामचरित उपाध्याय। मू० ।-)

२२ विधवा-कर्तव्य। मू० ॥)

२३ अंजना-पवनंजय काव्य। मू० ≈)॥

२४ भारत-रमणी (नाटक)। मू० ॥≈)

नोट—इनके सिवाय और और प्रसिद्ध प्रकाशकोंके हिन्दी ग्रन्थ भी हमारे यहाँ मिलते हैं। बड़ा सूचीपत्र मँगाइए। पता—

पता—

मैनेजर, हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय,

हीराबाग पो० गिरगाँव, बम्बई।

